॥ श्रीः ॥

अथ

मुहूर्तचिन्तामणिः ।

पण्डित-महीधरशर्मधर्माधिकारिटीहरीगढवालनिवासिकृत-

भाषाटीकासमेतः ।

उसकी यह

तृतीयावृत्ति शुद्धतापूर्वक

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदासने

स्वकीय "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयमें

मुद्रित कर प्रकाशित किया ।

संवत् १९५५, शके १८२०.

कल्याण-मुंबई.

॥ ❀ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ❀ ॥
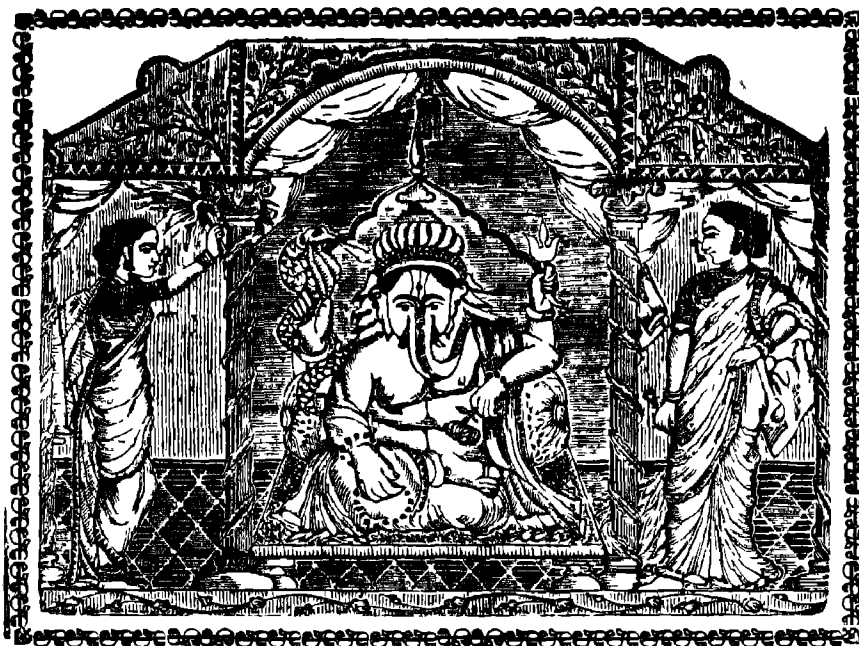
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, कल्याण-मुंबई.

Gangavishnu Shrikrishnadass,
PROPRIETOR, "LAXMI-VENKATESHWAR" PRESS.
KALYAN-BOMBAY.

॥ श्रीः ॥

प्रस्तावना ।

सिद्धान्तसंहिताहोरारूपं स्कन्धत्रयात्मकम् ॥
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिश्शास्त्रमकल्मषम् ॥ १ ॥
अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ॥
प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥ २ ॥
विनैतदखिलं श्रौतस्मार्तकर्म न सिद्ध्यति ॥
तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥ ३ ॥

ंके छः अंग शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष हैं इनमेंसे सर्वो-
ंग नेत्रसंज्ञक निर्मल निष्कलंक ज्योतिषही है जिसको प्राचीनऋषियोंने(सिद्धांत)
ग्रंथ (संहिता) मुहूर्त आदि (होरा) जातक, ताजिक आदि फलादेश इन
ंधोंमें प्रगट किया, इसके विना समस्त (श्रौत-स्मार्त) वैदिक एवं धर्मशास्त्रोक्त
 नहीं हो सकते. इसलिये संसारके उपकारार्थ ब्रह्माजीने इसे वेदनेत्रकरके
 हेतु (यज्ञादि वैदिक कर्म करनेवाले) (द्विज) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्योंको
से पढनेकी आज्ञा है. अन्यशास्त्रोंमें विवाद बहुत हैं प्रत्यक्ष फलोदय ऐसा
जैसा प्रत्यक्ष चमत्कृत ज्योतिष है. जिसके साक्षी सूर्य, चंद्रमा, उदयास्त
ादेमें हैं. शिक्षामेंभी लिखा है कि "शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृ-
योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥ छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पान्
" इति । समस्त अंग प्रत्यंग परिपूर्ण हुएमेंभी जैसे नेत्रोंके विना समस्त अंध-
होता है. तैसेही इसके विना समस्त साधन निरर्थक हैं. वासिष्ठसिद्धांतकाभी
के " वेदस्य चक्षुः किल शास्त्रमेतत् प्रधानताङ्गेषु ततोर्थजाता । अङ्गैर्युतान्यैः
श्चक्षुर्विहीनः पुरुषो न किंचित् ॥ " इत्यादि बहुत प्रमाणवाक्य हैं तथापि
ायमें बहुधा वर्त्तमान सामयिक महाशय कहते हैं कि, ज्योतिष कुछ वस्तु
भूतकालमें ब्राह्मणही विद्यावान् रहे सुज्ञ होनेसे उन्होंने यह पारिणामिक (दूरंदेशी)
केया कि, यदि हमारी संतानविद्या पराक्रमादियोंसे अल्पसार हो जायगी
(वृत्ति) आजीवन करेंगी इसलिये ज्योतिष शास्त्र बनाया कि, जिससे सबको
एवं ब्राह्मणोंकोही माने इत्यादि बहुतसे वाद प्रतिवाद करते हैं तथापि
 यह शास्त्र किसने आरंभमें बनाया और कब बना ? यह तो
ं कि जो खगोल भूगोल भूमिमान (पैमायश) सूर्य-चंद्रग्रहण
त्रि पक्ष मास वर्ष आदि काल सब ज्योतिषहीसे तो प्रकट है, रहा

फलादेश पक्ष यह प्राचीनग्रंथकर्त्ता आचार्य्योंकी बुद्धिमत्ता है कि सब जीवमात्र अपनेर कर्मानुसार फल पाते हैं यह तो प्रकटही है. परंतु वह कर्म एवं उसका परिणाम अदृश्य है इसे दृश्य करनेके लिये उन महात्माओंने ऐसे २ हिसाब (गणित) नियत किये कि जिनकी संज्ञायें सूर्य्यादि ग्रह और तिथि वार नक्षत्र योग करण लग्न मुहूर्त्त आदि नियत कर दिये हैं जिनके द्वारा सद्विचारशील पाठक भूत भविष्य वर्त्तमान फल कह सकते हैं, जैसे बहुतसे गणितादि कामोंमें कोई करण (इष्ट) मानके आगे कार्य्य संपादित होते हैं ऐसेही ज्योतिष फलादेशमें (करण) इष्टकाल एवं मुहूर्त्त हैं इनसे सभी कार्य्य होते हैं तथा च यह वेदमूर्ति (ईश्वर) का एक मुख्य अंग नेत्र है. वेद इसको प्रमाण करता है इसके विना कोईभी (यज्ञादिकृत्य) श्रौत स्मार्त कर्म नहीं होते और प्रत्यक्ष चमत्कृतभी है वे० प्र० " विद्याहवैब्राह्मणमाजगामगोपायमाशेवधिष्टेयमस्मि। असूयका-यानृजवेयतायनमांब्रूयावीर्य्यवतीतथास्याम् " इत्यादि हैं इसमें ज्योतिषकी मुख्यता इस प्रकार है कि (श्लोक) " अन्यानि शास्त्राणि विनोदमात्रं न किंचिदेषां तु विशिष्ट-मस्ति। चिकित्सितं ज्योतिषमंत्रवादाः पदे पदे प्रत्ययमावहंति॥१॥ " और शास्त्र तो विनोद (दिलबहलाव वा मनोरंजक) मात्र हैं वैद्यशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, मंत्रशास्त्र, धर्मशास्त्र प्रत्येक पदपदमें प्रत्यय (विश्वास) देते हैं जैसे ज्योतिषमें प्रत्यक्ष ग्रह-गणित है कि चंद्रमाके शृंगोन्नति, ग्रहण ग्रहयुति तुरीयादि यंत्र वा नलिकादियोंसे ग्रहच्छाया, ग्रहोंका उदयास्त, ठीक समयपर मिल जाते हैं तथा जन्म, वर्ष, प्रश्न आदि विचारमें यदि इष्टशुद्ध हो एवं विचारवालाभी सुपठित हो तो भूत भविष्य वर्त्तमान फल ठीकही मिलते हैं इसे संसारके शुभार्थ ब्रह्माजीने वेदविभागानंतर अंगोंमें स्थापन किया "अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनीयेत १ दर्शपूर्णमासाभ्यां यजतः २ " इत्यादि श्रुति हैं आठ वर्ष-की गणना सूर्य्यचारवश गणितहीसे है तथा दर्शपौर्णमासादि ज्ञानभी विना ज्योतिष होही नहीं हो सकता लिखाभी है कि "वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्व्या विहिताश्च यज्ञाः। तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्॥१॥" यज्ञ ईश्वरही है इसके उपयोगी वेद हैं कालमान समयका है कालस्वरूप परमात्मा होनेसे "कालात्मा" यज्ञपुरुषकोही कहते हैं वही तो ज्योतिष है जिसके विना कालज्ञान नहीं होता विना काल ज्ञानयज्ञादि कुछ नहीं हो सकते, अन्योन्य प्रमाणभी बहुत हैं किंतु इस समय बहुत व्याख्यानको छोडकर प्रयोजनही लिखना प्रयोजन है कि श्रुतिनेत्र ज्योतिषशास्त्र ऐसा अद्वितीय एवं प्रत्यक्ष चमत्कृत होनेपरभी सहसा सर्व साधारणके हृदयकमलोंमें विका[illegible] समान नहीं होता परंच विपरीतताका आभास स्वतः कालानुसार उत्पन्न होने लगता[illegible] इसका हेतु सामयिकी महिमासे मूल भाषा (संस्कृत) का ह्रास होनाही है इस[illegible] प्रत्यक्ष शास्त्र क्रमशः लोप होता जाता है. द्वितीय यह है कि इस संस्कृता[illegible] यमें बहुतसे मनुष्य कुछ सामान्य फलादेश देख सुनकर यद्वा कियत्प्रकार भूत[illegible]

का अभ्यास करके तत्काल मनोहर बातें चमत्कारी दिखलाकर लोगोंके मन मोहन करके अल्प श्रमसे अपना लाभ उठाय लेते हैं उस समय यह वे पाखंडी (पंडितजी) तो कहाते हैं परंतु परिणाममें उनके कहे हुये फल अविश्वास्य प्रगट हो जाते हैं इसपर जनश्रुति हो बैठती है कि ज्योतिषही पाखंडी है उन पाखण्डियोंकी चातुर्यताको कोई नहीं कहता इत्यादि व्यवस्था होनेमें सर्वसाधारणको ज्योतिषशास्त्रमें सुबोध होने निमित्त प्रचलित ग्रंथों (जिनका अर्थ सर्वसाधारणके बोध नहीं हो सकता) की भाषाटीका करनाही एकमात्र उद्धार समझकर " गढवाल देशाधीश महामहिम क्षत्रियकुलभास्कर श्रीबदरी-शमूर्ति श्रीमन्महाराजाधिराज प्रताप शाहदेव बहादुरके आज्ञानुसार कुछ काल पहिले तथा उनके सत्पुत्र श्री५ श्रीमन्महाराजाधिराज सत्कीर्तिमान् कीर्तिशाहदेव बहादुरके आज्ञासे सांप्रतमेंभी मैंने पूर्वश्लोकोक्त तीन स्कंधोंमेंसे (होरा) फलादेश ग्रंथ जातकोंमें मुख्य बृहज्जातक एवं ताजिकोंमें मुख्य तंत्रत्रयात्मक नीलकंठी समस्त प्रश्नविचारसहित और चमत्कारचिंतामणी भावकुतूहल आदि ग्रंथोंकी भाषाटीका प्रकाश करके कुछ संहिता वैशेषिक सारणी सदृश मुहूर्त्तग्रंथके भा० टी० प्रकाश करनेका विचार हुआ कि मुहूर्त्त सभी कामोमें सभीको आवश्यक होते हैं और सुमुहूर्त्तका फल शुभही होता है इसके संहिता आदि बडे ग्रंथ पाठ बहुत हैं जो जो कोई छोटे हैं तो उनके प्रयोजनभी स्वल्पही हैं इसलिये यह मुहूर्त्तचिंतामणि नामक ग्रंथ जो पाठमें थोडा सरस कविता अनेक प्रकार छंदोंसे सुशोभित और अर्थ बहुत है तथा औरभी विशेषता है कि अन्य मुहूर्त्तग्रंथ रत्नमाला आदियोंमें तिथि वार नक्षत्र आदियोंके पृथक् २ प्रकरण हैं एक कार्य्य निमित्त मुहूर्त्त देखनेमें अनेक प्रकरण देखने पडते हैं इसमें जो कुछ कार्य्य देखना हो तो एकही स्थलमें तिथ्यादि लग्न लग्नांश पर्यंत एवं धर्मशास्त्रीय निर्णयभी मिल जाते हैं इनही शुभलक्षणोंसे इस आधुनिक ग्रंथकी प्रचलता एवं सर्वत्र प्रमाणता हो रही है परंतु अर्थ इसका सहसा स्फुरण नहीं होता इसलिये इसीकी भाषाटीका करना योग्य समझ इसे देख पंचांग मात्र जाननेवालेभी मुहूर्त्तका विचार उत्तम प्रकारसे जान लेंगे तथा पाठक पाठयिताओंकोभी सुगमता हो जायगी.

यद्यपि इस ग्रंथकी भा० टी० मुद्रितभी हो गई है तथापि पुनः प्रयास करनेका प्रयोजन विद्वज्जन सुज्ञ पाठकवृंद इस टीकाका सारांश देख विचारकर जान जांयगे कि कैसा सरल, स्वच्छ एवं निरर्गल अर्थ ग्रंथकर्ता आचार्य्यके आशयानुमत प्रगट किया गया है. इसके विचारशील सज्जन इस परोपकारार्थ परिश्रमको चरितार्थ प्रसन्नतासे करेंगे.

॥ श्रीः ॥

अथ मुहूर्त्तचिन्तामणिस्थविषयाणाम् अनुक्रमणिका ।

अथ संक्रान्तिप्रकरणम् ३ ।

अथ गोचरप्रकरणम् ४ ।

अथ संस्कारप्रकरणम् ५ ।

अथ विवाहप्रकरणम् ६ ।

वधूप्रवेशप्रकरणम् ७ ।

द्विरागमनप्रकरणम् ८ ।

अग्न्याधानप्रकरणम् ९ ।

राज्याभिषेकप्रकरणम् १० ।

अथ यात्राप्रकरणम् ११ ।

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

भाषाटीकासहितः

मुहूर्तचिन्तामणिः ।

श्रीनाथपादाम्बुजदीर्घनौकामाश्रित्य तर्तुं विबुधैरपार्यम् ॥
श्रीरामदैवज्ञकवेः कवित्वसिन्धुं प्रवृत्तोस्मि कियद्वराकः ॥ १ ॥
निजतातपदाम्बुजातबोधो मौहूर्ते वितनोमि बालतुष्ट्यै ॥
विवृतिं नृगिरा महीधराख्यः क्षन्तव्यं विबुधैर्यदत्र मेऽघम् ॥ २ ॥

भाषाकार विघ्नविघातार्थ मंगलाचरणरूप निजगुरुको प्रणामपूर्वक भाषारचनाका प्रयोजन कहता है कि सत्कवि रामदैवज्ञके कवितारूपी समुद्र जो कि विद्वानोंमेंभी सहसा पार नहीं उतरा जाता, अर्थात् एकाएकी कविके आशयको बिना कुछ आधार नहीं पाते इसको मैं एक छोटासा (वराक) अल्पसार (श्रीनाथ) लक्ष्मीनाथ विष्णु अथवा (श्री) शोभायुक्त (नाथ) आदिनाथ शिव, विशेषतः आनंदानंद नाथ आदि गुरुपंक्तित्रिकमेंसे प्रथम श्रेण्यधीश श्रीनाथ परब्रह्मरूप सच्चिदानंदमय गुरुके चरणकमलही एक बडी (नौका) नावके आश्रय पायके उक्त कवितासमुद्र तरनेको उद्यत हुआ हूं अपने जनकके चरण कमलोंके प्रसादसे पाया है मुहूर्तादिकका बोध (ज्ञान) जिसने ऐसा मैं महीधरनामा (ब्राह्मण राजधानी टीहरी जिला गढवाल निवासी) मुहूर्त्तग्रंथोंसे अनभिज्ञोंके प्रसन्नतार्थ इस **मुहूर्त्तचिंतामणि**नामक ग्रंथकी सरल हिन्दी-**भाषाटीका** करता हूं. तथा प्रार्थनाभी करता हूं कि इसमें जो कुछ मेरी (दुष्कृत) अयोग्यता हो तो विद्वज्जन क्षमा करें ॥ १ ॥ २ ॥

आचार्य प्रथम मंगलाचरण इंद्रवज्रा छंदसे करता है ।

(इं०व०) गौरीश्रवःकेतकपत्रभङ्गमाकृष्यहस्तेनददन्मुखाग्रे ॥
विघ्नंमुहूर्ताकलितद्वितीयदन्तप्ररोहोहरतुद्विपास्यः ॥ १ ॥

श्रीगणेशजीने निजमाता (गौरी) पार्वतीजीके कानमें पहिरा हुवा केतकीके (पत्र) पुष्पके एक भागको अपने शुंडादण्डसे बाललीला अपनी माताको दिखलानेके लिये बलात्कारसे (ग्रहण) खेंचकर अपने मुखमें एक ओरसे भक्षण निमित्त धारण किया जितने भक्षण न हो सका इतने (मुहूर्त) क्षणपर्यंत द्विदंतकी शोभा देखनेमें आई क्यों कि गणेशजी एकदंत हैं दूसरे और थोडे समय केतकीपुष्पके टुकडे रखनेसे द्विदंत जैसे प्रतीत हुये. यह अद्भुतोपमाऽलंकार है और (द्विपास्य) एकवार शुंडासे पुनः मुखसे पीनेवाला हाथीका है मुख जिसका ऐसा गणेश विघ्नको हरण करे ॥ १ ॥

(उ०जा०) क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुंसंक्षिप्तसारार्थविलासगर्भम् ॥
अनन्तदैवज्ञसुतःसरामोमुहूर्त्तचिन्तामणिमातनोति ॥ २ ॥

क्रिया (जातकर्म) आदि समस्त कार्यसमूहकी प्रतिपत्ति (यह कार्य अमुक दिन शुभ अमुकमें अशुभ) का हेतु (कारणभूत) एवं संक्षेप (थोडे) शब्दोंमें सार (निकृष्ट) अर्थका विलास प्रकाश है गर्भ (अंतर) में जिसके अर्थात् मुहूर्त्तग्रंथ प्राचीन अनेक हैं परंतु उनमें पाठ बहुत और तिथ्यादि विचारोंके पृथक् प्रकरण हैं इसमें समस्त कार्यनिर्वाह थोडेही शब्दोंसे एकही स्थलमें हो जाता है इसलिये दिनशुद्धिविशेषके " यद्वा " मुहूर्त्तदिनके पंद्रहवें भाग (दो घडी) उपलक्षितकालके चिंता शुभाशुभनिरूपणरूप विचारका मणि. जैसे हीरा आदि समस्त कांतिमानोंके आधार है ऐसेही समस्त मुहूर्त्त (दिनशुद्धि) के आधार इस मुहूर्त्तचिंतामणिनाम ग्रंथको जगद्विख्यात अनंत नामा दैवज्ञ (ज्योतिषी) का पुत्र रामदैवज्ञ विस्तारित अर्थात् विधिनिषेधके संनिवेश (विधान) का निरूपण करता है ॥ २ ॥

(अनुष्टुप्) तिथीशावह्निकौगौरीगणेशोहिर्गुहोरविः ॥
शिवोदुर्गान्तकोविश्वे हरिःकामःशिवःशशी ॥ ३ ॥

प्रथम पंचांगके शुभाशुभनिरूपणार्थ तिथियोंके स्वामी कहते हैं:—कि प्रतिपदाका स्वामी अग्नि, एवं द्वि० का ब्रह्मा, तृ० पार्वती, च० गणेश, पं० सर्प, ष० कार्तिकेय, स० सूर्य, अ० शिव, न० दुर्गा, द० यम, ए० विश्वेदेव, द्वा० हरि, त्रयोदशी कामदेव, चतुर्दशी शिव, पू० अ० चंद्रमा हैं इनके कहनेका प्रयोजन यह है कि जिस तिथिका जो अधिपति उसका पूजन उसीमें होता है तथा उनके जैसे गुण एवं कर्म हैं वैसेही प्रकार कर्त्तव्य कार्यका शुभाशुभ परिणाम देते हैं जैसे रत्नमाला आदियोंके तिथिप्रकरणोक्त प्रयोजन है कि प्रतिपदामें विवाह, यात्रा, व्रतबंध, प्रतिष्ठा, सीमंत, चूडा, वास्तुकर्म, गृहप्रवेश आदि मंगल न करना परंतु यहां विशेषतः शुक्ल प्र० की है कृष्णमें उक्त कार्योंमेंसे कुछहूं होतेहैं इनकी स्पष्टता आगे लिखेंगे. द्वितीयामें राज्यसंबंधी अंग वा चिन्होंके कृत्य व्रतबंध प्रतिष्ठा विवाह यात्रा भूषणादि कर्म शुभ होते हैं, तृतीयामें द्वितीयाके उक्त कर्म और गमनसंबंधी कृत्य, शिल्प, सीमंत, चूडा, अन्नप्राशन, गृहप्रवेशभी शुभ होते हैं. रिक्ता ४। ९। १४ में अग्निकर्म मारणकर्म बंधनकृत्य शस्त्र विष अग्निदाह घात आदिक विषयिक कृत्य शुभ और मंगलकृत्य अशुभ होते हैं, पंचमीमें समस्त शुभकृत्य सिद्धि देते हैं परंतु ऋण (कर्जा) इसमें न देना देनेसे नाश हो जाता है. षष्ठीमें तैलाभ्यंग, यात्रा, पितृकर्म और दंतकाष्ठोंके विना सभी मंगल पौष्टिक कर्म करने तथा संग्रामोपयोगी शिल्प, वास्तु, भूषण वस्त्रभी शुभ हैं. सप्तमीमें जो जो कृत्य द्वि० तृ० पं० स० में कहे हैं वे सिद्ध होतेहैं. अष्टमीमें रणोपयोगी कर्म, वास्तुकृत्य, शिल्प, राजकृत्य, लिखनेका काम, स्त्री, रत्न, भूषण कृत्य शुभ होते हैं. दशमीमें जो जो द्वि० तृ० पं० स० में कहे हैं वे सिद्ध होते हैं. एकादशीमें व्रत उपवासादि समस्त धर्मकृत्य देवताका उत्सव, वास्तुकर्म, सांग्रामिक कर्म, शिल्प शुभ होते हैं. द्वादशीमें समस्त स्थावर जंगमके धर्म पुष्टिकारक शुभकर्म सभी सिद्ध होते हैं. त्रयो० में द्वि० तृ० पं० स० के उक्त कृत्य शुभदायक होते हैं. पूर्णिमामें यज्ञक्रिया, पौष्टिक मंगल, संग्रामोपयोगी, वास्तुकर्म, विवाह, शिल्प, समस्त भूषणादि सिद्ध होते हैं.

अमावास्यामें पितृकर्म मात्र होते हैं कहीं शाबरोक्त उग्रकर्मभी कहे हैं अन्य मंगल पौष्टिकोत्सवादि कृत्य न करने ॥ ३ ॥

(उपजाति) नन्दाचभद्राचजयाचरिक्तापूर्णेतितिथ्योऽशुभम-ध्यशस्ताः ॥ सितेऽसितेशस्तसमाधमाःस्युःसितज्ञभौमार्कि-गुरौचसिद्धाः ॥ ४ ॥

तिथियोंके तीन आवृत्तिमें नंदादि पंच संज्ञा क्रमसे हैं जैसे १ । ६ । ११ नंदा. २ । ७ । १२ भद्रा. ३ । ८ । १३ जया. ४ । ९ । १४ रिक्ता. ५ । १० । १५ पूर्णा संज्ञक हैं इनके जैसे नाम वैसेही फलभी हैं तथा शुक्लपक्षमें पूर्वत्रिभाग (प्रतिपदासे पंचमी) पर्यंत अशुभ अर्थात् इनमें चंद्रमा क्षीणही रहता है द्वितीयत्रिभाग (पंचमीसे दशमी) पर्यंत मध्यम और अंतिमत्रिभाग (दशमीसे पूर्णमासी) पर्यंत शुभ होती हैं तथा कृष्णपक्षमें पू० त्रि० (पंचमी) पर्यंत शुभ. म० त्रि० (पंचमीसे दशमी) पर्यंत मध्यम. अं० त्रि० (एकादशीसे अमा०) पर्यंत अधम होती हैं चतुर्थपादका अर्थ यह है कि शुक्रवारके दिन नंदा १ । ६ । ११ । बुधके भद्रा २ । ७ । १२ । मंगलके जया ३ । ८ । १३ । शनिवारके रिक्ता ४ । ९ । १४ । गुरुवारके दिन पूर्णा ५ । १० । १५ । सिद्धि देनेवाली हैं इसका प्रयोजन यह है कि " सिद्धा तिथिर्हंति समस्तदोषान्० " इत्यादि० मासशून्य, मासदग्ध, दिनदग्ध आदि दोषोंको हटाकर कार्य्य सिद्धि देती हैं ॥ ४ ॥

(शालिनी) नन्दाभद्रानन्दिकाख्याजयाचरिक्ताभद्राचैवपूर्णा-मृतार्कात् ॥ याम्यंत्वाष्ट्रंवैश्वदेवंधनिष्ठार्यम्णंज्येष्ठांत्यंरवेर्दग्धभं स्यात् ॥ ५ ॥

सूर्य्यादिवारोंमें नन्दादि उक्ततिथि क्रमसे अशुभ (घातक) होती हैं जैसे रविवारको नंदा (१ । ६ । ११) सोमवारको भद्रा (२।७।१२) मंगलको नंदा (१।६।११) बुधको जया (३ । ८ । १३) गुरुवारको रिक्ता (४ । ९ । १४) शुक्रवारको भद्रा (२ । ७ । १२) शनिवारको पूर्णा (५ ।

१० । १५) ऐसेही नक्षत्रभी, जैसे रविवारको भरणी, सोमवारको चित्रा, मंगलको उत्तराषाढा, बुधको धनिष्ठा, गुरुवारको उत्तराफाल्गुनी, शुक्रको ज्येष्ठा, शनिवारको रेवती दग्धनक्षत्र होते हैं उक्त घातकतिथि तथा ये दग्धनक्षत्र शुभ कृत्यमें वर्ज्य हैं ॥ ५ ॥

तिथिचक्रम् ।

तिथि	तिथि फ.	स्वामी	संज्ञा	शुक्ल	कृष्ण	पाल
१	सिद्धि	अग्नि	नन्दा	अशुभ	शुभ	कोहडा
२	कार्य साधन	ब्रह्मा	भद्रा	अ०	शुभ	वनभटा
३	आरोग्य	गौरी	जया	अ०	शुभ	नोन
४	हानि	गणेश	रिक्ता	अ०	शुभ	तिल
५	शुभ	सर्प	पूर्णा	अ०	शुभ	खट्टा
६	अशुभ	स्कंद	नंदा	मध्यम	मध्यम	तेल
७	शुभ	सूर्य	भद्रा	म०	म०	आवला
८	व्याधि	शिव	जया	म०	म०	नारियल
९	मृत्युदा	दुर्गा	रिक्ता	म०	म०	लड्डुआ
१०	धनदा	यम	पूर्णा	म०	म०	चिचंडा
११	शुभा	विश्वे	नन्दा	शुभ	अशुभ	सेमदाना
१२	सर्वसिद्धि	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	सर्वसिद्धि	काम	जया	शुभ	अ०	भटा
१४	उग्रा	शिव	रिक्ता	शुभ	अ०	सहद
१५	पुष्टिदा	चन्द्र	पूर्णा	शुभ	अ०	जुवा
३०	अशुभ	पितर	०	०	०	मैथुन

(अनुष्टुप्) षष्ठ्यादितिथयोमन्दाद्विलोमंप्रतिपद्बुधे ॥
सप्तम्यर्केऽधमाषष्ठ्याद्यामाश्चरदग्धावने ॥ ६ ॥

शनिवारसे विपरीत तथा षष्ठीसे सीधे क्रमसे गिननेमें तथा प्रतिपदाको बुध सप्तमीको रवि अधम शुभकार्यमें वर्जनीय क्रकचयोग होता है. पंचांगोंमें इसे वारदग्ध लिखते हैं. इनकी सुगमता यहभी है कि तिथिवार जोडनेसे १३ जिस

दिन हो वही वा० द० है जैसे शनिवारकी षष्ठी शुक्रकी सप्तमी बृहस्पतिवारकी अष्टमी बुधकी नवमी मंगलकी दशमी चंद्रवारकी एकादशी रविवारकी द्वादशी और बुधकी प्रतिपदा रविकी सप्तमी ये पृथक् २ ही कही हैं. और षष्ठी, प्रतिपदा, अमाके दिन काष्ठविशेष नीमआदिसे दंतधावन (दांतन) न करना किसी आचार्यके मतसे नवमी तथा रविवारकोभी वर्जित है ॥ ६ ॥

(इन्द्रवंशा) षष्ठ्यष्टमीभूतविधुक्षयेषुनोसेवेतनातैलपलेक्षुरंतम् ॥
नाभ्यञ्जनंविश्वदशाब्दिकेतिथौधात्रीफलैः स्नानममाद्रिगोष्वसत्॥७॥

षष्ठीके दिन तैलाभ्यंग, अष्टमीको मांसभोजन, चतुर्दशीको क्षौर, अमावास्याके दिन स्त्रीसंभोग मनुष्योंने न करना किसीका मत है मैथुन सभी पर्वदिनोंमें न करना. चतुर्दशी, कृष्णाष्टमी, अमा, पूर्णिमा, सूर्यसंक्रांति पर्व होते हैं उक्त कामोंमें तिथि तात्काल मानी जाती है उदयादिव्यापिनी नहीं तथा त्रयोदशी, दशमी, द्वितीयाके दिन तैलाभ्यंग (उबटन) न करना यह नियम केवल मलापकर्षस्नानमात्रको ब्राह्मणरहित तीन वर्णोंको है और अमा, सप्तमी, नवमीको आंमलेके चूर्णसे स्नान न करना करनेसे धन एवं संतती क्षीण होती है अन्य दिनों आमले तिलकल्कसहितसे स्नान पुण्य देता है, यह वैद्यशास्त्रसेभी स्नानकी औषधी वर्ण-कांतिकारक है ॥ ७ ॥

(इन्द्रवज्रा) सूर्य्येशपञ्चाग्निरसाष्टनन्दावेदाङ्गसप्ताश्विगजाङ्कशैलाः ॥
सूर्य्याङ्गसप्तोरगगोदिगीशादग्धाविषाख्याश्चहुताशनाश्च॥८॥

सूर्यवारकी द्वादशी चं० एकादशी मं० पंचमी बु० तृतीया बृ० षष्ठी शु० अष्टमी शनिवारकी नवमी दग्धयोग होता है. रविवारकी चतुर्थी चं० षष्ठी मंगल० सप्तमी बु० द्वितीया बृ० अष्टमी शु० नवमी श० सप्तमी विषयोग होता है. रविवारकी द्वादशी चं० षष्ठी मं० सप्तमी बु० अष्टमी बृ० नवमी शु० दशमी श० एकादशी हुताशनयोग होता है. ये ३ योग नामसदृश फल देते हैं शुभकार्यमें वर्जित हैं ॥ ८ ॥

(उपजाति) सूर्य्यादिवारेतिथयोभवन्तिमघाविशाखाशिवमूलवह्निः॥
ब्राह्मंकरोर्काद्यमघण्टकाश्चशुभेविवर्ज्यागमनेत्ववश्यम् ॥९॥

रविवारकी मघा, चं० विशाखा, मं० आर्द्रा, बु० मूल, बृ० कृत्तिका, शु० रोहिणी, श० हस्त यमघंटयोग होते हैं. इतने दग्ध विषाख्य, हुताशन, यमघंट योग शुभकार्यमें वर्जित हैं विशेषतः यात्राहीमें वर्ज्य हैं आवश्यकमें इनके परिहारभी ग्रंथांतरोंमें हैं कि विंध्याचल तथा हिमालयके बीच इनका विचार मुख्य है अन्यदेशोंमें नहीं तथा लग्नसे केंद्रकोणमें शुभ ग्रह हो तो इनका दोष नहीं और किसीका मत है कि यमघंटकी ८ घटी वर्ज्य हैं वसिष्ठमत है कि उक्त ४ योग दिनमें अनिष्ट फल देते हैं रात्रिमें नहीं ॥ ९ ॥

(रव्यादिवारप्रतास्तिथयोदग्धाद्याः)							
र	च	म	बु	बृ	शु	श	वाराः
१२	११	५	३	६	८	९	दग्धास्तिथयः
४	६	५	२	८	९	७	विषाख्यास्ति
१२	६	७	८	९	१०	११	हुताशनास्ति
मघा	विशा	आर्द्रा	मूल	कृत्ति	रोहि	हस्त	यमघण्टानक्ष०

(शा०वि०) भाद्रेचन्द्रदृशौनभस्यनलनेत्रेमाधवेद्वादशी
पौषेवेदशराइषेदशशिवामार्गेद्रिनागामधौ ॥
गोष्ठोचोभयपक्षगाश्चतिथयः शून्याबुधैः कीर्त्तिता
ऊर्जाषाढतपस्यशुक्रतपसांकृष्णेशराङ्गाब्धयः ॥ १० ॥
शक्राःपञ्चसितेशक्राद्यग्निविश्वरसाः क्रमात् ॥

मासशून्य (मासदग्ध) तिथि कहते हैं. भाद्रपदकी १।२ तिथि श्रावणकी ३।२ वैशाखकी १२ पौषकी ४।५ आश्विनकी १०।११ मार्गशीर्षकी ७।८ चैत्रकी ३।८ दोनोंही पक्षोंमें शून्य होती हैं तथा कार्तिककी ५ आषाढकी ६ फाल्गुनकी ४ ज्येष्ठकी १४ माघकी ५ कृष्णपक्षमें शून्य होती हैं और कार्ति-

ककी १४ आषाढकी ७ फाल्गुनकी ३ ज्येष्ठकी १३ माघकी ६ शुक्लपक्षमें शून्य होती हैं इनहीको मासदग्धभी कहते हैं ॥ १० ॥

(अनुष्टुप्) तथानिन्द्यंशुभेसार्पंद्वादश्यांवैश्वमादिमे ॥ ११ ॥
अनुराधाद्वितीयायांपञ्चम्यांपित्र्यभंतथा ॥
त्र्युत्तराश्चतृतीयायामेकादश्यांचरोहिणी ॥ १२ ॥
स्वातीचित्रेत्रयोदश्यांसप्तम्यांहस्तराक्षसौ ॥
नवम्यांकृत्तिकाष्टम्यांपूषाषष्ठ्यांचरोहिणी ॥ १३ ॥

तिथिनक्षत्र संबंधि दोष कहते हैं. द्वादशीमें आश्लेषा, प्रतिपदामें उत्तराषाढा, द्वितीयामें अनुराधा, तृतीयामें तीनहूं उत्तरा, एकादशीमें रोहिणी, त्रयोदशीमें स्वाती चित्रा, सप्तमीमें हस्त मूल, नवमीमें कृत्तिका, अष्टमीमें पूर्वाभाद्रपदा, पंचमीमें मघा, शुभकार्यमें वर्जनीय हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

(अनुष्टुप्) कदास्रभेत्वाष्ट्रवायूविश्वेज्यौभगवासवौ ॥
वैश्वश्रुतीपाशिपौष्णेअजपाद्यग्निपित्र्यभे ॥ १४ ॥
चित्राद्वीशौशिवाश्व्यर्कौ वसुमूलेयमेन्द्रभे ॥
चैत्रादिमासेशून्याख्यातारावित्तविनाशदा ॥ १५ ॥

चैत्रमहीनेमें रोहिणी अश्विनी, वैशाखमें चित्रा स्वाती, ज्येष्ठमें उत्तराषाढा श्रवण, भाद्रपदमें शतभिषा रेवती, आश्विनमें पूर्वाभाद्रपदा, कार्तिकमें कृत्तिका मघा, मार्गशीर्षमें चित्रा विशाखा, पौषमें आर्द्रा अश्विनी हस्त, माघमें श्रवण मूल, फाल्गुनमें भरणी ज्येष्ठा शून्य नक्षत्र होते हैं इनमें शुभकार्य करनेसे वित्त (धनादि) नाश होते हैं ॥ १४ ॥ १५ ॥

(अनुष्टुप्) घटोझषोगौर्मिथुनंमेषकन्यालितौलिनः ॥
धनुःकर्कोमृगःसिंहश्चैत्रादौशून्यराशयः ॥ १६ ॥

शून्यराशि कहते हैं कि चैत्रमें कुंभ, वैशाखमें मीन, ज्येष्ठमें वृष, आषाढमें मिथुन, श्रावणमें मेष, भाद्रपदमें कन्या, आश्विनमें वृश्चिक, कार्तिकमें तुला, मार्गशीर्षमें धन, पौषमें कर्क, माघमें मकर, फाल्गुनमें सिंहराशि शून्य होती हैं इनकाभी वही फल है ॥ १६ ॥

मासेषु शून्यसंज्ञकाः ।

शून्य	चै.	वै.	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.
तिथयः	८।८ उभ पक्ष	१२ उभ पक्ष	कृ १४ शु १३	कृ ६ शु ७	३ २ उ प.	१।२ उ प.	१०।११ उ. प.	कृ ५ शु १४	७।८ उ. प	४।५ उ प	कृ. ५ शु. ९	कृ. ४ शु ३
शून्य नक्षत्राणि	रोहि अश्विनी	चित्रा स्वाति	उत्तराषाढा पुष्य	पू फा धनि	उ षा श्र ध	शत तारा रेवती	पू भा	कृत्ति मघा	चि वि.	आर्द्रा आश्वि हस्त	श्रव. मूल	भर. ज्ये.
शून्यराशयः	११	१२	२	३	१	६	८	७	९	४	१०	५

(इन्द्रवज्रा) पक्षादितस्त्वोजतिथौघटैणौ मृगेन्द्रनक्रौमिथुनाङ्गनेच॥
चापेन्दुभेकर्कहरीहयान्त्यौगोन्त्यौचनेष्टेतिथिशून्यलग्ने॥१७॥

(पक्षादि) प्रतिपदासे लेकर विषमतिथियोंमें ये लग्न शून्य होते हैं जैसे प्रतिपदामें तुला, मकर, तृ० में मकर, सिंह, पं० मिथुन, कन्या; स० धन, कर्क; नौ० सिंह, कर्क; ए० धन, मीन ये शून्यलग्न शुभकार्योंमें वर्ज्य हैं ॥ १७ ॥

(अनु०) नारदः–तिथयोमासशून्याश्चशून्यलग्नानियान्यपि ॥
मध्यदेशेविवर्ज्यानिनदूष्याणीतरेषुतु ॥ १८ ॥
पंग्वन्धकाणलग्नानिमासशून्याश्चराशयः ॥
गौडमालवयोस्त्याज्याअन्यदेशेनगर्हिताः ॥ १९ ॥

जो मासशून्य तिथ्यादि कहे हैं इनके निमित्त विशेषता नारद कहते हैं कि, मासशून्यतिथि तथा जो शून्यलग्न कहे हैं वेभी मध्यदेशहीमें वर्ज्य हैं और देशोंमें इनका दोष नहीं तथा पंगु, अंध, काण, लग्न (जो विवाह प्रकरणमें कहे हैं) और मासशून्यराशि गौडदेश, (मालव) मलबार (केरल) देशमें वर्जित करने और देशोंमें निंद्य नहीं है ॥ १८ ॥ १९ ॥

(अनु०) वर्जयेत्सर्वकार्येषुहस्तार्कंपंचमीतिथौ ॥
भौमाश्विनीचसप्तम्यांपष्ठ्यां चन्द्रेन्द्रवंतथा ॥ २० ॥

वार नक्षत्र योगसे जो अमृतसिद्धियोग होते हैं वे किसी तिथिके योगसे अनिष्टभी हो जाते हैं. जैसे रविवारका हस्त सिद्धि है परंतु पंचमीके दिन हो तो विरुद्ध है ऐसेही मंगलवारकी अश्विनी सप्तमीको, सोमवारका मृगशिर षष्ठीको॥२०॥

बुधानुराधामष्टम्यांदशम्यांभृगुरेवतीम् ॥
नवम्यांगुरुपुष्यंचैकादश्यांशनिरोहिणीम् ॥ २१ ॥

बुधवारकी अनुराधा अष्टमीको, शुक्रवारकी रेवती दशमीको, गुरुवारका पुष्य शनिवारकी रोहिणी एकादशीको विरुद्ध होती हैं ऐसे योग हो तो समस्त शुभकृत्यमें वर्जित करने ॥ २१ ॥

(अनु०) गृहप्रवेशेयात्रायांविवाहेचयथाक्रमम् ॥
भौमाश्विनींशनौब्राह्मंगुरौपुष्यंचवर्जयेत् ॥ २२ ॥

उक्त भौमाश्विनी आदि अमृतसिद्धि योग सभी कार्य्योंमें उक्त हैं तौभी गृहप्रवेशमें भौमाश्विनी, यात्रामें शनिरोहिणी, विवाहमें गुरुपुष्य वर्जितही करना ॥ २२ ॥

(शालिनी) आनन्दाख्यः कालदण्डश्चधूम्रोधातासौम्योध्वाङ्क्षकेतूक्रमेण ॥ श्रीवत्साख्योवज्रकंमुद्गरश्चच्छत्रंमित्रंमानसंपद्मलुंबौ२३
(उ० जा०) उत्पातमृत्यूकिलकाणसिद्धीशुभोमृताख्योमुशलंगदश्च ॥ मातङ्गरक्षश्चरसुस्थिराख्यप्रवर्द्धमानाः फलदाः स्वनाम्ना ॥ २४ ॥

आनंदादियोगोंके नाम । आनंद १ कालदंड २ धूम्र ३ प्रजापति ४ सौम्य ५ ध्वांक्ष ६ ध्वज ७ श्रीवत्स ८ वज्र ९ मुद्गर १० छत्र ११ मैत्र १२ मानस १३ पद्म १४ लुंबक १५ उत्पात १६ मृत्यु १७ काण १८ सिद्धि १९ शुभ २० अमृत २१ मुसल २२ गद २३ मातंग २४ राक्षस २५ चर २६ स्थिर २७ वर्द्धमान २८ योग नक्षत्रवारके अनुसार होते हैं जैसे इनके नाम हैं वैसे फलभी देते हैं ॥ २३ ॥ २४ ॥

	आनंदादि	र.	च.	म.	बु.	गु	शु.	श.	फल
१	आनंद	अ.	मृ	अ.	ह	अ	उ	श.	सिद्धि
२	काल	भ.	आ.	म.	चि	ज्ये.	अ.	पू.	मृत्यु
३	धूम्र	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	मू	श्र	उ	असुख
४	धाता	रो.	नि	उ.	वि.	पू	ध.	रे	सौभाग्य
५	सौम्य	मृ.	अ.	ह.	अ	उ	श.	[illegible]	बहुसुख
६	ध्वांक्ष	आ	म.	चि.	ज्ये	अ	पू	[illegible]	धनक्षय
७	ध्वज	पु	पू	स्वा	मू	श्र	उ	कृ	सौभाग्य
८	श्रीवत्स	ति	उ	वि	पू.	ध	रे	रो.	सौख्यसंपत्ति
९	वज्र	अ	ह	अ	उ	श	अ	मृ	क्षय
१०	मुद्गर	म	[illegible]	ज्ये	अ	पू	भ	आ	लक्ष्मीक्षय
११	छत्र	पु	स्वा	मू	श्र	उ.	कृ	पु	राजसम्मान
१२	मित्र	उ	वि	पू	ध	रे	रो	ति	पुष्टि
१३	मान	ह	अ	उ	श	अ	मृ	अ	सौभाग्य
१४	पद्म	चि	ज्ये.	अ	पू	भ	आ.	म.	धनागम
१५	लुंबक	स्वा	मू	श्र	उ	कृ	पु	पू	धनक्षय
१६	उत्पात	वि	पू	ध.	रे	रो	ति	उ	प्राणनाश
१७	मृत्यु	अ	उ	श	अ	मृ	अ	ह	मृत्यु
१८	काण	ज्ये	अ	पू	भ	आ.	म	चि.	क्लेश
१९	सिद्धि	मू	श्र	उ	कृ	पु	पू	स्वा	कार्यसिद्धि
२०	शुभ	पू	ध	रे	रो	पु	उ	वि	कल्याण
२१	अमृत	उ	श	अ	मृ	आ	ह	अ	राजसम्मान
२२	मुशल	अ.	पू	भ	आ	म	चि	ज्ये	धनक्षय
२३	गदा	श्र	उ	कृ	पु	पू	स्वा	मू.	[illegible]
२४	मातंग	ध	रे	रो	ति	उ	वि	पू	कुलवृद्धि
२५	राक्षस	श	अ	मृ.	अ.	ह	अ	उ	महाकष्ट
२६	चर	पु	भ	आ.	म	चि	ज्ये	अ	कार्यसिद्धि
२७	स्थिर	उ	कृ	पू	पू	स्वा	मू	श्र	गृहारम्भ
२८	वर्द्धमान	रे.	रो.	पु	उ	[illegible]	पू	ध	विवाह

(अनु०) दास्रादर्कें मृगादिन्दौ सार्पाद्भौमे कराद्बुधे ॥
मैत्राद्गुरौ भृगौ वैश्वाद्गण्या मन्दे च वारुणात् ॥ २५ ॥

उक्त २८ योगोंके जाननेकी विधि यह है कि रविवारको अश्विनीसे सोम-

वारको मृगशिरसे एवं मं०को आश्लेषासे बु०को हस्तसे बृ०अनुराधासे शु०उ-त्तराषाढासे श०को शतभिषासे गिनना. जितनी संख्यामें वर्तमान दिननक्षत्र हो उतनी संख्याका उक्त योगोंमेंसे योग जानना. जैसे रविवारको अश्विनी आनंद भरणी कालदंड तथा सोमवारको हस्त, मृगशिरसे गिनकर ९ हुवा तो नव-मयोग वज्र हुआ. ऐसेही अन्यभी जानने यहां अभिजितभी गिनना चाहिये तब २८ योग होंगे ॥ २५ ॥

(शालिनी) ध्वांक्षेवज्रेमुद्गरेचेषुनाड्योवर्ज्यावेदाःपद्मलुम्बेगदेश्वाः ॥
धूम्रेकाणेमौशलेभूर्द्वयंद्वरक्षोमृत्यूत्पातकालाश्च सर्वे ॥२६॥

आवश्यकतामें दुष्टयोगोंके वर्ज्य घटीसंख्या कहते हैं कि ध्वांक्ष, वज्र, मुद्गरके ५ घटी; पद्म, लुम्बकके ४ घटी; गदकी ७ धूम्रकी १ काणकी २ मुसलकी२ और राक्षस, मृत्यु, उत्पात, कालदंडकी, समस्त ६० घटी वर्जित हैं अन्यग्रंथोमें चरयोगकी तीन घटी वर्जित करनी लिखी है ॥ २६ ॥

(अनु०) सूर्यभाद्वेदगोतर्कदिग्विश्वनखसंमिते ॥
चन्द्रर्क्षेरवियोगाःस्युर्दोषसङ्घविनाशकाः ॥ २७ ॥

जिस नक्षत्रपर सूर्य हो उससे गिनकर (दिननक्षत्र) जिसपर चंद्रमा है. उसपर्यंत ४ । ९ । ६ । १० । १२ । २० इनमेंसे कोई संख्या हो तो रवि-योग होता है यह सभी कार्यमें शुभ होता है पूर्वोक्तादिदोषोंके समूहको नाश करता है ॥ २७ ॥

(इन्द्रवज्रा) सूर्येर्कमूलोत्तरपुष्पदास्रंचन्द्रेश्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् ॥
भौमेऽव्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पंज्ञेब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रम् ॥ २८ ॥
(उपजाति) जीवेन्त्यमैत्र्यश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं शुक्रेन्त्यमैत्र्य-श्व्यदितिश्रवोभम् ॥ शनौश्रुतिब्राह्मसमीरभानि सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानिपूर्वैः ॥ २९ ॥

सिद्धियोग कहते हैं कि, रविवारको हस्त, मूल, तीनहूं उत्तरा, पुष्य, अश्वि-नी. सोमवारको श्रवण, रोहिणी, मृगशिर, तिष्य, अनुराधा. मंगलवारको अ-

श्विनी, उत्तराभाद्रपदा, कृत्तिका, आश्लेषा. बुधवारको अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, आश्लेषा. बृहस्पतिवारको रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य. शुक्रवारको रेवती, पूर्वाफाल्गुनी, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण. शनिवारको श्रवण, रोहिणी,स्वाती सर्वार्थसिद्धि होती हैं यह प्राचीन आचार्य्योंने कहा है ॥२८॥२९॥

(शालिनी) द्वीशात्तोयाद्वासवात्पौष्णभाच्चब्राह्मयात्पुष्यादर्यमर्क्षाच्चतुर्भैः ॥ स्यादुत्पातोमृत्युकाणौचसिद्धिर्वारेर्कांद्येतत्फलंनामतुल्यम् ॥ ३० ॥

रविवारको विशाखासे चार नक्षत्र क्रमशः उत्पात, मृत्यु, काण, सिद्धि योग होते हैं जैसे रविवारको विशाखा उत्पात, अनुराधा मृत्यु, ज्येष्ठा काण मूल सिद्धि होते हैं ऐसेही सोमवारको पूर्वाषाढासे मंगलको धनिष्ठासे बुधको रेवतीसे गुरुवारको रोहिणीसे शुक्रको पुष्यसे शनिको उत्तराफाल्गुनीसे उक्त ४ योग होते हैं इनके फलभी जैसे नाम वैसेही हैं ॥ ३० ॥

	योग	सू	च.	म	बु	गु.	शु	श
१	चरयोग	पू स्वा	आर्द्रा	वि	रो	पुष्य	म.	मूल
२	क्रकचयोग	१२ ति	११	१०	९	८	७	६
३	दग्धयोग	१२ ति.	११	५	३	६	८	९
४	मृत्युयोग	ति १।६।११	२।७।१२	१।१।६	म ९ १४	२।७ १२	३।८ ११	५।१० १५
५	सिद्धियोग	ति०	ति०	३।८ १३	७।२ १२	५।१० १५	१।६ ११	८।९ १४
६	उत्पातयोग	वि	पू	ध	रे	रो	पुष्य	उ.
७	मृत्युयोग	अ	उ	श	अ	मृ.	आश्ले	ह.
८	कालयोग	ज्ये	अ.	पू.	भ	आर्द्रा	म	चि
९	सिद्धियोग	मू.	श्र	उ.	कृ.	पु	पू.	स्वा
१०	यमदंष्ट्रयोग	म ध.	मू वि.	कृ.भ.	पू षा पु	उ पा अ	रो. अ.	श्र.श.
११	यमघट	म	वि	आ.	मू	कृ	रो.	ह.
१२	मुशलवज्र	म.	चि	उ.पा.	ध.	उ	ज्ये	रो.
१३	अमृतसिद्धि	ह.	अ.	अ.	अनु	पुष्य	रे.	रो.

(अनु०) कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्थाभवारजाः ॥
हूणवङ्गखशेष्वेववर्ज्यास्त्रितयजास्तथा ॥ ३१ ॥

दुष्टयोगोंके परिहार कहते हैं कि जो तिथि वारसे उत्पन्न क्रकच (वारदग्ध) आदि हैं तथा तिथि और नक्षत्रसे उत्पन्न जैसे " अनुराधा द्वितीयायाम् " इत्यादि तथा नक्षत्र वारसे उत्पन्न जैसे " याम्यां त्वाष्ट्रं वैश्वदेवं धनिष्ठार्यम्णं ज्येष्ठात्यं रवेर्दग्धभं स्यात् " इत्यादि और तिथि वार नक्षत्र तीनहूंसे उत्पन्न जैसे " वर्जयेत्सर्वकार्येषु हस्तार्के पंचमीतिथौ " इत्यादि हैं ये समस्तदोष हूणदेश (वंग) बंगाला और (खसदेश) उत्तराखण्डमें वर्जित हैं और देशोंमें निषिद्ध नहीं हैं ॥ ३१ ॥

(शा० वि०) सर्वस्मिन्विधुपापयुक्तनुलवावर्द्धनिशाह्नोर्घटी-
त्र्यंशंवैकुनवांशकंग्रहणतः पूर्वंदिनानांत्रयम् ॥
उत्पातग्रहतोऽग्रहांश्चशुभदोत्पातैश्चदुष्टंदिनं
षण्मासंग्रहभिन्नभंत्यजशुभेयोर्द्धंतथोत्पातभम् ॥ ३२ ॥

समस्त शुभकृत्योंमें वर्जित पदार्थ कहते हैं कि चंद्रमा तथा पापग्रह, सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतुसे युक्त लग्न एवं नवांशकभी सभी कार्यमें त्याज्य हैं तथा मध्यान्ह एवं अर्द्धरात्रिके मध्य १ घटी अभिजित् मुहूर्त्त उत्तम होता है परंतु इसके ठीक मध्यके (घटीत्र्यंश) २० पला (१० पूर्वकी १० परभागकी) भी त्याज्य हैं ऐसेही सूर्य चंद्र ग्रहणसे पूर्व तीन दिन और (उत्पात) प्रकृतिसे विरुद्ध होनेको उत्पात कहते हैं सो तीन प्रकार हैं. (१) दिव्य केतुदर्शन ग्रहनक्षत्र वैकृत, उल्का, निर्घात, परिवेषादि. (२) अंतरिक्ष, गंधर्वनगर, इंद्रधनुषादि. (३) भौम, पृथ्वी संबंधि भूमिकंप, वृक्षवैकृत, पशुवैकृत, अग्निजल वैकृतादि हैं जिस दिन ऐसा कोई उत्पात हो उससे तथा ग्रहण दिनसे ७ दिन पर्यंत शुभकृत्य न करना ऐसेही केतु (पुंश्चलतारा) के दर्शनमेंभी जानना और मतांतरसे ग्रहणका नियम सर्व ग्रासमें ७ दिन त्रिभागोनमें ६ दिन अर्द्धग्रासमें ४ दिन चौथाई ग्रासमें ३ दिन और १ । २ । ३ अंगुल ग्रासमें १

दिन मात्र वर्ज्य है (शुभदोत्पातमें) १ दिन वर्ज्य है (शुभदोत्पात) बिजली गिरना, भूकंप, संध्यासमयमें निर्घातशब्द, परिवेष, रज, विना अग्निधूम, सूर्य्यबिंब रक्त उदयास्तमें वृक्षोंमें आसव,तेल, गोंद, फल, पुष्प निकलना, वसंतमें गौ तथा पक्षियोंकी मदवृद्धि, तारापतन, उल्कापतन, विना अग्निशब्द, वायुमें धूमरेखा रक्त-कमल संध्यामें (अरुण) गुलाबीरंग, आकाशमें क्षोभ, नदी सुखना विनाग्रीष्म, अकस्मात् पृथ्वी फट जाना, जलजीवोंका स्थलमें आना अकस्मात् पहाड उड जाना, दिव्यस्त्री, विमान, भूतगंधर्वनगर, अद्भुतदर्शन, दिनमें शुक्ररहित तारा-ओंका देखना, पर्वतोंमें विनामनुष्य गीत, तथा बाजे सुनना, ठंडे वायुमें शर्करा, मृग तथा पक्षियोंका नाचना, यक्ष राक्षसादियोंका देखना, विनामनुष्य मनुष्यकी वाणी सुनना, दिशाओंमें धूमना अंधकार, अकाल हिमपात, आकाशका कृष्णरं-ग होना, स्त्री तथा गौ बकरी घोडी मृगपक्षियोंके गर्भसे अन्यरूपजीव उत्पन्न होना इत्यादि हैं. पापग्रहवेधितनक्षत्र तथा जिस नक्षत्रसे ग्रहयुद्ध हुआ हो और जिस नक्षत्रमें दारुण उत्पात हुआ हो ये सब छः महीने पर्यंत वर्ज्य हैं ॥ ३२ ॥

(इं व०) नेष्टंग्रहर्क्षंसकलार्द्धपादग्रासेक्रमात्तर्कगुणेन्दुमासान् ॥
पूर्वंपरस्तादुभयोस्त्रिघस्राग्रस्तेस्तगेवाभ्युदितेर्द्धखण्डे ॥३३॥

ग्रहनक्षत्रकी ग्रासपरत्वमे वर्जनीयता कहते हैं कि, सर्वग्रास ग्रहण हो तो ग्रह-णनक्षत्र छः महीने, अर्द्धग्रासमें तीन महीने और चौथाइ ग्रासमें एक महीने वर्जित करना और ग्रस्तास्त हो तो पहलेके तीन दिन वर्ज्य हैं पर्वके शुभ हैं यदि ग्रस्तोदय हो तो पीछेके तीन दिन नेष्ट पूर्वके शुभ हैं जो अर्धग्रास हो तो पूर्व तथा पीछेकेभी ३ । ३ दिन सर्व ग्रासमें सातही दिन हैं ॥ ३३ ॥

(व० ति०) जन्मर्क्षमासतिथयोव्यतिपातभद्रावैधृत्यमापितृदि-नानितिथिक्षयवृद्धी ॥ न्यूनाधिमासकुलिकप्रहरार्धपातविष्कम्भ-वज्रघटिकात्रयमेववर्ज्यम् ॥ ३४ ॥

शुभकृत्यमें जन्मके नक्षत्र, महीना, तिथि आदि वर्ज्य हैं मासप्रमाण चान्द्र-

माससे जन्मतिथिसे ३० दिनपर्यंतका है, विष्कम्भादि योगोंमें व्यतिपात तथा वैधृति सर्वकर्ममें वर्जित हैं तथा भद्रा, अमावास्या, (पितृदिन) माता-पिताका श्राद्धदिन, (क्षयतिथि) जो एक वारमें तीन तिथि स्पर्श होती हैं, (वृद्धितिथि) जो एक तिथि तीन वारोंको स्पर्श करती है तथा (क्षयमास) जिस महीने सावनमें अर्थात् दो अमाओंके बीच सूर्यसंक्रान्ति दो आवें (अधिकमास) जो दो अमाओंके बीच सूर्यसंक्रान्ति न आवे, एवं कुलिक योग, प्रहरार्द्धयोग (आगे कहेंगे) तथा महापात, महावैधृति (ये योग गणितसे ज्ञात होते हैं) और विष्कम्भयोग वज्रयोगके आदिकी तीन घटिका वर्जित करनी. उक्तदोषोंमें तिथि उपलक्षणसे नक्षत्रयोगभी क्षयवृद्धिके परिहार ग्रन्थान्तरोंमें हैं कि बृहस्पति केन्द्रमें हो तो (क्षय) अवमका और बुध केन्द्रमें हो तो (वृद्धि) त्रिस्पृशाका दोष नहीं होता ॥ ३४ ॥

(अनुष्टुप्) परिघार्धपञ्चशूलेषट्चगण्डातिगण्डयोः ॥
व्याघातेनवनाडयश्चवर्ज्याःसर्वेषुकर्मसु ॥ ३५ ॥

परिघयोगका पूर्वार्ध, शूलयोगके प्रथम पांच घटी गण्ड एवं अतिगण्डके छः घटी व्याघातके नौ घटी आदिकी सर्व कर्ममें वर्जित हैं ॥ ३५ ॥

(अनुष्टुप्) वेदाङ्गाष्टनवार्केन्द्रपक्षरन्ध्रतिथौत्यजेत् ॥
वस्वङ्कमनुतत्वाशाःशरानाडीः पराः शुभाः ॥ ३६ ॥

चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी ये पक्ष रंध्रतिथि हैं आवश्यकतामें इनके ८ । ९ । १४ । २५ । १० इतनी घटिका आदिकी वर्जित हैं जैसे चतुर्थीकी ८ षष्ठीकी ९ अष्टमीकी १४ नवमीकी २५ द्वादशीकी १० घटी वर्जित करके शेष शुभकृत्यमें ग्राह्य हैं ॥ ३६ ॥

(अनु०) कुलिकः कालवेलाचयमघण्टश्चकण्टकः ॥
वाराद्द्विघ्नेक्रमान्मन्देबुधेजीवेकुजेक्षणः ॥ ३७ ॥

वर्तमानवारसे गिनकर जितनी संख्यामें शनि हो उसे दूनाकर जो अंक हो उस दिन उतनवां मुहूर्त यमघंट होता है, तथा वर्तमान वारसे जितनवां बुध हो उसे दूनाकर जो अंक हो उतनी संख्याका मुहूर्त कालवेला होती है, ऐसेही वर्तमान

वारसे बृहस्पति जितनी संख्यामें हो उसे दूनाकर यमघंट मुहूर्त होता है, तथा वर्तमानवारसे मंगल जिस संख्यामें हो वह कंटक मुहूर्त होता है. उदाहरण–जैसे रविवारके दिन रविसे शनि सातवां है इसे दूनाकर (१४) भया तो रविवारके दिन चौदहवां मुहूर्त कुलिक हुवा तथा रविसे बुध चौथा है द्विगुण ८ हुवा इस दिन आठवां मुहूर्त कालवेला है तथा इससे बृहस्पति पांचवां २ गुण १० इस दिन दशवां मुहूर्त यमघंट है ऐसेही रविसे मंगल तीसरा २ गुण ६ रविवारको छटा मुहूर्त कंटक है इसी प्रकार सबी वारोंके मुहूर्त जानने ये मुहूर्त ४ । ४ घडीके होते हैं. शुभकृत्योंमें वर्जित हैं किंतु किसी आचार्यका मत ऐसाभी है कि इन मुहूर्तोंका उत्तरार्द्ध निषिद्ध है पूर्वार्द्ध दूषित नहीं और रात्रिमें इनका दोष नहीं अर्द्धयाम सर्वदा त्याज्य है इसकी आगे कहेंगे ॥ ३७ ॥

कुलिक आदि मुहूर्तचक्रम् ।

	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
कुलिक दुर्मुहूर्त	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेला	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघंट	१०	८	६	४	२	१४	१२
कंटक	६	४	२	१४	१२	१०	८
अर्द्धयाम.	७	९	३	९	१५	५	१

यामार्धचक्रम ।

वार	संख्या	यामार्ध मुहूर्त	यामार्ध तिथि
र	४	१२	१
च	७	२४	२८
म	२	४	८
ब	५	१६	२०
ग	८	२८	२२
शु	५	८	१२
श	६	२०	२४

(शा० वि०) सूर्य्येषट्स्वरनागदिङ्मनुमिताश्चन्द्रेऽब्धिषट्कुञ्जरा-
ङ्कार्काविश्वपुरन्दराः क्षितिसुतेद्व्यब्ध्यग्नितर्कादिशः ॥
सौम्येद्व्यब्धिगजाङ्कदिङ्मनुमिताजीवेद्विषड्भास्कराः
शक्राख्यास्तिथयः कलाश्चभृगुजेवेदेषुतर्कग्रहाः ॥ ३८ ॥

(व० ति०) दिग्भास्करामनुमिताश्चशनौशशिद्विनागादिशो-
भवदिवाकरसंमिताश्च ॥ दुष्टक्षणः कुलिककण्टककालवेलाःस्यु-
श्चार्द्धयामयमघण्टगताः कलांशाः ॥ ३९ ॥

सुगमताके दोष जाननेके हेतु दुर्मुहूर्त्तादि कहते हैं कि रविवारको ६ । ७ । ८ । १० । १४ सोमवारको ४ । ६ । ८ । ९ । १२ । १३ । १४ मंगलको २ । ३ । ४ । ६ । १० बुधको २ ।४।८।९।१०।१४ बृहस्पतिवारको २ । ६ । १२ । १४ । १५ । १६ शुक्रवारको ४ । ५ । ६ । ९ । १० । १२ शनिवारको १ । २ । ८ । १० । ११ वे मुहूर्त निंद्य अर्थात् दुष्टक्षण कुलिक, कंटक, कालवेला, अर्द्धयाम, यमघंट नामक यथावकाश होते हैं जैसे रविवारके दिन १४ वां मुहूर्त दुर्मुहूर्त्त एवं कुलिकभी ६ छटा कंटक ७ सातवां ८ आठवां अर्द्धयाम तथा आठवां कालवेलाभी और १० दशम यमघंट संज्ञक होते हैं ऐसेही सोमवारादिमेंभी उक्त संख्याओंमें उक्तनामक जानने मुहूर्त्त २ घडीका होता है परंतु दिनमान न्यूनाधिक होनेसे यहां षोडशांश दिनका लिया है जिस दिन जो दिनमान है उससे १६ से भाग लेकर जो मिले उतनेका एक मुहूर्त जानना ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

(अनु०) विपाशैरावतीतीरेशतद्र्वाश्चत्रिपुष्करे ॥
विवाहादिशुभेनेष्टंहोलिकाप्राग्दिनाष्टकम् ॥ ४० ॥

विपाशा (व्याशा) एवं ईरावती नदी (पंजाब देशमें हैं) के तीर तथा शतद्रु (शतलज) के तीर और त्रिपुष्कर देशमें (होलाष्टक) फाल्गुन शुक्ल अष्टमीसे फाल्गुनी " हुताशनी " पूर्णमासी पर्यंत विवाहादि शुभकार्य्य शुभ नहीं अन्यदेशोंमें इनका दोष नहीं ॥ ४० ॥

(अनु०) मृत्युक्रकचदग्धादीनिन्दोःशस्तेशुभाजगुः ॥
केचिद्यामोत्तरंचान्येयात्रायामेवनिन्दितान् ॥ ४१ ॥

आनंदादियोगोंमें मृत्युयोग, (क्रकच) वारदग्ध (दग्धयोग) " सूर्येशपञ्चाग्नीत्यादि " और विषयोग, हुताशन योगादि, पूर्वोक्त दुष्टयोग चंद्रमाके गोचर प्रकरणोक्त प्रकारसे शुभ होनेमें शुभ अर्थात् उक्त दुष्टफल छोडकर शुभफल देनेवाले होते हैं. किसी आचार्यका मत ऐसाभी है कि उक्त दुष्टयोगोंका

एक प्रहरसे उपरांत दोष नहीं है और किसीकिसीका मत है कि उक्तयोग पात्राहीमें वर्जित हैं और कार्य्योंमें नहीं ॥ ४१ ॥

(भुजङ्गप्रयात) अयोगेसुयोगोपिचेत्स्यात्तदानीमयोगंनिहन्त्यैषसिद्धिंतनोति ॥ परेलग्नशुद्ध्याकुयोगादिनाशंदिनार्द्धोत्तरंविष्टिपूर्वंचशस्तम् ॥ ४२ ॥

जिस दिन मृत्यु क्रकचादि कोई दुष्टयोग हो तथा सिद्धि (अमृतसिद्धि) योगभी हो तो दुष्टयोगके फलको नाश करके कार्य्यसिद्धि देता है अन्य आचार्य्योंका मत है कि (लग्नशुद्धि) लग्नसमीचन, बलवान् होनेमें मृत्युक्रकचदग्धादियोंका नाश होताहै और भद्रा व्यतीपात आदियोंका दोष मध्याह्नपर्यंत होताहै मध्यान्होत्तर नहीं है ऐसेही भौमवार प्रत्यरि जन्मनक्षत्रकाभी है ॥ ४२ ॥

(शालिनी) शुक्लेपूर्वार्द्धेऽष्टमीपञ्चदश्योर्भद्रैकादश्यांचतुर्थ्यांपरार्द्धे ॥ कृष्णेऽन्त्यार्द्धेस्यात्तृतीयादशम्योःपूर्वेभागेसप्तमीशम्भुतिथ्योः ४३॥

शुक्लपक्षकी अष्टमी, पूर्णमासीके पूर्वार्ध एवं एकादशी, चतुर्थीके उत्तरार्धमें भद्रा होती है, कृष्णपक्षकी तृतीया दशमीके उत्तरार्धमें तथा सप्तमी, चतुर्दशी पूर्वभाग (पूर्वार्ध) में भद्रा होतीहै यह (भद्रा) विष्टिकरण है करण गिननेके रीतिसे उक्ततिथियोंके उक्तदलोंमें यह करण आताहै. यह बडा दोष समस्त शुभकृत्योंमें वर्जित है ॥ ४३ ॥

(शा०वि०) पञ्चद्व्यद्रिकृताष्टरामरसभूयामादिघत्यः शरा-
विष्टेराश्यमसद्गजेन्दुरसरामाद्याश्विबाणाब्धिषु ॥
याम्येष्वन्त्यघटीत्रयंशुभकरंपुच्छंतथावासरे
विष्टिस्तिथ्यपरार्द्धजाशुभकरी रात्रौतुपूर्वार्द्धजा॥४४॥

भद्राके मुख पुच्छविभाग कहते हैं कि चतुर्थ्यादि तिथियोंके पंचमादि प्रहरोंके आदिके पांच (५) घटी भद्राका मुख होताहै. जैसे चतुर्थीके पंचम प्रहरके आदिकी ५ घटी, अष्टमीके दूसरे प्रहरकी ५ घटी, एकादशीके सातवें प्रहरकी, पूर्णमासीके चौथे, तृतीयाके आठवें, सप्तमीके तीसरे, चतुर्दशीके पहले

प्रहरकी पांचघटी भद्राका मुख होताहै, यह अति दोषद है और चतुर्थीके आ-ठवें, अष्टमीके प्रथम, एकादशीके छठे, पूर्णिमाके तीसरे, तृतीयाके सातवें, सप्तमीके दूसरे, दशमीके पांचवें, चतुर्दशीके चौथे प्रहरके अंतिम (पिछली) तीन (३) घटी पुच्छसंज्ञक होती हैं यह पुच्छ भद्राका दुष्ट नहीं होता अर्थात् शुभकार्यमें ग्राह्य हैं यहाँ प्रहर गणना तिथिके आरंभसे है तिथिका सर्व भोग्यके आठ भाग ८ प्रहर मानने चाहिये। भद्राके अंगविभाग ग्रंथांतरोंमें ऐसे हैं मुख-में ५ गलेमें १ हृदयमें ११ नाभिमें ४ कटिमें ६ पुच्छमें ३ घटी हैं इनमेंसे पु-च्छकी ३ घटी शुभ हैं. श्रीपतिआचार्य कहते हैं कि, एकसमय दैत्योंने देवता-ओंको जीतलिया तब महादेवजीने क्रोधसे भालनेत्र खोला खोलतेही क्रोधा-ग्निका एक कण निकला वह खरमुखी, तीन पैरकी, लांगूल लिये, सात हाथवाली सिंहसमान गला, कृशोदरी, प्रेतवाहिनी मूर्ति उत्पन्न होकर दैत्योंका संहार कर-र्ती भई तब देवताओंने स्तुति करके इसका नाम भद्रा रक्खा और ववादिकर-णोंमें स्थान एवं भाग दिया आवश्यक कृत्यमें भद्राका परिहार कहते हैं कि ति-थिउत्तरार्द्धकी भद्रा दिनमें तथा तिथिपूर्वार्द्धकी रात्रिमें शुभ होती है और आ-चार्यांतरमत ऐसाभी है कि भद्रा, मंगलवार, व्यतीपात, वैधृति, मृत्युयोग, मध्या-ह्नसे ऊपर दोष नहीं देते ॥ ४४ ॥

(अनुष्टुप्) कुम्भकर्कद्वयेमर्त्येस्वर्गेऽब्जेजात्रयेलिगे ॥
स्त्रीधनुर्जूकनक्रेधोभद्रातत्रैवतत्फलम् ॥ ४५ ॥

भद्रावास कहतेहैं कि कुंभ, मीन, कर्क, सिंहके चंद्रमामें भद्रा हो तो मृत्यु-लोकमें तथा मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिकमें, स्वर्गलोकमें और कन्या, धन, तुला, मकरकेमें, पाताललोकमें भद्राका निवास है जिस दिन जिस लोकमें भद्रा रहती है वहीं अपना फल देती है अन्य २ लोकोंमें नहीं यहभी परिहारही है ॥ ४५ ॥

(शा॰वि॰) वाप्यारामतडागकूपभवनारम्भप्रतिष्ठेव्रता-
रम्भोत्सर्गवधूप्रवेशनमहादानानिसोमाष्टके ॥
गोदानाग्रयणप्रपाप्रथमकोपाकर्मवेदव्रतंनीलो-
द्वाहमथातिपन्नशिशुसंस्तारान्सुरस्थापनम् ॥ ४६ ॥

दीक्षामौञ्जिविवाहमुण्डनमपूर्वदेवतीर्थेक्षणंसं-
न्यासाग्निपरिग्रहौनृपतिसंदर्शाभिषेकौगमम् ॥
चातुर्मास्यसमावृतीश्रवणयोर्वेधंपरीक्षांत्यजेद्वृद्ध-
त्वास्तशिशुत्वइज्यसितयोर्न्यूनाधिमासेतथा ॥ ४७ ॥

कालशुद्धि कहतेहैं कि नवीन बावडी बनाना, बगीचा, तालाव, कूवा, गृह इनका आरंभ गृहप्रतिष्ठा (गृहप्रवेश), व्रतोंका आरंभ, व्रतोंका उद्यापन, तुलादि सोलह महादान, सोमयाग, अष्टकाश्राद्ध, गोदान (केशांतकर्म), इष्टि संचयन, जलशाला (पाउ), प्रथम उपाकर्म (श्रावणी), वेदव्रत उपनिषद्व्रत, महानाम्न्यव्रत, काम्यवृषोत्सर्ग, " न कि ग्यारहवें दिनवाला " तथा बालकोंके जातकर्मादि संस्कार किंतु जिनका मुख्य काल व्यतीत होगयाहो, दीक्षा (मंत्र-ग्रहण, चूडाकर्म, अपूर्व देवता एवं तीर्थ) का दर्शन, अग्निहोत्र, चातुर्मास्ययज्ञ, समावर्त्तन, कर्णवेध, तप्तमाषादि परीक्षा (जो दिव्यमें न्यायविषय होतीहैं) नववधूप्रवेश, देवताकी प्रतिष्ठा, व्रतबंध, विवाह, संन्यासग्रहण, प्रथम राजदर्शन, राज्याभिषेक, यात्रा इतने कृत्य बृहस्पति शुक्रके अस्तमें, बालत्वमें, वृद्धत्वमें और अधिमास (मलमास) क्षयमासमें न करने इसमें ग्रंथांतरीय निर्णय है कि " सीमंतजातकादीनि प्राशनांतानि यानि वै । न दोषो मलमासस्य मौढ्यत्वं गुरु-शुक्रयोः ॥ तथा, अतीतकालान्यखिलानि तानि कार्य्याणि सौम्यायनगे दिनेशे ॥ सिते गुरौ चापि हि दृश्यमाने तदुक्तपञ्चाङ्गदिनेप्यखण्डे ॥ २ ॥ " अर्थात् सी-मंत, जातकर्मसे लेकर अन्नप्राशनपर्यंत जितने शिशुसंस्कार हैं नियत कालपर होनेसे इनके लिये मलमास, क्षयमास, गुर्वस्त शुक्रास्तका दोष नहीं। जब उक्त कृत्योंका मुख्यकाल, (जैसे नामकर्म ११। १२ दिनमें अन्न प्राशन छठे महीनेमें नियत है) किसी कारण बीत जाय तो वह कृत्य उत्तरायणमें बृहस्पति शुक्रके उदयमें और उस कृत्यके उक्त पंचांग अखंड (समस्त शुद्ध) में करना॥ ४६ ॥ ४७॥

(शालिनी) अस्तेवर्ज्यंसिंहनक्रस्थजीवेवर्ज्यंकेचिद्वक्रगेचातिचारे ॥
गुर्वादित्येविश्वघस्रेपिपक्षेप्रोचुस्तद्वद्दन्तरत्नादिभूषाम् ॥४८॥

जो जो कार्य्य बृहस्पतिके अस्तमें वर्जित कहेहैं वही कार्य सिंह तथा मकरके बृहस्पतिमेंभी वर्जित हैं परंतु आचार्यांतरमतसे गया, गोदावरी यात्रामें दोष नहीं. किसी आचार्य्योंका मत है कि, बृहस्पतिके वक्र एवं अतिचारमेंभी उक्तकृत्य वर्जित हे परंतु २८ दिन पर्यंत और ऐसाभी है कि गोचरमे ५ । ९ । ७ । २ । ११ । राशिमें बृहस्पति जिसका हो उसको वक्रातिचारमेंभी उक्त कृत्योंका दोष नहीं यहभी मतान्तर है तथा (गुर्वादित्य) गुरु सूर्य्यके एक राशिगत होनेमेंभी उक्तकृत्य वर्जित हे मतान्तरमे (गुर्वादित्य) बृहस्पतिके राशिके सूर्य्य, सूर्य्यके राशिमें बृहस्पति होनेमें कहाहै परंतु मुख्य पक्ष पूर्वोक्तही है तथा (विश्वघस्र पक्ष) जिस पक्षमें (२) दो तिथियोंका अवम होकर तेरह १३ दिनका पक्ष हो इसमेंभी उक्तकृत्य वर्जित हैं और हस्तिदन्तादि तथा रत्नादि संबंधी भूषणधारणभी उक्त दोष (सिंह गुरु आदि) में न करना ॥४८॥

(इं०व०) सिंहेगुरौसिंहलवेविवाहोनेष्टोथगोदोत्तरतश्चयावत् ॥
भागीरथीयाम्यतटंहिदोषोनान्यत्रदेशेतपनेपिमेषे ॥४९॥

सिंहस्थ गुरुके परिहार तीन प्रकारसे कहते हैं कि विवाह तथा मतांतरसे व्रतबंधमें मात्र सिंहस्थ गुरुका दोष हे अन्यकार्योमें नहीं है वहभी सिंहराशिके सिंहांशक १३ । २० अंशसे १६ । ४० अंशक हे समस्त सिंहराशिके गुरुमें नहीं गोदावरीके उत्तर, भागीरथीके दक्षिण अर्थात गंगा गोदावरी नदियोंके बीच जो देश हैं उनमें उक्तदोष है अन्यदेशोंमें नहीं और मेषके सूर्य्य (सौरमान) के वैशाखमेंभी उक्त दोष सर्वत्र नहीं है ॥ ४९ ॥

(अनुष्टुप्) मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः ॥
गङ्गागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु नदोषकृत् ॥ ५० ॥
मेषेर्केसद्व्रतोद्वाहौ गङ्गागोदान्तरेपि च ॥
सर्वसिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिङ्गे गौडगुर्जरे ॥ ५१ ॥

पूर्वोक्तमतको पुष्ट करते हैं कि मघा आदि पांच चरण मघाके चार (४)

पूर्वा फाल्गुनीके (१) प्रथम पर्यंत बृहस्पति जबतक रहे तबतक सभी देशोंमें निंद्य है अन्यचरणों (पूर्वाके तीन उ० फ० के प्रथम) में गंगा गोदावरीके मध्यवर्तिदेशोंमें मात्र वर्जित है अन्यदेशोंमें नहीं ॥ ५० ॥ और सिंहके बृहस्पति में सूर्य्य मेषका हो तो गंगा गोदावरीके मध्यदेशोंमेंभी विवाह व्रतबंध शुभ होते हैं समस्त सिंहका गुरु कलिंग, गौड, गुर्जरदेशोंमें वर्ज्य है अन्यको नहीं ॥५१॥

(शालिनी) रेवापूर्वेगण्डकीपश्चिमेचशोणस्योदग्दक्षिणेनीचइज्यः ॥
वर्ज्योनार्यंकौंकणेमागधेचगौडेसिन्धौवर्जनीयःशुभेषु ॥५२॥

(नीच) मकरके बृहस्पतिका दोषपरिहार दो प्रकारसे कहते हैं कि (रेवा) नर्मदा (दक्षिण अमरकंटकसे जबलपूर विंध्यके पार्श्व २ होसंगाबाद ॐकारनाथ मंडलेश्वर महेसार होकर भडोचके समीप खम्भातकी खाडीमें द्वारकाके समीप पश्चिम समुद्रमें मिली) इसके पूर्वभागके देशोंमें तथा (गंडकी) नेपाल जिलाके पश्चिम भाग हिमालय मुक्तिनाथसे पटना हरिहर क्षेत्रपर गंगामें मिली इससे लेकर मानपर्वत वा सारस्वत देश अर्थात् द्वारकाके उत्तर पश्चिम समुद्रपर्यंत गंडकीका पश्चिम है इन देशोंमें तथा (शोणनद) अमरकंटकसे विन्ध्याचल होकर जिला आरा और मनेरके बीच गंगामें मिला इसके दक्षिण उडेला, सिरगुजा, लुहारदगा रुहता सगड विहार आदि एवं उत्तरमें बघेलखंड, (प्रयागराज) इलाहाबाद, अवध रुहेलखंड, (इंद्रप्रस्थ) दिल्ली, आग्रा, मथुरा, नदीनाथ, ज्वालामुखी आदि उत्तर हिमालयपर्यंत इन देशोंमें मकरगुरुका दोष नहीं तथा (कोंकण) बंबईसे १४० मील दक्षिण समुद्रके तीर (गौड देश) गौडबंगाला, मालदह पुरनिया (लक्ष्मणावती) जन्नताबाद, (मगधदेश) जिला गया, पटना (सिंधुदेश) अटक, और झेमलके बीच जिसको सिंधुसागर कहते हैं इन देशोंमें शुभकार्य वर्जित हैं इन दोनोंहू पक्षसे अतिरिक्त देशोंको ग्रंथांतरीयमतसे ६० दिन वर्जित हैं तथा मकरमें मकरांशकमात्र वर्जित है समस्त मकर गुरु तथा सभी देशोंके लिये नहीं ॥ ५२ ॥ इस विषयमें संवत् १९४६ इसवी सन् १८९० में किसी २ मत्सरियोंके उत्तेजनपर मैंने समाचारपत्रोंमें इस विषयकी समालोचना की थी

जिसपर काशीवासी ६४ विद्वान् शास्त्रियोंके ओरसे एक निर्णयसंबंधी विजयपत्र मिला जिसमें उपरोक्त अर्थ अनेक प्रमाणों से प्रतिपादित हैं ।

(वंशस्थविरा) गोजान्त्यकुम्भेतरभेतिचारगोनोपूर्वराशिंगुरु-रेतिवक्रितः ॥ तदाविलुप्ताब्दइहातिनिन्दितःशुभेषुरेवासुरनि-म्नगान्तरे ॥ ५३ ॥

वृष, मेष, मीन, कुंभराशियोंके विना अन्यराशियोंमें बृहस्पति अतिचारसे (दश ग्यारह महीने) दूसरी राशिपर जाकर कुछ दिनोंमें वक्र होकर पुनः पूर्वराशिमें न आवे तो वह संवत्सर लुप्त कहाता है, यह शुभकृत्योंमें अतिनिंदित है यदि १ । २ । ११ । १२ राशियोंमें अतिचार करे तो लुप्तसंवत्सरका दोष नहीं होता देशभेदसे परिहार है कि (रेवा) नर्मदा, और (गंगा) भागीरथीके बीचके देशोंमें लुप्त संवत्सरका दोष है अन्यत्र नहिं आचार्य्यांतरमतसे बृहस्पति शुक्रके सम सप्तम (एकसे दूसरा सातवीं राशि) में होनेपरभी उक्त देशोंमें अस्तके तुल्य दोष है ॥ ५३ ॥

(उपजा०) पादोनरेखापरपूर्वयोजनैःपलैर्युतोनास्तिथयोदिनार्द्धतः ॥ ऊनाधिकास्तद्विवरोद्भवैःपलैरूर्ध्वंतथाधोदिनपप्रवेशनम् ॥ ५४ ॥

लंकासे सुमेरुपर्यंत एक समसूत्र बांधकर उसके नीचे जो जो देश आवे वह मध्यरेखा है जहाँसे वह रेखागतकोही देशसमीप हो वह जितने योजन (चार कोशका एक) होवे देशांतर योजन कहाते हैं उन योजनोंमें चतुर्थांश घटायके पंद्रह (१५) में (न्यूनाधिक) पर योजन हो तो जोडना पूर्व हो तो घटाना जिस दिन वारप्रवेश देखना है उस दिनके दिनार्द्धमें (न्यूनाधिक) पंद्रहमें न्यून वा अधिक कियागया जो देशांतर है वह (१५) से अधिक हो तो उसमें १५घटाना यदि १५ से न्यूनहो तो पंद्रहमें उसे घटायदेना यह प्रवृत्ति होतीहै उसमेंभी स्मरण चाहिये कि दिनार्द्ध संस्कार विशिष्ट अंकसे यदि १५ न्यून हो तो सूर्य्योदयसे पीछे उक्त पलाओंमें, यदि १५ से न्यून वह गणितागत अंक हो तो सूर्य्योदयसे प्रथमही वार प्रवेश जानना उदाहरण काशीपुरी प्राक्

मध्यरेखा कुरुक्षेत्रसे ६३ योजन है. चौथाई घटाया ४७ । १५ प्राक्योजन होनेसे १५ में पला ४७ घटाई तो १४ । १३ हुये दिनार्द्ध १७ । २ से न्यून होनेसे १४ । १३ घटाया २ । ४१ शेष रहा, दिनार्द्धसे न्यून गणितांग अंक होनेसे सूर्य्योदयसे पीछे २ । ४७ में वारप्रवेश होगा ॥ ५४ ॥

(अनुष्टुप्) वारादेर्घटिकाद्विघ्नाः स्वाक्षहृच्छेपवर्जिताः ॥
सैकातष्टानगैः कालहोरेशादिनपात्क्रमात् ॥ ५५ ॥

वारप्रवृत्तिकी इष्टघटी द्विगुण करके २ जगे स्थापन करना एक जगे (५) से भागलेकर लाभ छोडके शेष द्वितीयस्थानस्थितिमें घटाय देना शेष जो रहे उसमें १ जोडना सातसे अधिक हो तो (७) से भाग लेकर शेष काल होरेश दिनके वारसे गिनकर जानना ऐसेही एक दिनमें सभी ग्रहोंकी होरा जाननी एकहोरासे दूसरी होरा उससे छठे ग्रहकी होतीहै जैसे रविवार प्रवेश इष्टघटी ६ में हुआ द्विगुण (१२) दो जगे स्थापन किया एकजगे (५) से भाग लेकर २ पाया दूसरे स्थानके १२ में घटाया १० रहा इसमें ७ से भागलेकर ३ शेष रहा एक और जोडदिया ४ रविवारके दिनकी होरा देखनीहै इसलिये रविसे चौथा बुधकी होरा हुई यहां वारप्रवृत्ति केवल कालहोराके निमित्त है और कार्य्योंमें वार सूर्य्योदयहीसे मानाजाताहै यह वसिष्ठसिद्धांतमें लिखाहै ॥ ५५ ॥

(शालिनी) वारेप्रोक्तंकालहोरासुतस्यधिष्ण्येप्रोक्तंस्वामितिथ्यंशकेऽस्य ॥ कुर्य्याद्दिक्शूलादिचिन्त्यंक्षणेपुनैर्वोल्लंघ्यःपारिघश्चापिदण्डः ॥ ५६ ॥

कालहोराका प्रयोजन है कि जो कार्य्य जिस वारमें करना कहाहै वह उसके कालहोरामें हर एक वारमें करलेना जैसे रविवारके दिन प्रवेशका निषेध है परंतु चंद्र बुध गुरु शुक्रके होरामें रविवारके दिनभी आवश्यकमें प्रवेश करलेना ऐसेही जिस नक्षत्रमें जो कार्य नहीं करना कहाहै उसमें यदि आवश्यक हो तो उस नक्षत्रमें जिस मुहूर्त्तमें पूर्वोक्त नक्षत्रके स्वामीकी कालहोरा हो उसमें वह कृत्य करलेना मुहूर्तके स्वामी विवाह प्रकरणमें कहाहै उक्तविषय मुहूर्तमें इत-

ना अवश्य स्मरण चाहिये कि दिक्शूल तथा परिघदंडादि विचारलेने इनका-विचार यात्राप्रकरणमें है ॥ ५६ ॥

(शा०वि०) मन्वाद्यास्त्रितिथीमधौतिथिरवीऊर्ज्जेशुचौदिक्तिति-
थिर्ज्येष्ठेन्त्येचतिथिस्त्विषेनवतपस्यश्वाः सहस्येशिवाः ॥
भाद्रेग्निश्चसितेत्वमाष्टनभसःकृष्णेयुगाद्याःसिते-
गोग्नीबाहुलराधयोर्मदनदर्शौभाद्रमाघासिते ॥ ५७ ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ प्रथमं शुभाशुभप्रकरणम् ।

चैत्र शुक्लपक्षकी ३।१५ कार्तिक शुक्लकी १५। १२ आषाढशुक्लकी १०। १५ ज्येष्ठ तथा फाल्गुनकी १५ आश्विनशुक्लकी ९ माघशुक्लकी ७ पौष शुक्लके ११ भाद्रशुक्लकी ३ श्रावणकृष्णकी ३० (अमा) ८ (अष्टमी) ये मन्वादि हैं और कार्तिकशुक्लके ९ वैशाखशुक्लकी ३ भाद्रकृष्णकी १३ माघकी ३० (अमा) ये युगादि हैं इनने तिथि पुण्यपर्व हैं इनमें व्रतबंध विद्यारंभ व्रतोद्यापनमें अनध्याय मानतेहैं तथा नित्य पढनेमेंभी अनध्याय हैं और प्रकार तत्कालीन अनध्याय संध्या, गर्जन होनेमें, निर्घातशब्द, भूकंप, उल्कापतनमें तत्कालमात्र तथा और आरण्यक समाप्तकरके एक दिनरात, तथा पूर्णमासी, चतुर्दशी, अष्टमी, राहुसूतक, ऋतुसंधिमें, श्राद्धभोजन करके, श्राद्धमें दान लेके, (पशु) मेंडक नेवल कुत्ता सर्प बिल्ली चूआ आदिके गुरु शिष्योंके बीचमें आजानेमें, एक दिनरात, वज्र पडनेमें, इंद्रधनुषमें, गधा ऊंट गीध उल्लू कौवाओंके अतिदुःखित बडा शब्द करनेमें, प्रेत, शूद्र, चांडाल, श्मशान पतितके समीप जानेमें, भोजनोत्तर गीले हाथ पर्य्यंत, अर्द्धरात्रिमें, अतिप्रचंड वायु चलनेमें, रजवर्षणमें, दिग्दाह, संध्यामें, नीहारमें, भयस्थानमें, दौडनेमें, दुर्गंधमें, श्रेष्ठजनके अपने घर आनेमें, गधा ऊंट हाथी घोडेके सवारीमें, वृक्षारोहणमें, तत्कालिक अनध्याय होतेहैं औरभी अनध्याय होतेहैं औरभी अनध्याय धर्मशास्त्रोक्त सूतकादिभी हैं ॥ ५७ ॥ इति महीधरकृतायां मुहूर्त्तचिन्तामणिभाषायां प्रथमं शुभाशुभप्रकरणं समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ नक्षत्रप्रकरणम् ।

(शा०वि०) नासत्यान्तकवह्निधातृशशभृद्रुद्रादितीज्योरगा-
ऋक्षेशाः पितरोभगोर्यमरवीत्वष्टासमीरःक्रमात् ॥
शक्राग्नीखलुमित्रइन्द्रनिर्ऋतिःक्षीराणिविश्वेविधि-
र्गोविन्दोवसुतोयपाजचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ॥ १ ॥

नक्षत्रोंके स्वामी कहतेहैं. अश्विनीके अश्विनीकुमार । भरणीका यम । ऐसेही कृत्तिकाका अग्नि । रोहिणीका ब्रह्मा । मृगशिरका चंद्रमा । आर्द्राका शिव । पुनर्वसुका अदिति । पुष्यका बृहस्पति । अश्लेषाका सर्प । मघाका पितर । पूर्वाफाल्गुनीका भग । उत्तराफाल्गुनीका अर्यमा । हस्तका सूर्य । चित्राका विश्वकर्मा । स्वातिका वायु । विशाखाके इंद्र एवं अग्नि । अनुराधाका मित्र(सूर्य) । ज्येष्ठाका इंद्र । मूलका निर्ऋति । पूर्वाषाढका जल । उत्तराषाढका विश्वेदेव । अभिजितका विधि । श्रवणका विष्णु । धनिष्ठाका वसु । शतभिषाका वरुण । पूर्वाभाद्रका अजचरण । उत्तराभाद्रका अहिर्बुध्न्य । रेवतीका पूषा । ये नक्षत्रोंके स्वामी हैं स्वस्वामिनामसेभी ग्रंथोंमें प्रसिद्ध रहतेहैं जैसे जहां कर नामनक्षत्र संबंधमें हो हस्त जानना जो नक्षत्र जिस कार्यके योग्य है इसका विस्तार ग्रंथांतरोंसे कहते हैं ॥ अश्विनीमें वस्त्र, उपनयन, क्षौर, सीमंत, भूषण, स्थापना, हाथीका कृत्य, स्त्री, कृषि, विद्या आदि । भरणीमें बावडी, कुवा, तालाव आदि तथा विषशस्त्रादि उग्र एवं, दारुण कर्म, रंध्रप्रवेश, गणित, धरोहर वारवेत्तेमें वस्तु रखना । कृत्तिकामें अग्न्याधान, अस्त्र, शस्त्र, उग्रकर्म, मिलाप, विग्रह, दारुण कर्म, संग्राम, औषधि, वादित्रकर्म । रोहिणीमें सीमंत, विवाह, वस्त्र, भूषण, स्थिरकर्म, हाथी घोडेके कृत्य, अभिषेक, प्रतिष्ठा । मृगशिरमें प्रतिष्ठा भूषण, विवाह, सीमंत, क्षौर, वास्तुकृत्य, हाथी घोडे ऊंट संबंधीकृत्य, यात्रा । आर्द्रामें ध्वजा, तोरण, संग्राम, दीवाल, अस्त्रशस्त्रक्रिया, संधि, विग्रह, वैर, रसादिकृत्य । पुनर्वसुमें प्रतिष्ठा, सवारी, सीमंत, वस्त्र, वास्तु, उपनयन, धान्य,

भक्षण क्षौर । पुष्यमें विवाह विना समस्त शुभकृत्य । आश्लेषामें झूंठ, व्यसन, द्यूत, धातुवाद, औषधि, संग्राम, विवाद, रसक्रिया, व्यापार । मघामें कृषि, व्यापार, गौ, अन्न, रणोपयोगिकृत्य, विवाह, नृत्य, गीत । तीनहू पूर्वामें कलह, विष, शस्त्र, अग्नि, दारुण, उग्र, संग्राम, मांसविक्रय । तीनहू उत्तराओंमें प्रतिष्ठा, विवाह, सीमंत, अभिषेक, व्रतबंध, प्रवेश, स्थापना, वास्तुकर्म । हस्तमें प्रतिष्ठा, विवाह, सीमंत, सवारी, उपनयन, वस्त्र, क्षौर, वास्तु, अभिषेक, भूषण । चित्रामें क्षौर, प्रवेश, वस्त्र, सीमंत, प्रतिष्ठा, व्रतबंध, वास्तुविद्या, भूषण । स्वातिमें प्रतिष्ठा, उपनयन, विवाह, वस्त्र, सीमंत, भूषण, विवाद, हस्तिकृत्य, कृषि, क्षौर । विशाखामें वस्त्रभूषण, व्यापार, रसधान्यसंग्रह, नृत्य, गीत, शिल्प, लिखनाआदि । अनुराधामें प्रवेश, स्थापना, विवाह, व्रतबंध, अष्टप्रकार मंगल, वस्त्र, भूषण, वास्तु, संधि, विग्रह । ज्येष्ठामें क्रूरकर्म, उग्रकर्म, शस्त्र, व्यापार, गौ भैंसका कृत्य, जलकर्म, नृत्य, वादित्र, शिल्प, लोहाके काम, पत्थरके काम, लिखना । मूलमें विवाह, कृषि, वाणिज्य, उग्र, दारुण, संग्राम, औषधि, नृत्य, शिल्प, संधि, विग्रह, लेखन । श्रवणमें प्रतिष्ठा, क्षौर, सीमंत, यात्रा, उपनयन, औषधि, पुरग्राम गृहका आरंभ, पट्टाभिषेक । धनिष्ठामें शस्त्र, उपनयन, क्षौर, प्रतिष्ठा, सवारी, भूषण, वास्तु, सीमंत, प्रवेश, शस्त्र । शतभिषामें प्रवेश, स्थापन, क्षौर, मौंजी, औषधि, अश्वकर्म, सीमंत, वास्तुकर्म । रेवतीमें विवाह, व्रतबंध, अश्वकर्म, प्रतिष्ठा, सवारी, भूषण, प्रवेश, वस्त्र, सीमंत, क्षौर, औषधिके कृत्य करने ॥ १ ॥

(अनु०) उत्तरात्रयरोहिण्योभास्करश्चध्रुवंस्थिरम् ॥ तत्रस्थिरंबीजगेहेशान्त्यारामादिसिद्धये ॥ २ ॥ स्वात्यादित्येश्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापिचरंचलम् ॥ तस्मिन्गजादिकारोहोवाटिकागमनादिकम् ॥ ३ ॥ पूर्वात्रयंयाम्यमघेउग्रंक्रूरंकुजस्तथा ॥ तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानिविषशस्त्रादिसिद्ध्यति ॥ ४ ॥ विशाखाग्नेय भेसौम्योमिश्रंसाधारणंस्मृतम् ॥ तत्राग्निकार्य्यंमिश्रंचवृषोत्स-

गादिसिद्ध्यति ॥ ५ ॥ हस्ताश्विपुष्याभिजितःक्षिप्रंलघुगुरुस्त-था ॥ तस्मिन्पण्यरतिज्ञानभूषाशिल्पकलादिकम् ॥ ६ ॥ मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षंमृदुमैत्रंभृगुस्तथा ॥ तत्रगीताम्बरक्रीडामि-त्रकार्य्यविभूषणम् ॥ ७ ॥ मूलेन्द्रार्द्राहिभंसौरिस्तीक्ष्णंदारुणसं-ज्ञकम् ॥ तत्राभिचारघातोग्रभेदाःपशुदमादिकम् ॥ ८ ॥

नक्षत्रोंके संज्ञा तथा कर्मभी कहतेहैं कि तीनों उत्तरा रोहिणी रविवार ध्रुव एवं स्थिरसंज्ञक हैं इनमें स्थिरकर्म बीज बोना, गृहारंभ, शांतिकर्म, बगीचाका कार्य तथा मृदुनक्षत्रोक्त कार्यभी सिद्ध होते हैं॥२॥ स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनि-ष्ठा, शतभिषा और चंद्रवार चर एवं चलसंज्ञक है. इनमें हाथी घोडेआदि सवा-री, बावडी, यात्रा आदि तथा लघुनक्षत्रोक्त कर्मभी सिद्ध होतेहैं ॥ ३॥ तीनों पूर्वा, भरणी, मघा और भौमवार उग्र एवं क्रूरसंज्ञक हैं इनमें मारणकृत्य, अग्निकृत्य, विषसंबंधी कृत्य, शस्त्रकर्म, अन्य अरिष्टकृत्य और दारुण नक्षत्रोक्त कृत्यभी सिद्ध होते हैं ॥४॥ विशाखा, कृत्तिका और बुधवार मिश्र एवं साधारणसंज्ञक हैं इनमें अग्निहोत्रादि काम्यवृषोत्सर्गादि और उग्रनक्षत्रोक्तकर्मभी सिद्ध होते हैं ॥ ५ ॥ ह-स्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित और गुरुवार क्षिप्र एवं लघुसंज्ञक हैं इनमें दुकान, स्त्रीसंभोग, शास्त्रादिज्ञानारंभ, भूषण, शिल्पविद्या, नृत्यादि ६४ कला और चरनक्षत्रोक्त कृत्यभी सिद्ध होते हैं ॥६॥ मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार मृदु एवं मैत्रसंज्ञक हैं इनमें गीतकृत्य, वस्त्र, स्त्रीक्रीडा, मित्रसंबंधिकृत्य, भूषण और ध्रुवनक्षत्रोक्तकृत्यभी सिद्ध होतेहैं ॥७॥ मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार, तीक्ष्ण एवं दारुणसंज्ञक हैं इनमें (अभिचार) जादूगरी, (भ-यानक कर्म) मारणादि तथा विद्वेषण, हाथी घोडे आदि पशुओंका (दमन) शिक्षा, वा बंधन यद्वा उन्हें नपुंसक बनाना और उग्रनक्षत्रोक्त कृत्यभी सिद्ध होतेहैं ॥ ८ ॥

(इं०व०) मूलाहिमिश्रोग्रमधोमुखंभवेदूर्ध्वास्यमार्द्रेज्यहरित्रयंध्रुवम्॥ तिर्यङ्मुखंमैत्रकरानिलादितिज्येष्ठाश्विभानीदृशकृत्यमेषुसत् ॥९॥

मूल, आश्लेषा, मिश्रनक्षत्र अधोमुखसंज्ञक हैं इनमें वापी, कूप, खात आदि कृत्य शुभ होते हैं. आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और ध्रुवनक्षत्र ऊर्ध्वमुख हैं इनमें राज्याभिषेक पट्टबंधन इमारत आदिकृत्य शुभ होते हैं. मृदु नक्षत्र हस्त, स्वाती, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, अश्विनी (तिर्यङ्मुख) समदृष्टि संज्ञक हैं इनमें चक्र रथ हल बीज पशुकृत्यादि सिद्ध होते हैं ॥ ९ ॥

(व० ति०) पौष्णध्रुवाश्विकरपञ्चगवासवेज्यादित्येप्रवालरद-
शङ्खसुवर्णवस्त्रम् ॥ धार्यंविरिक्तशनिचन्द्रकुजेह्निरक्तंभौमेध्रुवा-
दितियुगेसुभगानदध्यात् ॥ १० ॥

रेवती, ध्रुवनक्षत्र, अश्विनी, हस्तसे अनुराधापर्यंत और पुष्य पुनर्वसुमें मूंगा मोती हाथीदांतके एवं शंखके भूषण चूडी आदि और सुवर्ण वस्त्रधारण करना परंतु जिस दिन रिक्तातिथि शनि चंद्र मंगलवार न हो तथा मंगलवारको लालरंगवस्त्र सुवर्ण धारणका दोष नहीं और मंगलवार ध्रुवनक्षत्र पुनर्वसु तिष्यमें सौभाग्यवतीने उक्तवस्तु धारण न करना ॥ १० ॥

(शा० वि०) वस्त्राणांनवभागकेषुचचतुष्कोणेऽमराराक्षसाम-
ध्यत्र्यंशगतानरास्तुसदृशेपार्श्वेचमध्यांशयोः ॥
दग्धेवास्फुटितेम्बरेनवतरेपङ्कादिलिप्तेनसद्रक्षों-
शेनृसुरांशयोशुभमसत्सर्वांशकेप्रान्ततः ॥ ११ ॥

नवीनवस्त्र, उपलक्षणसे शयन पादुका छत्र ध्वजादिभी यदि किसी स्थानमें अग्निसे दग्ध हों वा फटे वा कज्जल पंक आदिमे लिप्त हों तो उसके बराबर नव (९) भाग करने चारों कोणोंमें देवता बीचके ऊर्ध्वाधत्रिभागमें मनुष्य और पार्श्वके दो भागोंमें राक्षसोंके स्थान है इनमेंसे दग्धादिभाग राक्षसोंका हो तो दुष्टफल है उस वस्त्रादिको त्यागके सुवर्णादि दान करना यदि उक्तभाग मनुष्य वा देवताओंका हो तो शुभ होताहै. मतांतर है कि दग्धादिपर यदि श्रीवत्स सर्वतोभद्रादि शुभचिह्न हो तो राक्षसभागमेंभी शुभ होता है यदि सर्पादि दुष्टचिह्न शुभभागोंमें हो तोभी अशुभही होता है ॥ ११ ॥

(अनुष्टुप्) विप्राज्ञयातथोद्वाहेराज्ञाप्रीत्यार्पितंचयत् ॥
निन्द्येपिधिष्ण्येवारादौवस्त्रंधार्य्यंजगुर्बुधाः ॥ १२ ॥

ब्राह्मणकी आज्ञासे विवाहमें, और राजा जब प्रसन्नतापूर्वक वस्त्रादि देवे तो विना उक्त मुहूर्त्त यद्वा निंद्य नक्षत्रवारादिमेंभी धारण करलेना ॥ १२ ॥

(शा०वि०) राधामूलमृदुध्रुवर्क्षवरुणक्षिप्रैर्लतापाद-
पारोपोथोनृपदर्शनंध्रुवमृदुक्षिप्रश्रवोवासवैः ॥
तीक्ष्णोग्राम्बुपभेषुमद्यमुदितंक्षिप्रान्त्यवह्नीन्द्रभादि-
त्यैन्द्राम्बुपवासवेषुहिगवांशस्तः क्रयोविक्रयः ॥१३॥

अनुराधा, मूल, ध्रुव मृदु क्षिप्र नक्षत्र शतभिषा और शुभवार तिथियोंमें लता वृक्ष, अन्नादिरोपण बीज बोपन करना तथा ध्रुव मृदु क्षिप्र नक्षत्र एवं श्रवण धनिष्ठामें प्रथम राजदर्शन करना तथा तीक्ष्ण, उग्र नक्षत्र और शतभिषामें मद्यका आरंभ करना क्षिप्र नक्षत्र, रेवती, कृत्तिका, ज्येष्ठा, मृगशिर, पुनर्वसु, शतभिषा, धनिष्ठामें गौ आदि पशुओंका (क्रय विक्रय) लेना देना आदि व्यवहार करना ॥ १३ ॥

(इं० व०) लग्नेशुभेचाष्टमशुद्धिसंयुतेरक्षापशूनांनिजयोनिभेचरे ॥
रिक्ताष्टमीदर्शकुजःश्रवोध्रुवत्वाष्ट्रेषुयानंस्थितिवेशनं नसत् ॥१४॥

(शुभलग्न) शुभग्रहोंके राशिलग्न जिससे अष्टमस्थानभी (शुद्ध) ग्रहरहित हो तथा पशुयोनिनक्षत्रोंमें एवं चरनक्षत्रोंमें पशुओंका रक्षा संबंधि कार्य्य करने और रिक्ता ४।९।१४ अष्टमी अमा तिथि मंगलवार श्रवण चित्रा ध्रुवनक्षत्रोंमें पशुओंकी स्थिति एवं प्रवेश न करना ॥ १४ ॥

(मं० क्रां०) भैषज्यंसल्लघुमृदुचरेमूलभेद्व्यङ्गलग्नेशुक्रेन्द्वीज्ये-
विदिचदिवसेचापितेषांरवेश्च ॥ शुद्धेरिःफद्युनमृतिग्रहेसत्तिथौ
नोजनेभैंसूचीकर्माप्यदितिवसुभत्वाष्ट्रमित्राश्विपुष्ये ॥ १५ ॥

लघु, मृदु चर, नक्षत्र तथा मूलमें. द्विस्वभाव राशि ३।६।९।१२ के लग्न

जिनसे १२।७।८ भाव, शुद्ध, ग्रहरहित हों तथा शुक्र, चंद्र, बृहस्पति, बुध रविवारमें (सत्तिथौ) रिक्ता अमारहित तिथियोंमें औषधिसेवन करना परंतु जन्मनक्षत्र तिथि उस दिन हो तो न करना और पुनर्वसु, धनिष्ठा, चित्रा, अनुराधा, अश्विनीमें (सूचीकर्म) सिलाई कसीदा आदि काम करना ॥ १५॥

(अनुष्टुप्) क्रयर्क्षेविक्रयोनेष्टोविक्रयर्क्षेक्रयोपिन ॥
पौष्णाम्बुपाश्विनीवातश्रवश्चित्राःक्रयेशुभाः ॥ १६ ॥

जिन नक्षत्रोंमें वस्तु मोल लेना कहाहै उनमें बेचनेका आरंभ न करना जिनमें बेचनेका आरंभ कहाहै उनमें खरीद न करना यह नियम साधारण व्यवहारके आरंभमात्रका है सर्वदा नहीं यदि सर्वदाको यह नियम माना जाय तो व्यापारही न होवे जैसे किसी दिन खरीदनेका नक्षत्र देखकर कोई खरीदने आया परंतु बेचनेका नक्षत्र न होनेसे उस दिनकोही न बेचेगा तो क्रेता कहांसे उक्त मुहूर्तपर खरीद सकेगा ऐसेही बेचनेके मुहूर्तपर किसीने बेचना चाहा परंतु खरीददार उस मुहूर्तपर लेता नहीं तो किसको बेचना ऐसी शंकामें यह नियम प्रथमारंभमात्रको है जैसे कोठावाले आदि महाजन समयपर बहुत माल खरीदतेहैं पुनः बिक्रीके समयपर बेचतेहैं ऐसेमें यह मुहूर्त है नित्यके व्यापारको नहीं. रेवती, शतभिषा, अश्विनी, स्वाती, श्रवण खरीदनेको शुभ हैं ॥ १६ ॥

(शा॰वि॰) पूर्वाद्रीशकृशानुसार्पयमभेकेन्द्रद्विकोणेशुभैः-
षट्त्र्यायेष्वशुभैर्विनाघटतनुंतद्विक्रयःसत्तिथौ ॥
रिक्ताभौमघटान्विनाचविपणिर्मैत्रध्रुवाक्षिप्रभे-
लग्नेचन्द्रसितेव्ययाष्टरहितैः पापैःशुभैर्ध्यायखे ॥१७॥

तीनों पूर्वा, विशाखा, कृत्तिका, आश्लेषा, भरणी, नक्षत्रमें तथा केन्द्र १। ४।७।१० द्वि २ कोण ९।५ लग्नसे शुभग्रह हों ३।६।११ भावोंमें पापग्रह हों कुंभलग्न न हो एवं शुभतिथियोंमें (विक्रय) बेचनेका आरंभ करना और दुकानके आरंभके लिये रिक्ता तिथि मंगलवार कुंभलग्न छोडके अनुराधा,

ध्रुव, क्षिप्र नक्षत्रोंमें तथा लग्नमें चंद्रमा शुक्र हो पापग्रह आठवें बारहवें न हों शुभग्रह २ । ११ । १० । भावोंमें हों ऐसे मुहूर्तमें पण्यारंभ करना लग्नका चंद्रमा सर्व कार्य्योंमें वर्जित है परंतु (वैश्यों) दुकानदारोंके स्वामी होनेसे तथा शुक्रके साथ होनेसे लग्नका चंद्रमा गुणी कहाहै ॥ १७ ॥

(इंद्रवज्रा) क्षिप्रान्त्यस्विन्दुमरुज्जलेशादित्येष्वरिक्तारदिनेप्रशस्तम् ॥
स्याद्वाजिकृत्यंत्वथहस्तिकार्य्यंकुर्य्यान्मृदुक्षिप्रचरेषुविद्वान् ॥ १८ ॥

क्षिप्रनक्षत्र रेवती, मृगशिर, स्वाति, शतभिषा, पुनर्वसुमें रिक्तातिथि भौमवार छोडके घोडोंका क्रयविक्रय आदि कृत्य करना घोडेकी सवारीके लिये ग्रंथांतरोंमें चक्र है कि घोडेका आकार बनाके सूर्य्यके नक्षत्रसे दिननक्षत्र पर्यंत कंधामें ५ नक्षत्र लक्ष्मी । पीठमें १० न० अर्थसिद्धि । पुच्छमें २ स्त्री-नाश । पैरोंमें ४ रणमें भंग । पेटमें ५ घोडानाश । मुखमें २ धनलाभ और विद्वानने मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर नक्षत्रोंमें ऐसेही हाथीका कृत्य करना तथा शुभ-लग्न अंशक तारामें और शनिवारमें एवं शनि लग्नमें हो हाथीको अंकुशारंभ करना ॥ १८ ॥

(शा० वि०) स्याद्भूषाघटनंत्रिपुष्करचरक्षिप्रध्रुवेरत्नयुक्त-
त्तीक्ष्णोग्रविहीनभेरविकुजेमेषालिसिंहेतनौ ॥
तन्मुक्तासहितंचरध्रुवमृदुक्षिप्रेशुभेसत्तनौतीक्ष्णो-
ग्राश्विमृगद्विदैवदहनेशस्त्रंशुभंघट्टितम् ॥ १९ ॥

त्रिपुष्कर (जिननक्षत्रोंके ३ चरण एक राशिपर एक एक राशिपर है) चर, क्षिप्र, ध्रुव नक्षत्रोंमें भूषण घडने जो भूषण रत्नसहित (जडाऊ) हो तो तीक्ष्ण, उग्र नक्षत्र वर्जित नक्षत्र तथा रवि मंगलवार, मेष वृश्चिक सिंह लग्नमें करना यदि मोतियोंका भूषण हो तो चर, ध्रुव, मृदु, क्षिप्र नक्षत्र चंद्र शुक्रवार ४ । २ । ७ लग्नमें करना यही चांदीके भूषणोंकोभी जानना तीक्ष्ण, उग्र नक्षत्र अश्विनी मृगशिर, विशाखा, कृत्तिकामें शस्त्र घडना शुभ होताहै ॥ १९ ॥

(स्रग्धरा) मुद्राणांपातनंसद्ध्रुवमृदुचरभक्षिप्रभैर्वान्दुसौरेवस्त्रे
पूर्णाजयाख्येनचगुरुभृगुजास्तेविलग्नेशुभैः स्यात् ॥
वस्त्राणांक्षालनंसद्वसुहयदिनकृत् पञ्चकादित्यपुष्ये-
नोरिक्तापर्वषष्ठीपितृदिनरविजज्ञेषुकार्य्यंकदापि ॥ २० ॥

ध्रुव, मृदु, चर क्षिप्र नक्षत्रोंमें सोम शनिवाररहित पूर्णा, जयातिथियों ५ । १० । १५ । २ । ७ । १२ । में शुभलग्नमें गुरु शुक्रास्तादि दोषरहित समयमें (मुद्रापातन) और धनिष्ठा, अश्विनी, हस्तसे पांच नक्षत्र पुनर्वसु, पुष्य, नक्षत्रोंमें स्वयं वस्त्रक्षालन करना यद्वा (रजक)धोबीको देना हो तो उक्तनक्षत्रोंमें देना परंतु रिक्तातिथि, षष्ठी, पर्वदिन, अमावास्या और शनि बुधवारमें वस्त्रप्रक्षालन कदापि न करना ॥ २० ॥

(स्रग्धरा) संधार्याः कुन्तवर्मेष्वसनशरकृपाणासिपुत्र्योविरिक्ते
शुक्रेज्यार्केह्निमैत्रध्रुवलघुसहितादित्यशाक्रद्विदैवे ॥
स्युर्लग्नेपि स्थिराख्येशशिनिचशुभदृष्टेशुभैः केन्द्रगैः
स्याद्भोगः शय्यासनादेर्ध्रुवमृदुलघुहर्यन्तकादित्यइष्टः ॥२१॥

रिक्तातिथिरहित शुक्र बृहस्पति रविवार, मैत्र, ध्रुव, लघु नक्षत्र तथा पुनर्वसु, ज्येष्ठा, विशाखामें (कुंत) प्राम, मात्रासहित तलवार वाखुंरवरी छुरी (वर्म) कवच वक्तर धारन करने तथा इस कृत्यमें स्थिरलग्न तथा चन्द्रमापर शुभग्रहोंकी दृष्टि और शुभग्रह केंद्रमें आवश्यक हैं ध्रुव, मृदु, लघु, श्रवण, भरणी, पुनर्वसु नक्षत्रोंमें (शय्या) चारपाई पलंग, पीठ, मृगचर्म पादुका आदि बैठने तथा सोनेके उपयोगिवस्तु काममें लेनी ॥ २१ ॥

(शा०वि०) अन्धाक्षंवसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्यमान्त्याभिधं-
मन्दाक्षंरविविश्वमित्रजलपाश्लेषाश्विचान्द्रंभवेत् ॥
मध्याक्षंशिवपित्रजैकचरणत्वाष्ट्रेन्द्रविध्यन्तकंस्वक्षं-
स्वात्यादितिश्रवोदहनभाहिर्बुध्न्यरक्षोभगम् ॥ २२ ॥

रोहिणी, पूर्वाषाढा, धनिष्ठा, पुष्य, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, रेवती,

अंधाक्षसंज्ञक हैं. हस्त, उत्तराषाढा, अनुराधा, शतभिषा, आश्लेषा, अश्विनी, मृगशिर मंदाक्ष संज्ञक हैं. आर्द्रा मघा पूर्वाभाद्रपदा चित्रा ज्येष्ठा अभिजित् भरणी मध्याक्ष संज्ञक हैं. उत्तराभाद्रपदा मूल पूर्वाफाल्गुनी स्वाती पुनर्वसु श्रवण कृत्तिका सुलोचन है इनकी गिननेकी सुगमरीति यहभी है कि रोहिणीसे ४ । ४ नक्षत्र क्रमसे अंध, मंद, मध्य, सुलोचन होते हैं. जैसे रो० अंध मृ० मंद आ० मध्य पु० सुलोचन पुनः तिष्य अंध० आश्लेषा मंद इत्यादि॥ २२ ॥

(अनु०) विनष्टार्थंम्यलाभोन्धेशीघ्रंमन्देप्रयत्नतः ॥
स्याद्दूरेश्रवणंमध्येश्रुत्याप्तीनसुलोचने ॥ २३ ॥

नक्षत्रोंकी उक्त संज्ञाओंका प्रयोजन है कि कुछ वस्तु अंधलोचन नक्षत्रमें खोई गई हो तो शीघ्र मिले. मंदलोचनमें यत्न करनेसे मिले. मध्यलोचनमें दूरतर पतामात्र लगे. वस्तु हाथ न आवे. सुलोचनमें मिलना तो कहां रहा किंतु पता सुनाईभी न देवे. जब वस्तु खोये जानेका दिन वा नक्षत्र ज्ञान न हो तो प्रश्नसमय वर्त्तमान नक्षत्रसे कहना ॥ २३ ॥

(अनु०) तीक्ष्णमिश्रध्रुवोग्रैर्यद्द्रव्यंदत्तंनिवेशितम् ॥
प्रयुक्तंच विनष्टंच विष्ट्यां पातेचनाप्यते ॥ २४ ॥

तीक्ष्ण, मिश्र, ध्रुव, उग्र, नक्षत्र तथा भद्रा व्यतीपातमें जो धनादि किसीको पुनः लेनेके हेतु दिया. वा चोर ले गया. वा खोया गया. वा कर्जा दिया जाय तो पुनः मिलेगा नहीं ॥ २४ ॥

(शा०वि०) मित्रार्कध्रुववासवाम्बुपमघातोयान्त्यपुष्येन्दुभिः
पापैर्हीनबलैस्तनौसुरगुरौज्ञेवाभृगौखेविधौ ॥
आप्येसर्वजलाशयस्यखननंव्यंभोमघैः सेन्द्रभे-
स्तैर्नृत्यंहिबुकेशुभेस्तनुगृहेज्ञेज्जेज्ञराशौशुभम् ॥२५॥

अनुराधा, हस्त, ध्रुवनक्षत्र धनिष्ठा शतभिषा मघा पूर्वाषाढा रेवती पुष्य मृगशिरमें, तथा पापग्रह हीनबलि हों शुभलग्नमें बुध बृहस्पति शुक्रमेंसे कोई

हो चंद्रमा दशम स्थानमें जलचर राशिका हो ऐसे समयमें बावडी, कूप, तालाव आदि जलाशय खनना वा बनाना और पूर्वाषाढा मघारहित ज्येष्ठा सहित उक्तनक्षत्र तथा लग्नसे चौथे शुभग्रह और लग्नमें बुध बुधकी राशि ३ । ६ के चंद्रमामें "नृत्यारंभ" नाच खेल नाटकादियोंका आरंभ करना ॥२५॥

(शालिनी) क्षिप्रेमैत्रेवित्सिताकेंज्यवारेसौम्येलग्नेर्ककुजेवाखलाभे ॥
योनेर्मैत्र्यांराशिपोश्चापिमैत्र्यांसेवाकार्य्या स्वामिनः सेवकेन ॥२६॥

क्षिप्र, मैत्र, नक्षत्र, बुध, शुक्र, रवि, गुरुवार, तथा शुभग्रहयुक्त लग्नमें और सूर्य्य वा मंगल दशम वा ग्यारहवां हो ऐसे मुहूर्त्तमें (सेवक) नोकरने स्वामीक सेवाका आरंभ करना परंतु स्वामिसेवककी योनियोंकी मैत्री तथा राशियोंकी मैत्री मुख्य विचार्य्य है यदि योनि एवं राशियोंकी परस्पर मैत्री हो तो सेवा शुभ होती है ॥ २६ ॥

(शा० वि०) स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभेकर्णत्रयाश्वेचरे
लग्ने धर्मसुताष्टशुद्धिसहितेद्रव्यप्रयोगःशुभः ॥
नारेग्राह्यमृणंतु संक्रमदिनेवृद्धौकरेर्केह्नियत्त-
द्वंशेषुभवेदृणंनचबुधेदेयं कदाचिद्धनम् ॥ २७ ॥

स्वाती, पुनर्वसु, मृदुनक्षत्र विशाखा पुष्य श्रवण धनिष्ठा शतताग अश्विनीनक्षत्र, तथा चर लग्नमें एवं ९ । ५ स्थानोंमें शुभग्रह हों पापग्रह न हों अष्टमभावमें कोई ग्रह न हो ऐसे मुहूर्त्तमें (द्रव्यप्रयोग) धनवृद्धिके लिये ऋणादि देना, तथा मंगलवार संक्रांति औ रविवार युक्त हस्तमें ऋण न लेना, यदि लेवे तो उसके वंशसेभी ऋण न उतरे और बुधवारको कदाचितभी ऋण न देना ॥ २७ ॥

(शा० वि०) मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैर्विनार्कशनिं
पापैर्हीनबलैर्विधौजललवेशुक्रेविधौमांसले ॥
लग्नेदेवगुरौ हलप्रवहणं शस्तंनासिंहेघटे-
कर्काजैणघटेतनौक्षयकरंरिक्तासुषष्ठ्यांतथा ॥ २८ ॥

मूल, विशाखा, मघा, चर, ध्रुव, मृदु, क्षिप्र नक्षत्रोंमें रवि शनिरहित वारोंमें तथा पापग्रहहीन बली चंद्रमा जलचर राशिके अंश तथा राशिमें हों और शुक्र चंद्रमा (बलवान्) उदय हो, बृहस्पति लग्नमें हो सिंह, कुंभ, कर्क, मेष, मकर, धन, लग्न रिक्ता षष्ठी तिथि न हो ऐसे मुहूर्त्तमें हल जोतना आदि कृषिकर्मका आरंभ करना रिक्ता षष्ठी आदि वर्जितोंमें करनेसे कृषिक्षय होती है ॥ २८ ॥

(शा० वि०) एतेषुश्रुतिवारुणादितिविशाखोडूनिभौमं विना
बीजोप्तिर्गदिताशुभात्वशुभतोष्टाग्नीन्दुरामेन्दवः ॥
रामेन्द्वग्नियुगान्यसच्छुभकराण्युप्तौहलेर्कोज्झिता-
द्भाद्रामाष्टनवाष्टभानिमुनिभिःप्रोक्तान्यसत्सन्तिच ॥२९॥

श्रवण, शतभिषा, पुनर्वसु, विशाखा, और मंगलवाररहित पूर्वश्लोकोक्त हलप्रवाहनक्षत्रोंमें बीजवापन करना जब सूर्य आर्द्राके प्रथम चरणपर जाता है तो उस दिनसे तीन दिन पृथ्वीका रज उत्पन्न होता है. इन दिनों पृथ्वीमें बीज न बोपना बीजवापनमें विशेषविचार फणिचक्रका है कि राहुके नक्षत्रसे ८ नक्षत्र अशुभ ३ शुभ १ अशुभ ३ शुभ १ अशुभ ३ शुभ १ अशुभ ३ शुभ ४ अशुभ दिननक्षत्रपर्यंत गिनके जहां आवे ऐसा फल जानना. ऐसेही हलप्रवाह (खेती जोतनेके) लिये हलचक्र है कि सूर्यके भुक्तनक्षत्रसे ३ अशुभ ८ शुभ ९ अशुभ ८ इसमें २८ नक्षत्र अभिजित सहित है. इन चक्रोंमें पूर्वोक्त नक्षत्र शुभस्थानमें हो तो लेना, अशुभ स्थानमें हो तो न लेना अनुक्तनक्षत्र चक्रोंमें शुभभी हो तो न लेना ग्रंथांतरमतसे चक्र ऐसे हैं ॥ २९ ॥

बीजोप्तिचक्रम् ।

ग्रन्थान्तरे–भवेद्भत्रितयं मूर्ध्नि धान्यनाशाय राहुभात् ।
गले त्रयं कज्जलाय वृद्धिर्भद्वादशोदरे ॥
निस्तण्डुलत्वं लांगूले भचतुष्टयमीरितम् ।
नाभावहिपंचकं च बीजोप्तावीतयः क्रमात् ॥
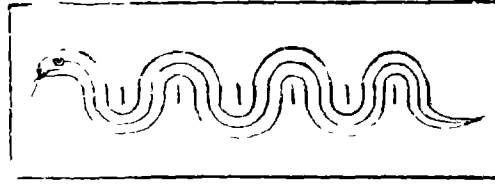
हलचक्रम् ।

ग्रन्थान्तरे—हलदण्डिकयूपानां द्विद्विस्थानेत्रिकंत्रिकम् ।
योक्त्रयोः पञ्चकंमध्ये गणनाचक्रलाङ्गले ॥
दण्डस्थे च गवां हानिर्यूपस्थे स्वामिनोभयम् ।
लक्ष्मीर्लाङ्गलयोक्त्रेषुक्षेत्रारम्भदिनर्क्षके ॥
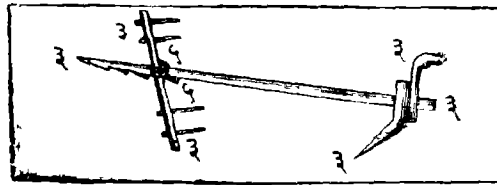
(शा० वि०) त्वाष्ट्रान्मित्रकभाद्वयेम्बुपलघुश्रोत्रे शिरामोक्षणं
भौमार्केज्यदिनेविरेकवमनाद्यं स्याद्बुधार्कीविना ॥
मित्रक्षिप्रचरध्रुवेरविशुभाहेलग्नवर्गेविदो
जीवस्यापितनौगुरौनिगदिताधर्मक्रियातद्बले ॥ ३० ॥

चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मृगशिर, शतभिषा, श्रवण और लघुनक्षत्रोंमें मंगल बृहस्पति रविवारमें (शिरामोक्षण) नसियोंद्वारा रुधिर निकासना तथा उक्तनक्षत्रोंमें बुध शनि विना अन्य वारोंमें (वमनविरेक) औषधिसे रद्द, दस्त लेने और मित्र, क्षिप्र, चर, ध्रुव, नक्षत्रोंमें रवि चंद्र बुध बृहस्पतिवार बुध गुरुके (वर्ग) नवांशादि किसी लग्नमें तथा लग्नके बृहस्पति एवं कर्त्ताके बृहस्पति शुद्धिमें (धर्मक्रिया) कोटिहोम रुद्रानुष्ठानादि करने ॥ ३० ॥

(व० ति०) तीक्ष्णाजपादकरवह्निवसुश्रुतीन्दुस्वातीमघोत्तरज-
लान्तकतक्षपुष्ये ॥ मन्दाररिक्तरहितेदिवसेतिशस्ताधान्यच्छि-
दानिगदितास्थिरभेविलग्ने ॥३१ ॥

तीक्ष्ण नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा हस्त कृत्तिका धनिष्ठा श्रवण मृगशिर स्वाती मघा तीनहूं उत्तरा पूर्वाषाढा भरणी चित्रा पुष्यमें तथा शनि मंगलवार रिक्तातिथि रहित और स्थिरराशिके लग्नमें (अन्न) पक्की खेती काटनी ॥ ३१ ॥

(व० ति०) भाग्यार्यमश्रुतिमघेन्द्रविधातृमूलमैत्र्यान्त्यभेषुगदितंकणमर्दनंसत् ॥ द्वीशाजपान्निर्ऋतिधातृशतार्यमक्षैंसस्यस्यरोपणमिहार्किकुजौविनासत् ॥ ३२ ॥

पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, श्रवण, मघा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मूल, अनुराधा, रेवती नक्षत्रोंमें शुभतिथिवारमें (अन्नमर्दन) चणा गेहूं आदिका मर्दन भुसेसे अलग करना विशाखा पूर्वाभाद्रपदा मूल रोहिणी शततारा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रोंमें शनि मंगलवार वर्जित करके अन्न पौदेसे लेके दूसरे स्थल पानीके खेतीमें रोपण करना ॥ ३२ ॥

(व० ति०) मिश्रोग्ररौद्रभुजगेन्द्रविभिन्नभेषुकर्कोजतौलिरहितेजतनौशुभाहे ॥ धान्यस्थितिः शुभकरीगदिताध्रुवेज्यद्वीशेन्द्रदस्रचरभेषुचधान्यवृद्धिः ॥३३ ॥

मिश्र, उग्र, आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा रहित नक्षत्रोंमें कर्क मेष तुला रहित लग्नमें शुभवारमें (अन्नस्थिती) खेतीको ढार आदिमें स्थापन करना. ध्रुव, पुष्य, विशाखा, ज्येष्ठा और चरनक्षत्रोंमें (धान्यवृद्धि) अन्न व्याजपर देना, अर्थात् अन्न उधारे देकर कुछ महीनोंमें सवाया वा ड्योढा लेते हैं ॥ ३३ ॥

(व० ति०) क्षिप्रध्रुवान्त्यचरमैत्रमघासुशस्तंस्याच्छान्तिकंसहचमङ्गलपौष्टिकाभ्याम् ॥ खेर्केविधौसुखगतेतनुगेगुरौनोमौढ्यादिदुष्टसमयेशुभदंनिमित्ते ॥ ३४ ॥

क्षिप्र, ध्रुव, रेवती, चर मैत्र नक्षत्रोंमें तथा लग्नसे दशम सूर्य्य चतुर्थ चंद्र लग्नके गुरु होनेमें मूल गंडांतादि वा केतु, उत्पातदर्शनादि शांति तथा पौष्टिककर्म करने नैमित्तिकशांति गुर्वस्त शुक्रास्त बालवृद्धादि दुष्टसमयमेंभी शुभ होती है ॥ ३४ ॥

(अनुष्टुप्) सूर्यभात्त्रित्रिभेचान्द्रेसूर्यविच्छुक्रपङ्गवः ॥
चन्द्रारेज्यागुशिखिनोनेष्टाहोमाहुतिःखले ॥ ३५ ॥

होमको आहुति कहते हैं शुभग्रहकेमें होम करना पापग्रहकी आहुतीमें न करना सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रर्क्षपर्यंत ३ । ३ गिनके प्रथम ३ में सूर्यकी फिर ३में बुधकी एवं शुक्र, शनि चंद्रमा मंगल गुरु राहु केतुकी क्रमसे आहुती जाननी ३५

(इं०व०) सैकातिथिर्वारयुताकृताप्ताशेषेगुणेभ्रेभुविवह्निवासः ॥
सौख्यायहोमेशशियुग्मशेषेप्राणार्थनाशौदिविभूतलेच ॥ ३६ ॥

वर्तमानतिथिमें (१) जोडके वार जोडना (४) से (शेष) नष्ट करना जो शेष० । वा ३ रहे तो पृथ्वीमें अग्निका वास जानना हवन करनेमें सुख होगा यदि २ । १ शेष रहे तो वह्निवास नहीं होम करनेमे प्राणधन नाश होते हैं ॥ ३६ ॥

(अनुष्टुप्) नवान्नंस्याच्चरक्षिप्रमृदुभेसत्तनौदिवा ॥
विनानन्दाविषघटीमधुपौषार्किभूमिजान् ॥ ३७ ॥

पौष, चैत्रमास, शनि, मंगलवार, नंदा १ । ६ । ११ तिथि (विषघटी) विवाहप्रकारोक्त इन सबको छोडकर शुभयुक्त दृष्टलग्नमें तथा चर, क्षिप्र, मृदु, नक्षत्रोंमें (नवान्न) नई फसलका अन्न प्राशन करना ॥ ३७ ॥

(अनु०) याम्यत्रयविशाखेन्द्रसार्पपित्रेशभिन्नभे ॥
भृग्विज्यार्केदिनेनौकाघटनंसत्तनौशुभम् ॥ ३८ ॥

भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, विशाखा, ज्येष्ठा, आश्लेषा, आर्द्रा रहित नक्षत्रोंमें तथा शुक्र गुरु रविवारमें गुणवान् लग्नमें (नौका) नाव डोंगीआदि घडनी ॥ ३८ ॥

(अनु०) मूलार्द्राभरणीपित्र्यमृगेसौम्येघटेतनौ ॥
सुखेशुक्रेष्टमेशुद्धेसिद्धिर्वीराभिचारयोः ॥ ३९ ॥

मूल, आर्द्रा, भरणी, मघा, मृगशिर नक्षत्रोंमें तथा कुंभलग्नमें बुध अथवा चतुर्थ शुक्र तथा अष्टम शुद्ध हो ऐसे मुहूर्त्तमें वीरसाधन एवं (अभिचार) मारणादि जादूगरी करनी यहाँ लग्नके बुध चतुर्थ शुक्र कहा. यह असंभव है. इससे 'अथवा' पद लिखा ॥ ३९ ॥

(व० ति०) व्यन्त्यादितिध्रुवमघानिलसार्पधिष्ण्येरिक्तेतिथौचरतनौविकवीन्दुवारे ॥ स्नानंरुजाविरहितस्यजनस्यशस्तंहीने विधौखलखगैर्भवकेन्द्रकोणे ॥ ४० ॥

जब रोगी रोगसे निर्मुक्त होता है उसके स्नानका मुहूर्त है कि रेवती पुनर्वसु ध्रुवनक्षत्र मघा स्वाती रहित अन्यनक्षत्रोंमें तथा रिक्तातिथि चरलग्नमें शुक्र चंद्रवाररहित वारोंमें लग्नसे पापग्रह केंद्र कोणोंमें हो तथा (चंद्रमाहीन) जन्मराशिसे ४। ८। १२ स्थानमें हो तथा (चंद्रमाहीन) स्थानमें हो ऐसेमें रोगमुक्त स्नान करना ॥ ४० ॥

(अनुष्टुप्) मृदुध्रुवक्षिप्रचरेज्ञेगुरौवाखलग्नगे ॥
विधौज्ञर्गेवर्गस्थेशिल्पारम्भःप्रसिद्ध्यति ॥ ४१ ॥

मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर नक्षत्रोंमें बृहस्पति वा बुध दशम वा लग्नमें हो और चंद्रमा बुध वा गुरुके नवांशादि षड्वर्गमेंसे किसीमें हो तो (शिल्पविद्या) कारीगरीके कामका आरंभ करना ॥ ४१ ॥

(अनु०) सुरेज्यमित्रभाग्येषुचाष्टम्यांतैतिलेहरौ ॥
शुक्रदृष्टेतनौसौम्येवारेसन्धानमिष्यते ॥ ४२ ॥

पुष्य, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, अष्टमी द्वादशीतिथिमें वा तैतिलकरणमें लग्नमें शुक्र हो वा शुक्रदृष्ट लग्न हो और शुभवारमें (प्रीति) मैत्री, दोस्तीका आरंभ करना ॥ ४२ ॥

(व० ति०) त्यक्त्वाष्टभूतशनिविष्टिकुजान् जनुर्भमासौमृतौरविविधूअपिभानिनाड्याः ॥ द्व्यङ्गेचरेतनुलवेशशिजीवताराशुद्धौ करादितिहरीन्द्रकपेपरीक्षा ॥ ४३ ॥

अष्टमी, चतुर्दशीतिथि, शनि, मंगलवार, भद्रा जन्मनक्षत्र जन्ममास गोचरसे अष्टम सूर्य चंद्रमा और नाडीनक्षत्र जन्मनक्षत्रसे १०।१६।१८।२३।२५।१ नाडीसंज्ञक हैं इतने छोडके द्विस्वभाव, चरलग्ननवांशकोंमें चंद्र गुरु ताराशुद्धिमें और हस्त, पुनर्वसु, श्रवण, ज्येष्ठा, शतभिषामें (परीक्षा) दिव्यादि करना॥४३॥

(अनु०) व्ययाष्टशुद्धोपचयेलग्नगेशुभदृग्युते ॥
चन्द्रेत्रिषट्दशायस्थेसर्वारम्भःप्रसिद्ध्यति ॥ ४४ ॥

लग्नसे १२ । ८ भाव शुद्ध, ग्रहरहित तथा तात्काल लग्नजन्म राशिसे उपचय ३ । ६ । १० । ११ और १ में, चंद्रमा ३ ।६।११। १० में हो ऐसी लग्नशुद्धि समस्त शुभकार्य्योंमें आरंभ सिद्ध होना है ॥ ४४ ॥

(उ०जा०) स्वातीन्द्रपूर्वाशिवसार्पभेमृतिर्ज्वरेन्त्यमैत्रे स्थिरता भवेद्रुजः ॥ याम्यश्रवोवारुणतक्षभे शिवाघस्राहिपक्षोब्धिपार्कवासवे ॥ ४५ ॥

(उपेंद्रव०) मूलाग्निदास्त्रेनवपित्र्यभेनखा बुध्यार्यमेज्यादितिधातृभेनगाः ॥ मासोऽजवैश्वेथयमाहिमूलभे मिश्रेसपित्र्येफणिदंशनेमृतिः ॥ ४६ ॥

स्वाती, ज्येष्ठा, तीन पूर्वा, आर्द्रा, अश्लेषामें ज्वरादिरोग उत्पन्न हो तो मृत्यु होवे रेवती अनुराधामें रोग (स्थिर) बहुतदिन रहे भरणी श्रवण शततारा चित्रामें ११ दिन पर्य्यंत विशाखा हस्त धनिष्ठामें १५ दिन मूल कृत्तिका अश्विनीमें ९ दिन मघामें २० दिन तीन उत्तरा पुष्य पुनर्वसु रोहिणीमें ७ दिन मृगशिर उत्तराषाढामें ३० दिन रोग रहता है. भरणी अश्लेषा मूल मित्र, मघा, कृत्तिका विशाखा आर्द्रामें सर्प काटे तो मृत्यु होवे ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

(उ०जा०) रौद्राहिशक्राम्बुपयाम्यपूर्वाद्विदैववस्वाग्निषुपापवारे ॥
रिक्ताहरिस्कन्ददिनेचरोगेशीघ्रंभवेद्रोगिजनस्यमृत्युः ॥ ४७ ॥

आर्द्रा अश्लेषा ज्येष्ठा शततारा भरणी तीन पूर्वा विशाखा धनिष्ठा कृत्तिका नक्षत्र तथा पापवारमें रिक्ता ४ ।९। १४ द्वादशी षष्ठी तिथिमें जो रोगी होवे तो शीघ्र मृत्यु पावे चन्द्रमा गोचरसे ४ । ८ १ २होनेमें विशेष है ॥ ४७ ॥

(इं०व०) क्षिप्राहिमूलेन्दुहरीशवायुभे प्रेतक्रियास्याज्झपकुम्भगेविधौ ॥ प्रेतस्यदाहंयमदिग्गमंत्यजेच्छय्यावितानं गृहगोपनादिच ॥ ४८ ॥

अश्विनी पुष्य हस्त अश्लेषा मूल ज्येष्ठा श्रवण आर्द्रा स्वाती नक्षत्रोंमें (प्रेतक्रिया) और्ध्वदैहिक क्रिया न करनी । तथा मकरकुंभके चंद्रमामें पंचक होते हैं इनमें प्रेतका दाह, दक्षिणदिशागमन, (शय्या) विस्तरका कृत्य (चांदनी) चंदोया और घरकी लिपाई पोताई आदि मरमत उपलक्षणसे तृण काष्ठादि संग्रह न करना, प्रेतदाह आवश्यकमें कुश तथा रुईके ५ मूर्ति बनाकर प्रेतके साथ दाह करते हैं पंचकशांतिभी करते हैं ॥ ४८ ॥

(व०ति०) भद्रातिथीरविजभूतनयार्कवारेद्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे ॥ त्रैपुष्करोभवतिमृत्युविनाशवृद्धौत्रैगुण्यदोद्विगुणकृद्वसुतक्षचान्द्रे ॥ ४९ ॥

भद्रा २।७।१२ तिथि शनि मंगल रविवार विशाखा उत्तराफाल्गुनी पूर्वाभाद्रपदा इतने तिथिवार नक्षत्रोंमें एकही समय होनेमें त्रिपुष्कर योग होता है इसमें कोई मरे तो उस घरमें दो और मरे कुछ वस्तु खोई जाय तो दो और खोई जावें कुछ वस्तु मिले वा बढे तो दो और मिले और नक्षत्रके स्थानमें धनिष्ठा चित्रा वा मृगशिर हो तो उक्तफल द्विगुण होते हैं यह द्विपुष्कर है॥४९॥

(शा०वि०) शुक्रारार्किबुदर्शभूतमदनेनन्दासुतीक्ष्णोग्रभे
पौष्णेवारुणभेत्रिपुष्करदिनेन्यूनाधिमासेयने ॥
याम्येन्द्रात्परतश्चपातपरिघेदेवेज्यशुक्रास्तके
भद्रावैधृतयोःशवप्रतिकृतेर्दाहोनपक्षेसिते ॥ ५० ॥
जन्मप्रत्यरितारयोर्मृतिसुखान्त्येन्जेचकर्तुर्नस-
न्मध्योमैत्रभगादितिध्रुवविशाखाब्ध्यङ्घ्रिभेज्ञेपिच ॥
श्रेष्ठोर्केज्यविधोर्दिनेश्रुतिकरस्वात्यश्विपुष्येतथा
त्वाशौचात्परतोविचार्य्यमखिलंमध्येयथासंभवम् ॥५१॥

जब किसी मरेका प्रेत नहीं मिले तो (प्रतिकृति) पर्णशर करनेका मुहूर्त्त कहते हैं कि शुक्र मंगल शनिवारमें चतुर्दशी अमावास्या त्रयोदशी नंदा १।६।११ में तीक्ष्ण उग्र रेवती शततारा नक्षत्रोंमें त्रिपुष्कर योगमें मलमास

क्षयमासमें कर्क मकर संक्रांतिमें एकवर्षसे अधिक मरेको हो गया हो तो दक्षिणायनमेंभी तथा व्यतीपात परिघयोगमें शुक्रास्त गुर्वस्तमें भद्रा वैधृतिमें कृष्ण पक्षमें पर्णशरका दाह न करना ॥ ५० ॥ क्रिया करनेवालेका उस दिन जन्मप्रत्यरि तारा चौथा आठवां बारहवां चंद्रमा जन्म राशीमे न हो और अनुराधा पूर्वाफाल्गुनी पुनर्वसु ध्रुवनक्षत्र विशाखा मृगशिर चित्रा धनिष्ठा बुधवारमें उक्त कृत्य मध्यम कहा है तथा रवि गुरु चंद्रवार श्रवण हस्त स्वाती पुष्य अश्विनी नक्षत्र शुभ होते हैं (इतने विचार अशौचमे उपरांत) यदि किसी कारण अशौचमें प्रेतक्रिया न हुई हो तो तब हैं, अशौचमें उक्त विचार कुछ नहीं ॥ ५१ ॥

(उ०जा०) अभुक्तमूलंघटिकाचतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवंहिनारदः ॥ वसिष्ठएकद्विघटीमितंजगौबृहस्पतिस्त्वेकघटिप्रमाणकम् ॥ ५२ ॥

अभुक्त मूलका प्रमाण नारदमतमे ज्येष्ठाके अंत्यकी ४ घटी मूलके आदिकी ४ घटी मिलाके ८ घटी अभुक्त मूल होता है. वसिष्ठ ज्येष्ठांत्यकी एक मूलादिकी दो कहता है. बृहस्पति एकही घटी कहता है ॥ ५२ ॥

(उ०जा०) अथोचुरन्येप्रथमाष्टघट्योमूलस्यशक्रान्तिमपञ्चनाड्यः ॥ जातंशिशुंतत्रपरित्यजेद्वामुखंपितास्याष्टसमानपश्येत् ॥ ५३ ॥

अन्य आचार्य्य कहते हैं कि मूलादिकी ८ घटी ज्येष्ठान्त्यकी ५ घटी अभुक्त मूल है यह बहुमत होनेसे आचार्यने नारदमतही प्रमाण किया है इस अ० मूल० में जो बालक उत्पन्न हो तो उसे त्याग करना अथवा उस बालकका मुख आठवर्षपर्यंत न देखे तब शांतिकरके उपलक्षणसे अश्लेषांत्य मघादिमेंभी ऐसाही विचार है ॥ ५३ ॥

(उपजा०) आद्येपितानाशमुपैतिमूलपादेद्वितीयेजननी तृतीये ॥ धनंचतुर्थस्यशुभोथशान्त्यासर्वत्रसत्स्यादहिभे विलोमम् ॥ ५४ ॥

कन्या वा पुत्र मूलके प्रथम चरणमें उत्पन्न हो तो पितानाश होवे दूसरेमें हो तो माता मरे तीसरेमें हो तो धननाश होवे चौथे चरणमें हो तो शांति करके शुभ होवे किसीको दोष नहीं अश्लेषामें यही विचार विपरीत है जैसे च-

तुर्थचरणमें पिता मरे तीसरेमें माता, दूसरेमें धननाश प्रथम चरण शांतिकरके शुभ होताहै प्रकारांतर है कि १ वर्षमें पिताका ३ वर्षमें माताका २ वर्षमें धनका ९ वर्षमें श्वशुरका ५ वर्षमें भाईका ८ वर्षमें शाले वा मामाका अन्य अनुक्त बांधवादियोंका ७ वर्षमें नाश करताहै तस्मात् शांति करनी योग्य है. प्रकारांतरसे मूल तथा अश्लेषाका वृक्ष वा लतारूपसे चक्रन्यासपूर्वक विशेष विचार चक्रमें लिखाहै ॥ ५४ ॥

मूलवृक्षचक्र	मूलपुरुषचक्र	कन्याजन्मनिम्लचक्रम	अश्लेषाचक्रम्	सार्पवृक्षचक्रम्
मूले ७ मूलनाश	मूर्ध्नि ५ राजा	शीर्षे ४ पशुनाश	शिरसि ५ पुत्रादि	फले १० धन
स्तंभे ८ वंशनाश	मुखे ७ पितृमृत्यु	मुखे ६ धनहानि	मुख ७ पितृक्षय	पुष्पे ५ धन
त्वचि १० मातृक्लेश	स्कंधे ८ बली	कंठे ५ धनागम	नेत्रे २ मातृनाश	दले ९ राजभय
शाखा ११ मातुल	बाहौ ८ बली	हृदये ५ कुलहन्ता	ग्रीवा २ स्त्रीलंपट	शाखा ७ हानि
क्लेश पत्रे ५ मंत्रिपद	हस्ते ३ दानी	बाहौ ५ धनागम	स्कंध ४ गुरुभक्त	त्वचा १३ मातृहा
फले ४ विपुलाल०	हृदये ९ मंत्री	हस्ते ४ दयाधर्मी	हस्ते ८ बली	लता १२ पितृहा
शिखा ३ अल्पजीवी	नाभौ २ ज्ञानी	गुह्ये ४ कामिना	हृदये ११ आत्महा	स्कंध ४ अल्पायु.
	गुह्ये १० कामी	जंघे ४ मातुलघ्नी	नाभौ ६ भ्रम	
	जानु ६ मतिमान	जानु ४ भ्रातृनाश	गुदे ८ तपस्वी	
	पादे ६ मतिमान	पादे १० वधव्य	पादे ५ धनहा	

(इं० व०) स्वर्गे शुचिप्रोष्ठपदेषुमाघेभूमौनभःकार्तिकचैत्रपौषे॥ मूलं ह्यधस्तात्तुतपस्यमार्गवैशाखशुक्रेष्वशुभंचतत्र॥५५॥

आषाढ भाद्रपद आश्विन माघ महीनोंमें मूलका वास स्वर्गमें है श्रावण कार्तिक चैत्र पौष पृथ्वीमें वास है फाल्गुन मार्गशीर्ष वैशाख ज्येष्ठ पातालमें रहताहै जिस महीनेमें जहाँ रहताहै वहाँही फल करताहै अन्यलोकोंमें विशेषतः दोष नहीं ॥ ५५ ॥

(शा० वि०) गण्डान्तेन्द्रभशूलपातपरिघव्याघातगण्डावमेसंक्रान्तिर्व्यतिपातवैधृतिसिनीवालीकुहूदर्शके ॥ वज्रे कृष्णचतुर्दशीषुयमघण्टेदग्धयोगेमृतौ विष्टौसोदरभेजनिर्नेपितृभेशस्ता शुभाशान्तितः ॥ ५६ ॥

गंडांत, ज्येष्ठा, शूल, पात, परिघ, व्याघात, अतिगंड, क्षयतिथि, संक्रांती,

व्यतीपात,वैधृति, (सिनीवाली) शुक्लप्रतिपदाका पूर्वदल (कुहू) कृष्ण चतुर्दशी, उत्तरदल (दर्श) अमावास्या, वज्रयोग, कृष्णचतुर्दशी, यमघंट, दग्धयोग, मृत्युयोग, भद्रा, सहोदर, भाई, तथा मातापिताके जन्मनक्षत्र, इतनोंमें पुत्रकन्याजन्म अनिष्ट होता है इनकी शांति अन्य ग्रंथोंमें कही है उनके करनेसे शुभ होता है उपलक्षणसे ग्रहणजन्म (त्रिक) तीन पुत्रोंके पीछे कन्या तीन कन्याओंके पीछे पुत्रजन्म आदिभी ऐसेही हैं ॥ ५६ ॥

(उ०जा०) त्रित्र्यङ्गपञ्चाग्निकुवेदवह्नयःशरेषुनेत्राश्विशरेन्दुभूकृताः ॥
वेदाग्निरुद्राश्वियमाग्निवह्नयोऽब्धयःशतंद्विद्विरदाभतारकाः ॥ ५७ ॥

अश्विन्यादि नक्षत्रोंके तारा कहते हैं कि अश्विनीके ३ भरणीके ३ एवं कृ० ६ रो० ५ मृ० ३ आ० १ पु० ४ पु० ३ आ० ५ म० ५ पू० २ उ० २ ह० ५ चि० १ स्वा० १ वि० ४ अ० ४ ज्ये० ३ मू० ११ पू० २ उ० २ अभि० ३ श्र० ३ ध० ४ श० १०० पू० २ उ० २ रेवतीके ३२ इन ताराओंके गणती तथा वक्ष्यमाणरूपोंसे तारा पहँचाने जाते हैं ॥ ५७ ॥

(उ०जा०) अश्व्यादिरूपंतुरगास्ययोनिक्षुरोनएणास्यमणिगृहंच ॥
पृषत्कचक्रेभवनंचमञ्चःशय्याकरोमौक्तिकविद्रुमंच ॥ ५८ ॥
(रथोद्धता) तोरणंबलिनिभंचकुण्डलंसिंहपुच्छगजदन्तमञ्चकाः ॥
त्र्यस्त्रिचत्रिचरणाभमर्दलौवृत्तमञ्चयमलाभमर्दलाः ॥ ५९ ॥

अश्विन्यादियोंके रूप ॥ अश्विनी घोडाकासा मुख, भरणी भग, कृ०(क्षुर) उस्तरा, रो० गाडी, मृ०हारिण मुख, आ०मणि, पु०मकान, पु० बाण, अ० चक्र, म० मकान, पू० मंजा, उ० विस्तर, ह० हात, चि०मोती, स्वा० मूंगा, वि०तोरण, अ० भातका पुंज, ज्ये० कुंडल, मू० सेरका पूंछ, पू० हाथीदांत, उ० मंजा, अ० त्रिकोण, श्र० वामन, ध० मृदंग, श० वृत्तं, पू० मंजा, उ० यमल, रेवती मृदंग स्वरूप हैं ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

नक्षत्रचक्रम् ।

नक्षत्र	तारा	रूप	देवता	अवकहडाचक्र	गण	योनि	नाडी
अ.	३	घोडा	अश्विनी कुमार	चूचेचोला	दे.	अश्व	१
भ.	३	भग	यम	लीलूलेलो	म.	गज	२
कृ	६	छुरी	अग्नि	आईउए	रा	छाग	३
रो.	५	गाडी	ब्रह्मा	ओवावि	म	नाग	३
मृ.	३	हरिण	चन्द्र	वेवोकाकी	दे	नाग	२
आ.	१	मणि	शिव	कुघङछ	म	श्वान	१
पु	४	कमान	अदिति	केकोहाही	दे	मार्जार	१
ति.	३	बाण	अग्नि	हूहेहोडा	दे	छाग	२
अ.	५	चक्र	सर्प	डीडूडेडो	रा.	मार्जार	३
म.	५	घर	पिता	मामीमूमे	रा.	मूषक	३
पू.	२	मजा	भग	मोटाटीटू	म.	मूषक	२
उ.	२	बिलार	अर्यमा	टेटोपापी	म.	गौ	१
ह.	५	हात	सूर्य	पूषणठ	दे.	महिषी	१
चि.	१	मोती	त्वष्टा	पेपोरारी	रा	व्याघ्र	२
स्वा	१	मगा	वायु	रूरेरोता	दे.	महिषी	३
वि.	४	तोरण	इन्द्राग्नि	तीतूतेतो	रा.	व्याघ्र	३
अ	४	भात	मित्र	नानीनूने	दे	मृग	२
ज्ये	३	कुंडल	इन्द्र	नोयायियु	रा.	मृग	१
मू	११	सिंहपु	राक्षस	येयोभाभी	रा	श्वान	१
पू.	३	हाथी दा	जल	भूधफढ	म.	मर्कट	२
उ	२	मजा	विश्वेदेव	भेभोजाजि	म	नेवला	१
श्र	३	त्रिको	विधि	जुजेजोख	दे	नेवला	३
श्र.	३	वामन	विष्णु	खिखुखेखो	दे	मर्कट	३
ध	५	मृदङ्ग	वसु	गागिगुगे	रा	सिंह	२
श	१००	वृत्त	वरुण	गोसशिशु	रा	अश्व	१
पू	२	मजा	अजपाद	सेसोदादि	म	सिंह	१
उ	२	यमल	अहिर्बुध्न्य	दूथझञ	म.	गौ	२
रे.	३२	मृदङ्ग	पूषा	देदोचाचि	दे	गज	३

(उ० जा०) जलाशयारामसुरप्रतिष्ठासौम्यायनेजीवशशाङ्कशुक्रे ॥
दृश्येमृदुक्षिप्रचरध्रुवेस्यात्पक्षेसितेस्वर्क्षतिथिक्षणेवा ॥६०॥

जलस्थान, बगीचा, और देवता आदि प्रतिष्ठाका मुहूर्त कहते हैं कि, उत्तरायणमें बृहस्पति, चंद्रमा, शुक्रके उदयमें मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर नक्षत्रमें शुक्ल पक्षमें शुभ तिथिवार मुहूर्तमें तथा जिस देवताकी प्रतिष्ठा हो उसी स्वामी नक्षत्रमें जैसे विष्णुके श्रवणमें शिवके आर्द्रामें जलाशयका पूर्वाषाढा शततारामें. तथा रिक्तातिथि मंगलवार रहितमें उक्त कृत्य करना इसमें अगले श्लोकके प्रथमचरणका अर्थभी आ गया ॥ ६० ॥

(उ० जा०) रिक्तारवर्जेदिवसेतिशस्ताशशाङ्कपापैस्त्रिभवाङ्गसंस्थैः ॥
व्यन्त्याष्टगैः सत्खचरैर्मृगेन्द्रेसूर्य्योघटेकोयुवतौचविष्णुः ॥६१॥
शिवोनृयुग्मेद्वितनौचदेव्यःक्षुद्राश्चरेसर्वइमेस्थिरर्क्षे ॥
पुष्येग्रहाविघ्नपयक्षसर्पभूतादयोन्तेश्रवणेजिनश्च ॥ ६२ ॥

इति श्रीदैव० रामविर० मुहूर्तचिंता० द्वितीयं नक्ष० समाप्तम् ॥ २ ॥

प्रथमपादका अर्थ पूर्व कहा गया शेषका है कि जलाशय एवं बगीचाके प्रतिष्ठामें शुभलग्नमात्र विचार्य है ग्रहयोगकी विशेषता नहीं देवप्रतिष्ठामें चंद्रमा तथा पापग्रह ३ । ६ । ११ वे शुभ ग्रह ८ । १२ भावरहित स्थानोंमें होने शुभ होते हैं विशेषता है कि सूर्यकी प्रतिष्ठा सिंहलग्नमें ब्रह्माकी कुंभमें विष्णुकी कन्यामें शिवकी मिथुनमें मिथुनकन्या धनमीनमें देवीकी तथा दक्षिणमूर्त्यादियोंकी चरलग्नोंमें (क्षुद्र) चतुःषष्ठियोगिनी आदियोंकी (अनुक्त) इन्द्रादियोंकी स्थिरलग्नोंमें स्थापना करनी तथा चंद्रादिग्रह पुष्यनक्षत्रमें उपलक्षणसे सूर्य हस्तमें शिव ब्रह्मा पुष्य श्रवण अभिजितमें कुबेर स्कंद अनुराधामें दुर्गा आदि मूलमें सप्तर्षि व्यास वाल्मीकि आदि जिन नक्षत्रोंमें सप्तर्षि देखे जाते हैं अथवा पुष्यमें, गणेश, यज्ञ, नाग, भूत, विद्याधर, अप्सरा, राक्षस, गंधर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक, सिद्धादि रेवतीमें बुद्ध(जिन)श्रवणमें, इंद्र कुबेर वर्जित लोकपाल धनिष्ठामें, शेषदेवता तीन उत्तरारोहिणीमें प्रतिष्ठा युक्त करने ॥६१॥६२॥

इति श्रीदैवज्ञानंतसुतरामविरचिते मुहूर्त्तचिन्तामणौ महीधरकृतायां माहीधर्य्यां भाषाटीकायां द्वितीयं नक्षत्रप्रकरणं समाप्तम् ॥ २ ॥

अथ सङ्क्रान्तिप्रकरणम् ।

(वसन्तति०) घोरार्कसङ्क्रमणमुग्ररवौहिशूद्रान्ध्वाङ्क्षीविशोल- घुविधौचचरर्क्षभौमे ॥ चौरान्महोदरयुतानृपतीनज्ञमैत्रेमन्दाकि- नीस्थिरगुरौसुखयेच्चमन्दा ॥ १ ॥ विप्रांश्चमिश्रभृगुगातुपशूंश्च मिश्रातीक्ष्णार्कजेन्त्यजसुखाखलुराक्षसीच ॥

ग्रहोंकी एकराशीमे दूसरी राशिमें जाना संक्रांति कहाती है यह (१) मध्य- मासे (२) स्पष्टमे है यहां मध्यसंक्रमण छोडकर स्पष्ट संक्रांति कहते हैं यहभी सायन निरयन २ प्रकार है अन्यग्रहोंके संक्रांति घटी विवाहप्रकरणमें "देवद्व्यं- कर्तव" इत्यादि कहेंगे यहां मुख्यता सूर्यकी वारनक्षत्रभेदसे कहते हैं कि सूर्य- की निरयनांश संक्रांति यदि (रौद्रनक्षत्र) तीन पूर्वा भरणी मघामें तथा रवि- वारमें हो तो, घोरा नामकी शूद्रोंको प्रसन्न करनेवाली होती है लघुनक्षत्र चंद्रवा- रमें हो तो ध्वांक्षीनामकी वैश्योंको सुख देती है चरनक्षत्र मंगलवारमें हो तो महो- दरानामा, चोरोंको सुख करती है मैत्रनक्षत्र बुधवारमें हो तो मंदाकिनी नामकी राजाओंको सुख देती है स्थिरनक्षत्र गुरुवारमें हो तो मंदानाम ब्राह्मणोंको सुख देती है मिश्रनक्षत्र शुक्रवारमें हो तो मिश्रानाम पशुओंको सुख करती है तीक्ष्ण- नक्षत्र शनिवारमें हो तो राक्षसीनाम चांडालोंको सुख देती है ॥ १ ॥

(व० ति०) त्र्यंशेदिनस्यनृपतीन्प्रथमेनिहन्तिमध्येद्विजानपि विशोपरकेचशूद्रान् ॥ २ ॥ अस्तेनिशाप्रहरकेषुपिशाचकादी- न्नक्तञ्चरानपिनटान्पशुपालकांश्च ॥ सूर्य्योदयेसकललिङ्गिज- नंचसौम्ययाम्यावनंमकरकर्कटयोर्निरुक्तम् ॥ ३ ॥

दिनमानमें ३ से भाग लेके अंश होता है यदि संक्रांति दिनके प्रथम अंशमें हो तो राजाओंको (द्वितीय) मध्यत्र्यंशमें हो तो ब्राह्मणोंको तीसरेमें हो तो वै- श्योंको अस्तसमयमें हो तो शूद्रोंको (अनिष्ट) नाश फल कहा है रात्रिके प्रथम

प्रहरमें हो तो पिशाच भूतादियोंको दूसरेमें रात्रिंचरोंको तीसरेमें नाचनेवालोंको चौथेमें पशु पालनेवालोंको और सूर्य्योदय समयमें (लिंगिजन) पाखंडी वा कृत्रिमवेषधारियोंको नाशफल करती है और मकर संक्रमसे (सौम्य) उत्तरायण कर्क संक्रमणसे दक्षिणायन होती है ग्रंथांतर मत है कि, मेष संक्रांति भरण्यादि ४ नक्षत्रोंमें हो तो अन्नवृत्ति मघादि १० में हानि अन्यनक्षत्रोंमें सौख्य होता है जन्मनक्षत्रमें संक्राति राजाओंको शुभ औरको क्लेश धनक्षय करती है संक्रांतिवर्षाका फल १।६।१२।४ में हो तो सुख सुभिक्ष ११।९।५।३ में रोग युद्ध २।८।७।१० में रोग चोर अग्निभय होता है ॥ २ ॥ ३ ॥

(अनु०) षडशीत्याननंचापनृयुक्कन्याझषेभवेत् ॥
तुलाजौविषुवद्विष्णुपदंसिंहालिगोघटे ॥ ४ ॥

धन, मिथुन, कन्या, मीनकी संक्रांति षडशीतिमुखा नामकी तुलामेषकी विषुवती, सिंह वृश्चिक वृषकुंभकी, विष्णुपदा होती है इनकी प्रयोजन है कि दक्षिणायन विष्णुपदके आद्यकी ७ । ८ के मध्यकी षडशीत्यानन और मकरकी पीछेकी घटी अति पुण्य देनेवाली है ॥ ४ ॥

(उ०जा०) संक्रान्तिकालादुभयत्रनाडिकाःपुण्यामताः षोडशषोडशोष्णगोः ॥ निशीथतोर्वागपरत्रसंक्रमेपूर्वापराहान्तिमपुण्यभागयोः ॥ ५ ॥

संक्रांति समयसे १६ घटी पूर्व १६ घटी परेकी पुण्यकाल होता है यदि संक्रमण रात्रिमें हो तो अर्द्धरात्रिके पूर्व होनेमें पूर्वदिनका उत्तरार्द्ध तथा अर्द्धरात्रिके उत्तर संक्रम होनेमें दूसरे दिनका पूर्वार्धं पुण्यकाल होता है ॥ ५ ॥

(उ०जा०) पूर्णेनिशीथेयदिसंक्रमःस्याद्दिनद्वयंपुण्यमथोदयास्तात् ॥
पूर्वंपरस्ताद्यदियाम्यसौम्यायनेदिनेपूर्वपरेतुपुण्ये ॥ ६ ॥

यदि मध्यरात्रिमें संक्रमण हो तो पूर्व एवं परके दोनहूं दिन पुण्यकाल होता है कर्कसंक्रांति यदि अर्धरात्रिसे ऊपर सूर्य्योदयके भीतर हो तो पूर्वदिन तथा मकरसंक्राति सूर्य्यास्तसे ऊपर हो तो दूसरा दिन पुण्यकाल होता है ॥ ६ ॥

(इं०व०) संध्यात्रिनाडीप्रमितार्कबिम्बादर्द्धोदितास्तादधऊर्ध्वमत्र ॥
चेद्याम्यसौम्येअयनेक्रमात्स्तःपुण्यौतदानींपरपूर्वघस्रौ ॥७॥

सूर्य्योदयसे पूर्वकी तथा सूर्य्यास्तसे ऊपरकी ३ । ३ घटी संध्यासमय होता है यही हेतु कर्क मकर संक्रांतिके पूर्वपर दिन पुण्यकाल कहे हैं कि सूर्य्योदय संध्यामें दक्षिणायन हो तो पूर्वदिन तथा सायंसंध्यामें उत्तरायण हो तो उत्तर दिन पुण्यकाल स्नान दानादि योग्य होता है ॥ ७ ॥

(अनु०) याम्यायनेविष्णुपदेचाद्यमध्यातुलाजयोः ॥
षडशीत्याननेसौम्येपरानाड्योतिपुण्यदाः ॥ ८ ॥

याम्यायन विष्णुपद ४ । २ । ५ । ८ । ११ के संक्रांतियोंके पूर्वके १६ घटी तुलामेषके मध्यकी षडशीत्यानन । ३ । ६ । ९ । १२ के तथा मकर संक्रांतिके आगेकी १६ घटी अतिपुण्य देनेवाली होती है ॥ ८ ॥

(उ०जा०)तथायनांशाःखरसाहताश्चस्पष्टार्कगत्याविहृतादिनाद्यैः ॥
मेषादितःप्राक्चलसंक्रमाःस्युर्दानेजपादौबहुपुण्यदास्ते ॥९॥

ऊपर निरयनसंक्रांति कही अब सायनसंक्रांति कहते हैं कि, अयनांश ६० से गुणाकर सूर्य स्पष्टगतिसे भाग लेकर दिनघटी एलात्मक ३ लब्धि लेना मेषादि संक्रांति कालसे पहिले उतने दिनादि चलसंक्रम होता है दानजपादिमें बहुत पुण्य देनेवाला होता है ॥ ९ ॥

(उ०जा०)समंमृदुक्षिप्रवसुश्रवोग्निमघात्रिपूर्वास्रपभंबृहत्स्यात् ॥
ध्रुवद्विदैवादितिभंजघन्यंसार्पाम्बुपार्द्रानिलशाक्रयाम्यम् ॥१०॥

मृदु, क्षिप्र, धनिष्ठा, श्रवण, कृत्तिका, मघा, तीन पूर्वा और मूल ये १५ नक्षत्र समसंज्ञक हैं ध्रुव विशाखा पुनर्वसु ये ६ नक्षत्र बृहत्संज्ञक और अश्लेषा शततारा, आर्द्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, भरणी ६ नक्षत्र जघन्यसंज्ञक हैं ॥ १० ॥

(उ०जा०) जघन्यभेसंक्रमणेमुहूर्त्ताःशरेन्दवोबाणकृताबृहत्सु ॥
खरामसङ्ख्यासमभेमहर्घसमर्घसाम्र्यंविधुदर्शनेपि ॥११॥

जघन्यनक्षत्रोंमें संक्रम हो तो १५ मुहूर्त्त बृहत्में ४५ समनक्षत्रोंमें ३०

मुहूर्त्त जानने जो १५ मुहूर्त्तवाली संक्रांति हो तो (महर्घ) अन्नभाव तेज होवे ४५ मुहूर्त्तकी हो तो (सुलभ) सस्ता मंदा होवे ३० मुहूर्त्तवाली हो तो (सम) न तेज न मंदा सामान्य रहे ऐसाही विचार चंद्रोदयमेंभी जानना ॥ ११ ॥

(अनु०)अर्कादिवारेसंक्रांतौकर्कस्याब्दविशोपकाः ॥
दिशो नखागजाःसूर्याधृत्योष्टादशसायकाः ॥ १२ ॥

कर्कसंक्रांति रविवारको हो तो १० सोमवारको २० मंगलको ८ बुधको १२ बृहस्पतिको १८ शुक्रको १८ शनिको ५ अब्दविशोपका होती है ॥ १२॥

(इं०व०) स्थात्तैतिलेनागचतुष्पदेरविःसुप्तोनिविष्टस्तुरगादिपञ्चके ॥
किंस्तुघ्नऊर्ध्वःशकुनौसकौलवेनेष्टःसमःश्रेष्ठइहार्घवर्षणे ॥१३॥

तैतिल नाग चतुष्पद करणोंमें संक्रम हो तो सुप्तरवि हो तो अन्नके भाव, (मूल्य) वर्षाके लिये अनिष्ट होता है (गरादि पांच) गर वणिज विष्टि बालव बवमें मध्यम किंस्तुघ्नसे ऊपर शकुनि और कौलवमें श्रेष्ठ होता है इसको आगे प्रकट कहेंगे ॥ १३ ॥

(शा०वि०) सिंहव्याघ्रवराहरासभगजावाहाद्विपद्घोटकाः
श्वाजौगौश्चरणायुधश्चबवतोवाहारवेःसंक्रमे ॥
वस्त्रंश्वेतसुपीतहारितकपांडूरक्तकालासितं
चित्रंकंबलदिग्धनाभमथशस्त्रंशाद्भुशुण्डीगदा ॥१४॥
खड्गोदण्डधरासतोमरमथोकुन्तश्चपाशोंकुशो-
स्त्रंबाणास्त्वथभक्ष्यमन्नपरमान्नंभैक्षपक्वान्नकम् ॥
दुग्धंदध्यपिचित्रितान्नगुडमध्वाज्यंतथाशर्कराऽ-
थोलेपोमृगनाभिकुंकुममथोपाटीरमृद्रोचनम् ॥ १५ ॥
यावश्चोतुमदोनिशांजनमथोकालागुरुश्चन्द्रको
जातिर्दैवतभूतसर्पविहगाः पश्वेणविप्रास्ततः ॥
क्षत्त्रावैश्यकशूद्रसंकरभवाःपुष्पंचपुन्नागकं
जातीबाकुलकेतकानिचतथाबिल्वार्कदूर्वाम्बुजम् ॥ १६ ॥

(इं० व०)स्यान्मल्लिकापाटलिकाजपाचसंक्रांतिवस्त्राशनवाहनादेः॥
नाशश्चतद्वृत्त्युपजीविनांचस्थितोपविष्टस्वपतांचनाशः॥ १७॥

बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि ये ७ करण स्थिर और शकुनि, किंस्तुघ्न, नाग, चतुष्पद ये चर संज्ञक हैं इनमें संक्रांति होनेसे क्रमसे वाहनादि कहते हैं कि बव १ में सिंह। बालव २ में व्याघ्र। कौलव ३ में सूकर। तैतिल ४ में गदहा। गर ५ में हाथी। वणिज ६ में महिष। विष्टि ७ में घोडा। शकुनि ८ में कुत्ता। चतुष्पद ९ में मेंढा। नाग १० में बैल। किंस्तुघ्न ११ में मुर्गा। बवादि क्रमसे १ में श्वेतवस्त्र २ पीत ३ नीला ४ गुलाबी ५ लाल ६ कृष्ण ७ श्याह ८ चित्र ९ कंबल १० नंगा ११ मेघवर्ण। एवं क्रमसे शस्त्र १ (भुशुण्डी) दंडविशेष २ गदा ३ खड्ग ४ लाठी ५ धनुष ६ बाण ७ मुद्गर ८ कुंत ९ पाश १० अंकुश ११ बाण। भोजन १ अन्न २ पायस ३ भिक्षा ४ पक्वान्न ५ दूध ६ दही ७ खिचरी ८ गुड ९ मध्वन्न १० घी ११ शर्करा। १ कस्तूरी २ कुंकुम ३ सुर्खचंदन ४ मिट्टी ५ गोरोचन ६ हरिद्रा ७ (यावक) जौखार ८ (ओतु) बिडालमद ९ सुर्मा १० अगरु ११ कर्पूर। १ देवता २ भूत ३ सर्प ४ पक्षी ५ पशु ६ मृग ७ ब्राह्मण ८ क्षत्रिय ९ वैश्य १० शूद्र ११ (मिश्र) संकर। १ (नाग केशर) पुन्नाग २ जाती ३ बकुल ४ केतकी ५ बिल्व ६ आक ७ दूर्वा ८ कमल ९ बेला १० गुलाब ११ (जपा) ओंड्र। १ शिशु २ कुमार ३ गतालका ४ युवा ५ प्रौढा ६ प्रगल्भा ७ वृद्ध ८ वंध्या ९ अतिवंध्या १० सुतार्थिनी ११ प्रव्राजिका। १ पंथा २ भोग ३ रति ४ हास्य ५ दुर्मुखी ६ ज्वरा ७ भुक्ता ८ कंपा ९ ध्याना १० कर्कशा ११ वृद्धा॥ इतने जो वाहनादि कहे हैं इनका प्रयोजन है कि, उस महीनेमें उस वस्तुओंका अथवा उन वस्तुओंसे आजीवन करनेवालोंका (जो कोई खडे, बैठे, सोयेमें जैसे आजीविन करते हो) नाश होता है॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥

करण	वाहन	वस्त्र	शस्त्र	भोजन	लेपन	जाति	पुष्प	वय	अवस्था
बव	सिंह	श्वेत	भुशुंडी	अन्न	कस्तूरी	देवता	नालिकेशर	शिशु	पथा
बालव	व्याघ्र	पीत	गदा	पायस	कुंकुम	भूत	जाती	कुमार	भोग
कौलव	वराह	नील	खड्ग	भिक्षा	गुर्लचंदन	सर्प	बकुल अशोक	गतालका	रति
तैतिल	गदहा	गुलाबी	लट्ठा	पक्वान्न	मिट्टी	पक्षी	केतकी	युवा	हास्य
नर	हाथी	लाल	धनुष	दूध	गोरोचन	पशु	बिल्व	प्रौढ	दुर्मुखी
वणिज	महिष	कृष्ण	बाण	दही	हरिद्रा	मृग	आक	प्रगल्भा	ज्वरा
विष्टि	घोडा	श्याम	मुद्गर	खिचरी	[illegible]	ब्राह्मण	दूर्वा	वृद्ध	भुक्ता
शकुनि	कुत्ता	चित्र	कुंत	गुड	[illegible]	क्षत्रिय	कमल	वंध्या	कथा
किंस्तुघ्न	मेंढा	कंबल	पाश	[illegible]	सुर्मा	वैश्य	बेला	वध्या	ध्यान
नाग	बैल	नंगा	अंकुश	घी	अगरु	शूद्र	गुलाब	सुतार्थिनी	कर्कशा
चतुष्पद	मुर्गा	बादल रंग	बाण	[illegible]	कपूर	मकर	[illegible]	परिव्राजिका	वृद्धा

(उ० जा०) संक्रांतिधिष्ण्याधरविष्ण्यतस्त्रिभेस्वभेनिरुक्तंगमनं ततोङ्गभे ॥ सुखंत्रिभेपीडनमंगभेसुखंत्रिभेर्थहानीरसभेधनागमः ॥१८॥

संक्रांति जिस नक्षत्रमें हो उसको पहिले नक्षत्रसे अपने जन्मनक्षत्रपर्यंत गिनना ३ के भीतर हो तो उस महीनेमें गमन होवे परे ६ तो सुख एवं ३ पीडन ६ वस्त्रादिलाभ ३ धनहानि ६ धनागम होता है ॥ १८ ॥

(उ० जा०) नृपेक्षणंसर्वकृतिश्चसङ्गरःशास्त्रंविवाहोगमदीक्षणेरवेः ॥ वीर्येथताराबलतःशुभोविधुर्विधोर्बलेकोर्कबलेकुजादयः ॥ १९ ॥

सूर्यके बल देखके अथवा रविवारको राजदर्शन, एवं चंद्रके समस्त शुभकृत्य मंगलके संग्राम बुधके शास्त्र पढना पढाना बृहस्पतिके विवाह शुक्रके यात्रा शनिके यज्ञ दीक्षा शुभ होती हैं तथा तारा बलसे चंद्रमा शुभ जानना चंद्रसंक-

मणमें तारा शुभ हो तो अनिष्टचंद्रभी शुभ होता है ऐसेही चंद्रबलसे रविसंक्रम शुभ होती है अन्य भौमादि ग्रहसंक्रमणमें सूर्यके (बल) उपचयादि होनेमें शुभ होते हैं ॥ १९ ॥

(उ०जा०) स्पष्टार्कसंक्रांतिविहीनउक्तोमासोधिमासक्षयमासकस्तु ॥
द्विसंक्रमस्तत्रविभागयोस्तिथ्येर्हिमासौप्रथमान्त्यसंज्ञौ ॥२०॥

इति श्रीदैवज्ञानंतसुतरामविरचिते मुहूर्त्तचिं०संक्रांतिप्रकरणम्॥३॥

शुक्लप्रतिपदासे अमावास्यापर्यंत चांद्रमास है यदि यह मास सूर्यके स्पष्ट संक्रांतिसे रहित हो तो (अधिमास) मलमास वा लौंद कहते हैं, ऐसेही उक्तमासमें सूर्यस्पष्ट संक्रांति दो आवे तो क्षयमास होता है उक्तमासकी शुक्लकृष्ण भेदसे (शुक्लांतमास, कृष्णांतमास) क्षयमासमें जन्म वा मरणमें तिथिका पूर्वभाग हो तो पूर्वमास उत्तरार्द्ध हो तो परमास वर्धापनादियोंको मानते हैं ॥ २० ॥

इति श्रीमुहूर्त्तचिंतामणौ महीधरकृतायां भाषायां तृतीयं प्रकरणं समाप्तम् ॥३॥

अथ गोचरप्रकरणम् ।

(उ० जा०) सूर्य्योरसान्त्येखयुगेग्निनन्देशिवाक्षयोर्भौमशनीतमश्च ॥
रसांकयोर्लाभशरेगुणान्त्येचंद्रोम्बराद्यौगुणनन्दयोश्च ॥ १ ॥
लाभाष्टमेचाद्यशरेरसान्त्येनगद्वयेज्ञोद्विशरेब्धिरामे ॥
रसांकयोर्नागविधौखनागेलाभव्ययेदेवगुरुःशराद्यौ ॥ २ ॥

(इं० व०) द्व्यंत्येनवांशेद्विगुणोशिवाह्वेशुक्रःकुनागेद्रिनगेग्निरूपे ॥
वेदांबरेपञ्चनिधौगजेषौनंदेशयोर्भानुरसेशिवाग्नौ ॥ ३ ॥

(उ०जा०) क्रमाच्छुभोविद्धइतिग्रहःस्यात्पितुःसुतस्यात्रनवेधमाहुः॥
दुष्टोपिखेटोविपरीतवेधाच्छुभोद्विकोणेशुभदःसितेब्जः ॥ ४ ॥

जन्मराशिसे ग्रहभाव फलको गोचर कहते हैं सूर्य जन्मराशिसे ६।१२ तथा १०।४ तथा ३।९ तथा ११।५ स्थानोंमें शुभ तथा विरुद्धभी होता है. जैसे छठा सूर्य्य है और बारहवां कोई ग्रह हो तो वेध हुआ ऐसेही दशमपर चतुर्थसे ३ पर ९ से ११ पर ५ से वेध होता है परंतु पितापुत्रश० सू० चं० बु० का परस्पर वेध नहीं होता तथा मंगल शनि राहु ६।८।११।५।३।१२ में चंद्रमा

१०।४।३।९।११।८।१।५।६।१२।७।२ स्थानोंमें पूर्वोक्तक्रमसे शुभ तथा विद्धभी होता है । बुध २।५ में बृहस्पति ५।४।२।१२।९।१०।२।३।११। ३। शुक्र १।८।२।७।३। १। ४।१०।५।९।८।५।९।१०। १२। ८। ११।३ ये ग्रह इन स्थानोंमें शुभ तथा विद्धभी होते हैं विना वेधके शुभवेधसहित अशुभ होते हैं अनुक्तस्थानोंमें अशुभही जानना यह क्रमवेध कहा गया इससे विपरीत वामवेध होता है जैसे छटे सूर्यपर बारहवें ग्रहका क्रमवेध है जो सूर्य बारहवां छटे ग्रहसे विद्ध हो तो यह वामवेध है जो ग्रह दुष्टस्थानभी हो और उसपर वामवेध हो तो शुभ होता है और चंद्रमा शुक्लपक्षमें २।९।५स्थानमें यदि ६।८।४ स्थानस्थित ग्रहोंसे विद्ध न हो तो शुभ होता है ॥१॥२॥३॥४॥

वेधचक्रम् ।

रवेः				मं	श	रा							बुधस्य			
६	१०	३	११	६	११	३	१०	३	११	१	६	७	[illegible]	४	६	
१२	४	९	[illegible]	२	५	१२	४	२	८	५	१२	२	५	३	९	

गुरोः									शुक्रस्य							
८	१०	११	५	२	९	७	११	९	२	३	४	१	८	९	१२	११
१	८	१२	४	१२	१०	३	८	८	७	१	१०	९	११	११	६	२

(उ० जा०) स्वजन्मराशेरिहवेधमाहुरन्येग्रहाधिष्ठितराशितःसः ॥
हिमाद्रिविंध्यांतरएववेधोनसर्वदेशेष्वितिकाश्यपोक्तिः ॥५॥

एक जन्मराशिसे दूसरा ग्रहाधिष्ठितराशिसे वेध दो प्रकारका किसीके मतसे है काश्यपादि आचार्योंने जन्मराशिहीसे दो भेद कहे हैं जैसा छटा सूर्य स्वराशि-से द्वादशस्थग्रहसे विद्ध न हो तो शुभ है १ तथा सूर्य जन्मराशिसे द्वादश नेष्ट है परंतु स्वाक्रांतराशिसे छटे भावगत ग्रहोंसे विद्ध (वामवेध) हो तो शुभ होता है यह दो प्रकारका वेध हिमालय और विंध्याचलके मध्य (आर्यावर्त्त) देशको है सभी देशोंको नहीं ॥ ५ ॥

(शा० वि०) जन्मर्क्षेनिधनंगृहंजनिभतोघातः क्षतिःश्रीर्व्यथा-
चिंतासौख्यकलत्रदौस्थ्यमृतयःस्युर्माननाशः सुखम् ॥
लाभोपायइतिक्रमात्तदशुभध्वस्त्यैजपस्वर्णगो-
दानंशांतिरथोग्रहंत्वशुभदंनोवीक्ष्यमाहुःपरे ॥ ६ ॥

जन्मराशिसे ग्रहणकला फल कहते हैं कि राशिपर हो तो शरीर पीडा दूसरा हानि ३ धन ४ रोग ५ पुत्रकष्ट ६ सौख्य ७ स्त्रीकष्ट ८ मृत्यु ९ माननाश १० सुख ११ लाभ १२ नाश ये फल छः महीनेपर्यंत होतेहैं अशुभफल दूर करनेके लिये गायत्र्यादि मंत्रोंका जप, गोदान भूमि सुवर्ण आदि यथाशक्ति दान और कल्पोक्तशांति करनी किसीका मत है कि अनिष्टफल सूचक ग्रहण देखना नहीं यही उपाय है ॥ ६ ॥

(अनु०) पापान्तःपापयुक्द्यूनेपापाच्चन्द्रःशुभोप्यसत् ॥
शुभांशेचाधिमित्रांशेगुरुदृष्टोऽशुभोपिसत् ॥ ७ ॥

(शुभफल देनेवाला) शुभभावस्थ चंद्रमाभी पापग्रहोंके बीच, तथा पापयुक्त और पापग्रहोंसे सप्तम भावमें हो तो अशुभफल देता है यदि शुभग्रह नवांशमें वा अधिमित्रांशकमें हो और गुरुदृष्ट हो तो अशुभभी शुभ फल देता है ॥ ७ ॥

(अनु०) सितासितादौसद्दुष्टेचन्द्रेपक्षौशुभावुभौ ॥
व्यत्यासेचाशुभौप्रोक्तौसंकटेऽब्जबलंत्विदम् ॥ ८ ॥

शुक्लपक्षके प्रतिपदामें यदि चंद्रमा गोचरसे शुभ हो तो सारा शुक्लपक्ष शुभ और कृष्णपक्षकी प्रतिपदामें अनिष्ट हो तो सारा कृष्णपक्ष शुभ होता है विपरीतमें विपरीत जानना अर्थात् शुक्ल १ में चन्द्र अनिष्ट हो तो वह पक्ष अनिष्ट कृष्णप्रतिपदामें शुभ हो तो वह पक्ष अनिष्ट होवे ॥ ८ ॥

(शालिनी) वज्रंशुक्रेऽब्जेसुमुक्ताप्रवालंभौमेगोगोमेदमार्कौतुनीलम् ॥
केतौवैडूर्यंगुरौपुष्पकंज्ञेपाचिःप्राङ्माणिक्यमर्कंतुमध्ये ॥ ९ ॥

ग्रहोंके दुष्टफल परिहारको प्रत्येकके मणि तथा उनके नवरत्न धारणका विधि है कि, शुक्रका हीरा अंगूठी वा बाजूके पूर्व किनारेपर. चंद्रमाका मोती आग्नेयमें. मंगलका मूंगा दक्षिणमें. राहुका गोमेद नैर्ऋत्यमें. शनिका नीलम पश्चिममें. केतुका वैडूर्य वायव्यमें. बृहस्पतिका पुष्पराज उत्तरमें. बुधका पाचि पन्ना ईशानमें. सूर्यका (माणिक्य) चुन्नी मध्यमें रखना अथवा एक २ ग्रहके प्रति उक्त एक २ धारण वा दान करना ॥ ९ ॥

ग्रहदानचक्रम् ।

ग्रह	दा.	०	०	०	०	०	०	०	०	ज.
रवि	माणिक	गेहूं	सवत्सा गौ	रक्तवस्त्र	गुड	सोना	तांबा	रक्तचंदन	मजल	७०००
चंद्र	घृतकलश	श्वेतवस्त्र	दही	शंख	मोती	सोना	चांदी	०	०	११०००
मंगल	मूंगा	गेहूं	मसुरी	बैल लाल	कनेरफूल	रक्तवस्त्र	गुड	सोना	तांबा	१००००
बुध	नीलवस्त्र	मूंग	सोना	दासी	पन्ना	रलस	घृत	कांसी	हाथिदांत	८०००
गुरु	पीतवस्त्र	घोडा	सहत	पीलाअन्न	नोंन	पुष्पराज	चीनी	हरिद्रा	सोना	१९०००
शुक्र	चित्रवस्त्र	चावल	घृत	सोना	चांदी	हीरा	सुगंध	शुभ्रधेनु	यक्षकर्दम	११०००
शनि	उडदी	तेल	नीलम	तिल	कुलथी	भैंस	लोह	कृष्णगौ	भैंसी	२३०००
राहु	गोमेद	घोडा	नीलम	कंबल	तिल	उडद	लोहा	भेड	सोना	१८०००
केतु	वैडूर्य	रत्न	कस्तूरी	कंबल	शस्त्र	गेहूं	नोंन	धूम्रवस्त्र	बकरा	७०००

(इं० व०) माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणिगारुत्मकंपुष्पकवज्र-
नीलम् ॥ गोमेदवैडूर्यकमर्कतःस्यू रत्नान्यथोऽज्ञस्यमुदेसुवर्णम् ॥ १० ॥

धारण योग्य माणिक्य है कि सूर्यका चुन्नी चं० मोती मं० मूंगा बु० पन्ना बृ० पुष्पराज शु० हीरा श० नीलम रा० वैडूर्य के० मरकत और बुधके प्रीति सुवर्ण धारण कहा है ॥ १० ॥

(शालिनी) धार्यंलाजावर्त्तकंराहुकेत्वोरौप्यंशुक्रेन्द्वोश्चमुक्तागुरोस्तु॥
लोहंमन्दस्यारभान्वोःप्रवालंताराजन्मर्क्षात्त्रिरावृत्तितःस्यात् ॥११॥

बहुमूल्य मणिधारणकी शक्ति न हो तो बुधका सुवर्ण धारण करे यह अर्थ प्रथमश्लोकसे अन्वय है तथा राहुकेतुका (लाजावर्त्त) चं०शु० का चांदी बृ० मोती श० लोहा सू० मं० मूंगा ग्रंथांतरोंमें जडी धारणभी कहे हैं सू० बेलकी चं० दूदिया, मं० गोजिह्वा, बुधका विधारा, बृ० भार्ङगी, शु० सिंहपुच्छी, श० बिछली, रा० चंदन, के०आमगंध, और जन्मनक्षत्रसे दिननक्षत्रपर्यंत ९।९ करके ३ आवृत्ति गिननी जितनवीं हो उतनवी तारा जाननी ॥ ११ ॥

(अनु०) जन्माख्यसंपद्विपदःक्षेमप्रत्यरिसाधकाः ॥
वधमैत्रातिमैत्रा स्युस्तारानामसदृक्फलाः ॥ १२ ॥

पूर्वश्लोकोक्त क्रमसे गिनके क्रमसे ये तारा होती हैं जन्म १ संपत् २ विपद् ३ क्षेम ४ प्रत्यरि ५ साधक ६ वध ७ मित्र ८ परममित्र ९ जैसे इनके नाम हैं वैसेही फलभी हैं इनमें ३।५।७ तारा अनिष्ट हैं ॥ १२ ॥

(शा० वि०) मृत्यौस्वर्णतिलान्विपद्यपिगुडंशाकंत्रिजन्मस्वथो-
दद्यात्प्रत्यरितारकासुलवणंसर्वोविपत्प्रत्यरिः ॥
मृत्युश्चादिमपर्ययेनशुभदोथैपांद्वितीयेंशका-
नादिप्रान्त्यतृतीयकाअथशुभाःसर्वेतृतीयेस्मृताः ॥१३॥

आवश्यकतामें दुष्टताराओंका परिहार हैं कि, वध ७ तारामें तिल सुवर्ण विपत् ३ में (गुड) चीनि आदि जन्मतारामें (शाक) भाजी प्रत्यरि ५ में लवण दान करना दूसरा प्रकार परिहार है कि पहिली आवर्तीमें ३।५।७ तारापूरी ६० घटीपर्यंत नेष्ट हैं दूसरी आवर्तीमें विपत्की आदिकी २० घडी प्रत्यरीके मध्यकी २० घटी वधकी अंत्यकी २० घटी छोडनी तीसरे आवर्तीमें सभी शुभ है दोष नहीं करते ॥ १३ ॥

**(अनुष्टुप्) षष्टिघ्नंगतभंभुक्तंघटीयुक्तंयुगाहतम् ॥ शराब्धिहृ-
ल्लब्धतोर्कशेषेवस्थाःक्रियाद्विधोः ॥ १४ ॥**

प्रत्येक राशियोंमें चंद्रमाके १२ अवस्था होती हैं नाम सदृशफल समस्त कार्यारंभमें देतीहैं अश्विनीसे लेकर जितने नक्षत्र हों उससंख्याको ६० से गुनाकर वर्त्तमान नक्षत्रके भुक्तघटी जोड देनी ४ से गुनाकर ४५ से भाग लेना जो लाभ हुआ वह गत अवस्था, शेषवर्त्तमान अवस्था होतीहै ४५ के भाग देनेसे लब्धि १२ से अधिक हो तो १२ से भाग लेकर शेषगतअवस्था जाननी उसके आधेकी वर्त्तमान अवस्था होतीहै मेषके चंद्रमामें प्रवासादि वृषमें नाशादि मिथुनमें मरणादि ऐसेही सबका क्रम जानना प्रकारांतरसे इन अवस्थाओंके गिननेका क्रम चक्रमें लिखाहै ॥ १४ ॥

चन्द्रावस्थाचक्रम् ।

अ.	११। प्रवास	२२॥ नाश	३३।।। मरण	४५ जय	५६। हास्य	६० रति
भ.	७॥ रति	१८।।। क्रीडित	३० सुप्त	४१। भुक्ति	५२॥ ज्वरा	६० कंप
कृ.	३।।। कंप	१५ स्थिर	२६। प्रवास	३७॥ नाश	४८।।। मरण	६० जय
रो.	११। हास्य	२२॥ रति	३३।।। क्रीडा	४५ सुप्ति	५६। भुक्ति	६० ज्वर
मृगशि	७॥ ज्वर	१८।।। कंप	३० स्थिर	४१। प्रवास	५२॥ नाश	६० मरण
आर्द्रा.	३।।। मृति	१५ जय	२६। हास्य	३७॥ रति	४८।।। क्रीडा	६० सुप्ति
पुन.	११। भुक्त	२२॥ ज्वर	३३।।। कंप	४५ स्थिरता	५६। प्रवास	६० नाश
तिष्य.	७॥ नाश	१८।।। मरण	३० जय	४१। हास्य	५२॥ रति	६० क्रीडा
आश्ले.	३।।। क्रीडा	१५ सुप्ति	२६। भुक्ति	३७॥ ज्वर	४८।।। कंप	६० स्थिर
मघा.	११। प्रवास	२२॥ नाश	३३।।। मरण	४५ जय	५६। हास्य	६० रति

पूर्वाफा	७॥ रति	१८।।। क्रीडा	३० सुप्ति	४१। भुक्ति	५२॥ ज्वर	६० कप
उ. फा	३।।। कप	१५ स्थिर	२६। प्रवास	३७॥ नाश	४८।।। मरण	६० जय
हस्त.	११। हास्य	२२॥ रति	३३।।। क्रीडित	४५ सुप्ति	५६। भुक्ति	६० ज्वर
चि.	७॥ ज्वर	१८।।। कप	३० स्थिर	४१। प्रवास	५२॥ नाश	६० मरण
स्वा	३।।। मृति	१५ जय	२६। हास्य	३७॥ स्थिर	४८।।। क्रीडा	६० सुप्ति
वि	११। भुक्ती	२२॥ ज्वर	३३।।। कम्प	४५ स्थिर	५६। प्रवास	६० नाश
अ.	७॥ नाश	१८।।। मृति	३० जय	४१। हास्य	५२॥ रति	६० क्रीडा
ज्ये.	३।।। क्रीडा	१५ सुप्ति	२६। भुक्ति	३७॥ ज्वर	४८।।। कप	६० स्थिर
मू	११। प्रवास	२२॥ नाश	३३।।। मृति	४५ जय	५६। हास्य	६० रति
पूर्वा	७॥ रति	१८।।। क्रीडा	३० सुप्ति	४१। भुक्ति	५२॥ ज्वर	६० कप
उत्तरा.	३।।। कप	१५ स्थिर	२६। प्रवास	३७॥ नाश	४८।।। मरण	६० जय
श्रव	११। हास्य	२२॥ रति	३३।।। क्रीडित	४५ सुप्ति	५६। भुक्ति	६० ज्वर
धनि	७॥ ज्वर	१८।।। कप	३० स्थिर	४१। प्रवास	५२॥ नाश	६० मरण
शत	३।।। मृति	१५ जय	२६। हास्य	३७॥ रति	४८।।। क्रीडा	६० सुप्ति
पूर्वा	११। भक्ती	२२॥ ज्वर	३३।।। कप	४५ स्थिर	५६। प्रवास	६० नाश
उत्तराभा	७॥ नाश	१८।।। मृति	३० जय	४१। हास्य	५२॥ रति	६० क्रीडा
रेवती.	३।।। क्रीडा.	१५ सुप्ति	२६। भुक्ति	३७॥ ज्वर	४८।।। कप	६० स्थिर

(उ०जा०)प्रवासनाशौमरणंजयश्चहास्यारतिक्रीडितसुप्तभुक्ताः ॥
ज्वराख्यकम्पस्थिरताअवस्थामेषात्क्रमान्नामसदृक्फलाःस्युः १९

अवस्थाओंके नाम ॥ प्रवास १ नाश २ मरण ३ जय ४ हास्य ५ रति ६

क्रीडित ७ सुप्ति ८ भुक्ता ९ ज्वरा १० कंपा ११ स्थिरा १२ जैसे इनके नाम वैसेही फलभी हैं ॥ १५ ॥

(शा० वि०) लाजाकुष्ठवलाप्रियङ्गुघनसिद्धार्थैर्निशादारुभिः
पुङ्गालोध्रयुतैर्जलैर्निगदितंस्नानंग्रहोत्थाघहृत् ॥
धेनुःकंव्वरुणोवृपश्चकनकंपीताम्वरंघोटकः
श्वेतोगौरसितामहासिरजइत्येतारवेर्दक्षिणाः ॥१६ ॥

दुष्ट ग्रहोंके परिहारार्थ स्नानकी औषधी (लाजा) खील, अथवा लज्जावर्ती, कूट, (बला) भीमली, मालकांगनी, मुस्ना, सर्षप, देवदारु, हरिद्रा, शरपुंखा, लोध, इतने जलमें मिलाके स्नान करनेमे ग्रहोंका अरिष्ट दूर होता है दक्षिणा कहते हैं कि सूर्यके प्रीत्यर्थ गौ, चं० शंख, मं० रक्तवृषभ, बु० सुवर्ण, बृ०पीतांबर शु० घोडा, श० कृष्णगौ, रा० खड्ग, के० बकरा दक्षिणामें देना ॥ १६ ॥

(उ० जा०) सूर्य्यारसौम्यास्फुजितोक्षनागसप्ताद्रिघस्रान्विधुरग्निनाडीः ॥ तमोयमेज्यास्त्रिरसाश्विमासान्गन्तव्यराशेःफलदाः पुरस्तात् ॥ १७ ॥

सूर्य्य जिस राशीपर जानेवाला है उसका फल५ दिन पहलेहीसे देता है तथा मंगल ८ दिनसे बुध ७ दिनसे शु० ७ दिनमे चं० ३ घटी राहू ३ महीने शनि ६ महीने बृ० दो महीने अर्थात् २७ अंशमे ऊपर स्पष्ट जब हो तो तभीसे यह अग्रिमराशीका फल देता है ॥ १७ ॥

(शालिनी) दुष्टेयोगेहेमचन्द्रेचशंखंधान्यंतिथ्यर्द्धेतिथौतंडुलांश्च ॥
वारेरत्नंभेचगांहेमनाड्यांदद्यात्सिन्धूत्थंचतारासुराजा ॥ १८ ॥

आवश्यककृत्यमें दुष्टयोगोंका दान कहते हैं, यहां राजा उपलक्षण है व्यतिपातादिमें सुवर्ण चंद्रदुष्टमें शंख तिथिमें तंडुल वारमें उत्करत्न राशिमें गौ दुर्मुहूर्तमें सुवर्ण तारामें लवण देना ॥ १८ ॥

(व० ति०) राश्यादिगौरविकुजौफलदौसितेज्यौमध्येसदाशशिसुतश्चरमेऽब्जमन्दौ ॥ अध्वान्नवह्निभयसन्मतिवस्त्रसौख्यदुःखानिमासिजनिभेरविवासरादौ ॥ १९ ॥

इति श्रीदैवज्ञानन्तसुतरामविरचिते मुहूर्त्तचिंतामणौ चतुर्थंगो-
चरप्रकरणं समाप्तम् ॥ ४ ॥

सूर्य मंगल राश्यादि १० अंशमें अपना फल पूर्ण देते हैं अन्य अंशोंमें थोडा थोडा देते हैं एवं शुक्र बृहस्पति मध्यके १० अंशमें बुध पूरे ३० ही अंशोंमें चंद्रमा शनि अंत्य १० अंशमें पूरा फल देता है जिस महीनेमें जन्म नक्षत्र रविवारको हो तो सफर चंद्रवारको हो तो भोजन पदार्थ मिले एवं मंग० अग्निभय बु० धर्मबुद्धि बृ० वस्त्रप्राप्ति शु० सौख्य श० दुःख होता है ॥ १९॥

इति श्रीमुहूर्त्तचिं०महीधरकृतायां भा० चतुर्थं गोचरप्रकरणं समाप्तम् ॥४॥

अथ संस्कारप्रकरणम् ।

(अनु०) आद्यंरजःशुभंमाघमार्गराधेषफाल्गुने ॥
ज्येष्ठश्रावणयोःशुक्लेसद्वारेसत्तनौदिवा ॥ १ ॥
श्रुतित्रयमृदुक्षिप्रध्रुवस्वातौसिताम्बरे ॥
मध्यंचमूलादितिभापितृमिश्रेपरेष्वसत् ॥ २ ॥

संस्कार ४८ हैं इनमें गर्भाधानोपयोगि रजोदर्शन मुख्य है यह प्रथम ऋतु (रजोदर्श) माघ, वैशाख आश्विन फाल्गुन ज्येष्ठ श्रावण महीनोंमें शुक्लपक्षमें शुभग्रहोंके वारमें शुभलग्न तथा दिनमें और श्रवण, धनिष्ठा, शततारा, मृदु, क्षिप्र, ध्रुव, स्वाती, नक्षत्रोंमें शुभ होता है मूल पुनर्वसु मघा विशाखा कृत्तिकामें मध्यम अन्य नक्षत्रोंमें अशुभ होता है तथा उस समय श्वेतवस्त्र शुभ होता है ॥ १ ॥ २ ॥

(शालिनी) भद्रानिद्रासंक्रमेदर्शरिक्तासंध्याषष्ठीद्वादशीवैधृतेषु ॥
रोगेष्टम्यांचन्द्रसूर्य्योपरागेपातेचाद्यंनोरजोदर्शनंसत् ॥ ३ ॥

प्रथम रजोदर्शन भद्रामें, सोयेमें, संक्रांतिदिन, अमावास्या, रिक्तातिथि, संध्यासमय, षष्ठी, द्वादशी, वैधृतीमें, तथा ज्वरादिरोगमें, अष्टमीमें सूर्यचंद्रग्रहणमें, व्यतीपातमें शुभ नहीं होता नेष्ट फल हैं ॥ ३ ॥

(व०ति०) हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैःशक्रान्वितैःशु-

भतिथौशुभवासरेच ॥ स्नायादथार्तववतीमृगपौष्णवायुहस्ता-
श्विधातृभिररंलभतेचगर्भम्॥ ४ ॥

हस्त स्वाती मृगशिर अनुराधा धनिष्ठा ध्रुव ज्येष्ठानक्षत्र (शुभतिथि) पूर्वोक्त भद्रादिरहित शुभग्रहोंके वारमें प्रथम रजोवती स्नान करे और मृगशिर रेवती स्वाती हस्त अश्विनी रोहिणीमें स्नान करनेसे शीघ्रही गर्भधारण करती है ॥४॥

(शा० वि०) गंडान्तंत्रिविधंत्यजेन्निधनजन्मर्क्षेचमूलान्तकं
दास्रंपौष्णमघोपरागदिवसंपातंतथावैधृतिम् ॥
पित्रोःश्राद्धदिनंदिवाचपरिघाद्यर्द्धंस्वपत्नीगमे-
भान्युत्पातहतानिमृत्युभवनंजन्मर्क्षतःपापभम् ॥५॥

गर्भाधान मुहूर्त्त कहते हैं ॥ नक्षत्रतिथि लग्न गडांत जन्मनक्षत्र मूल भरणी अश्विनी रेवती मघा ग्रहणदिन व्यतिपात वैधृति मातापिताका श्राद्धदिन, दिनमें परिघार्द्ध दिव्यांतरिक्ष भूमिज उत्पात जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टम लग्न पापयुक्त नक्षत्र लग्न इतने प्रथम ऋतुस्नाता अपने पत्नीके गमन, गर्भाधानमें वर्जित करने ॥ ५ ॥

(शालिनी) भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताश्चसंध्याभौमार्कार्कीनाद्यरात्रीश्चतस्रः ॥
गर्भाधानंत्र्युत्तरेन्द्वर्कमैत्रब्रह्मस्वातीविष्णुवस्वम्बुपेसत् ॥६॥

भद्रा षष्ठी पर्वदिन रिक्तातिथि संध्यासमय मंगल रवि शनिवार और रजोदर्शनसे लेकर ४ रात्रि वर्जित करके तीन उत्तरा मृगशिर हस्त अनुराधा रोहिणी स्वाती श्रवण धनिष्ठा शतभिषामें गर्भाधान करना ॥ ६ ॥

(इं० व०) केन्द्रत्रिकोणेषुशुभैश्चपापैस्त्र्यायारिगैःपुंग्रहदृष्टलग्ने ॥
ओजांशगेन्दावपियुग्मरात्रौचित्रादितीज्याश्विषुमध्यमंस्यात् ॥७॥

केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ में शुभग्रह, ३।६।११ भावोंमें पापग्रह होवें तथा पुरुषग्रह (सू० मं० बृ०) लग्नको देखें चंद्रमा विषमराशिके अंशकमें होवे ऐसे लग्नमें तथा समरात्रिमें गर्भाधान करना स्त्रीग्रह बली चंद्रमांशकमें तथा विषमरात्रिमें आधान हो तो कन्या होती है पुंग्रह बली तथा समरात्रिमें पुत्र

होता है मिश्रयोगोंमें नपुंसक होता है और चित्रा पुनर्वसु पुष्य अश्विनी नक्षत्र गर्भाधानको मध्यम हैं पूर्वोक्तोंके न मिलनेमें इनमेंभी करते हैं ॥ ७ ॥

(शा० वि०) जीवार्कारदिनेमृगेज्यनिर्ऋतिश्रोत्रादितित्रध्नभे-
रिक्तामार्करसाष्टवर्ज्यतिथिभिर्मासाधिपेपीवरे ॥
सीमन्तोष्टमषष्ठमासिशुभदैःकेन्द्रत्रिकोणेखलै-
र्लाभारित्रिषुवाध्रुवान्त्यसदहेलग्नेचपुम्भांशके ॥ ८ ॥

गर्भके निश्चय हुयेमें सीमंतोन्नयन मुहूर्त कहते हैं कि, बृहस्पति मंगल सूर्यवार हस्त मृगशिर पुष्य मूल श्रवण पुनर्वसुमें सीमंत संस्कार करना रिक्ता ४। ९। १४ अमा द्वादशी षष्ठी अष्टमी तिथि छोडके छटे आठवें महीनेमें जिसमें मासेश बलवान हो तथा शुभग्रह केंद्र त्रिकोणोंमें पापग्रह ३।६।११ भावोंमें हों लग्नमें पुरुष राशिका अंशक हो शुभवारके दिन नक्षत्र विकल्पसे कहते हैं कि अथवा ध्रुवनक्षत्र एवं रेवतीमें सीमंत संस्कार करना ॥ ८ ॥

(व० ति०) मासेश्वराःसितकुजेज्यरवीन्दुसौरिचन्द्रात्मजास्त-
नुपचन्द्रदिवाकराःस्युः ॥ स्त्रीणांविधोर्बलमुशन्ति विवाहगर्भसं-
स्कारयोरितरकर्मसुभर्तुरेव ॥ ९ ॥

गर्भ रहेमें प्रथम मासका स्वामि शुक्र २ का मंगल ३ का बृहस्पति ४ का सूर्य ५ का चंद्रमा ६ का शनि ७ का बुध आठवेंका लग्नेश ९ का चंद्रमा १०का सूर्य है इनके बलवान होनेमें गर्भपुष्ट निर्बलतासे अपने मासमें क्षीणादि करता है ॥ और विवाहमें एवं गर्भसंस्कार गर्भाधानादियोंमें स्त्रियोंकी पृथक् (चंद्रबल) चंद्रशुद्धि आवश्यक है अन्य समस्त कृत्योंमें सौभाग्यवतीको भर्त्ताकी चंद्रशुद्धि देखी जाती है स्त्रियोंकी पृथक् नहीं ॥ ९ ॥

(इं० व०) पूर्वोदितैःपुंसवनंविधेयंमासेतृतीयेत्वथविष्णुपूजा ॥
मासेष्टमेविष्णुविधातृजीवैर्लग्नेशुभेमृत्युगृहेचशुद्धे ॥ १० ॥

सीमंतोक्त तिथिवार नक्षत्रोंमें तीसरे वा चौथे महीनेमें गर्भका पुंसवन संस्कार करना तथा पुंवार पुरुषलग्न और पुरुषनाम नक्षत्रोंमें पुंसवन करते हैं एवं तीसरे

महीनेमें विष्णुपूजा आठवेमें विष्णु ब्रह्मा बृहस्पतिका पूजन करना जितने गर्भसंकार कहे हैं इन सभीमें शुभलग्न तथा अष्टमभाव शुद्ध चाहिये ॥ १० ॥

(उ० जा०) तज्जातकर्मादिशिशोर्विधेयंपर्वाख्यरिक्तोनतिथौ शुभेह्नि ॥ एकादशद्वादशकेपिघस्रेमृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुपुस्यात् ॥ ११ ॥

पुत्रोत्पन्न होतेही नालछेदनके पहले जातकर्म करना यदि वह समय किसी प्रकार व्यतीत हो जाय तो नामकर्मके साथही करना इसलिये जातकर्मादियों-का एकही मुहूर्त्त कहते हैं कि रिक्तातिथि पर्वदिन छोडके शुभवारमें ग्यारहवें अथवा बारहवें दिन मृदु ध्रुव क्षिप्र नक्षत्रोंमें करना कहता है ब्राह्मणका ११ दिनमें क्षत्रियोंका १३ में वैश्योंका १६ में सूत्रधार सूतकांतमें करना शूद्रोंका महीनेमें ॥ मुख्य काल व्यतीत हुयेमें उत्तरायणादि समयकी पूर्वोक्त अपेक्षा है मुख्यकालमें विशेष विचार नहीं ॥ ११ ॥

(व० ति०) पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषुसूतीस्नानंसमित्रभरवीज्य-कुजेषुशस्तम् ॥ नार्द्रात्रयश्रुतिमघान्तकमिश्रमूलत्वाष्ट्रेज्ञसौरिव-सुषड्विरिक्ततिथ्याम् ॥ १२ ॥

रेवती ध्रुव नक्षत्र मृगशिर हस्त स्वाती अश्विनीमें सूतिकाने स्नान करना आर्द्रासे तीन श्रवण मघा भरणी मिश्र संज्ञक एवं मूल चित्रा नक्षत्र बुध शनि-वार ८।६।१२।४।९।१४ तिथि सूतिकाके स्नानको न लेने ॥ १२ ॥

(शा०वि०) मासेचेत्प्रथमेभवेत्सदशनोबालोविनश्येत्स्वयं
हन्यात्सक्रमतोऽनुजातभगिनीमात्रग्रजानद्व्यादिके ॥
षष्ठादौलभतेहिभोगमतुलंतातात्सुखंपुष्टतां
लक्ष्मींसौख्यमथोजनौसदशनोवोर्ध्वस्वापित्रादिहा ॥ १३ ॥

बालकके पहिले महीनेमें दांत ऊगें तो स्वयं नष्ट होवे दूसरेमें कनिष्ठ भाईको एवं ३ में भगिनी ४ में माता ५ में ज्येष्ठभ्राताको नाश करे छठेमें बहुत भोग ७ में पितासे सुख ८ में पुष्टता ९ धन १० सौख्य ११ में सुख होवे यदि जन्मही दंतसहित हो अथवा पहिले ऊपरके पंक्तिके दांत आवें तो पित्रादियोंका नाश करता है ॥ १३ ॥

(अनुष्टुप्) दोलारोहेऽर्कभात्पञ्चशरपञ्चेषुसप्तभैः ॥
नैरुज्यंमरणंकार्श्यं व्याधिः सौख्यंक्रमाच्छिशोः॥१४॥

बालकको (दोला) पालनेमें झुलानेके लिये दोलाचक्र है कि, सूर्यके नक्षत्रसे ५ नक्षत्रमें निरोगी उपरांत ५ में मरण फिर ५ में कृशता ५ में रोगी ७ में सौख्य होता है ॥ १४ ॥

(व०ति०) दन्तार्कभूपधृतिदिङ्मितवासरेस्याद्वारेशुभेमृदुलघुध्रुवभैः शिशूनाम् ॥ दोलाधिरूढिरथनिष्क्रमणंचतुर्थमासेगमोक्तसमयेऽर्कमितेह्निवास्यात् ॥ १५ ॥

दोला रोहणको उक्त चक्रमें मुहूर्त है कि ३२ । १२ । १६ । १८।१० वें दिनोंमें शुभवारमें मृदु लघु ध्रुवनक्षत्रोंमें बालकोंका दोलारोहण करना और चौथे महीनेमें तथा यात्रोक्त तिथि वार नक्षत्रोंमें निष्क्रमण करना ॥ १५ ॥

(भुजंगप्र०) कवीज्यास्तचैत्राधिमासेनपौषेजलंपूजयेत्सूतिकामासपूर्तौ॥
बुधेंद्वीज्यवारेविरिक्तेतिथौहिश्रुतीज्यादितीन्द्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रैः॥ १६ ॥

शुक्रास्त, गुर्वस्त, चैत्र पौषमास, रिक्तातिथि, मलमास छोडके प्रसूतिसे एक मास पूरे हुयेमें बुध चंद्र बृहस्पतिवारमें श्रवण पुष्य पुनर्वसु मृगशिर हस्त मूल अनुराधा नक्षत्रोंमें सूतिकाका जलपूजन करना ॥ १६ ॥

(स्रग्धरा) रिक्तानंदाष्टदर्शंहरिदिवसमथोसौरिभौमार्कवारौ
लग्नंजन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहलवगंमीनमेषालिकंच ॥
हित्वाषष्ठात्समेमास्यथचमृगदृशांपञ्चमादोजमासे
नक्षत्रैःस्यात्स्थिराख्यैःसमृदुलघुचरैर्बालकान्नाशनंसत् ॥१७॥

निष्क्रमणसे उपरांत पुत्रका छठे आदि सममास ६ । ८ । १० । १२ में तथा कन्याका पांचवें आदि विषम ५ । ७ । ९ । ११ मासमें अन्नप्राशन करना इसमें रिक्ता ४ । ९ । १४ नंदा १ । ६ । ११ अष्ट ८ दर्श ३० हरि १२ तिथि शनि मंगल सूर्यवार जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टम लग्न एवं नवांशक और १२।१।८ लग्न छोडके स्थिर मृदु लघु चर नक्षत्र लेने ॥१७॥

(व० ति०) केन्द्रत्रिकोणसहजेषुशुभैः खशुद्धेलग्नेत्रिलाभरिपु-गैश्चवदन्तिपापैः ॥ लग्नाष्टषष्ठरहितंशशिनंप्रशस्तंमैत्राम्बुपानि-लजनुर्भमसच्चकेचित् ॥ १८ ॥

अन्नप्राशनमें लग्नशुद्धि कहते हैं कि, केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ५ । ९ सहज ३ भावोंमें शुभग्रह ३ । ११ । ६ भावोंमें पापग्रह हों दशम १० भाव (शुद्ध) ग्रहरहित हो चंद्रमा १ । ८ । ६ स्थानोंसे अन्य भावमें हो ऐसे लग्नमें अन्नप्राशन शुभ होता है तथा अनुराधा शततारा स्वाती और जन्मनक्षत्रको कोई अशुभ कहते हैं ॥ १८ ॥

(अनु०) क्षीणेन्दुपूर्णचन्द्रेज्यज्ञभौमार्कार्किभार्गवैः ॥
त्रिकोणव्ययकेन्द्राष्टस्थितैरुक्तंग्रहैः फलम् ॥ १९ ॥
भिक्षाशीयज्ञकृद्दीर्घजीवीज्ञानीचपित्तरुक् ॥
कुष्ठीचान्नक्लेशवातव्याधिमान्भोगभागिति ॥ २० ॥

अन्नप्राशनमें ग्रहभाव फल है कि, त्रिकोण ९ । ५ व्यय १२ केंद्र १ । ४ । ७ । १० अष्ट ८ वें भावोंमेंसे किसीमें क्षीणचंद्रमा हो तो भिक्षाका अन्न खानेवाला होवे एवं पूर्णचंद्रसे यज्ञ करनेवाला बृहस्पतिसे दीर्घायु बुधसे ज्ञानी मंगलसे पित्तरोगी सूर्यसे (कुष्ठी) रुधिर संबंधी रोगी शनिसे (अन्नक्लेश) अन्न पचे नहीं वा अन्न मिलना कठिन हो तथा वातरोगीभी होवे शुक्रसे (भोगी) सुख भोगने-वाला वह बालक होवे ॥ १९ ॥ २० ॥

(व० ति०) पृथ्वींवराहमभिपूज्यकुजेविशुद्धेरिक्तेतिथौव्रजति पञ्चममासिबालम् ॥ बद्धाशुभेह्निकटिसूत्रमथध्रुवेन्दुज्येष्ठर्क्षमै-त्रलघुभैरुपवेशयेत्कौ ॥ २१ ॥

पंचम मासमें वा अन्नप्राशनसमयमें भूम्युपवेशन संस्कार कहते हैं कि पृथ्वी, वराह ग्रहोंकी पूजा करके मंगलकी शुद्धिमें रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि-योंको छोडके चरलग्नमें ध्रुव, मैत्र, मृगशिर, ज्येष्ठा, लघुनक्षत्रोंमें बालकके (क-टिसूत्र) तागडी, “ कंदनी ” बांधके पृथ्वीमें बिठलाना ॥ २१ ॥

(शालिनी) तस्मिन्काले स्थापयेत्तत्पुरस्ताद्वस्त्रंशस्त्रंपुस्तकंलेखनींच ॥
स्वर्णंरौप्यंयच्चगृह्णातिबालस्तैराजीवैस्तस्यवृत्तिःप्रदिष्टा ॥२२॥

भूम्युपवेशन समयमें आजीविकाकी परीक्षा है कि, बालकके आगे वस्त्र, शस्त्र, पुस्तक, कलम, सोना, चांदी, औरभी आजीवनोपयोगि वस्तु रखनी बालक जिस वस्तुको प्रथम ग्रहण करे उस वस्तु संबंधी कृत्यसे आजीवन होवे उसीकी वृत्तिसे प्रतिष्ठा पावे ॥ २२ ॥

(स्रग्धरा) वारेभौमार्किहीनेध्रुवमृदुलघुभैर्विष्णुमूलादितीन्द्र-
स्वातीवस्वभ्युपेतैर्मिथुनमृगसुताकुम्भगोमीनलग्ने ॥
सौम्यैःकेन्द्रत्रिकोणैरशुभगगनगैः शत्रुलाभत्रिसंस्थै-
स्ताम्बूलंसार्द्धमासद्वयमितसमयेप्रोक्तमन्नाशनेवा ॥२३॥

मंगल शनि रहित वारमें श्रवण मूल पुनर्वसु ज्येष्ठा स्वाती धनिष्ठा ध्रुव मृदु नक्षत्रोंमें मिथुन मकर कन्या कुंभ वृष मीन लग्नमें केंद्र १ । ४ । ७ । १० के शुभग्रह ३ । ६ । ११ के पापग्रहोंमें बालकको पानसुपारी खिलाना यह कर्म ढाई महीनेमें अथवा अन्नप्राशनके दिन करना ॥ २३ ॥

(स्रग्धरा) हित्वैतांश्चैत्रपौषावमहरिशयनंजन्ममासंचरिक्तां
युग्माब्दंजन्मतारामृतुमुनिवसुभिः संमितेमास्यथोवा ॥
जन्माहात्सूर्यभूपैः परिमितदिवसेज्ञेज्यशुक्रेन्दुवारे-
थोजाब्देविष्णुयुग्मादितिमृदुलघुभैःकर्णवेधःप्रशस्तः॥२४॥

" कर्णवेधका मुहूर्त " चैत्र पौष महीना सौर मानसे तथा क्षयतिथि (जन्ममास) जन्मदिनसे ३० दिन रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि युग्म २ । ४ ६ । ८ । १० । १२ वर्ष जन्मतारा १ । १० । १९ वें नक्षत्र जन्मनक्षत्रसे इतने वर्जित करके ६ । ७ । ८ वें महीने अथवा जन्म दिनसे १२ । १६ वें दिनमें इनसे उपरांत विषम वर्षमें बुध बृहस्पति शुक्र चंद्रवार एवं श्रवण धनिष्ठा पुनर्वसु मृदु, लघु, नक्षत्रोंमें कर्णवेध शुभ होता है ॥ २४ ॥

(प्रहर्षिणी) संशुद्धेमृतिभवने त्रिकोणकेन्द्रत्र्यायस्थैः शुभखच-

रैः कवीज्यलग्ने ॥ पापाख्यैररिसहजायगेहसंस्थैर्लग्नस्थेत्रिदश-
गुरौशुभावहः स्यात् ॥ २५ ॥

कर्णवेधमें लग्नशुद्धि अष्टम स्थान ग्रहरहित हो त्रिकोण ९ । ५ केंद्र १ । ४ । ७ । १० तथा ३ । ११ स्थानोंमें शुभग्रह बृहस्पति शुक्रके लग्नों २ । ७ । ९ । १२ में तथा बृहस्पति लग्नमें हों ऐसे लग्नमें कर्णवेध शुभ होता है और जन्मोत्सव कृत्य सौरवर्ष पूर्ण हुयेमें " जिस दिन सूर्य जन्मके राश्यादिमें आवे" करते हैं. दाक्षिणात्य जन्मतिथिभी मानते हैं ॥ २५ ॥

(स्रग्धरा) गीर्वाणाम्बुप्रतिष्ठापरिणयदहनाधानगेहप्रवेशा-
श्चौलंराजाभिषेकोव्रतमपिशुभदंनैवयाम्यायनेस्यात् ॥
नोवाबाल्यास्तवार्द्धेसुरगुरुसितयोर्नैवकेतूदयेस्यात्
पक्षंवार्द्धेचकेचिज्जहतितमपरेयावदीक्षांतदुग्रे ॥ २६ ॥

देव मंदिर एवं जलाशयकी प्रतिष्ठा, विवाह, अग्न्याधान, चूडाकर्म, व्रतबंध, राज्याभिषेक, गृहप्रवेश, दक्षिणायनमें तथा बृहस्पति शुक्रके बाल्य वृद्धअस्तमें (केतु) पुच्छलताराके उदयमें न करने जब केतु अस्त हो जावे तौ १५ वा ७ दिन औरभी छोडने किसीका मत है कि (उग्र) द्विशिख त्रिशिख तामस कील-कादि संज्ञक धूम्रकेतु जबतक देखे जावें तबतक दोष है उपरांत नहीं ॥ २६ ॥

(अनु०) पुरःपश्चाद्भृगोर्बाल्यंत्रिदशाहंचवार्द्धकम् ॥
पक्षंपञ्चदिनंतेद्वेगुरोःपक्षमुदाहृते ॥ २७ ॥
तदशाहंद्वयोःप्रोक्तेकैश्चित्सप्तदिनंपरेः ॥
त्र्यहंत्वात्ययिकेप्यन्यैरर्द्धाहंचत्र्यहंविधोः ॥ २८ ॥

शुक्रके पूर्वउदय होनेमें तीन दिन पश्चिमोदयमें १० दिन बालत्व रहता है तथा पूर्वास्तमें १५ दिन पश्चिमास्तमें ५ दिन वृद्धत्व होता है बृहस्पति १५ दिन बाल १५ दिन वृद्ध होता है ॥ २७ ॥ किसीके मतसे बृहस्पति शुक्रके उदय तथा अस्तमें बाल्य वार्द्धकके १० । १० दिन हैं किसीने ७ ही दिन कहे हैं और किसीका मत है कि (आत्ययिकमें) यदि कर्त्तव्य कृत्यकी फिर

दिनशुद्ध्यादि न मिलें. समय निकल जाता हो, तथा उस समयके उस कार्यके न करनेसे पुनः वह कार्य्य नाश होता हो तो तीनही दिन छोडने और चंद्रमाका वृद्धत्व ३ दिन बालत्वका आधा दिन छोडना ॥ २८ ॥

(स्रग्धरा) चूडावर्षात्तृतीयात्प्रभवतिविषमेष्टार्करिक्ताद्यषष्ठी
पर्वोनाहेविचैत्रोदगयनसमयेज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम् ॥
वारेलग्नांशयोश्चास्वभनिधनतनौनैधनेशुद्धियुक्ते
शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभैरायषट्त्रिस्थपापैः ॥२९॥

(रथो०) क्षीणचन्द्रकुजसौरिभास्करैर्मृत्युशस्त्रमृतिपङ्गुताज्वराः ॥
स्युःक्रमेणबुधजीवभार्गवैःकेन्द्रगैश्चशुभमिष्टतारया ॥ ३० ॥

व्रतबंधसे पृथक् चूडाकर्म करना हो तो मुहूर्त है कि तीसरे वर्षसे विषम ३। ५। ७ वर्षोंमें रिक्ता ४। ९। १४ आद्य १ षष्ठी ६ पर्वदिन चैत्रमास छोडके उत्तरायणमें बुध बृहस्पति शुक्र चंद्रवारमें जन्म राशिलग्नसे अष्टम लग्न न हो अष्टमस्थान शुक्रसे अन्य कोई ग्रह न हो जन्ममास छोडके और ज्येष्ठासहित अनुराधारहित मृदु चर लघु नक्षत्रोंमें लग्नसे ११। ६। ३ भावोंमें पापग्रह केंद्र कोणोंमें शुभग्रह होनेमें चूडाकर्म करना ॥ २९ ॥ लग्नसे केंद्रों १। ४। ७। १० में क्षीण चंद्र हो तो मृत्यु मंगल हो तो शस्त्राघात शनिसे (पंगुला) लंगडा सूर्यसे ज्वर तथा बुध बृहस्पति शुक्रसे शुभफल होता है परंतु इसमें ताराशुद्धि आवश्यक है जन्म विपत् प्रत्यरी वध तारा न लेनी यह विचार (वैदिक मुंडन) चौल (अवैदिक मुंडन) सुखार्थ क्षौरमें तुल्य है ॥ ३० ॥

(अनु०) पञ्चमासाधिकेमातुर्गर्भेचौलंशिशोर्नहि ॥
पञ्चवर्षाधिकेश्रेष्ठंगर्भिण्यामपिमातरि ॥ ३१ ॥

चौलवाले बालककी माताका गर्भ पांच महीनेसे ऊपरका हो तो पांच वर्षके भितर अवस्थावालेका चूडाकर्म न करना यदि बालक पांच वर्षसे अधिक हो तो पांच महीनेसे अधिक गर्भवती माता होनेमेंभी दोष नहीं ॥ ३१ ॥

(शालिनी) तारादौष्ट्येऽब्जेत्रिकोणोच्चगेवाक्षौरंसत्स्यात्सौम्यमित्रस्ववर्गे ॥
सौम्येभेऽब्जेशोभनेदुष्टताराशस्ताज्ञेयाक्षौरयात्रादिकृत्ये ॥३२॥

यदि चंद्रमा त्रिकोण ५ । ९ वा उच्च २ राशिमें हो अथवा बुध गुरु शुक्रके षड्वर्गमें तथा गोचरसे शुभस्थानमें हो शुभनक्षत्रमें क्षौर एवं यात्रादि कृत्य दुष्टतारामेंभी कर लेने ॥ ३२ ॥

(अनु०) ऋतुमत्याः सूतिकायाःसूनोश्चौलादिनाचरेत् ॥
ज्येष्ठापत्यस्यनज्येष्ठेकेश्चिन्मार्गोपिनेष्यते ॥ ३३ ॥

बालककी माता रजोवती अथवा प्रसूति हो तो (चौलादि) चूडा व्रत-बंध विवाह न करने और आद्यगर्भ कन्या पुत्रके चौलव्रत विवाह ज्येष्ठके महीने न करने कोई मार्गशीर्षमेंभी न करने कहते हैं ॥ ३३ ॥

(शा० वि०) दन्तक्षौरनखक्रियात्रविहिताचौलोदितेवारभे
मन्दाङ्गाररवीन्विहायनवमंघस्रंचसंध्यांतथा ॥
रिक्तांपर्वनिशांनिरासनरणग्रामप्रयाणोद्यत
स्नाताभ्यक्तकृताशनैर्नहिपुनः कार्य्योहितप्रेप्सुभिः ॥३४॥

(सामान्यक्षौर) दंत, केश, नखक्रियाभी चौलोक्त नक्षत्र वारादिकोंमें करने परंतु शनि मंगल सूर्यवारमें तथा एक क्षौरसे नववें दिनमें तथा संध्याकालमें रिक्तातिथि पर्वदिन रात्रिसमयमें न करना और विना आसन, रण अथवा ग्रामांतरके तैय्यारीमें न्हायके नित्य नैमित्तिक कर्म करके, तेल उबटन लगायके भोजन करके, शृंगार भूषण वस्त्रादि पहनके अपने शुभ चाहनेवालोंने क्षौर न करना ॥ ३४ ॥

(मञ्जुभाषिणी) क्रतुपाणिपीडमृतिबन्धमोक्षणेक्षुरकर्मचद्विजनृपाज्ञयाचरेत् ॥ शववाहतीर्थगमसिन्धुमज्जनक्षुरमाचरेन्नखलु गर्भिणीपतिः ॥ ३५ ॥

यज्ञमें, विप्राज्ञामे, विवाहमें, गोदान संस्कारमें,मातापिताके मरणमें, कैदसे छूटनेमें,ब्राह्मणकी तथा राजाकी आज्ञासे क्षौर अनुक्त दिनमेंभी कर लेना और गर्भिणी स्त्रीके पतिने प्रेतके साथ न जाना तीर्थयात्रा समुद्रस्नान और क्षौर न करना॥३५॥

(भु०प्र०) नृपाणांहितंक्षौरमेश्मश्रुकर्मदिनेपञ्चमेपञ्चमेस्वोदयेवा ॥ षडग्निस्त्रिमैत्रोष्टकः पञ्चपित्र्योऽब्दतोब्ध्यऽर्यमाक्षौरकृ-न्मृत्युमेति ॥ ३६ ॥

(श्मश्रुकर्म) शृंगारार्थ क्षौर राजाओंने क्षौरोक्त नक्षत्रमें अथवा पांचवें पांचवें दिनमें नित्य करना अथवा स्वोदयमें जैसे मेष लग्नमें १३।२० अंश-पर्यंत अश्विनी उदय २६।४० पर्यंत भरणीका ३० पर्यंत कृत्तिकाका उदय होता है जो कार्य क्षौरादि अश्विनीमें उक्त हैं वे मेषलग्नके १३।२० अंशभीतर कर लेना ऐसेही सभी नक्षत्र जानना ॥ और छः आवर्ति कृत्तिकामें ३ अनु-राधामें ८ रोहिणीमें ५ मघामें ४ उत्तराफाल्गुनीमें ग्रन्थांतरसे ४ आवर्ती सभी उत्तराओंमें जो एकही वर्षमें क्षौर करे तो मृत्यु पावे ॥ ३६ ॥

(पञ्चचामर) गणेशविष्णुवाग्रमाःप्रपूज्यपञ्चमाब्दकेतिथौशिवा-र्कदिग्द्विषट्शरत्रिकेरवावुदक् ॥ लघुश्रवोनिलान्त्यभादितीशत-क्षमित्रभेचरोनसत्तनौशिशोर्लिपिग्रहःसतांदिने ॥ ३७ ॥

बालकके पांचवें वर्षमें गणेश विष्णु सरस्वती लक्ष्मीका पूजन करके ११। १२।१०।२।६।५।३ तिथियोंमें सूर्यके उत्तरायणमें लघु नक्षत्र श्रवण स्वाती रेवती पुनर्वसु आर्द्रा चित्रा अनुराधा नक्षत्रोंमें चंद्र बुध गुरु शुक्रवारमें चर १।४।७।१० रहित शुभलग्नमें अक्षरारंभ करना ॥ ३७ ॥

(पञ्चचामर) मृगात्कराच्छ्रुतेस्त्रयेश्विमूलपूर्विकात्रयेगुरुद्वयेर्क-जीवविस्सितेऽह्निषट्शरत्रिके ॥ शिवार्कदिग्द्विकेतिथौध्रुवांत्य-मित्रभेपरैःशुभैरधीतिरुत्तमात्रिकोणकेन्द्रगैःस्मृता ॥ ३८ ॥

मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शततारा, मूल, तीन पूर्वा, पुष्य, आश्लेषा नक्षत्र रवि गुरु बुध शुक्रवार एवं ६।५।३।११। १२।१०।२ तिथियोंमें तथा शुभग्रह केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ में हो ऐसे मुहूर्त्तमें विद्या पढनेका आरंभ करना कोई ध्रुव, रेवती अनुराधामेंभी कहते हैं। तथा अनध्यायभी विद्यारंभमें न लेने ॥ ३८ ॥

(शा०वि०) विप्राणांव्रतबन्धनंनिगदितंगर्भाज्जनेर्वाष्टमे

वर्षेवान्यथपञ्चमेक्षितिभुजांषष्ठेतथैकादशे ॥
वैश्यानांपुनरष्टमेप्यथपुनः स्याद्द्वादशेवत्सरे
कालेथद्विगुणेगतेनिगदितेगौणंतदाहुर्बुधाः ॥ ३९ ॥

व्रतबंधके लिये मुख्य काल नित्य एवं (काम्य) ब्रह्मवर्चस्वादि दो प्रकार है गर्भसे अथवा जन्मसे सौरवर्ष प्रमाणसे ब्राह्मणका ८ वर्षमें क्षत्रियका ११ म वैश्यका १२ में मुख्यकाल नित्य संज्ञक है तथा ब्राह्मणके ५ वर्षमें क्षत्रियका ६ में वैश्यका ८ में काम्य संज्ञक मुख्यकाल है तथा गर्भ वा जन्मसे नित्य संज्ञक मुख्य काल द्विगुण पर्यंत गौण काल होता है जैसे ब्राह्मणके १६ क्षत्रियके २२ वैश्यके २४ वर्षपर्यंत गौण काल है इनसे ऊपर अतिकाल है ॥ ३९ ॥

(५०ति०)क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वा रौद्रार्कविद्गुरुसिते-
न्दुदिनेव्रतंसत् ॥ द्वित्रीषुरुद्ररविदिक्प्रमितेतिथौ
हिकृष्णादिमत्रिलवकेपिनचापराह्णे ॥ ४० ॥

क्षिप्र, ध्रुव, चर, मृदु, आश्लेषा, मूल, तीन पूर्वा, आर्द्रा नक्षत्रोंमें तथा सूर्य बुध गुरु शुक्र चंद्रवारोंमें २।३।५।११।१२।१० तिथियोंमें तथा कृष्णपक्षके पूर्व त्रिभागमें व्रतबंध शुभ होता है परन्तु अपराह्णमें नहीं महीनोंमें उत्तरायणके छः महीने उक्त हैं इसमेंभी चैत्रका तो बडाही माहात्म्य है ॥ ४० ॥

(प्रमाणिका) कवीज्यचन्द्रलग्नपारिपौमृतौव्रतेधमाः ॥
व्ययेब्जभार्गवौतथातनौमृतौसुतेखलाः ॥ ४१ ॥

व्रतबंधके लग्नशुद्धि शुक्र, बृहस्पति, चंद्रमा और लग्नेश छठे आठवें स्थानोंमें अधम होते हैं चंद्रमा शुक्र बारहवें स्थानमें ऐसेही फल देते हैं तथा लग्न पंचम अष्टम भावमें पापग्रहभी अधम हैं ॥ ४१ ॥

(अनु०) व्रतबन्धेष्टषड्रिःफवर्जिताःशोभनाःशुभाः ॥
त्रिषडायेखलाःकर्कगोस्थःपूर्णोविधुस्तनौ ॥ ४२ ॥

व्रतबंधमें शुभग्रह ८।६।१२स्थानोंमें अशुभ अन्योंमें शुभ तथा ३।६।११ स्थानोंमें पापग्रह शुभ और वृष कर्क २।४ राशियोंका चंद्रमा यदि पूर्ण हो तो लग्नमें शुभ होता है ॥ ४२ ॥

(शालिनी) विप्राधीशौभार्गवेज्यौकुजार्कौराजन्यानामोषधीशोविशांच॥ शूद्राणांज्ञश्चान्त्यजानांशनिःस्याच्छाखेशाःस्युर्जीवशुक्रारसौम्याः ४३

ब्राह्मणोंके स्वामी शुक्र बृहस्पति, क्षत्रियोंके मंगल सूर्य, वैश्योंका चंद्रमा, शूद्रोंका बुध, चांडालोंका शनि स्वामी है. तथा ऋग्वेदका बृहस्पति, यजुर्वेदक शुक्र, सामवेदका मंगल, अथर्वणका बुध शाखेश हैं ॥ ४३ ॥

(व० ति०) शाखेशवारतनुवीर्यमतीवशस्तंशाखेशसूर्यशशि-
जीवबलेव्रतंसत् ॥ जीवेभृगौरिपुगृहेविजितेचनी-
चेस्याद्वेदशास्त्रविधिनारहितोव्रतेन ॥ ४४ ॥

व्रतबंधमें शाखेश, वेदेशका वार तथा लग्न और (गोचरांक) बलीभी अतिउत्तम होता है तथा शाखेश, सूर्य, चंद्रमा, बृहस्पतिका बल व्रतबंधमें मुख्य है इनके शुभ होनेमें शुभ अशुभमें अशुभ होता है यदि बृहस्पति शुक्र शत्रुराशि नीचराशिमें हों तथा (विजित) ग्रहयुद्धमें पराजित हों तो व्रतबंधवाला वेद, शास्त्र और नित्य नैमित्तिक श्रौतस्मार्त कर्मोंसे रहित होवे उपलक्षणसे इनके नीचांशकादियोंकाभी यही फल है ॥ ४४ ॥

(अनु०) जन्मर्क्षमासलग्नादौव्रतेविद्याधिकोव्रती ॥
आद्यगर्भेपिविप्राणांक्षत्रादीनामनादिमे ॥ ४५ ॥

व्रतबंधमें जन्मनक्षत्र जन्ममास जन्मलग्नादियोंका दोष ब्राह्मणके आद्यगर्भ तथा द्वितीयादि गर्भकोभी और क्षत्रिय वैश्यके द्वितीयादि गर्भको नहीं है केवल क्षत्रियादियोंके आद्यगर्भ मात्रको दोष है द्वितीयादियोंको किसीकोभी दोष नहीं ॥ ४५ ॥

(अनु०) बटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणायद्विसप्तगः ॥
श्रेष्ठोगुरुःखषट्त्र्याद्येपूजयान्यत्रनिन्दितः ॥ ४६ ॥

बालकके व्रतबंधमें कन्याके विवाहमें जन्मराशिसे ५ । ९ । ११ । २ । ७ स्थानमें गोचरसे बृहस्पति श्रेष्ठ होता है १० । ६ । ३ । १ में (पूजा) शांति करके लेना अन्य ४ । ८ । १२ में निंदित है ॥ ४६ ॥

(अनु०) स्वोच्चेस्वभेस्वमैत्रेवास्वांशेवर्गोत्तमेगुरुः ॥
रिःफाष्टतूर्यगोपीष्टोनीचारिस्थःशुभोप्यसत् ॥ ४७ ॥

बृहस्पति अपने उच्च ४ स्वभवन ९ । १२ स्वमैत्र १ । ८ स्वांश ९। १२ के और वर्गोत्तमांशमें अथवा उक्त उच्चादि अंशकोंमें हो तो गोचरसे ४ । ८ । १२ मेंभी हो तौभी दोष नहीं और नीच १० और शत्रु राशि नवांशकोंमें गोचरका शुभभी अशुभ होता है ॥ ४७ ॥

(अनु०) कृष्णप्रदोषेनध्यायेशनौनिश्यपराह्णके ॥
प्राक्संध्यागर्जितेनेष्टोव्रतबन्धोगलग्रहे ॥ ४८ ॥

कृष्णपक्ष, (प्रथम त्रिभाग) प्रतिपदासे पंचमी पर्यंत छोडके व्रतबंधमें अयोग्य है शुक्ल द्वितीयासे समस्त शुक्लपक्ष तथा कृष्णपंचमी पर्यंत उक्त है और जिस दिन प्रदोष हो, अनध्याय शनिवार रात्रिमें (अपराह्ण) दिनके पिछले त्रिभागमें (प्राक्संध्या) पूर्वोक्त लक्षणसे पहिली संध्याके मेघ गर्जनमें (तथा गलग्रह) ४ । ७ । ८ । ९ । १३ । १४ । १५ । १ तिथियोंमें व्रतबंध न करना ॥ ४८ ॥

(अनु०) क्रूरोजडोभवेत्पापः पटुः षट्कर्मकृद्वटुः ॥
यज्ञार्थभाक्तथामूर्खोरव्याद्यंशेतनौक्रमात् ॥ ४९ ॥

व्रतबंधके लग्नमें सूर्यका नवांश हो तो बटु क्रूरबुद्धि एवं चंद्रमाके मूर्ख मंगलके पापी बुधके चतुर बृहस्पतिके (षट्कर्मा) यजन १ याजन २ दान ३ प्रतिग्रह ४ अध्ययन ५ अध्यापन ६ करनेवाला शुक्रके यज्ञ करनेवाला, धनवान् शनिके अंशमें मूर्ख होवे ॥ ४९ ॥

(त्रोटक) विद्यानिरतःशुभराशिलवेपापांशगतेहिदरिद्रतरः ॥
चन्द्रेस्वलवेबहुदुःखयुतः कर्णादितिभेधनवान्स्वलवे॥५०॥

व्रतबंधमें चंद्रमा शुभराशियोंके अंशकमें हो तो व्रतबंधवाला विद्यामें तत्पर रहे पापग्रह राशियोंके अंशकमें हो तो अतिदरिद्री होवे यदि कर्कांशकमें हो तो बहुत दुःखोंसे युक्त होवे परंतु श्रवण एवं पुनर्वसु नक्षत्रमें स्वांशको धनवान् करता है ॥ ५० ॥

(अनु०) राजसेवीवैश्यवृत्तिःशस्त्रवृत्तिश्चपाठकः ॥
प्राज्ञोर्थवान्म्लेच्छसेवीकेन्द्रेसूर्य्यादिखेचरैः ॥ ५१ ॥

केंद्रमें सूर्य हो तो राजाकी सेवा करनेवाला चंद्रमा हो तो (वैश्यवृत्ति) दुकानदार एवं मंगल० शस्त्रवृत्ति बुध० पढानेवाला बृह० (प्राज्ञ) ज्ञानी शुक्र० धनवान् शनि० म्लेच्छोंकी सेवा करनेवाला होवे ॥ ५१ ॥

(अनु०) शुक्रेजीवेतथाचन्द्रेसूर्यभौमार्किसंयुते ॥
निर्गुणःक्रूरचेष्टःस्यान्निर्घृणः सद्युतेपटुः ॥ ५२ ॥

शुक्र अथवा बृहस्पति वा चंद्रमा सूर्ययुक्त हो तो व्रती (निर्गुण) गुणरहित होवे मंगलयुक्त हो तो (क्रूरचेष्टा) हिंसक और शनि युत हो तो चतुर होवे॥५२॥

(प्रमाणिका) विधौसितांशगेसितेत्रिकोणगेगुरौतनौ ॥
समस्तवेदविद्व्रतीयमांशगेतिनिर्घृणः ॥ ५३ ॥

यदि चंद्रमा शुक्रके २।७ अंशकमें त्रिकोण ९।५ भावमें हो तथा बृहस्पति लग्नमें हो तो व्रती समस्त वेदका जाननेवाला होवे यदि लग्नके बृहस्पतिमें चंद्रमा शनिके अंशमें हो तो अतीव निर्लज्ज होवे ॥ ५३ ॥

(जघनचपला) शुचिशुक्रपौषतपसांदिगश्विरुद्रार्कसंख्यसिततिथयः॥
भूतादित्रितयाष्टमीसंक्रमणंचव्रतेष्वनध्यायाः ॥ ५४ ॥

अनध्याय नित्य, नैमित्तिक दो प्रकार हैं, आषाढ शुक्ल दशमी ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया पौषशुक्ल एकादशी मन्वादि माघशुक्ल द्वादशी इतने सोपपदा होनेसे अनध्याय हैं तथा चतुर्दशी पूर्णमासी प्रतिपदा, कृष्णपक्षमें अमा अष्टमी एवं सूर्यका निरयन संक्रांति दिन और मन्वादि युगादि इतने व्रतबंधमें अनध्यायत्वसे वर्जित हैं और अनध्याय पूर्व कहे जानने ॥ ५४ ॥

(अनु०) अर्कतर्कत्रितिथिषुप्रदोषःस्यात्तदग्रिमैः ॥
रात्र्यर्द्धसार्द्धप्रहरयाममध्यस्थितैः क्रमात् ॥ ५५ ॥

द्वादशीके दिन अर्द्धरात्रिसे पूर्व त्रयोदशी, षष्ठीके दिन डेढ प्रहरसे पूर्व सप्तमी, तथा तृतीयाके दिन एक प्रहरसे पूर्व चतुर्थी प्रवृत्त हो तो उस दिन प्रदोष जानना व्रतबंधमें नेष्ट है ॥ ५५ ॥

(आर्या) प्राग्ब्रह्मौदनपाकाद्व्रतबन्धानन्तरं यदि चेत् ॥
उत्पातानध्ययनोत्पत्तावपि शान्तिपूर्वकं तत्स्यात् ॥ ५६ ॥

व्रतबंधके दिन बह्वृचाओंका ब्रह्मौदन संस्कार होताहै. व्रतबंधसे ऊपर ब्रह्मौदनसे पूर्व यदि गर्जन भूकंप उल्का दिग्दाहादि उत्पात. अनध्याय हो तो शास्त्रोक्त शांति करनी बह्वृचाओंसे अन्योंका उपनयनांग ब्राह्मणभोजन तथा वेदारंभांग ब्राह्मणभोजनपर्यंत मानतेहैं (शांति) स्वस्तिवाचन पायसहोम गायत्री तथा बृहस्पतिसूक्तजप गोदान ब्राह्मण भोजन है ॥ ५६ ॥

(व० ति०) वेदक्रमाच्छशिशिवाहिकरत्रिमूलपूर्वासुपौष्णकरमैत्रमृगादितीज्ये ॥ ध्रौवेपुचाश्विवसुपुष्यकरोत्तरेशकर्णेमृगान्त्यलघुमैत्रधनादितौसत् ॥ ५७ ॥

वेदक्रमसे व्रतबंध नक्षत्र मृगशिर आर्द्रा अश्लेषा हस्त चित्रा स्वाती मूल तीन पूर्वा ऋग्वेदियोंको रेवती हस्त अनुराधा मृगशिर पुनर्वसु पुष्य रोहिणी तीन उत्तरा यजुर्वेदियोंको अश्विनी, धनिष्ठा, पुष्य, हस्त, तीन उत्तरा, आर्द्रा, श्रवण, सामवेदियोंको मृगशिर, पुष्य, अश्विनी, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, अथर्वणवेदियोंको उपनयनमें विहित हैं ॥ ५७ ॥

वेदपरत्वेनक्षत्रचक्रम् ।

ऋग्वेद.	यजुर्वेद	सामवेद.	अथर्ववेद.
मृ.	रे.	अश्वि.	मृ.
आ.	ह.	ध.	रे.
अ.	अनु.	पुष्य.	ह.
ह.	मृ.	ह.	अश्वि.
चि	पु	उ.	पुष्य.
स्वा.	पु.	आ.	अनु.
मू.	उ.	श्र.	ध.
पू.	रो.	०	पुन.

(अनु०) नान्दीश्राद्धोत्तरंमातुःपुष्येचौलान्तरंनहि ॥
शान्त्याचौलंव्रतंपाणिग्रहःकार्य्योऽन्यथानसत् ॥ ५८ ॥

नांदीश्राद्धसे ऊपर यदि कार्यवालेकी माता रजस्वला हो जाय तो चूडा, व्रतबंध, विवाह अन्य लग्नमें करना यदि और लग्न न मिले तो शांति करके निश्चित लग्नमें करना (शांति) सुवर्णप्रतिमामें लक्ष्मीका पूजन श्रीसूक्तपाठ प्रत्यृचापायसहोम और अभिषेक करना ॥ ५८ ॥

(अनु०) विचैत्रव्रतमासादौविभौमास्तेविभूमिजे ॥
छुरिकाबन्धनंश्रेष्ठंनृपाणांप्राग्विवाहतः ॥ ५९ ॥

क्षत्रियोंका व्रतबंधसे ऊपर विवाहके भितर छुरिकाबंधन करते हैं यह चैत्र छोडकर व्रतबंधोक्त मासादिमें होता है परंतु इतना विशेष है कि, मंगल अस्त न हो तथा मंगलवार न हो, यह तलवार बांधनेका मुहूर्त्त है ॥ ५९ ॥

(अनु०) केशान्तंषोडशेवर्षेचौलोक्तदिवसेशुभम् ॥
व्रतोक्तदिवसादौहिसमावर्त्तनमिष्यते ॥ ६० ॥

इति दैवज्ञानन्तसुतरामविरचितेमुहूर्त्तचिन्तामणौ संस्कारप्रकरणं पञ्चमम् ॥ ५ ॥

ब्राह्मणका १६ क्षत्रिय वैश्यका २२ वर्षमें चूडाकर्मोक्त मुहूर्त्तमें केशांतकर्म करना १३ वर्षमें महानाम्नीव्रत १४ में महाव्रत १५ उपनिषद्व्रत १६ में केशांत तथा गोदान व्रतसंस्कार होते हैं इन सभोंमें चौलोक्त मुहूर्त्त है और वेद तथा विद्या पढके गोदानांत संस्कार करके व्रतबंधादि उक्त मुहूर्त्तमें समावर्त्तन संस्कार करना ॥ ६० ॥

इति महीधरकृतायां मुहूर्त्तचिंतामणिभाषायां संस्कारप्रकरणम् ॥ ५ ॥

अथ विवाहप्रकरणम् ।

समावर्त्तनानंतर स्वकुलोद्धारकपुत्रप्राप्त्यर्थ विवाह करना कहा है यह ८ प्रकारका है वरको आप बुलायके उसकी कुछ हानि न करके जो कन्या यथाशक्ति अलंकारयुक्त दी जाती है यह ब्राह्म विवाह है. इसका पुत्र पूर्वापर २१

पुस्तका उद्धार करता है (१) जो यज्ञ कराके दक्षिणामें दी जाती है यह दैव है इसकी संतान पूर्वके १४ पश्चात्के ६ पुस्तको पवित्र करती है (२)धर्म सहायार्थ जो वरके(याच्ञा करने)मांगनेसे दी जाती है वह प्राजापत्य है इसका पुत्र पूर्वापर ६ । ६ पुस्तको पवित्र करता है (३) जो १ गौ १ वृषभ अथवा २ गौ यज्ञके लिये अथवा कन्याहीके लिये वरसे लेकर कन्या दी जाती है ११ परंतु (शुल्क) मूल्य बुद्धिसे न हो तो वह आर्ष संज्ञक है यहभी दैवके तुल्य है (४)कन्याके पित्रादियोंको धन देके अथवा कन्याको धनादिसे संतुष्ट करके जो विवाह है वह आसुर है (५) प्रथमही कन्यावरके प्रेम आलिंगनादि हुयेमें उनके इच्छानुकूल विवाह होनेमें गांधर्व है (६) संग्राममें जीतके वा बलात्कारसे कन्या हरण करके राक्षस विवाह है (७) सोते अथवा निशा आदिसे बेहोशमें जो बलात्कार कन्याका धर्षण करता है यह अधम, पैशाच विवाह है (८) इनमें प्राजापत्य, ब्राह्म, दैव, ऋषिविवाह है उक्त समयपर शुभफल देते हैं इनसे जो संतान हो वह दैव पैत्र्य कर्ममें पवित्र तथा धर्मात्मा ज्ञानी आस्तिक आदि गुणवान् होती है आर्षविवाहभी विकल्पसे ऐसाही है आसुर, गांधर्व, राक्षस, पैशाच कनिष्ठ हैं इनके संतान अधर्मी पाखंडी दूषक नास्तिक आदि होती हैं (संग्राममें कन्याहरण) राक्षस तथा गांधर्वका अंग स्वयंवर, ये राजाओंके धर्म हैं अन्यके नहीं द्रव्य देके जो विवाह (आसुर) होता है यह अतीव निंद्य है इसको दैवपितृकर्मोपयोगी धर्मपत्नी धर्मशास्त्र नहीं कहता दासीकी गणनामें है इसके संतानभी शुद्ध नहीं होती इसके आदि ४ विवाहोंको काल नियमभी नहीं जब चाहें तब विवाह करे " विवाहः सार्वकालिकः " यह गृह्यकारवचनभी गांधर्वादि विवाहोंके लिये है ॥

॥ अथ विवाहप्रयोजनम् ॥

(व०ति०) भार्यात्रिवर्गकरणंशुभशीलयुक्ताशीलंशुभंभवति
लग्नवशेनतस्याः ॥ तस्माद्विवाहसमयःपरिचि-
न्त्यतेहितन्निघ्नतामुपगताःसुतशीलधर्माः ॥ १ ॥

(शुभशीलयुक्त) भर्त्रादियोंके अनुकूल जो भार्या है वह धर्मार्थकाम त्रि-वर्गके साधन योग्य स्थान है उसका शील लग्नके आधीन है वह लग्न विवाहसमयके आधीन है स्त्रियोंका विवाह पुरुषोंका उपनयन दूसरा जन्म है तस्मात् इन सम-योंमें जैसा लग्न हो उसके सदृश संतान, स्वभाव और धर्म होते हैं दैव,पैत्र्य,मनु-ष्य ३ ऋण गृहस्थीपर रहते हैं इनके उद्धार करनेवाली शुभसंतान होती है यह संतान शुभलक्षण स्त्रीके आधीन है उसके शुभगुणवती होनेके हेतु विवाहमुहूर्त कहते हैं ॥ १ ॥

(स्रग्धरा) आदौसंपूज्यरत्नादिभिरथगणकंपूजयेत्स्वस्थचित्तं
कन्योद्वाहंदिगीशानलहयविशिखेप्रश्नलग्नाद्यदीन्दुः ॥
दृष्टाजीवेनसद्यः परिणयनकरोगोतुलाकर्कटाख्यं
वास्यात्प्रश्नस्यलग्नंशुभखचरयुतालोकितंतद्विदध्यात् ॥२॥

यहां अथशब्द ग्रंथमध्य होनेमे मंगलार्थ है प्रथम प्रश्न पूंछनेके लिये स्वस्थ-चित्त ज्योतिषीको सुवर्ण वस्त्र फलादियोंसे सुपूजित करके कन्याके विवाहके लिये पूछे प्रश्नयोग कहते हैं कि, प्रश्नलग्नसे यदि १० । ११ । ३ । ७ । ५ स्थानमें चंद्रमा गुरु दृष्ट हो तो शीघ्र विवाह होगा तथा वृष, तुला, कर्क लग्न प्र-श्नमें हो उसे शुभग्रह देखें वा शुभयुक्त हो तो विवाह शीघ्र होवे ॥ २ ॥

(द्रुतविलम्बित) विषमभांशगतौशशिभार्गवौतनुगृहंबलिनौय-
दिपश्यतः ॥ रचयतोवरलाभमिथोयदायुग-
लभांशगतौयुवतिप्रदौ ॥ ३ ॥

प्रश्नमें चंद्रमा शुक्र यदि विषमराशि विषमनवांशकमें हो बली हो तथा लग्न-को देखें तो कन्याको वर मिले तथा वही चंद्रमा शुक्र युग्मराशि नवांशकमें हो तो वरको कन्या मिले ये दोनहूं विवाहयोग एकही प्रयोजनीय हैं ॥ ३ ॥

(शालिनी) षष्ठाष्टस्थःप्रश्नलग्नाद्यदीन्दुर्लग्नेक्रूरःसप्तमेवाकुजःस्यात् ॥
मूर्त्ताविन्दुःसप्तमेतस्यभौमोरण्डासास्यादष्टसंवत्सरेण ॥ ४ ॥

यदि प्रश्नलग्नसे चंद्रमा छठा आठवां हो तो आठ वर्षमें विधवा होवे आपभी

मरे १, तथा लग्नमें पापग्रह सप्तममें मंगल हो तो वही फल २, और लग्नमें चंद्रमा सप्तममें मंगल हो तौभी वही फल है ३ ये वैधव्ययोग हैं ॥ ४ ॥

(दोधक) प्रश्नतनोर्यदिपापनभोगःपञ्चमगोरिपुदृष्टशरीरः ॥
नीचगतश्चतदाखलुकन्यास्यात्कुलटात्वथवामृतवत्सा ॥ ५ ॥

प्रश्नलग्नमें पंचम पापग्रह शत्रुग्रहसे दृष्ट तथा नीचराशिगत हो तो (व्यभिचारिणी) वेश्या अथवा (मृतवत्सा) मरे पुत्रवाली होवे ॥ ५ ॥

(पुष्पिताग्रा) यदिभवतिसितातिरिक्तपक्षेतनुगृहतःसमराशिग-
शशाङ्कः ॥ अशुभखचरवीक्षितोरिरन्ध्रेभवति-
विवाहविनाशकारकोयम् ॥ ६ ॥

यदि कृष्णपक्षका चंद्रमा प्रश्नलग्नसे २ । ४ आदि राशियोंका ६ । ८ भावमें पापदृष्ट हो तो (विवाहका विनाश) वह विवाह न होने पावे ॥ ६ ॥

(शा०वि०) जन्मोत्थंचविलोक्यबालविधवायोगंविधाप्यव्रतं
सावित्र्याउतपैप्पलंहिसुतयादद्यादिमांवारहः ॥
सल्लग्नेच्युतमूर्तिपिप्पलघटैःकृत्वाविवाहंस्फुटं
दद्यात्तांचिरजीविनेत्रनभवेद्दोषः पुनर्भूभवः ॥ ७ ॥

यदि जन्मके बालवैधव्यकारक जातकोक्तादियोग कन्याके देखे जावें तौ उसके पित्रादियोंने (रहः) एकांतमें निश्चयतासे सावित्रीव्रत करना तथा पिप्पलसंबंधी व्रत करना अथवा शुभलग्नविवाहोक्त सद्गुणसौभाग्यकारकयोगोंमें विष्णुप्रतिमा अश्वत्थ और घटके साथ विवाहविधिसे विवाह करके इह कन्या चिरजीवी (जिस वरके दीर्घायु योग हों) को देना इस उपाय करनेमें वैधव्यदोष नहीं होता और (पुनर्भू) दो वरोंके साथ विवाहका दोषभी नहीं होता॥७॥

(स्रग्विणी) प्रश्नलग्नेक्षणेयादृशापत्ययुक्स्वेच्छयाकामिनी-
तत्रचेदाव्रजेत् ॥ कन्यकावासुतोवातदापण्डितै-
स्तादृशापत्यमस्याविनिर्दिश्यते ॥ ८ ॥

प्रश्नसमयमें ज्योतिषीके समीप जैसी स्त्री आवे वैसा उत्तर प्रश्नका कहना

जस कोई स्त्री पुत्र लेके आवे सो विवाहवाली कन्याके पुत्र होंगे कन्या लेके आवे ता कन्या होंगी दोनहूं हों तो कन्या पुत्र सभी होंगे उपलक्षणसे, उस स्त्रीके जैसे लक्षण सुभगा दुर्भगा पुत्रवती वांझ आदि हों वैसेही कन्याके कहना ॥ ८ ॥

(स्रग्विणी) शङ्खभेरीविपञ्चीरवैर्मङ्गलंजायतेवैपरीत्यंतदालक्षयेत् ॥
वायसोवाखरःश्वासृगालोपिवाप्रश्नलग्नक्षणेरौतिनादंयदि ॥ ९ ॥

प्रश्नसमयमें शकुन शंख (भेरी) तुरी वीणा आदि शुभवाद्य सुननेमें, देखनेमें आवे तो मंगल होगा ऐसेही हाथी घोडे छत्र आदि तथा जिन वस्तुओंके देखनेसे चित्त प्रसन्न हो ऐसे मंगलकारी होते हैं वायस, कौवा, गदहा,कुत्ता, स्यार यदि उस समय शब्द करें तो अमंगल जानना उल्लू भैंसेभी ऐसेही हैं ॥९॥

(मत्तमयूर)विश्वस्वातीवैष्णवपूर्वात्रयमैत्रैर्वस्वाग्नेयैर्वाकरपीडोचितऋक्षैः॥
वस्त्रालङ्कारादिसमेतैःफलपुष्पैःसंतोष्यादौस्यादनुकन्यावरणंसत् ॥१०॥

कन्यावरण मुहूर्त्त उत्तराषाढा, स्वाती, श्रवण, तीन पूर्वा, अनुराधा, धनिष्ठा, कृत्तिकामें तथा विवाहोक्त नक्षत्रादियोंमें वस्त्र, भूषणआदि वस्तुसहित फल पुष्पोंसे विधिपूर्वक कन्यावरण (सगाई) करना ॥ १० ॥

(मत्तमयूर)धरणिदेवोथवाकन्यकासोदरःशुभदिनेगीतवाद्यादिभिःसंयुतः
वरवृत्तिवस्त्रयज्ञोपवीतादिनाध्रुवयुतैर्वह्निपूर्वात्रयैराचरेत् ॥ ११ ॥

(ब्राह्मण) पुरोहितने अथवा कन्याके सहोदरभाईने शुभवारादि दिनमें तथा ध्रुवनक्षत्रोंसहित कृत्तिका, तीन पूर्वाओंमें गीत वाद्यादि मंगलपूर्वक वस्त्र, भूषण, यज्ञोपवीतादियोंसे वरका वरण (वाग्दान) करना ॥ ११ ॥

(व० ति०) गुरुशुद्धिवशेनकन्यकानांसमवर्षेषुषडब्दकोपरिष्टात् ॥
रविशुद्धिवशाच्छुभोवराणामुभयोश्चन्द्रविशुद्धितोविवाहः ॥ १२ ॥

कन्याके गुरुशुद्धि (पूर्वोक्त) वरके सूर्यशुद्धि तथा दोनहूंके चंद्रशुद्धिमें कन्याके अवस्था छः वर्ष ऊपर समवर्षमें वरके विषमवर्षोंमें विवाह शुभ होता है. यहां आचार्य्यांतर मत है कि, जन्मसेविषमवर्षके तीन महीने ऊपर ९ महीने तथा समके तीन महीनेपर्यंत विवाह शुभ होता है ॥ १२ ॥

द्रुतविलम्बित) मिथुनकुम्भवृषालिमृगाजगेमिथुनगेपिरवौत्रिलवेशुचेः ॥
अलिमृगाजगतेकरपीडनंभवतिकार्तिकपौपमधुष्वपि ॥ १३ ॥

मिथुन, कुंभ, वृष, वृश्चिक, मकर, मेष राशियोंके सूर्यमें विवाह शुभ होता है. इनमें आषाढके (त्रिलव) शुक्लप्रतिपदासे दशमीपर्यंत मात्र शुभ है हरिशयनी एकादशीसे योग्य नहीं तथा वृश्चिकके सूर्यमें कार्तिक, मकरके सूर्यमें पौष मेषके सूर्यमें चैत्रभी विवाहको लेने हैं ॥ १३ ॥

(रथोद्धता) आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयोर्जन्ममासभतिथौकरग्रहः ॥
नोचितोथविबुधैः प्रशस्यते चेद्द्वितीयजनुषोःसुतप्रदः ॥ १४ ॥

जन्ममास (जन्मतिथिसे ३० दिन) जन्मनक्षत्र जन्मतिथिमें आद्यगर्भके पुत्र कन्याका विवाह उचित नहीं है. द्वितीयादि गर्भवालोंको पुत्र देनेवाले जन्ममासादि विवाहमें होते हैं ॥ १४ ॥

(शालिनी) ज्येष्ठद्वन्द्वंमध्यमंसंप्रदिष्टंत्रिज्येष्ठंचेन्नैवयुक्तंकदापि ॥
केचित्सूर्य्येवह्निगंप्रोह्यमाहुर्नैवान्योन्यंज्येष्ठयोःस्याद्विवाहः ॥ १५ ॥

ज्येष्ठपुत्र ज्येष्ठकन्या और ज्येष्ठमास विवाहमें यह त्रिज्येष्ठ है कदापि योग्य नहीं है. ज्येष्ठपुत्र ज्येष्ठमास अथवा ज्येष्ठकन्या ज्येष्ठमास यह ज्येष्ठद्वंद्व मध्यम होता है. कोई कृत्तिकाके सूर्य्यपर्यंत त्रिज्येष्ठ वा द्वंद्वका दोष नहीं है ऐसा कहते हैं. और आद्यगर्भके कन्या पुत्रका परस्पर विवाह नहीं होता ॥ १५ ॥

(हरिणी) सुतपरिणयात्षण्मासान्तःसुताकरपीडनंनचनिज-
कुलेतद्वद्वामण्डनादपिमुण्डनम् ॥ नचसहजयोर्देयेभ्रात्रोःसहोद-
रकन्यकेनचसहजसुतोद्वाहोद्वाब्देशुभेनपितृक्रिया ॥ १६ ॥

पुत्रके विवाहसे छः महीनेपर्यंत कन्याका विवाह न करना. तथा (मंडन) विवाहसे (मुंडन) चौल उपनयन और महानाम्न्यादि ४ व्रत छः महीनेपर्यंत न करने. यदि बीचमें संवत्सर खलदल जावे जैसे फाल्गुनमें मंगल अथवा पुत्रोद्वाह हुआ तो वैशाखमें मुंडन अथवा कन्योद्वाह हो सकता है. यह नियम (निज कुल) तीन पुरुष सापिंडपर्यंतका है. तथा मंगलसे ६ महीनेपर्यंत (पितृक्रिया)

श्राद्धादि न करने. और सहोदरभाईयोंको सहोदरकन्या न देने. तथा सहोदरों-का विवाहभी ६ महीनेके भीतर एकसे दूसरा न करना, कन्याके विवाहसे ४ दिन पीछे पुत्रका विवाह हो सकता है. परंतु एकोदरप्रसूत कन्या पुत्र वा पुत्र पुत्र वा कन्या कन्याका छः महीनेपर्यंत नहीं होना ॥ १६ ॥

(उ०जा०) वध्वावरस्यापिकुलेत्रिपूर्वेनाशंव्रजेत्कश्चननिश्चयोत्तरम्॥ मासोत्तरंतत्रविवाहइष्यतेशान्त्याथवासूतकनिर्गमे परैः ॥१७॥

यदि विवाहमुहूर्त निश्चय (दिनपट्टा) हुयेमें वर वा कन्याके (त्रिपुरुष) सापिंड तीन पुस्तके भीतर कोई मर जावे,तो एक महीने ऊपर शांतिकरके विवाह करना. कोई आचार्य कहते हैं कि, सूतकोत्तर शांति करके कर लेना, परंतु यह विषय तीन पुरुषवालोंका है माता पिताका नहीं. जैसे पिताका अशौच १ वर्ष माताका ६ महीने, स्त्रीका ३ महीने, भ्रातृपुत्रादियोंका १ महीना होता है यही हेतु है इसमें और विशेषता है कि दुर्भिक्षमें राज्यभंगमें पिताके प्राणसंकटमें तथा (प्रौढा)अतिकाली कन्याके विवाहमें किसी प्रकारका प्रतिकूल नहीं है ॥१७॥

(उ०जा०) चूडाव्रतंचापिविवाहतोव्रताच्चूडाचनेष्टापुरुषत्रयान्तरे ॥ वधूप्रवेशाच्चसुताविनिर्गमःषण्मासतोवाब्दविभेदतःशुभः ॥१८॥

तीन पुरुषके भीतरवालोंके विवाहसे ऊपर छः महीने पर्यंत वा संवत्सर बदल-नेपर्यंत चूडाकर्म व्रतबंध तथा अपिशब्दसे महानाम्न्यादि४ व्रतभी न करने; तथा वधूके प्रवेशसे उतनेही समयपर्यंत कन्याका (निर्गम) घरसे बाहर देना न करना (त्रिपुरुषी) मूलपुरुषसे तीन पुस्तपर्यंत होती है, चौथे पुस्तको दोष नहीं॥१८॥

(व० ति०) श्वश्रूविनाशमहिजोसुतरांविधत्तःकन्यासुतौनिर्ऋ-तिजौश्वशुरंहतश्च ॥ ज्येष्ठाभजाततनयास्वधवाग्रजंचशक्राग्नि-जाभवतिदेवरनाशकर्त्री ॥ १९ ॥

अश्लेषाके उत्पन्न कन्या पुत्र साक्षात् सासको नाश करते हैं. नतु सौतिया सासको,तथा मूलके जन्मवाले श्वशुरका नाश करते हैं;तथा ज्येष्ठामें जन्मवाली कन्या अपने पतिके सहोदर ज्येठे भाई (ज्येष्ठ)को. ऐसेही विशाखाके जन्म-

वाली देवर भर्त्ताके सहोदर छोटे भाईका नाश करती है ग्रंथांतरवाक्य ऐसेभी हैं कि ज्येष्ठावाला पुरुष कन्याके ज्येष्ठ भाईको विशाखावाला छोटे भाई (शाले) को नाश करता है ॥ " पत्न्यग्रजामग्रजं वा हन्ति ज्येष्ठर्क्षजः पुमान् । तथा भार्या स्वसारं वा शालकं वा द्विदैवजः " इति ॥ यहां ज्येष्ठ कनिष्ठ भाइयोंके स्थानमें बहिनभी कही है उक्तसे प्रथम वा पीछेके गर्भवाला कन्या वा पुत्र जो हो, यह भावार्थ है ॥ १९ ॥

(अनु०) द्वीशाद्यपादत्रयजाकन्यादेवरसौख्यदा ॥
मूलान्तपादसार्पाद्यपादजौतौतयोःशुभौ ॥ २० ॥

पूर्वोक्त दोषोंमें विशेष विचार है कि विशाखाके प्रथम तीन चरणवाली कन्या देवरको दोष नहीं करती. प्रत्युत सुख देनेवाली होती है. केवल चतुर्थचरण निषिद्ध है ऐसेही मूलका चतुर्थचरण श्वशुरको अश्लेषाका प्रथम चरण सासको, वर तथा कन्याका शुभ होता है ॥ २० ॥

(अनु०) वर्णोवश्यंतथातारायोनिश्चग्रहमैत्रकम् ॥
गणमैत्रंभकूटंचनाडीचैतेगुणाधिकाः ॥ २१ ॥

विवाहका मेलकविचार कहते हैं कि वर्णमैत्री हो तो (१) गुणवश्यमें (२) तारामें (३) योनिमें (४) ग्रहमैत्रीमें (५) गणमैत्रीमें (६) भकूटमैत्रीमें (७) नाडीगुणमें (८) इन सबका योग (३६) गुण होते हैं अधिकमें मेलक शुभ हीनमें क्रमशः अशुभ होता है. इनका प्रत्येक विचार आगे कहते हैं ॥ २१ ॥

(प्रमाणिका) द्विजाझपालिकर्कटास्ततोनृपाविशोङ्घ्रिजाः ॥
वरस्यवर्णतोधिकावधूर्नशस्यतेबुधैः ॥ २२ ॥

मीन, वृश्चिक, कर्कट, ब्राह्मण तथा १ । ५ । ९ क्षत्रिय २ । ६ । १० वैश्य ३ । ७ । ११ शूद्रवर्ण हैं. वरसे हीनवर्ण कन्या शुभ कन्याके वर्णसे हीनवर्ण वर अच्छा नहीं होता. दोनहूंका एकवर्ण अतिउत्तम होता है वर्णाधिक वर होनेमें (१) गुण मिलता है कन्या अधिकमें नहीं ॥ २२ ॥

(इं० व०) हित्वामृगेन्द्रंनरराशिवश्याःसर्वेतथैषांजलजाश्चभक्ष्याः॥
सर्वेपिसिंहस्यवशेविनालिंझेयंनराणांव्यवहारतोन्यत् ॥२३॥

वश्यकूट मनुष्यराशि ३ । ६ । ७ यांके वशवर्ती सिंहविना सभी राशि हैं जलचर राशिभी मनुष्योंका भक्ष्य होनेसे उनके वश्यही हैं तथा सिंहके वश वृश्चिक छोडके सभी राशि हैं अन्य परस्पर वश्यावश्य मानुष व्यवहारसे जानना. यहांभी वरके राशिके वश्य कन्याकी राशि होनेमें (२) गुण मिलता है विपरीतमें नहीं ॥ २३ ॥

(अनु०) कन्यर्क्षाद्वरभंयावत्कन्याभंवरभादपि ॥
गणयेन्नवभिःशेषेत्रीष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥ २४ ॥

कन्याके नक्षत्रसे वरके नक्षत्र वरनक्षत्रसे कन्याके नक्षत्रपर्यंत गिनके जितने हों ९ से शेषकरके तारा जाननी ३ । ५ । ७ शेष रहें तो अशुभ अन्य शुभ होते हैं शुभसे (३) गुण मिलता है ॥ २४ ॥

(शा० वि०) अश्विन्यम्बुपयोर्हयोनिगदितःस्वात्यर्कयोःकासरः सिंहोवस्वजपाद्भयोःसमुदितोयामान्त्ययोःकुञ्जरः ॥ मेषो देवपुरोहितानलभयोःकर्णाम्बुनोर्वानरः स्याद्वैश्वाभिजितोस्तथैव नकुलश्चान्द्राब्जयोन्योरहिः ॥ २५ ॥ ज्येष्ठामैत्रभयोःकुरङ्गउदितोमूलार्द्रयोः श्वातथामार्जारोदितिसार्पयोरथमघायोन्योस्तथैवोन्दुरुः ॥ व्याघ्रोद्वीशभचित्रयोरपिचगौरर्यम्णबुध्न्यर्क्षयोर्योनिः पादगयोःपरस्परमहावैरंभयोन्योस्त्यजेत् ॥ २६ ॥

योनिकूट अश्विनी शततारकी अश्वयोनि । स्वाती, हस्त, महिष । धनिष्ठा, पूर्वाभाद्र, सिंह । भरणी, रेवती, हाथी । पुष्य, कृत्तिका, मेष (मेंढा) । श्रवण, पूर्वाषाढा, वानर । उत्तराषाढा, अभिजित्, नेवला । रोहिणी, मृगशिर, सर्प । ज्येष्ठा, अनुराधा, हरिण । मूल, आर्द्रा, कुत्ता । पुनर्वसु, अश्लेषा बिल्ला । मघा, पूर्वाफा० चूहा । विशाखा गौयोनि हैं चित्रा, व्याघ्र । उत्तराफा० उत्तराभा० गौयोनि हैं एक योनिके वर कन्या उत्तम " मित्र समयोनियोंके सामान्य " और

परस्पर योनिवैरमें अशुभ होता है. इनका वैर गौव्याघ्रका । गज सिंह । घोडा भैंसा । कुत्ता मृग । बिल्ला सर्प । वानर मेंढा । बिल्ला चूहा । इत्यादि लोकव्यवहारमें जानना योनिमैत्री होनेमें (४) गुण मिलता है ॥ २५ ॥ २६ ॥

(शा० वि०) मित्राणिद्युमणेःकुजेज्यशशिनःशुक्रार्कजौवैरिणौ सौम्यश्चास्यसमोविधोर्बुधरवीमित्रेनचास्यद्विषत् ॥ शेषाश्चास्यसमाः कुजस्यसुहृदश्चन्द्रेज्यसूर्य्याबुधः शत्रुःशुक्रशनीसमौ चशशभृत्सूनोः सिताहस्करौ ॥ २७ ॥ मित्रेचास्यरिपुः शशी गुरुशनिक्ष्माजाः समागीष्पतेर्मित्राण्यर्ककुजेन्दवोबुधसितौ शत्रूसमःसूर्यजः ॥ मित्रेसौम्यशनीकवेः शशिरवीशत्रूकुजेज्यौसमौमित्रेशुक्रबुधौशनेःशशिरविक्ष्माजाद्विपोन्यः समः ॥ २८ ॥

ग्रहकूट ॥ सूर्यके मं० बृ० चं० मित्र शु० श० शत्रु बु० सम है । चंद्रमाके बु० सू० मित्र अन्यसम शत्रु कोई नहीं । मंगलके चं० गु० सू० मित्र बुध शत्रु शु० श० सम बुधके शु० सू० मित्र चं० शत्रु बृ० श० मं० सम बृहस्पतिके सू० मं० चं० मित्र बु० शु० शत्रु श० सम शुक्रके बु० श० मित्र चं० सू० शत्रु बृ० मं० सम शनिके शु० बु० मित्र चं० सू० मं० शत्रु बृ० सम है वरकन्याके राशीश मित्र तथा एकाधिपत्य हों तो (५) गुण एवं सममित्रमें ४ सम सममें ३ मित्र शत्रुमें २ सम शत्रुमें १ आधा शत्रु शत्रुमें (०) मिलता है शत्रु शत्रुका मेल कहीं नहीं होता मृत्युषट्काष्टक होता है ॥२७॥२८॥

मित्रामित्रचक्रम्.

ग्र.	र.	चं.	मं.	बु	गु	शु.	श
मित्र.	चं मं गु	र. बु.	गु. चं. र.	र. शु	र. चं. मं	बु. श.	बु. शु
सम.	बु.	मं गु शु श.	शु श.	मं. गु. श.	श.	मं. गु.	गु.
शत्रु.	शु श.	०	बु.	चं.	बु शु.	र. चं.	र. चं. मं.

(व० ति०) रक्षोनरामरगणाःक्रमतोमघाहिवस्विन्द्रमूलवरुणा-
निलतक्षराधाः ॥ पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानिमै-
त्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥ २९ ॥

मघा, अश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, कृत्तिका, चित्रा, विशाखा राक्षसगण ॥ तीन पूर्वा, तीन उत्तरा, रोहिणी, भरणी, आर्द्रा, मनुष्यगण ॥ और अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिर, श्रवण, रेवती, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, हस्त देवगण है ॥ २९ ॥

(मालिनी) निजनिजगणमध्येप्रीतिरत्युत्तमास्यादमरमनुजयोः
सामध्यमासंप्रदिष्टा ॥ असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेवप्र-
दिष्टोदनुजविबुधयोःस्याद्वैरमेकान्ततोत्र ॥ ३० ॥

वरकन्याका एकही गण हो तो अत्यंत प्रीति होती है देवमनुष्यकी मध्यम प्रीति राक्षसमनुष्यकी मृत्यु देवराक्षसका कलह होता है मनुष्यराक्षसमें विशेष यह है कि वर राक्षस कन्या मनुष्य गण हो तो वैर होता है यदि वर मनुष्य कन्या राक्षस गण हो तो वरको मृत्यु यह बहुत प्रमाणोंमे पुष्ट है इस कूटमें गुण सौम्यमें ६ गुण देव मनुष्यमें ५ देव राक्षस एवं मनुष्यराक्षसमें गुण (०) है कन्या राक्षसी वर देवमें २ कन्या देव वर मनुष्यमें ४ गुण हैं ॥ ३० ॥

(अ०) विषमात्कन्यकाराशेःषष्ठंषष्टाष्टकंनसत् ॥
समात्षष्ठंशुभंज्ञेयंविपरीतंतदष्टमम् ॥
मृत्युःषट्काष्टकेज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ॥
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्रसौख्यकृत् ॥ ३१ ॥

विषमराशिसे छटी राशि तथा समसे आठवीं वही होती है यह शत्रु षट्काष्टक हैं.इनके स्वामी शत्रु होते हैं तथा समराशिसे छटी विषमसे आठवीं मित्र षट्काष्टक हैं इनके स्वामी मित्र होते हैं यह शुभ होता है इससे विपरीत अशुभ है शत्रु षट्काष्टक मृत्यु करता है यदि वरकन्याकी ५ । ९ एकसे दूसरी पंच नवम हो तो पुत्रहानि एवं दूसरी बारहवी हो तो दरिद्रता होती है अन्यस्थानोंमें शुभ होते हैं ॥ ३१ ॥

(शा० वि०) प्रोक्तेदुष्टभकूटकेपरिणयस्त्वेकाधिपत्येशुभो-
थाराशीश्वरसौहृदेपिगदितोनाड्यर्क्षशुद्धिर्यदि ॥
अन्यर्क्षेशपयोर्बलित्वसखितेनाड्यर्क्षशुद्धौतथा
ताराशुद्धिवशेनराशिवशताभावेनिरुक्तोबुधैः ॥३२॥

उक्तप्रकारसे दुष्टभकूट हुयेमेंभी परिहार है कि वरकन्याकी राशियोंका स्वामी एकही हो (जैसे १ । ८ का मंगल २ । ७ का शुक्र) तो विवाह शुभ होता है तथा राशीशोंकी मैत्रीमेंभी शुभ है यदि नाडिशुद्धि नक्षत्रशुद्धि हो यदि उक्तराशीश अंशेशोंकी परस्पर मैत्री हो तथा बलवानभी हों और नाडीशुद्धि हो तथा ताराशुद्धि हो एवं राशिवश्यताभी योग्यही हो तो ग्रहोंके शत्रुभावका दोष नहीं होता यहां (ग्रहमैत्री) मित्र षट्काष्टक (१) एकाधिपत्य (२) सबलांशेशमैत्री (३) राशिवश्यता (४) ताराशुद्धि (५) प्रकार षट्काष्टकोंके परिहार हैं इनमेंसे एकके होनेमेंभी षट्काष्टकदोष नहीं होता परंतु नाडी सभीमें होना चाहिये ॥ ३२ ॥

(शालिनी) मैत्र्यांराशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापिस्याद्गणानांनदोषः ॥
खेटारित्वंनाशयेत्सद्भकूटंखेटप्रीतिश्चापिदुष्टंभकूटम् ॥ ३३ ॥

गणकूट भकूट ग्रहकूटोंका परिहार कन्यावरके राशीश तथा अंशेशोंकी परस्पर मैत्री हो तो दुष्टगण (राक्षस मनुष्यादि) का दोष नहीं होता तथा (शुभराशिकूट) तीसरा ग्यारहवां आदि हो तो ग्रहोंके शत्रुताका दोष नहीं होता एवं राशीशोंकी प्रीति षट्काष्टकादि दोषोंको नाश करती है ॥ ३३ ॥

(स्रग्धरा) ज्येष्ठार्यम्णेशनीराधिपभयुगयुगंदास्रभंचैकनाडी-
पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रान्तकवसुजलभंयोनिबुध्न्येचमध्या ॥
वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथोपौष्णभंचापरास्यु-
र्दम्पत्योरेकनाड्यांपरिणयनमसन्मध्यनाड्यांहिमृत्युः ॥३४॥

ज्येष्ठा, आर्द्रा, उत्तराफाल्गुनी, शततारा इनसे दो दो नक्षत्रोंकी आद्यनाडी ॥ पुष्य, मृगशिर, चित्रा, अनुराधा, भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढा, पूर्वा फाल्गुनी,

उत्तराभाद्रकी मध्यनाडी ॥ स्वाती, कृत्तिका, अश्लेषा, उत्तराषाढा इनसे दो दो, नक्षत्रोंकी अंत्यनाडी होती है वरकन्याके नक्षत्र एकनाडीमें हों तो अशुभ फल होता है मध्यनाडीमें तो दोनहूंकी निश्चय करके मृत्युही होती है मध्यनाडी छोडके पार्श्वनाडियोंका दोष गोदावरीके दक्षिण अथवा क्षत्रियआदियोंको नहीं किसीका मत है कि आद्य नाडी वरको अंत्य कन्याको मध्य दोनहूंको दोष करती है इनमें अंत्य नाडीको अन्य परिहारांतर होनेमें लेतेभी हैं " चतुस्त्रिद्व्यङ्घ्रिभोत्थायाः कन्यायाः क्रमशोश्विभात् ॥ वह्निभादिन्दुभान्नाडी त्रिचतुः पञ्चपर्वसु ॥१॥" ग्रंथांतरोंसे त्रिचतुः पंचनाडी कहते हैं कन्यका नक्षत्र चार चरण एकही राशिका हो तो पूर्वोक्त त्रिनाडी एवं तीन चरण एकराशिका हो तो चतुर्नाडी द्विचरणमें पंचनाडी विचारना त्रिनाडी अश्विनीसे, चतुर्नाडी कृत्तिकासे, पंचनाडी मृगशिरसे, गिनते हैं परंतु चतुर्नाडी अहल्या देशमें पंचनाडी पंजाबमें त्रिनाडी सर्वत्र वर्जित है कोई नाडीमें नक्षत्रके प्रथम चतुर्थ और तीसरे दूसरे चरणमें विशेष दोष कहते हैं नाडीविचार वरकन्या, स्वामिसेवक, नये मित्र, देश तथा नवीन देश, ग्राम, नगर, घरमें है जहां नक्षत्र नाडी हुयेमें, चरणनाडी न हो तहां दोष अल्प है पूर्वोक्तादि परिहार हुयेमें नाडीकी शांतिभी है कि मृत्युंजयादि जप सुवर्ण नाडीदान तथा वर्णादि कूटमें गौ अन्य वस्त्र सुवर्ण देना ॥ ३४ ॥

कन्याप.	वर्णगुण			
ब्राह्म	१	०	०	०
क्षत्रि.	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१
	ब्रा	क्ष	वै	श
	वरपक्षे			

वश्यगुण.

चतुष्प	२	॥	१	०	२
मनु०	॥	२	०	०	०
जलचर.	१	०	२	२	२
वनचर.	०	०	२	२	०
कीट.	१	०	१	०	२

ताराचक्रम्.

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योनिगुणाः.

	अ	ग	मे	स	श्वा	मा	मू	गौ	मै	व्या	ह	वा	न	सि.
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	२	२	०
मेष	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	३	२	४	०	२	२	२	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गो	१	२	३	२	३	२	२	४	५	०	३	२	२	१
मैंस	०	२	३	२	२	२	२	३	४	१	२	३	२	२
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	१	१	४	१	१	२	२
हरिण	३	३	२	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुल	२	३	३	०	१	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	१	०	०	३	२	१	२	२	४

गणगुणाः

		वर		
		दे	म	रा
कन्या	दे	६	५	१
	म	६	६	०
	रा.	१	०	६

ग्रहमैत्रीगुणाः.

	वर						
वधू	र	च	म.	बु	गु	शु	श
र.	५	५	५	३	५	०	०
च.	५	५	४	१	४	॥	॥
म.	५	४	५	॥	५	३	॥
बु	३	१	॥	५	॥	५	४
गु	५	४	५	॥	५	॥	३
शु	५	॥	३	५	॥	५	५
श	०	॥	॥	४	३	५	५

नाडीचक्रम्.

	वर		
वधू	आ.	म	अ.
आ.	०	८	८
म	८	०	८
अ	८	८	०

भकूटगुणा.

	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	७	७
कर्क	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०
वृ	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

(आर्या) अकचटतपयशवर्गाःखगेशमार्जारसिंहशुनाम् ॥
सर्पाखुमृगावीनांनिजपञ्चमवैरिणामष्टौ ॥ ३५ ॥

अवर्ग गरुड । कवर्ग मार्जार । चवर्ग सिंह । टवर्ग कुत्ता । तवर्ग सर्प । पवर्ग चूहा । यवर्ग मृग । शवर्ग (अज) बकरा ये ८ वर्गोंके स्वामी हैं अपनेसे

पांचवां शत्रु होता है जैसे गरुडका सर्प,मार्जारका चूहा इत्यादि स्त्रीपुरुषके नक्षत्र भक्ष्यभक्षक हो तो शुभ नहीं होता कोई नामाद्यक्षरसेभी वरकन्या स्वामिसेवक आदि सभीको विचारते हैं ॥ ३५ ॥

(शालिनी)राश्यैक्येचेद्भिन्नमृक्षंद्वयोःस्यान्नक्षत्रैक्येराशियुग्मंतथैव॥
नाडीदोषोनोगणानांचदोषोनक्षत्रैक्येपादभेदेशुभंस्यात् ॥३६॥

यदि वरकन्यादियोंका एकराशि और दो नक्षत्र हो. वा एक नक्षत्र हो परंतु राशि दो हो और नक्षत्र तो एक हो परंतु चरण भिन्न हों एकही चरण न हो तो नाडीदोष गणदोष उपलक्षणसे तारादिदोषभी नहीं होते. व्यवहार, राजसेवा, संग्राम, ग्राम, मित्रतामें नामराशिसे फल हैं ॥ ३६ ॥

(मंजुभाषिणी) कुजशुक्रसौम्यशशिसूर्य्यचन्द्रजाः कविभौमजीवशनिसौरयोगुरुः ॥ इहराशिपाः क्रियमृगास्यतौलिकेन्दुमतो नवांशविधिरुच्यतेबुधैः ॥ ३७ ॥

राशिस्वामी ॥ मेष वृश्चिकका मंगल, तुला वृषका शुक्र, एवं ३ । ६ का बुध,४ का चन्द्रमा,५ का सूर्य्य,९ । १२ का बृहस्पति,१० । ११ का शनि राशीश हैं । नवांश कहते हैं कि एकराशिके ३० अंश होते हैं इनके ९ भाग ३ अंश २० कलाका एक ६ । ४० पर्यंत दो एवं १०।०॥१३।२०।१६।४० ॥२०।०॥२३।२०॥२६।४०॥३०।०॥ इनकी गिनती १ । ५ । ९ को मेषसे २।६।१० को मकरसे १।७।११ को तुलासे ४।८।१२ को कर्कसे अर्थात् चरादि गणना है जैसे मेषके ३ । २० तौ मेषका ६ । ४०पर्यंत वृषका नवांश इत्यादि वृषमें ३ । २० लौं मकरका ६ । ४० में कुम्भका इत्यादि सभीके जानने ॥ ३७ ॥

(शशिवदना) समगृहमध्येशशिरविहोरा ॥
विषमभमध्येरविशशिनोःसा ॥ ३८ ॥

होरा ॥ समराशि १५ अंशलौं चन्द्रमाकी उपरांत ३० लों सूर्यकी विषमराशिमें १५ लों सूर्यकी उपरांत चन्द्रमाकी होरा होती है ॥ ३८ ॥

(व० ति०) शुक्रज्ञजीवशनिभूतनयस्यबाणशैलाष्टपञ्चविशिखासमराशिमध्ये ॥ त्रिंशांशकोविषमभेविपरीतमस्माद्द्रेष्काणकाःप्रथमपञ्चनवाधिपानाम् ॥ ३९ ॥

त्रिंशांशक ॥ समराशिमें ५ अंशपर्यंत शुक्रका तब ७ बुधका तब ८ बृहस्पतिका ५ शनिका ५ मंगलका और विषम राशिमें विपरीत ५ अंश मंगलका ५ शनि ८ बृहस्पति ७ बुध ५ शुक्रका त्रिंशांश होता है ॥ द्रेष्काण ॥ दश अंशपर्यंत जो राशि है उसके स्वामीके ११ से २० पर्यंत उस राशिसे पंचम राशिके स्वामीका २१ से ३० पर्यंत उस राशिसे नवम राशिके स्वामीका द्रेष्काण होता है ॥ ३९ ॥

(व० ति०) स्याद्द्वादशांशइहराशितएवगेहंहोराथदृक्कनवमांशकसूर्य्यभागाः ॥ त्रिंशांशकश्चषडिमेकथितास्तु वर्गाःसौम्यैः शुभंभवतिवाशुभमेवपापैः ॥ ४० ॥

द्वादशांश ॥ एकराशिके ३० अंशोंके १२ भाग अढाई २ । ३० अंशका होता है. अपनी राशिसे गिना जाता है जैसे मेषके २।३० अंशमें मेषका द्वादशांश ५ । ० पर्यंत वृषका ७ । ३० पर्यंत मिथुनका इत्यादि सभीका जानना होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश, राशि ये षड्वर्ग हैं शुभग्रहोंके षड्वर्ग सभी कार्यमें शुभ पापका अशुभ होता है ॥ ४० ॥

(शा० वि०) ज्येष्ठापौष्णभसार्पभान्त्यघटिकायुग्मं चमूलाश्विनीपित्र्यादौघटिकाद्वयंनिगादितंतद्भस्यगण्डान्तकम् ॥ कर्काल्यण्डजभांततोऽर्धघटिकासिंहाश्विमेषादिगापूर्णान्तेघटिकात्मकंत्वशुभदंनन्दातिथेश्चादिमम् ॥४१॥

तिथ्यादि पंचाग तथा वर्षर्तु मासपक्षदिनादि सभी संधि होती हैं इनमें विशेषतः तिथिनक्षत्रलग्नकी संधियोंकी गंडांत संज्ञा है वह ज्येष्ठा रेवती अश्लेषाके अंत्यके २ घटी अश्विनी मघा मूलके आदिकी २ घटी समस्त ४ । ४ घटियोंका नक्षत्रगंडांत होता है तथा कर्क वृश्चिक मीनके अंतिम आधी घटी मेष सिंह

धनके आदिकी आधी घटी समस्त घटी लग्नगंडांत होता है एवं १ पूर्ण ५। १०। १५ तिथियोंके अंत्यके १ घटी नंदा ११। ६। १ के आदिके १ घटी समस्त दो घटी तिथिगंडांत होता है गंडांतके उत्पन्न कन्या पुत्र दोषद होते हैं इसका विस्तार नक्षत्रप्रकरणमें कह आये शुभकार्योंमें गंडांत वर्जित है परंतु तिथिगंडांत लग्नगंडांत ग्रंथांतरोंमें सामान्यदोष कहा है कि चंद्रमाके बली होनेमें तिथिगंडांत बृहस्पतिके बली होनेमें लग्नगंडांतका दोष नहीं ऐसेही मासांतके ३ दिन वर्षांतके १५ दिन संधिगंडांतसंज्ञक है योग करण संधि १ । १ घटी होती है ऐसेही दिन रात्रि अर्द्धरात्रि मध्यान्हादिभी हैं ॥ ४१ ॥

(अ०) लग्नात्पापावृज्वनृजू व्ययार्थस्थौ यदा तदा ॥
कर्त्तरीनामसा ज्ञेया मृत्युदारिद्र्यशोकदा ॥ ४२ ॥

लग्नसे पापग्रह दूसरा वक्री तथा बारहवां मार्गी हो तो इसका नाम कर्त्तरी विवाहादियोंमें मृत्यु किंवा दरिद्रता किंवा शोक देती है ऐसेही सप्तमभावमें कर्तरी अशुभ कहते हैं तथा चंद्रमापरभी उक्तफलकारक है जातकोंमें सभी भावोंमें अपने २ उक्त वस्तुको अनिष्ट फल हैं ॥ ४२ ॥

(अ०) चंद्रे सूर्य्यादिसंयुक्ते दारिद्र्यं मरणं शुभम् ॥
सौख्यं सापत्न्यवैराग्ये पापद्वययुते मृतिः ॥ ४३ ॥

चंद्रमा सूर्यके साथ हो तो दरिद्रता एवं मंगलके साथ मृत्यु बुधके साथ शुभ बृहस्पतिके साथ सौख्य शुक्रके (सापत्न्य) सौकण शनिके (वैराग्य) फकीरी राहु केतुभी ऐसेही जानना यदि चंद्रमा दो पापग्रहोंसे युक्त हो तो मृत्यु होवे परंतु मित्र स्वक्षेत्र उच्चवर्गोत्तमादिगत चंद्रमा पापयुक्त दोष नहीं करता यह ग्रंथांतरमत है ॥ ४३ ॥

(अ०) जन्मलग्नभयोर्मृत्युराशौ नेष्टः करग्रहः ॥
एकाधिपत्ये राशीशे मैत्रे वा नैव दोषकृत् ॥ ४४ ॥

जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टमलग्न विवाहादि शुभकार्यमें शुभ नहीं होता

परंतु एकाधिपत्य जैसे १ । ८हो तथा राशीश मैत्री (जैसे ५ । १२) हो तो लग्नाष्टक राश्यष्टकका दोष नहीं होता ॥ ४४ ॥

(उ०जा०) मीनोक्षकर्कालिमृगस्त्रियोष्टमंलग्नंयदानाष्टमगेहदोषकृत्॥
अन्योन्यमित्रत्ववशेनसावधूर्भवेत्सुतायुर्गृहसौख्यभागिनी ॥४५॥

यदि १२।२।४।८। १०।६ ये राशि यदि जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टम हो तो उक्त अष्टक दोष नहीं है क्योंकि इनके स्वामी परस्पर मित्र हैं इससे इन राशियोंके अष्टम होनेमें वधू, पुत्र, आयु और घरके सुखयुक्त होती है मतांतर है कि जो अष्टम राशीश केंद्रमें किंवा स्वोच्चादिमें हो तो अष्टमोक्त दोष नहीं॥४५॥

(कुसुमविचित्रा) मृतिभवनांशोयदिचविलग्नेतदधिपतिर्वानशुभकरः स्यात् ॥ व्ययभवनंवाभवतितदंशस्तदधिपतिर्वाकलहकरः स्यात् ॥ ४६ ॥

उक्त अष्टमराशिका नवांश अथवा अष्टमेश लग्नमें हो तो शुभ नहीं यदि जन्मलग्न जन्मराशिसे व्ययराशि वा उसका अंश अथवा तदीश लग्नमें हो तो कलहकारक होता है कोई धनहानी कहते हैं ॥ ४६ ॥

(वंशस्थ) खरामतोंत्यादितिवह्निपित्र्यभेखवेदतःकेरदतश्वसार्पभे ॥
खबाणतोश्वेधृतितोयमाम्बुपेकृतेभगत्वाष्ट्रभविश्वजीवभे ॥ ४७ ॥
मनोर्द्विदैवानिलसौम्यशाक्रभेकुपक्षतः शैवकरोष्टतोजभे ॥
युगाश्वितोबुध्न्यभतोययाम्यभेखचन्द्रतोमित्रभवासवश्रुतौ ॥ ४८ ॥
मूलेङ्कबाणाद्विषनाडिकाःकृतावर्ज्याःशुभेथोविषनाडिकाध्रुवाः ॥
निघ्नाभभोगेनखतर्कभाजिताः स्पष्टाभवेयुर्विषनाडिकास्तथा ॥४९॥

विषघटी ॥ रेवती, पुनर्वसु, कृत्तिकाके ३० घटीसे ऊपर ४ घटी एवं रो० २० से अश्लेषा ३२ से अश्विनी ५० से भरणी शततारा १८ से पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, उत्तराषाढा पुष्यके २० से विशाखा स्वाती मृगशिर ज्येष्ठा १४ से आर्द्रा हस्तके ३१ से पूर्वाभाद्र १६ से उत्तराभाद्र, पूर्वाषाढ, भरणी २४ से

अनुराधा, धनिष्ठा, श्रवण १० से मूलके ५६ से । ये विषनाडी सर्वत्र शुभकृत्यमें तथा जन्ममेंभी (वर्ज्य) अशुभ फलकारक हैं यह घटिका षष्टिप्रमाण भुक्तसे जाननी जैसे ६० घटींके नक्षत्रमें उक्त घटीसे विषघटी होती है तो अमुक सर्वभोग होनेमें कितनी घटीसे होंगी उक्त ध्रुवक ६० से गुनाकर सर्वभोगसे भाग लिया स्पष्ट विषघटीका आरंभ मिलता है ग्रंथांतरोंमें परिहार है कि चंद्रमा लग्नविना केंद्रत्रिकोणमें बली हो अथवा लग्नेश शुभयुक्त केंद्रमें हो तो विषघटिका दोष नहीं होता ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

नक्षत्रविषघटि.

अ.	भ.	कृ.	रो	मृ	आ	पु	पु	अ
५०	२४	३०	४०	१४	२१	३०	२०	३२
म	पू	उ.	ह.	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये
३०	२०	१८	२१	२०	१४	१४	१०	१४
मू	पू.	उ	श्र	ध	श.	पू	उ.	रे.
५६	२४	२०	१०	१०	१८	१६	२४	३०

वारविषघटी.

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
२०	२	१२	१०	७	५	२५

तिथिविषघटी.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	ति
१५	५	८	७	७	११	४	८	७	१०	३	१३	१४	७	८	घ.

(शालिनी) गिरिशभुजगमित्राः पित्र्यवस्वम्बुविश्वेभिजिदथचविधातापीन्द्रइन्द्रानलौच ॥ निर्ऋतिरुदकनाथोप्यर्यमाथोभगःस्युःक्रमशइहमुहूर्त्तावासरेबाणचन्द्राः ॥ ५० ॥

एकदिनके १५ मुहूर्तोंके स्वामी महादेव १ सर्प २ मित्र ३ पितर ४ वसु ५ जल ६ विश्वेदेवा ७ अभिजित् ८ ब्रह्मा ९ इंद्र १० इंद्राग्नि ११ राक्षस १२ वरुण १३ अर्यमा १४ भग १५ मुहूर्त्त २ घटीका होता है ॥ ५० ॥

(अनु०) शिवोजपादादष्टौस्युर्भेशाअदितिजीवकौ ॥
विष्ण्वर्कत्वाष्ट्रमरुतामुहूर्त्तानिशिकीर्तिताः ॥ ५१ ॥

रात्रि मुहूर्त्त ॥ शिव १ अजचरण २ अहिर्बुध्न्य ३ पूषा ४ अश्वि ५ यम ६ अग्नि ७ ब्रह्मा ८ चंद्रमा ९ अदिति १० बृहस्पति ११ विष्णु १२ सूर्य्य १३ त्वाष्ट्र १४ वायु १५ ये रात्रिमें मुहूर्त्ताधीश हैं इनका प्रयोजन है कि जो कार्य जिस नक्षत्रमें कहा है वह उसके स्वामी मुहूर्तमें कर लेना "धिष्ण्ये प्रोक्तं स्वामिनिथ्यंशकेस्य" यह ग्रंथकारकाभी प्रकट कहा है ॥ ५१ ॥

(भुजङ्गप्र०) रवावर्यमाब्रह्मरक्षश्चसोमेकुजेवह्निपित्र्येबुधेचा-
भिजित्स्यात् ॥ गुरौतोयरक्षोभृगौब्राह्मपित्र्येशनावीशसार्पौमु-
हूर्त्तानिषिद्धाः ॥ ५२ ॥

रविवारको अर्यमा, चंद्रवारमें ब्रह्मा, राक्षस, मंगलको अग्नि, पितर, बुधका अभिजित, बृहस्पतिको जल, राक्षस, शुक्रको ब्राह्म, पितर, शनिको शिव, सर्प मुहूर्त्त निषिद्ध होते हैं ॥ ५२ ॥

(प्रहर्षिणी) निर्वेधैः शशिकरमूलमैत्र्यपित्र्यंब्राह्मांत्योत्तरपव-
नैः शुभोविवाहः ॥ रिक्तामारहिततिथौशुभेह्निवैश्वप्रांत्याङ्-
घ्रिः श्रुतितिथिभागतोभिजित्स्यात् ॥ ५३ ॥

विवाहमुहूर्त्त वेधरहित ॥ मृगशिर, हस्त, मूल, अनुराधा, मघा, रोहिणी, रेवती, तीन उत्तरा, स्वाती, नक्षत्र तथा शुभग्रहोंके वारमें विवाह शुभ होता है रिक्ता ४ । ९ । १४ अमा ३० तिथि न लेनी तथा विवाहसे ४ दिनके भीतर श्राद्धदिन वा अमा हो तो वह दिन न करना यहभी प्रमाण है उत्तराषाढाका चतुर्थचरण एवं श्रवणके आदिकी ४ घटी अभिजित् नक्षत्र होता है ॥ ५३ ॥

(शा०वि०) वेधेन्योन्यमसौविरञ्च्यभिजितोर्याम्यानुराधक्षयो-
र्विश्वेन्दोर्हरिपित्र्ययोर्ग्रहकृतोहस्तोत्तराभाद्रयोः ॥
स्वातीवारुणयोर्भवेन्निर्ऋतिभादित्योस्तथोफान्त्ययोः
खेटेतत्रगततुरीयचरणाद्योर्वातृतीयद्वयोः ॥ ५४ ॥

पंचशलाकावेध ॥ रोहिणी अभिजित्का । एवं भरणी अनुराधा । उत्तराषाढा मृगशिर । श्रवण मघा । हस्त उत्तराभाद्र । स्वाती शतभिषा । मूल पुनर्वसु । उत्तराफाल्गुनी रेवतीका परस्पर वेध ग्रहोंका होता है शेष नक्षत्रोंका वेध अगले श्लोकोक्त सप्तशलाकावाला जानना चरणवेध, प्रथम पादका चतुर्थ पर द्वितीयका तृतीयपर तृतीयका द्वितीयपर चतुर्थका प्रथमपर होता है ॥ ५४ ॥

(शा०वि०) शाक्रेज्येशतभानिलेजलशिवेपौष्णार्यमर्क्षेवसु-
द्वीशेवैश्वसुधांशुभेहयभगेसार्पानुराधेमिथः ॥
हस्तोपान्तिमभेविधातृविधिभेमूलादितीत्वाष्ट्रभे-
जाङ्घ्रीयाम्यमघेकृशानुहरिभेविद्धेकुभृद्रेखके ॥ ५५ ॥

सप्तशलाका ॥ ज्ये० पुष्य० । श० कृ । पूर्वाषा० आर्द्रा । रेवती उत्तराफा० । धनिष्ठा विशाखा । उत्तराषाढ मृगशिर । अश्विनी पूर्वाफाल्गुनी । अश्लेषा अनुराधा । हस्त उत्तराभाद्र । रोहिणी अभिजित् । मूल पुनर्वसु । चित्रा पूर्वभाद्र । भरणी मघा । कृत्तिका श्रवण का परस्पर सप्तशलाका वेध ग्रहोंका होता है वेधका फल है कि यस्याः शशी सप्तशलाकभिन्नपापैरपापैरथवा विवाहे। विवाहवस्त्रेण च सा वृताङ्गी श्मशानभूमिं रुदती प्रयाति ॥ १ ॥ जिस स्त्रीके विवाहमें

चंद्रमा पापग्रहोंके सप्तशलाकासे विद्ध हो तो वह विवाहके वस्त्रोंको लेकर रोती हुई श्मशानभूमिमें जावे अर्थात् शीघ्रही विधवा होकर सकाम न होवे ॥ ५५ ॥

(अनु०) ऋक्षाणि क्रूरविद्धानिक्रूरमुक्तादिकानिच ॥
भुक्त्वाचंद्रेणमुक्तानिशुभार्हाणिप्रचक्षते ॥ ५६ ॥

जो नक्षत्र पापविद्ध होकर छुटें तद्वत् क्रूरगंतव्य हों क्रूराक्रांत हों तो जब वह दोष उनका छूट जाय तबभी चंद्रमाके भुक्त कियेमें वह नक्षत्र (शुद्ध) शुभकार्य योग्य होता है ग्रंथांतरोंमें द्विराशिभोग नक्षत्रके लिये है कि जिस राशिके भागमें पापग्रह हो वही भाग वर्जित है दूसरा भाग शुभकार्यमें ग्राह्य है ॥ ५६ ॥

(उ० जा०) ज्ञराहुपूर्णेन्दुसिताः स्वपृष्ठेभंसप्तगोजातिशरैर्मितं हि ॥
स्वंलत्तयन्तेर्कशनीज्यभौमाःसूर्याष्टतर्कैग्निमितंपुरस्तात् ॥ ५७ ॥

लत्ता ॥ बुध अपने अधिष्ठित नक्षत्रसे पीछे सातवें नक्षत्रपर लत्तादोष करता है तथा राहु स्वपृष्ठ नववेंपर पूर्णचंद्रमा बाईसवें नक्षत्रपर यह कृष्णपक्षके ६। ७। ८ के बीच होता है तथा शुक्र स्वपृष्ठपंचमनक्षत्रपर लत्तादोष करता है तथा सूर्य अपने आक्रांतनक्षत्रमे आगे १२ वें शनि ८ वें बृहस्पति छठे भौम तीसरेपर उक्तदोष करता है वक्रीग्रहकी लत्ताभी उक्त क्रमसे विपरीत जाननी ॥ ५७ ॥

(पथ्याआर्या) हर्षणवैधृतिसाध्यव्यतिपातकगण्डशूलयोगानाम् ॥
अन्तेयन्नक्षत्रंपातेननिपातितंतत्स्यात् ॥ ५८ ॥

पात ॥ हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड, शूल योगोंका जिस नक्षत्रमें (अंत्य) समाप्ति हो उसपर पातदोष होता है शुभकार्यमें वर्ज्य है इसीका नाम चंडीश चंडायुधभी है ॥ ५८ ॥

(शालिनी) पञ्चास्याजौगोमृगौतौलिकुम्भौकन्यामीनौकर्क्य-
लीचापयुग्मे ॥ तत्रान्योन्यंचन्द्रभान्वोर्निरुक्तंक्रान्तेःसाम्यंनो
शुभंमङ्गलेतत् ॥ ५९ ॥

क्रांतिसाम्य ॥ मेष सिंह । वृष मकर । तुला कुम्भ । कन्या मीन । कर्क वृश्चिक । धन मिथुन राशियोंमें सूर्य चंद्रमा परस्पर एक रेखामें हों तो क्रांतिसाम्यदोष होता है शुभकृत्यमें वर्जित है इसे महापातभी कहते हैं ॥ ५९ ॥

(इं० व०) व्याघातगण्डव्यतिपातपूर्वेशूलान्त्यवज्रेपरिघातिगण्डे ॥ योगेविरुद्धेत्वभिजित्समेतादोषः शशीचेद्विषमर्क्षगोर्कात् ॥ ६० ॥

एकार्गल ॥ व्याघात, गंड, व्यतिपात आदि विरुद्धयोग तथा शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड योग जिस दिन हों उस दिनका नक्षत्र सूर्यके नक्षत्रसे विषम हो तो एकार्गलदोष होता है सूर्य नक्षत्रसे चंद्रर्क्ष सम होनेमें उक्त योगोंके हुयेमेंभी नहीं होता इसीको खार्जूरभी कहते हैं ॥ ६० ॥

खार्जूर एकार्गल चक्रम्.

(उ० व०) शराष्टदिक्शक्रनगातिधृत्यस्तिथिधृतिश्चप्रकृतेश्चपञ्च ॥ उपग्रहाःसूर्य्यभतोऽब्जताराः शुभानदेशेकुरुबाह्लिकानाम् ॥ ६१ ॥

उपग्रह ॥ सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाका नक्षत्र ५।८।१०।१४।७।१९।१५।१८।२।२२।२४।२५वां हो तो उपग्रह दोष है बाह्लीक तथा कुरु देशमें दोष करता है. कोई यहांभी परिहार कहते हैं कि नक्षत्रके जिस चरणपर सूर्य है उक्तसंख्याके चंद्रर्क्षकेभी उस चरणपर दोष होताहै अन्यपर नहीं ये परिहार उपरोक्त (खार्जूर) एकार्गलकेभी हैं ॥ ६१ ॥

(अनु०) पातोपग्रहलत्तासुनेष्टोङ्घ्रिःखेटपत्समः ॥ वारस्त्रिघ्नोष्टभिस्तष्टः सैकःस्यादर्द्धयामकः ॥ ६२ ॥

(पात) चंडीश चंडायुध, उपग्रह लत्तामेंभी चरणवेधदूषित है जैसे पात एवं उपग्रह जिस चरणपर हो उतनवां चरण दूषितनक्षत्रका वर्ज्य है तथा

जिस ग्रहकी लत्ता है वह जिस चरणपर अपने स्थितनक्षत्रके है उतने संख्याक दिन नक्षत्रके चरणपर दोष होता है और पर नहीं अर्द्ध याम है कि वर्त्तमान वार ३ से गुणाकर ८ से (तष्ट) शेष किया जो शेष रहे उसमें (१)जोडके अर्द्धयाम दोष होता है दिनमें यह शुभकार्यमें वर्ज्य है रात्रिको नहीं ॥ ६२ ॥

(अनु०) शक्रार्कदिग्वसुरसाब्ध्यश्विनः कुलिकारवेः ॥
रात्रौनिरेकास्तिथ्यंशाः शनौचान्त्येपिनिन्दिताः ॥६३॥

कुलिक ॥ दिनमें रविवारको १४ वां मुहूर्त्त चंद्रको १२ मंगलको १० बुधको ८ बृहस्पति० ६ शुक्र ४ शनिको २ मुहूर्त्त कुलिक होता है तथा रात्रिमें उक्तोंमें १ घटायके जैसे सू० १३ चं० ११ मं० ९ बु० ७ बृ० ५ शु० ३ श० १ वें मुहूर्त्त कुलिक होते हैं ये मुहूर्त्त विवाहमें वैधव्यकारक होनेसे अतिनिन्दित हैं इसी हेतु यहां दुबारे कहे हैं प्रथम शुभाशुभप्रकरणमेंभी कह आये थे वहां साधारण दोषगणना है अन्यकार्य्योंमें फल इनका दोषद नहीं ॥ ६३ ॥

मुहूर्त.

दिवा	आ	अ	अ	म	ध	प षा	उ फा	श्र	रो.	ज्ये	वि	मू	श.	उ फा	पू फा.
मुहूर्त्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
रात्रि	आ	पू फा	उ फा	रे	अभि	भ	कृ	रो	मृ	पु	पु	श्र	ह	चि	स्वा.
मुहूर्त्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५

वारदुर्मुहूर्त.

र	च.	म	बु	गु	शु	श.
उ फा.	मृ.	म	अभि.	मू	रो.	अ.
०	रो	कृ	०	मृ	म	आ.

(इं० व०) चापान्त्यगेगोघटगेपतङ्गेकर्काजगेस्त्रीमिथुनेस्थिते च ॥
सिंहालिगेनक्रघटेसमाः स्युस्तिथ्योद्वितीयाप्रमुखाश्चदग्धाः ॥६४॥

दग्धतिथि ॥ धनमीनके सूर्यमें द्वितीया २ । ११ केमें ४ कर्क मेषकेमें ६ मिथुनकन्यामें ८ सिंह वृश्चिककेमें १० मकर तुलाकेमें १२ दग्ध होती है ये मासदग्ध तिथि मध्यदेशहीमें वर्जित हैं ॥ ६४ ॥

(भ्रमरविलसिता)लग्नाच्चन्द्रान्मदनभवनगेखेटेनस्यादिहपरिणयनम् ॥
किंवाबाणाशुगमितलवगैर्जामित्रंस्यादशुभकरमिदम् ॥ ६५ ॥

लग्न तथा चंद्रमासे सप्तम ग्रह होनेमें यामित्र दोष होता है विवाहादियोंमें अशुभ फल करता है किंवा ५५ अंशपर लग्न वा चंद्रमाके स्थित नवांशपर हो तो विशेष दोष है जैसे तुलाको ५ अंशपर लग्न वा चंद्रमा है तो मेषके ५ अंश ५५ हुये इसमें जो ग्रह हो उसकी यामित्री हुई यह सूक्ष्मयामित्री है इसमें शुभग्रहोंकी यामित्रीका फल ग्रंथांतरोंमें शुभभी है ॥ ६५ ॥

(इं०व०)उपग्रहर्क्षंकुरुबाह्लिकेषुकलिङ्गवङ्गेषुचपातितंभम् ॥
सौराष्ट्रशाल्वेषुचलत्तितंभंत्यजेत्तुविद्धंकिलसर्वदेशे ॥ ६६ ॥

कुरुदेश, बाल्हीकदेश (पश्चिममें है) में उपग्रहनक्षत्र त्याज्य हैं अन्यदेशोंमें नहीं. कलिंग, वंग, (पूर्वमें है) मागधादियोंमें पातदोष(चंडीश चंडायुध) त्याज्य है सौराष्ट्र, शाल्व (पश्चिममें) लत्ता त्याज्य है और वेध सर्वत्र त्याज्य है कहीं युतिदोष गौडमें यामित्री यमुना प्रदेशमें कहा है ॥ ६६ ॥

(इं०व०) एकार्गलोपग्रहपातलत्तायामित्रकर्त्तर्युदयास्तदोषाः ॥
नश्यन्तिचन्द्रार्कबलोपपन्नेलग्नेयथार्काभ्युदयेतुदोषाः ॥ ६७ ॥

एकार्गल (खार्जूर) तथा उपग्रह, लत्ता, पात, यामित्री, कर्त्तरी, उदयास्त (वक्ष्यमाण) इतने दोष विवाहलग्नमें सूर्य चंद्रमाके बलवान् होनेमें नाश हो जाते हैं जैसे सूर्यके उदय होनेमें रात्रि अंधकार नष्ट होता है ॥ ६७ ॥

(उ०जा०) शशाङ्कसूर्यर्क्षयुतेर्भशेषे खंभूयुगाङ्गानिदशेशतिथ्यः ॥
नागेन्दवोंकेन्दुमितानखाश्चेद्भवन्तिचैतेदशयोगसंज्ञाः ॥ ६८ ॥

सूर्य चंद्रमाके नक्षत्रसंख्या जोडके २७ से भाग लेना शेष ० । १ । ४ । ६ । १० । ११ । १५ । १८ । १९ । २० मेंसे कोई रहे तो दशयोगसंज्ञा होती है ॥ ६८ ॥

(शा०वि०) वाताभ्राग्निमहीपचौरमरणं रुग्वज्रवादाःक्षति-
योगाङ्केदलितेसमेमनुयुतेथौजेतुसैकार्धिते ॥
भंदास्रादथसंमितास्तुमनुभी रेखाःक्रमात्संलिखे-
द्वेधोस्मिन्ग्रहचन्द्रयोर्नशुभदःस्यादेकरेखास्थयोः ॥ ६९ ॥

दशयोगका फल है कि० शेषमें वायुदोष १ में मेघभय ४ थेमें अग्निभय एवं ६ राजभी० १० में चौरभय ११मृत्यु १५,रोग १८वज्रभी० १९ कलह२० धननाश उक्तअंकोंमेंसे समका आधा करके १४ जोडना जितने हों अश्वि-न्यादि उतनवां नक्षत्र होता है जैसे समांक १० आधा ५ जुडे १४ तो १९ वां मूल हुवा,यदि विषम अंक हो तो १ जोडके आधा करना जैसे विषमांक १५ एक जोडके १६ आधा ८ तिष्यनक्षत्र हुआ चौदह आडीरेखाका एकचक्र करना उक्तक्रमसे जो नक्षत्र आया उसे आदि चक्ररेखाओंके दोनहूं ओर अभिजित सहित सर्व नक्षत्र लिखने जिन जिन नक्षत्रोंमें जो ग्रह हैं उन्हींमें लिखने चंद्रमाके साथ एकरेखामें कोई ग्रह हो तो दृष्टिरूप वेध हैं अशुभ होता है ॥ बृहस्पति लग्नेश, शुक्र बलवान् एवं केंद्रगत होनेमें दशदोषका दोष नहीं होता यह ग्रंथां-तरमत है ॥ ६९ ॥

(शालिनी) लग्नेनाढ्यायाततिथ्योङ्कतष्टाःशेषेनागव्यब्धितर्केन्दुसंख्ये ॥
रोगोवह्नीराजचौराश्चमृत्युर्बाणश्चायंदाक्षिणात्यप्रसिद्धः ॥७०॥

लग्नमें शुक्लपक्षप्रतिपदातिथि ८ जोडके ९ से तष्ट करके शेष ८ रहे तो रोग-बाण २ शेषमें अग्नि ४ में राजा६ में चोर१में मृत्युबाण होता है.यह दाक्षिणा-त्य, महाराष्ट्रदेशोंमें प्रसिद्ध है अन्यत्र नहीं ॥ ७० ॥

(मालिनी) रसगुणशशिनागाब्ध्याढ्यसंक्रान्तियातांशकमितर-
थतष्टाङ्कैर्यदापंचशेषाः ॥ रुगनलनृपचौरामृत्युसंज्ञश्चबाणो
नवहृतशरशेषेशेषकैक्येसशल्यः ॥ ७१ ॥

निरयनांश सूर्यसंक्रांतिसे गत अंशोंमें पृथक् पृथक् ६।३।१।८।४ जोडने ९ से तष्ट करके जिस अंकमें५ शेष रहे वह बाण इस प्रकार जानना कि६में ५ शेष रहे तो रोगबाण एवं १ में अग्नि१ राज ८ में चोर४ में मृत्युबाण होता है

यह काष्ठशल्यबाण है पूर्वोक्त प्रकारसे ६ आदि अंकोंमें सूर्यगतांश जोडके ९से शेष करके जो जो अंक शेष है उन सबको जोडके ९ से गुणाकर ५ से शेष करना यदि ५ शेष रहे तो (सशल्य) लोह शल्यसहित जानना अन्यांक शेष-में शल्यरहित होता है सशल्य अतिनिंद्य है ॥ ७१ ॥

(शा० वि०) रात्रौचोररुजौदिवानरपतिर्वह्निःसदासंध्ययोर्मृत्यु-
श्चाथशनौनृपोविदिमृतिर्भौमेग्निचौरौरवौ ॥ रोगोथव्रतगेहगोपनृ-
पसेवायानपाणिग्रहेवर्ज्याश्चक्रमतोबुधैरुगनलक्ष्मापालचौरामृतिः७२

चोर, रोगबाण रात्रिमें अग्नि, नृपबाण दिनमें मृत्युबाण संध्यासमयमें वर्ज्य हैं तथा शनिवारमें राज, बुधमें मृत्यु, मंगलमें अग्नि, चौर, सूर्यमें रोग-बाण वर्जित है और व्रतबंधमें रोगबाण गृहगोपनादि घरके कृत्यमें अग्निबाण राजसेवामें नृपबाण यात्रामें चौर, विवाहमें मृत्युबाण त्याज्य हैं ॥ ७२ ॥

बाणचक्रम्.

	मे	वृ	मि	क.	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	
रो बा	७ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२ १	३ १२ २१ ३०	३ ११ २० २९	९ १८ २७	८ १७ २६	६ १५ २४	७ १६ २५	६ १५ २४	रोगबाणमेंयेतिथि निषिद्ध.
अ बा	२ २० २९	११ १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २२	४ १३ २२	३ १२ २१	२ ११ २५	१० १६ २८	९ १८ २७	अ बा. में. निषिद्ध ति.
रा बा	४ २२ १	३ २१ ३०	२ २० २९	१० १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	३ १२ ३०	२ १० २९	रा. बा निषिद्धति.
चौ बा	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २३	३ २९ ३०	२ २० २९	१० १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	चौ. बा. में. ति निषिद्ध.
मृ. बा	१ १९ २८	९ १८ १७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	३ १२ २१ ३०	२ ११ २० २९	१० २९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	मृ. बा. में. ति निषिद्ध.

(उ० जा०) त्र्यांशंत्रिकोणंचतुरस्रमस्तंपश्यन्तिखेटाश्चरणाभिवृद्ध्या॥
मन्दोगुरुर्भूमिसुतःपरेचक्रमेणसंपूर्णदृशोभवन्ति ॥ ७३ ॥

ग्रह अपने स्थित राशीसे ३ । १० भावमें १ चरण दृष्टि ९ । ५ में २ चरण ४ । ८ में ३ चरण ७ में पूरे ४ चरण दृष्टिसे देखते हैं तथा शनि ३ । १० बृहस्पति ९ । ५ मंगल ४ । ८ अन्यग्रह ७ सप्तस्थानमें पूर्ण दृष्टि देखते हैं ॥ ७३ ॥

(शिखरिणी) यदालग्नांशेशोलवमथतनुंपश्यतियुतोभवेद्वायं वोढुः शुभफलमनल्पंरचयति ॥ लवद्यूनस्वामीलवमदनभंलग्नम-दनंप्रपश्येद्वावध्वाःशुभमितिरथाज्ञेयमशुभम् ॥ ७४ ॥

(मु० प्र०) लवेशोलवंलग्नपोलग्नगेहंप्रपश्येन्मिथोवाशुभंस्याद्वरस्य ॥ लवद्यूनपांशंद्युनंलग्नपोस्तंमिथोवीक्षतेस्याच्छुभंकन्यकायाः ॥ ७५ ॥

(मालिनी) लवपतिशुभमित्रंवीक्ष्यतेंशंतनुंवापरिणयनकरस्य स्याच्छुभंशास्त्रदृष्टम् ॥ मदनलवपमित्रंसौम्यमं-शंद्युनंवातनुमदनगृहंचेद्वीक्षतेशर्मवध्वाः ॥ ७६ ॥

उदयास्तशुद्धि ॥ यदि लग्नेश, अंशेश लग्न तथा लग्नांशको देखे यद्वा उनमें युक्त हो तो वरको बहुतही शुभफल होते हैं जैसे मेषलग्नमें मिथुनांशेश बुध तुलाका मिथुनको देखता है इत्यादि लग्नशुद्धिका विचार है बलवान् नवांशसे सप्तम नवांशका स्वामी अंशसे सप्तमभावको किंवा सप्तम भाव नवांशको देखे वा युक्त हो तथा सप्तमेश सप्तमभावांशेश सप्तमभाव तथा तन्नवांशको देखे वा युक्त हो तो कन्याको अतिशुभफल देते हैं यदि लग्नेश लग्नांशेश लग्न तथा अंशको न देखें तो वरको अशुभ (मृत्यु) यदि सप्तम भावेश सप्तम भाव नवां-शेश सप्तम भाव वा तन्नवांशको न देखे वा युक्त न हो तो कन्याको अनिष्ट होवे ॥ ७४ ॥ लग्नेश लग्नको अंशेश अंशको देखे अथवा परस्पर लग्नेश अंशेश लग्नको देखे तो वरको शुभ होवे तथा सप्तमेश सप्तमभावको सप्तमभावांशेश अं-शको अथवा अंशेश भावको भावेश अंशको देखें तो कन्याको शुभ होवे अथवा सप्तमेश लग्नसप्तमभावको तथा सप्तमेशांशेश लग्न सप्तमको देखे तौभी कन्याको शुभ होवे एवं लग्नेश वा लग्ननवांशेश सप्तम तथा लग्नको देखे तो दोन-

हूको शुभ होवे ॥ ७५ ॥ लग्न नवांशेशको कोई शुभग्रह मित्र होकर अपने अंश वा लग्नको देखे तो विवाहमें पुत्रपौत्रादि शुभफल करे सप्तम भावांशेशकाभी मित्र शुभग्रह सप्तम भावको तथा लग्न नवांशको देखे अथवा लग्नसे सप्तमभावको देखे तो वधूको शास्त्रोक्त शुभ (पुत्रपौत्रादि) होवे पापग्रहोंके उक्त प्रकार योग तथा दृष्टिसे सर्वत्र अशुभ जानना ॥ ७६ ॥

(मंजुभाषिणी) विषुवायनेषुपरपूर्वमध्यमान्दिवसांस्त्यजेदित
रसंक्रमेषुच ॥ घटिकास्तुषोडशशुभक्रिया
विधौपरतोपिपूर्वमपिसंत्यजेद्बुधः ॥ ७७ ॥

विषुवति १ । ७ संक्रांति अयन ४ । १० संक्रांतिके पूर्वदिन तथा दूसरा दिन और संक्रांतिदिन तीनहूं दिन विवाहव्रतबंधादि शुभकार्यमें वर्जित करने अन्य ८ संक्रांतियोंके संक्रांतिकालसे १६ घटी पूर्व १६ घटी पश्चात्की समस्त ३२ घटी वर्जित हैं ॥ ७७ ॥

(अनु०) देवव्यङ्कर्तवोष्टाष्टौनाड्योङ्काःखनृपाःक्रमात् ॥
वर्ज्याःसंक्रमणेर्कादेः प्रायोर्कस्यातिनिन्दिताः ॥ ७८ ॥

सूर्यके संक्रमसे पूर्वापरकी ३३ घटी एवं चंद्रमाकी २ मंगलकी ९ बुधकी ६ बृहस्पतिकी ८८ शुक्रकी ९ शनिकी १६० घटी संक्रमणकी शुभकार्य में वर्जित हैं विशेषविचार संक्रांतिप्रकरणमें कह आये ॥ ७८ ॥

(उ० जा०) घस्रेतुलालीबधिरौमृगाश्वौरात्रौचसिंहाजवृषादिवान्धाः॥
कन्यानृयुक्कर्कटकानिशान्धादिनेघटोन्त्योनिशिपङ्गुसंज्ञः ॥ ७९ ॥

दिनमें ७ । ८ लग्न बधिर हैं १० । ९ रात्रिमें बधिर हैं ५ । १ । २दिनमें ६।३।४ रात्रिमें अंधे हैं ११।७ दिनमें १२ रात्रिमें पंगु (खाडे) हैं ॥ ७९॥

बधिराधन्वितुलालयोपराह्णेमिथुनंकर्कटकोङ्गनानिशान्धाः ॥
दिवसान्धाहरिगोक्रियास्तुकुब्जामृगकुम्भान्तिमभागसंध्ययोर्हि ॥८०॥

९ । ७। ८ लग्न (अपराह्ण) दिनके पिछले त्रिभागमें बधिर हैं ३।४। ६ रात्रिमें अंधे हैं५।२।१ दिनमें अंधे हैं १०।११।१२संध्यासमयमें कुब्ज हैं ॥८०॥

(प्रहर्षिणी) दारिद्र्यंबधिरतनौदिवान्धलग्नेवैधव्यंशिशुमर-
णंनिशान्धलग्ने ॥ पङ्गंगेनिखिलधनानिना-
शमीयुःसर्वत्राधिपगुरुदृष्टिभिर्नदोषः ॥ ८१ ॥

बधिरलग्नोंमें विवाहादि करनेमें दरिद्रता दिवांधलग्नमें वैधव्य रात्र्यंधमें संत-तिमरण पंगुलग्नमें समस्तधननाश होवे यदि इनपर लग्नेश तथा बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो इनका उक्तदोष नहीं है. औरभी परिहार है कि "पङ्ग्वन्धकाणलग्नानि मासशून्याश्च राशयः ॥ गौडमालवयोस्त्याज्या अन्यदेशे न गर्हिताः" अर्थात् उक्तदोष तथा मासशून्यराशि गौडदेश मालवादेशमें त्याज्य हैं अन्यत्र नहीं ८१

(चित्रपदा) कार्मुकतौलिककन्यायुग्मलवेझपगेवा ॥
यर्हिभवेदुपयामस्तर्हिसतीखलुकन्या ॥ ८२ ॥

विवाहलग्नमें यदि ९।८।६।३।८।१२राशियोंके नवांश हो तो विवाहिता कन्या निश्चयसे पतिव्रता रहे ॥ ८२ ॥

(श्रीछन्द) अन्त्यनवांशेनचपरिणेयाकाचनवर्गोत्तममिहहित्वा॥
नोचरलग्नेचरलवयोगंतौलिमृगस्थेशशभृतिकुर्यात् ॥ ८३ ॥

लग्नमें (अंत्य) पिछला नवांशक जैसे मेषलग्नमें धननवांश वृषमें मकर११ न लेना परंतु वर्गोत्तम हो तो लेना. जो लग्न वही नवांशकभी हो उसे वर्गोत्तम कहते हैं जैसे ३। ९। १२। १० में वर्गोत्तम अंत्यनवांशकही होता है और तुलामकरका चंद्रमा हो तो चरलग्नमें चर अंशक न लेना चंद्रमा अन्यराशिमें हो तो चरमें चरांशभी लेना ॥ ८३ ॥

(उ०जा०) व्ययेशनिःखेवानिजस्तृतीयेभृगुस्तनौचन्द्रखलानशस्ताः ॥
लग्नेट्कविग्लौश्चरिपौमृतौग्लौर्लग्नेट्शुभाराश्चमदेचसर्वे ॥ ८४ ॥

विवाहलग्नसे बारहवां शनि, दशम मंगल, तीसरा शुक्र, लग्नमें चंद्रमा पापग्रह और लग्नेश शुक्र चंद्रमा ६। ८ स्थानमें तथा लग्नेश शुक्र, बुध, बृहस्पति, चंद्रमा,मंगल,अष्टमस्थानमें शुभ नहीं होते इनमें १२ शनिका फल कन्या मद्य-पा, दशम मंगलका (शाकिनी) मांस खानेवाली, तीसरे शुक्रका देवररता फल हैं

औरोंके वैधव्य तथा मरणरूप फल हैं सप्तम शुभग्रहोंके फल यामित्रीप्रसंगमें कह आये हैं ॥ ८४ ॥

(व० ति०) त्र्यायाष्टषट्सुरविकेतुतमोर्कपुत्रास्त्र्यायारिगः क्षितिसुतोद्विगुणायगोब्जः ॥ सप्तव्ययाष्टरहितौज्ञगुरू सितोष्टत्रिद्यूनषड्व्ययगृहान्परिहृत्यशस्तः ॥८५॥

सूर्य, केतु, राहु, शनि विवाहलग्नसे ३ । ८ । ६ भावोंमें शुभ होते हैं इनहीमें विंशोपका बल पाते हैं तथा मंगल ३ । ११ । ६ में चंद्रमा २ । ३ । ११ में बुध शुक्र ७ । १२ । ८ स्थानरहित सर्वोंमें शुक्र ८ । ३ । ७ । ६ । १२ स्थानोंको छोडके अन्योंमें पाता है ॥ ८५ ॥

(शा० वि०) पापौकर्त्तरिकारकौरिपुगृहेनीचास्तगौकर्त्तरिदोषोनैवसितेऽरिनीचगृहगेतत्षष्ठदोषोपिन ॥ भौमेस्तेरिपुनीचगेनहिभवेद्भौमोष्टमोदोषकृन्नीचेनीचनवांशकेशशिनिरिःफाष्टारिदोषोपिन ॥ ८६ ॥

कर्तरीकारक पापग्रह यदि नीच तथा अस्तंगत हो तथा उनके बीच कोई शुभग्रह हो तो लग्न वा सप्तमें कर्तरीका दोष नहीं तथा शुक्र छठा नीच वा शत्रुराशिका हो तो छठे शुक्रका दोष नहीं मंगल अष्टम यदि नीचराशि वा अस्तंगत हो तो अष्टमोक्त दोष नहीं और चंद्रमा नीचराशि नीचनवांशकमें ६ । ८ । १२ स्थानोंमें हो तो इसकाभी दोष नहीं ॥ ८६ ॥

(व० ति०) अब्दायनर्तुतिथिमासभपक्षदग्धतिथ्यन्धकाणबधिराङ्गमुखाश्चदोषाः ॥ नश्यन्तिविद्गुरुसितेष्विहकेन्द्रकोणेतद्वच्चपापविधुयुक्तनवांशदोषाः ॥ ८७ ॥

अब्ददोष १ अयनदोष २ ऋतुदोष ३ तिथिदोष ४ मासदोष ५ नक्षत्रदोष ६ पक्षदोष ७ दग्धतिथि अंध काण बधिर पंगुआदि लग्नदोष अकालवृष्ट्यादि ८ इतने दोष लग्नसे केंद्र १ । ४ । १० कोण ९ । ५ में बुध बृहस्पति शुक्रके बलवान् होकर स्थित होनेमें अनिष्ट फल नहीं करते तैसाही पापयुत चंद्रमा वा पापयुत नवांशदोषभी नष्ट हो जाता है ॥ ८७ ॥

(शालिनी) केन्द्रेकोणेजीवआयेरवौवालग्नेचन्द्रेवापिवर्गोत्तमेवा ॥
सर्वेदोषानाशमायान्तिचन्द्रेलाभेतद्वद्दुर्मुहूर्तांशदोषाः ॥ ८८ ॥

केंद्र १ । ४ । १० कोण ५ । ९ में बृहस्पति उपलक्षणसे बुध शुक्रभी तथा ११ में रवि, लग्नमे उपचय ३ । ६ । १० । ११ में अथवा वर्गोत्तमनवांशमें चंद्रमा हो तो उक्त समस्तदोष नष्ट होते हैं ऐसेही चंद्रमा ११वें भावमें हो तो "रवावर्यमेत्यादि" दुर्मुहूर्त और पापग्रह नवांश दोषभी नाश होते हैं ॥८८॥

(शिखरिणी) त्रिकोणेकेन्द्रेवामदनरहितेदोषशतकंहरेत्सौम्यः शुक्रोद्विगुणमपिलक्षंसुरगुरुः ॥ भवेदायेकेन्द्रेङ्गपउपलवेशोयदि तदासमूहंदोषाणांदहनइवतूलंशमयति ॥ ८९ ॥

बुध विवाहलग्नसे केंद्र १ । ४ । १० कोण ९ । ५ में हो तो एक सौ दोषोंको हरता है तथा शुक्र हो तो दो सौ, और बृहस्पति एक लक्ष दोष दूर करता है तथा लग्नेश अथवा लग्न नवांशेश आय ११ केंद्र १ । ४ । १० में हो तो दोषोंके समूह (पुंज) को फूकते हैं जैसे अग्नि रुईके ढेरको क्षणमात्रमें फूंकती है॥८९॥

(अनु०) द्वौद्वौज्ञभृग्वोःपञ्चेंदोरवौसार्द्धत्रयोगुरौ ॥
रामामन्दागुकेत्वारेसार्द्धैकैकंविंशोपकाः ॥ ९० ॥

पहिले जो"आयाष्टषट्सु"इत्यादि श्लोकमें ग्रहोंके शुभस्थान कहे हैं उन स्थानोंमें बुध २ शुक्र २ चंद्रमा ५ सूर्य ३ । ३० साढेतीन बृहस्पति ३ शनि १। ३० राहु १ । ३० केतु विंशोपका बल पाते हैं यह बल जिसका जो स्थान शुभ कहा है वह उसीमें पाता है अन्यमें नहीं सभी ग्रह (बलवान्)अपने उक्तस्थानोंमें हो तो विंशोपका बल २० पाते हैं उक्त अंकोका जोड २१।३०होता-है इसमें रा० के० मेंसे एकका १ । ३० घटता है यतः एक शुभस्थानमें होगा दूसरा अशुभमें रहेगा ॥ ९० ॥

(उ० जा०) श्वश्रूःसितोर्कःश्वशुरस्तनुस्तनुर्जामित्रपःस्याद्दयितोमनःशशी ॥ एतद्बलंसंप्रतिभाव्यतांत्रिकस्तेषांसुखंसंप्रवदेद्विवाहतः ॥ ९१ ॥

विवाहवाली कन्याका सास शुक्र । श्वशुर सूर्य । लग्न शरीर । सप्तमेश भर्त्ता । मन चंद्रमा होता है (तांत्रिक) ज्योतिषीने इनका बल देखके उनका शुभाशुभ विचारके विवाहलग्न निश्चय करना जैसे उक्तग्रह नीच, शत्रु, अस्त, त्रिकआदिमें हों तो उनको अशुभ उच्चस्वगृहादि (शुभस्थानों) भावोंमें हो तो उनको शुभ जानना ॥ ९१ ॥

(मत्तमयूर) कृष्णेपक्षेसौरिकुजार्केपिचवारेवर्ज्येनक्षत्रेयदिवा स्यात्करपीडा ॥ संकीर्णानांतर्हिसुतायुर्धनलाभप्रीतिप्राप्त्यैसाभवतीहस्थितिरेपा ॥ ९२ ॥

कृष्णपक्षमें शनि मंगल रविवारमें तथा अनुक्त नक्षत्रोंमें यदि विवाह हो तो वही संकीर्णोंको धन, पुत्र,आयु, लाभ देनेवाला होता है इनको उक्तशुभमुहूर्त्तादि विपरीत होते हैं (संकीर्ण) वर्णसंकर तथा चांडालोंको कहते हैं ॥ ९२ ॥

(अनु०) गान्धर्वादिविवाहेर्कद्विदनेत्रगुणेन्दवः ॥ कुयुगाङ्गाग्निभूरामास्त्रिपद्यामशुभाशुभाः ॥ ९३ ॥

गांधर्वादि विवाहमें सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रर्क्षपर्यंत ४ अशुभ २ शुभ३अ० १ शु० १ अ० ४ शु० ६ अ० ३ शु० १ अ० ३ शुभ यही चक्रमात्र देखते हैं पाठांतर (त्रिपद्यां) ऐसाभी है अर्थात् त्रिपटी चक्र (पट्टा) माया लिखनेकोभी देखते हैं ॥ ९३ ॥

(पृथ्वी) विधोर्बलमवेक्ष्यवादलनकण्डनंवारकंगृहाङ्गणविभूषणान्यथचवेदिकामण्डपान् ॥ विवाहविहितोडुभिर्विरचयेत्तथोद्वाहतोनपूर्वमिदमाचरेत्रिनवपण्मितेवासरे ॥ ९४ ॥

विवाहांगीकृत्य गेहूं उरद आदिका दलन चांवल छाटना मंगलकलश स्थापन घरांगण सम्भारना भूषण शृंगारादिवस्तु वेदी मंडप रचना तोरण वंदनवार आदि सकलारंभ चंद्रमाका बल देखके विवाहोक्त नक्षत्रोंमें करना परंतु कार्यदिनके पूर्व ३ । ९ । ६ दिनमें न करना जवांकुरार्पण तैललापन (वान) मंगलगणेशार्चनमेंभी यही विचार है ॥ ९४ ॥

(शालिनी) हस्तोच्छ्रायावेदहस्तैःसमन्तात्तुल्यावेदीसद्मनोवामभागे ॥
युग्मेघस्रेषष्ठहीनेचपञ्चसप्ताहेस्यान्मण्डपोद्वासनंसत् ॥ ९५ ॥

घरके अग्र बांये ओर आंगणमें कन्याके हाथसे एक हाथ ऊंची तथा चारों ओरसे ४ । ४ हाथ चतुरस्रवेदी स्तंभसोपानादियुत करनी मंडप उत्तम १६हाथका होता है स्थानादि संकटमें १२।१०।८ भी मध्यम पक्षमें उक्त हैं विवाहोत्तरमंडपका उद्वासन छठे छोडकर समदिन तथा ५ । ७ वें दिनमें करना॥९५॥

(इं०व०) सूर्येऽङ्गनासिंहघटेषुशैवेस्तम्भोलिकोदण्डमृगेषुवायौ ॥
मीनाजकुम्भेनिर्ऋतौविवाहेस्थाप्योग्निकोणेवृषयुग्मकर्के ॥ ९६ ॥

मंडपमें प्रथम स्तंभनिवेशन ६ । ५ । ७ के सूर्यमें ईशान कोणमें ८ । ९ । १० केमें वायव्य १२ । १ । ११ केमें नैर्ऋत्य२।३। ४ केमें आग्नेयसे करना यही नियम गृहारंभमेंभी है ॥ ९६ ॥

(मं०क्रां०)नास्यामृक्षंनतिथिकरणंनैवलग्नस्यचिन्तानोवावारोनचलवविधिर्नोमुहूर्तस्यचर्चा ॥ नोवायोगोनमृतिभवनंनैव जामित्रदोषोगोधूलिःसामुनिभिरुदितासर्वकार्येषुशस्ता॥ ९७॥

गोधूलीमें नक्षत्र तिथि करणकी कुछ अपेक्षा नहीं लग्नका विचारभी नहीं तथा वार अंशक मुहूर्त्तकीभी चर्चा नहीं दुष्टयोग, अष्टमशुद्धि जामित्रदोष कुछ नहीं होने यह मुनियोंने सर्वकार्योंमें शुभ कही है ॥ ९७ ॥

(जलधरमाला)पिण्डीभूतेदिनकृतिहेमन्तर्तौस्यादर्द्धास्तेतपसमयेगोधूलिः ॥ संपूर्णास्तेजलधरमालाकालेत्रेधायोज्यासकलशुभेकार्यादौ ॥ ९८ ॥

उक्त गोधूलीका समय कहते हैं कि (हेमंत) शीतकाल मार्गशीर्षसे ४ महीने सूर्य जब सायंकालमें नीहारादि रहित किरणशून्य पिंडाकार हो तथा (तप) उष्णकाल चैत्रसे ४ महीने (अर्द्धास्त) सूर्यबिंब आधा अस्त होनेमें (जलधरमाला) वर्षाकाल श्रावणसे ४ महीने सूर्यके संपूर्ण अस्त हुयेमें गोधूली होती है समस्त शुभकृत्यादिमें गुणदाता है ॥ ९८ ॥

(वैश्वदेवी) अस्तंयातेगुरुदिवसेसौरेसार्केलग्नान्मृत्यौ रिपुभव-
नेलग्नेवेन्दौ ॥ कन्यानाशस्तनुमदमृत्युस्थेभौमे
वोढुर्लाभेधनसहजेचन्द्रेसौख्यम् ॥ ९९ ॥

गोधूलीका और प्रकार है कि, गुरुवारके दिन सूर्यास्त हुयेमें गोधूली होती है सूर्यास्तके पूर्व आधाघटी अर्द्धयाम होनेसे छोड दिया शनिवारमें सूर्य देखेही रहेमें है क्योंकि सूर्यास्तमें कुलिक हो जायगा तथा सायंकालीन लग्नसे ८।६। १ वा लग्नमें चंद्रमा हो तो कन्याका नाश होवे लग्न सप्तम अष्टममें मंगल हो तो वरका नाश होवे ऐसे मुख्यदोष गोधूलीमेंभी वर्जित हैं पंचांगशुद्धिभी मुख्य विचार्य है और २ । ३ भावमें चंद्रमा हो तो सुख देता है गोधूलीमें हो तो औरभी विशेषता है ॥ ९९ ॥

(इं० व०) मेषादिगेर्केष्टशरानगाक्षासप्तेषवःसप्तशरागजाक्षाः ॥
गोक्षाःखतर्काःकुरसाःकुतर्काःकङ्गानिपष्टिर्नवपञ्चभुक्तिः ॥१००॥

मेषादिराशियोंमें सूर्यकी गति स्थूलकालीन है कि मेषके ५८ वृ० ५७ मि० ५७ क० ५७ सिं० ५८ कन्यामें ५९ तु० ६० वृ० ६१ ध० ६१ म० ६० कुं० ६० मी० ५९ है ॥ १०० ॥

(अनु०) संक्रान्तियातघस्राद्यैर्गतिर्निघ्नीरषड्हृता ॥
लब्धेनांशादिनायोज्यंयातर्क्षैस्पष्टभास्करः ॥१०१॥

सूर्यसंक्रांतिके घटीपलाओंसे इष्टदिनादि जितने हों उनसे उक्त स्थूल गति गुनाके ६० से भाग लेना ३ अंशादि क्रमसे लेकर सूर्यकी भुक्तराशि राशिके स्थानमें रखना सूर्यका स्पष्ट होता है ॥ १०१ ॥

(अनु०) तनोरिष्टांशकात्पूर्वैनवांशादशसंगुणाः ॥
रामाप्तालब्धमंशाद्यंतनोर्वर्गादिसाधने ॥ १०२ ॥

अभीष्टलग्नमें जो नवांश निश्चय किया उसके पूर्व जितने नवांश हों उन्हे १० से गुनाकर ३ से भाग लेना लब्धि यथाक्रम ३ अंक लेके जो हो वह लग्न स्पष्ट भुक्त उस समयका होता है इसीसे षट्वर्ग साधन करना ॥ १०२ ॥

(शालिनी) अर्काल्लग्नात्सायनाद्भोग्यमुक्तैर्भागैर्निघ्नात्स्वोदया-
त्खाग्निभक्तात् ॥ भोग्यंभुक्तंचान्तरालोदयाढ्यं
षष्ट्याभक्तंस्वेष्टनाड्योभवेयुः ॥ १०३ ॥

सूर्यसायनस्पष्टके राशिभोग्यांशोंसे स्वदेशीय लग्न खंड पलात्मक गुनना ३० से भाग लेना लब्धि भोग्य पला होती है एवं भुक्तांशोंसे गुनाकर भुक्तपला मिलती हैं इन भुक्तभोग्यपलाओंका योग्य करना इसमें सायन लग्न तथा सूर्यके अंतराल लग्नोंके पला जोडने ६० से भाग लेकर सूर्योदयमारभ्य इष्टघटी होती हैं॥ १०३॥

(शालिनी) चेल्लग्नार्कौसायनावेकराशौतद्विश्लेषघ्नोदयः
खाग्निभक्तः ॥ स्वेष्टःकालोलग्नमूनंयदार्का-
द्रात्रेःशेषोऽर्कात्सषड्भान्निशायाम्॥ १०४ ॥

यदि सायन लग्न तथा सूर्य एकही राशिमें हो तो उनके अंतर्गत अंशोंमे स्वदेशीय लग्न खंड गुनना ३० से भाग लेकर उदयात् इष्टकाल होता है रात्रिके लिये राशिमें ६ जोडके उक्त प्रकारसे करना ॥ १०४ ॥

(शा०वि०) उत्पातान्सहपातदग्धतिथिभिर्दुष्टांश्चयोगांस्तथा
चन्द्रेज्योशनसामथास्तमयनंतिथ्याःक्षयर्द्धीतथा ॥
गण्डान्तंचसविष्टिसंक्रमदिनंतन्वंशपास्तंतथा-
तन्वंशेशविधूनथाष्टरिपुगान्पापस्यवर्गांस्तथा ॥१०५॥

(उत्पात) सेंदुक्रूर० क्रूराक्रांत० इत्यादि, महापात, दग्धतिथि, दुष्टयोग, चंद्रमा, गुरु, शुक्रका अस्त, तिथिकी क्षयवृद्धि, गंडांत ३ प्रकारका, भद्रा, संक्रांतिदिन, लग्नेश अंशेशका अस्त लग्नेश अंशेश चंद्रमाके ६ । ८ स्थानमें स्थिति, और पापग्रहोंके षड्वर्ग इत्यादि पूर्वोक्तदोष विवाहमें वर्ज्य हैं ॥ १०५ ॥

(शा०वि०) सेन्दुक्रूरखगोद्गमांशमुदयास्ताशुद्धिचण्डायुधात्
खार्जूरंदशयोगयोगसहितंजामित्रलत्ताव्यधम् ॥
बाणोपग्रहपापकर्तरितथातिथ्यृक्षयोगोत्थितं
दुष्टंयोगमथार्द्धयामकुलिकाद्यान्वारदोषानपि ॥१०६॥

क्रूराक्रांतविमुक्तभंग्रहणभंयत्क्रूरगन्तव्यभं
त्रेधोत्पातहतंचकेतुहतभंसंध्योदितंभंतथा ॥
तद्वच्चग्रहभिन्नयुद्धगतभंसर्वानिमान्संत्यजे-
दुद्वाहेशुभकर्मसंग्रहकृतान्लग्नस्यदोषानपि ॥ १०७॥

इति श्रीदैवज्ञानंतसुतरामवि०मुहूर्तचिन्तामणौविवाहप्रकरणम् ॥६॥

तथा पापयुक्त चंद्रमा पापयुक्त लग्न लग्ननवांश, अस्तोदयशुद्धि, चंडीश, चंडायुध, खार्जूर, दशयोग, जामित्री, लत्तावेध, बाण, उपग्रह पाप कर्तरि तिथिवारोद्भव (सूर्यशेत्यादि) नक्षत्रवारोत्थ (मृत्यु) आदि तिथिनक्षत्र वारोत्थ (हस्तार्कपंचमी०) आदि दुष्टयोग अर्द्धयाम कुलिकादि अन्यादिदोष पापाक्रांतनक्षत्र पापमुक्त तथा पापगंतव्यनक्षत्र ग्रहण नक्षत्र तीन प्रकारके उत्पातका नक्षत्र केतूदयनक्षत्र (संध्योदि०) सूर्यसे १४ वां नक्षत्र ग्रहभिन्ननक्षत्र युद्धनक्षत्र इतने समस्तदोष तथा ग्रहकृतलग्नके दोषभी विवाहमें तथा शुभकर्म सभीमें वर्जित हैं ॥ १०६ ॥ १०७ ॥

इति श्रीमुहूर्तचिंतामणौ महीधरकृतायां भाषायां विवाहप्रकरणं समाप्तम् ॥ ६ ॥

अथ वधूप्रवेशप्रकरणम् ।

(उ०व०) समाद्रिपञ्चाङ्कदिनेविवाहाद्वधूप्रवेशोष्टिदिनान्तराले ॥
शुभःपरस्ताद्विषमाब्दमासदिनर्क्षवर्षात्परतोयथेष्टम् ॥ १ ॥

विवाह करके विवाहिता कन्याका वरके घरमें प्रवेश करनेको वधूप्रवेश कहते हैं वह विवाहसे १६ दिनके भीतर सम २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ । १४ । १६ दिनमें तथा ५ । ९ । ७ दिनोंमें यदि १६ दिनके भीतर न हो तो विषममास विषमवर्षोंमें उक्त दिनमें करना यदि ५ वर्षभी व्यतीत हो जांय तो तब समविषम नियम नहीं जब इच्छा हो शुभपंचांगमें करे ॥ १ ॥

(अनु०) ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले ॥
वधूप्रवेशःसन्नेष्टोरिक्तारार्केबुधे परेः ॥ २ ॥

ध्रुव, क्षिप्र, मृदु, श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा, स्वाती, नक्षत्र तथा रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि मंगल सूर्य बुधवार रहित दिनमें वधूप्रवेश शुभ होता है ॥ २ ॥

(इं०व०) ज्येष्ठेपतिज्येष्ठमथाधिकेपतिंहन्त्यादिमेभर्तृगृहेवधूःशुचौ ॥
श्वश्रूंसहस्येश्वशुरंक्षयेतनुंतातंमधौतातगृहे विवाहतः ॥३॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ वधूप्रवेशप्रकरणं समाप्तम् ॥ ७ ॥

विवाहसे ऊपर प्रथम ज्येष्ठके महीने भर्ताके घर रहे तो पतिके ज्येष्ठ भाईको (मृत्यु) दोष होवे अधिमासमें पतिको आषाढमें सासको पौषमें श्वशुरको क्षयमासमें अपने शरीरको हरती हे तथा विवाहसे प्रथम चैत्रमें पिताके घरमें रहे तो पिता मरे ॥ ३ ॥

इति श्रीमुहूर्तचिन्तामणौ महीधरकृतायां भाषायां सप्तमं
वधूप्रवेशप्रकरणं समाप्तम् ॥ ७ ॥

अथ द्विरागमनप्रकरणम्।

(पञ्चचामर) चरेदथौजहायने घटालिमेषगेरवौरवीज्यशुद्धियो-
गतः शुभग्रहस्यवासरे ॥ नृयुग्ममीनकन्यकातुला-
वृषेविलग्नकेद्विरागमंलघुध्रुवेचरेभ्रपेमृदूडुनि ॥१॥

वधू प्रवेश करके यदि वधू पिताके घरमें जाकर पुनः पतिके घरमें आवे उसे द्विरागमन कहते हैं वह विषम १ । ३ । ५ वर्षमें ११ । १ । ८ के सूर्यमें विवाहोक्त सूर्यशुद्धि गुरुशुद्धि हुयेमें शुभग्रहोंके वारमें ३ । १२ । ६ । ७ । २ लग्नोंमें लघु ध्रुव चर मूल मृदु नक्षत्रोंमें करना ॥ १ ॥

(प्रहर्षिणी) दैत्येज्योह्यभिमुखदक्षिणेयदिस्याद्गच्छेयुर्नहिशिशु-
गर्भिणीनवोढाः ॥ बालश्चेद्व्रजतिविपद्यतेनवोढाचेद्व-
न्ध्याभवतिचगर्भिणीत्वगर्भा ॥ २ ॥

विवाहमें भर्ताके घर जानेमें यात्रोक्त शुक्रसंमुखादि शुद्धि नहीं देखते इस लिये द्विरागमनमें देखना आवश्यक होनेसे शुक्रशुद्धि कहते हैं कि शुक्र संमुख तथा दक्षिण हो तो बालक, गर्भवती, नवविवाहिता गमन न करे इसप्रति शुक्रमें बालक गमन करे तो विपत्ति (मृत्यु) पावे गर्भिणी गर्भरहित होवे नवोढा वांझ होवे ॥ " अस्तंगते गुरौ शुक्रे सिंहस्थे वा बृहस्पतौ ॥ दीपोत्सवदिने चैव क-

न्या भर्तृगृहं विशेत् ॥१॥ " किसीका मत है कि गुरु अस्त हो वा शुक्र अस्त हो वा संमुख दक्षिण हो वा सिंहस्थगुरु हो इस दोषोंमेंभी आवश्यकता होनेमें (कन्या) नववधू (दीपोत्सव) दीपमालिकासे २ दिन प्रथम २ पीछेके दिनमें भर्ताके घर जावे दोष नहीं ॥ २ ॥

(प्रहर्षिणी) नगरप्रवेशविषयाद्युपद्रवेकरपीडनेविबुधतीर्थयात्रयोः ॥
नृपपीडनेनववधूप्रवेशनेप्रतिभार्गवोभवतिदोषकृन्नहि ॥३॥

परचक्रागम राजविद्रोह वा नृपपीडनादि उपद्रवसे स्वनगरप्रवेशमें किंवा दुर्भिक्षादिदुःखसे अन्यत्रगमनमें तथा विवाहमें एवं नगरकोटयात्रा देवयात्रा तीर्थयात्रामें राजाके निकालनेमें और नवविवाहिता कन्याके भर्ताके घरप्रवेश करनेमें संमुख दक्षिणशुक्रका दोष नहीं होता ॥ ३ ॥

(इं० व०) पित्र्येगृहेचेत्कुचपुष्पसंभवस्तथानदोषःप्रतिशुक्रसंभवः ॥
भृग्वंगिरोवत्सवसिष्ठकश्यपात्रीणांभरद्वाजमुनेःकुलेतथा ॥ ४ ॥

इति मुहूर्त्तचिन्तामणौद्विरागमनप्रकरणम् ॥ ८ ॥

यदि कन्याके पिताहीके घरमें (कुच) स्तन उग आवें तथा रजोदर्शन हो जावे तो प्रतिशुक्रका दोष नहीं उपलक्षणसे सूर्य गुरुशुद्धिभी नहीं और भृगु अंगिरा वत्स वसिष्ठ कश्यप अत्रि भरद्वाज ऋषियोंके वंशमें अर्थात् उक्त गोत्रवालोंकोभी प्रतिशुक्रका दोष कभी नहीं है ॥ ४ ॥

इति मुहूर्त्तचिन्तामणौ महीधरकृतायां भाषायां अष्टमप्रकरणम् ॥ ८ ॥

अथाग्न्याधानप्रकरणम् ।

श्रौत स्मार्त कर्मानुष्ठान अग्निधारणको अग्न्याधान कहते हैं यह कोई तो विवाहमें कोई पिता वा भाईसे पृथक् रहनेसे करते हैं ॥

(व० ति०) स्यादग्निहोत्रविधिरुत्तरगेदिनेशेमिश्रध्रुवान्त्य-
शशिशुक्रसुरेज्यधिष्ण्ये ॥ रिक्तासुनोशशिकुजेज्य-
भृगौनर्नीचेनास्तंगतेनविजितेनचशत्रुगेहे ॥ १ ॥

अग्न्याधान मुहूर्त्त ॥ सूर्यके उत्तरायणमें तथा मिश्र, ध्रुव, रेवती, मृगशिर,

ज्येष्ठा, पुष्यनक्षत्रोंमें अग्निहोत्र करना परंतु रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि न लेनी और चंद्रमा मंगल बृहस्पति शुक्र नीचराशिमें, अस्तंगत तथा ग्रहयुद्धमें पराजित न हों शत्रुराशियोंमेंभी न हो तो अग्न्याधान शुभ होता है ॥ १ ॥

(व० ति०) नोकर्कनक्रझपकुम्भनवांशलग्नेनोऽब्जेतनौरविश-
शीज्यकुजेत्रिकोणे ॥ केन्द्रत्रिषट्त्रिभवगेषुपरैस्त्रि-
लाभषट्खस्थितैर्निधनशुद्धियुते विलग्ने ॥ २ ॥

कर्क मकर मीन कुंभलग्न वा नवांशक तथा लग्नका चंद्रमा न लेने और सूर्य चंद्र गुरु मंगल त्रिकोण ५ । ९ में अन्य बु० शु० श० रा० के० ३ । ११ । ६ । १० स्थानोंमें हों तथा लग्नसे अष्टमभाव ग्रहरहित हो जन्मलग्न जन्मराशि अष्टमलग्न न हो तो उक्त कृत्य शुभ होता है ॥ २ ॥

(अ०) चापेजीवेतनुस्थेवामेषेभौमेम्बरेद्युने ॥
षट्त्र्यायेब्जेरवौवास्याज्जाताग्निर्यजति ध्रुवम् ॥ ३ ॥

इति श्रीमुहूर्त्तचिन्तामणावग्न्याधानप्रकरणम् ॥ ९ ॥

उक्त आधानलग्न बृहस्पतिसहित धन हो (१) अथवा मंगल मेषका दशम यद्वा सप्तम हो (२) वा चंद्रमा ३ । ६ । ११ मे औरमें हो (३)सूर्य ३ । ६ । ११ में हो(४)इन योगोंमें कोईभी हो तो अग्निहोत्रकर्त्ता निश्चयसे ज्योतिष्टोमादि यज्ञ करनेवाला होगा ॥ ३ ॥

इति श्रीमुहूर्त्तचिन्तामणौ महीधरकृतायां भाषायामग्न्याधान-
प्रकरणं नवमं समाप्तम् ॥ ९ ॥

अथ राजाभिषेकप्रकरणम् ।

(इं०व०)राजाभिषेकः शुभउत्तरायणेगुर्विन्दुशुक्रैरुदितैर्बलान्वितैः॥
भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपैर्नोचैत्ररिक्तारनिशामलिम्लुचे ॥१॥

राजाभिषेकमुहूर्त्त ॥ उत्तरायणमें बृहस्पति चंद्रमा शुक्रके उदय तथा बलवान् हुयेमें मंगल सूर्य लग्नेश दशमेशके बलवान् हुयेमें तथा जन्मलग्नेशकेभी

तत्काल बलवान् हुयेमें राजाभिषेक शुभ होता है चैत्रका महीना रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि मंगलवार और मलिनमास वर्जित करना रात्रिमेंभी राजाभिषेक न करना ॥ १ ॥

(इं०व०) शाक्रश्रवःक्षिप्रमृदुध्रुवोडुभिःशीर्षोदयेवोपचयेशुभेतनौ ॥
पापैस्त्रिषष्ठायगतैःशुभग्रहैःकेन्द्रत्रिकोणायधनत्रिसंस्थैः ॥२॥

ज्येष्ठा श्रवण क्षिप्र मृदु ध्रुव नक्षत्रोंमें शीर्षोदय ३ । ५ । ६ । ७ । ८ । ११ लग्नोंमें अथवा जन्मलग्नसे उपचय ३ । ६ । १० । ११ लग्नोंमें शुभग्रहयुक्त दृष्टोंमें अथवा जन्मराशिसे उपचय लग्नोंमें शुभग्रह केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रि० ९ । ५तथा ११ । २ । ३ स्थानोंमें हों पापग्रह ३ । ६ । ११ में हों ऐसे मुहूर्त्तमें राजाभिषेक शुभ होता है ॥ २ ॥

(इं० व०) पापैस्तनौरुङ्निधनेमृतिः सुतेपुत्रार्तिरर्थव्ययगैर्दरिद्रता ॥
स्यात्खेलसोभ्रष्टपदोद्युनाम्बुगैःसर्वेशुभंकेन्द्रगतैःशुभग्रहैः ॥३॥

लग्नमें पापग्रह हो तो रोग होवे अष्टम हो तो मृत्यु पंचम हो तो पुत्रक्लेश२ । १२में हो तो धननाश (दारिद्य) दशममें हो तो (अलस) निरुद्यमता ४ । ७ । में हो तो ऐश्वर्यसे भ्रष्ट हो जावे ६।८।१२ में चंद्रमाभी मृत्यु देता है ॥३॥

(भु० प्र०) गुरुर्लग्नकोणेकुजोरौसितःखेसराजासदामोदतेराजलक्ष्म्या ॥
तृतीयायगौसौरिसूर्यौखबन्ध्वोर्गुरुश्चेद्धरित्रीस्थिरास्यान्नृपस्य ॥४॥

इति श्रीमुहूर्त्तचिन्तामणौ राजाभिषेकप्रकरणम् ॥ १० ॥

लग्नमें बृहस्पति वा त्रिकोणमें हो मंगल छठा शुक्र दशम हो तो राजा सर्वदा राज्यलक्ष्मीके भोगसहित प्रसन्न रहे । सूर्य्य ११ शनि ३ में बृहस्पति ४ बुध ४ में हों तो राजाकी पृथ्वी (राज्य) स्थिर (सर्वदा हस्तगत)रहे ॥४॥

इति श्रीमुहूर्त्तचिन्तामणौ महीधरकृतायां भाषायां राजाभिषेकप्रकरणं समाप्तम् ॥ १० ॥

अथ यात्राप्रकरणम् ।

यात्रा देशांतरगमनको कहते हैं यहभी २ प्रकारकी है कि एक युद्ध विजयार्थ दूसरे अन्यकार्यवशात् युद्धमें योग लग्नादिविशेष, अन्यमें पंचांगशुद्धि विशेष लिखते हैं ।

(प्रहर्षिणी) यात्रायांप्रविदितजन्मनानृपाणांदातव्यंदिवसमनु-
द्धजन्मनांच ॥ प्रश्नाद्यैरुदयनिमित्तमूलभूतैर्वि-
ज्ञातेह्यशुभशुभेबुधःप्रदद्यात् ॥ १ ॥

इस प्रकरणमें राजाकाही उपलक्षण है यह राजा सकललोकहितकारी होनेसे तथा सर्व जनश्रेष्ठ होनेसे है मुहूर्तादि तो राजा आदि सभीको हैं जिन राजाओंका छाया घटिकादियोंसे जन्मसमय तात्काल लग्नकुंडलिस्थ शुभाशुभग्रह-फलज्ञान है उनको यात्रामुहूर्त देना जैसे शुभफल दशा अंतरोंमें यात्रा करनी अरिष्टमारकादि समयमें न करनी इत्यादिजातकोंमें लिखा है जिनका जन्म-समय ज्ञात नहीं है उनको प्रश्न, उपश्रुति शकुन आदि लक्षणोंसे शुभाशुभ समय जानकर शुभसमयमें यात्राका दिन (अशुभ) अरिष्टादिमें न देना ॥ १ ॥

(द्रुतविलंबित)जननराशितनूयदिलग्नगेतदधिपौयदिवाततएववा ॥
त्रिरिपुखायगृहंयदिवोदयो विजयएवभवेद्वसुधापतेः ॥ २ ॥

प्रथम प्रश्न है कि यदि यात्राप्रश्नमें जन्मराशि जन्मलग्नप्रश्नमें हो तो राजाकी विजय होगी अथवा उनके स्वामी लग्नमें हो तौभी विजय अथवा जन्मराशि लग्नसे ३ । ६ । १० । ११ वां प्रश्नलग्न हों तौभी विजयही होगी ॥ २ ॥

(मंजुभा०) रिपुजन्मलग्नभमथादिपौतयोस्ततएववोपचयसद्मचेद्भवेत्॥
हिबुकेद्युनेथशुभवर्गकस्तनौयदिमस्तकोदयगृहंतदाजयः ॥ ३ ॥

यदि शत्रुके जन्मराशि जन्मलग्न प्रश्नलग्नसे ४ । ७ भावोंमें हों तो राजाकी जय होवे उनके स्वामीभी ऐसेही जानने तथा शत्रुके जन्मराशि लग्नसे उपचय ३ । ६ । ११ राशिप्रश्नलग्नसे ४ । ७ में हो तौभी विजय होवे

प्रश्नलग्नमें शुभग्रहोंका नवांशादि षड्वर्ग हो वा शीर्षोदय राशि प्रश्नलग्नमें हों तौभी विजय होवे ॥ ३ ॥

(त्रोटक) यदिपृच्छितनौवसुधारुचिराशुभवस्तुयदिश्रुतिदर्शनगम् ॥
यदिपृच्छतिचादरतश्चशुभग्रहदृष्टयुतंचरलग्नमपि ॥ ४ ॥

यदि प्रश्नसमयमें भूमि रमणीय होवे तथा (शुभवस्तु) मांगल्य वस्त्राभरणादि सुनने देखनेमें आवे अथ च पूंछनेवाला आदरपूर्वक नम्रतासे पूछे तो (राजा) यात्रावालेका विजय होवे और प्रश्नादि लग्न चर १ । ४ । ७ । १० शुभग्रहोंयुक्त दृष्ट हो तौभी वही फल है ॥ ४ ॥

(मालिनी) विधुकुजयुतलग्नेशौरिदृष्टेथचन्द्रेमृतिभमदनसंस्थे
लग्नगेभास्करेपि ॥ हिबुकनिधनहोराद्यूनगेवा-
पिपापेसपदिभवतिभङ्गः प्रश्नकर्तुस्तदानीम् ॥ ५ ॥

प्रश्नलग्नमें यदि चंद्रमा मंगल हो शनिकी दृष्टि लग्नपर हो तो प्रश्नकर्त्ताका (भंग) पराजय होता है तथा चंद्रमा ७ । ८ भावमें सूर्य लग्नमें हो तौभी वही फल है अथवा लग्नमें चंद्रमा ७ । ८ में सूर्य हो तौभी भंगही है तथा पापग्रह ४ । ८ । १ । ७ में हों तौभी वही फल होगा ॥ ५ ॥

(भु०प्र०) त्रिकोणेकुजात्सौरिशुक्रज्ञजीवायदेकोपिवानोगमोर्का-
च्छशीवा ॥ बलीयांस्तुमध्येतयोर्योग्रहःस्यात्स्वकी-
यांदिशंप्रत्युतासौनयेच्च ॥ ६ ॥

जानेवाला कौन दिशा जायगा मंगलसे त्रिकोण ९ । ५ में शनि शुक्र बुध बृहस्पति होवें अथवा इनमेंसे एकभी हो तो जिस दिशा जाना चाहता है वहां न जायगा अथवा सूर्यसे चंद्रमा ५ । ९ में हो तौभी अभीष्ट दिशा न जायगा उक्तप्रतिबंधकर्त्ता ग्रहोंमेंसे जो बलवान् हो वह अपनी दिशाको ले जायगा ॥ ६ ॥

(मन्दलेखा) प्रश्नेगम्यदिगीशात्खेटःपञ्चमगोयः ॥
बोभूयाद्बलयुक्तः स्वामाशां नयतेसौ ॥ ७ ॥

दूसरा योग प्रश्नमें (गम्य) गमन निश्चित दिशाके स्वामीसे पंचम जो ग्रह है

वह बलवान् हो तो गम्यदिशा छुटाकर अपनी दिशाको अवश्य ले जाता है दिगीश पूर्वादिक्रमसे र० शु० मं० रा० श० चं० बु० बृ० हैं औरभी योग है कि शनि मंगल परस्पर सम सप्तम हो अथवा शनिराशिका मंगल मंगलकी राशिका शनि हो अथवा शुक्र मंगल त्रिकोणमें हो तो इनमेंसे जो बली हो वह गम्यदिशाको छुटाकर अपनी दिशा ले जाता है ॥ ७ ॥

(भु०प्र०) धनुर्मेषसिंहेषुयात्राप्रशस्ताशनिज्ञोशनोराशिगेचैवमध्या ॥
रवौकर्कमीनालिसंस्थेतुदीर्घाजनुःसप्तपञ्चत्रितारावनेष्टाः ॥८॥

सूर्यके ९ । १ । ५ राशियोंमें होनेमें यात्रा शुभ होती है तथा १० । ११ । ३ । ६ । ७ राशियोंकेमें मध्यम ४ । १२ । ८ के सूर्यमें दीर्घयात्रा अशुभ लघुयात्रा मध्यम होती है सूर्य ८ प्रहरोंमें ८ ही दिशाओंमें रहता है यात्रासमयमें सूर्य पीठके ओर होना उत्तम होता है यह प्राच्य संमत है और यात्रामें जन्म पंचम तृतीय सप्तम ताराभी अशुभ होती है ॥ ८ ॥

(भु०प्र०) नषष्ठीनचद्वादशीनाष्टमीनोसिताद्यातिथिःपूर्णिमामानरिक्ता॥
हयादित्यमित्रेन्दुजीवान्त्यहस्तश्रवोवासवैरेवयात्राप्रशस्ता ॥ ९ ॥

शुक्लपक्षप्रतिपदा अमावास्या षष्ठी द्वादशी अष्टमी रिक्ता ४। ९। १४ तिथि यात्रामें वर्जित हैं हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिर, पुष्य, रेवती, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्रोंमें यात्रा शुभ होती है तथा शुभवार शुभ हैं ॥ ९ ॥

(पृथ्वी) नपूर्वदिशिशाक्रभेनविधुसौरिवारेतथानचाजपद्भे गुरौयमदिशीनदैत्येज्ययोः ॥ नपाशिदिशिधातृभेकुजबुधेयमर्क्षे तथा नसौम्यककुभिव्रजेत्स्वजयजीवितार्थीबुधः ॥ १० ॥

दिशाशूल ॥ पूर्वदिशा ज्येष्ठानक्षत्र शनि, सोमवारमें एवं दक्षिण पूर्वाभाद्र बृहस्पति, पश्चिमदिशा शुक्र, रविवार रोहिणीनक्षत्र, उत्तरदिशा मंगल, बुधवार भरणीनक्षत्रमें जानेवाला यदि धन एवं शत्रुसे जय और जीवित (आयु) चाहे तो न जावे इन वार नक्षत्रोंमें इन दिशाको दिशाशूल (वारिक) होता है ॥ १० ॥

(शा० वि०) पूर्वाह्णेध्रुवमिश्रभैर्नंनृपतेर्यात्रानमध्याह्नके
तीक्ष्णाख्यैरपराह्णकेनलघुभैर्नोपूर्वरात्रेतथा ॥
मित्राख्यैर्नचमध्यरात्रिसमयेचोग्रैस्तथानोचरै-
रात्र्यन्तेहरिहस्तपुष्यशशिभिःस्यात्सर्वकाले शुभा॥११॥

ध्रुव, मिश्रनक्षत्रोंमें दिनके पूर्वाह्णमें यात्रा न करना एवं तीक्ष्णनक्षत्रोंको मध्याह्नमें लघुको अपराह्णमें मित्रनक्षत्रोंमें पूर्वरात्रिमें उग्रनक्षत्रोंमें मध्यरात्रिमें चर नक्षत्रोंमें पिछली रात्रिमें यात्रा न करना और श्रवण, हस्त, पुष्य, मृगशिर नक्षत्रोंमें सभी काल आठही प्रहरोंमें यात्रा शुभ होती है ॥ ११ ॥

(इं०व०) पूर्वाग्निपित्र्यान्तकतारकाणांभूपप्रकृत्युग्रतुरंगमाःस्युः ॥
स्वातीविशाखेन्द्रभुजंगमानांनाड्योनिषिद्धामनुसंमिताश्च ॥१२॥

तीनहूं पूर्वाओंके पूर्वाकी १६ घटी एवं कृत्तिकाकी २१ मघाकी ११ भरणीकी ७ स्वाती विशाखा ज्येष्ठा अश्लेषा चारोंकी १४ घटी आदिकी यात्रामें निषिद्ध हैं और घटी शुभ होती हैं ॥ १२ ॥

(इं०व०) पूर्वार्द्धमाग्नेयमघानिलानांत्यजेद्धिचित्राहयमुत्तरार्द्धम् ॥
नृपःसमस्तांगमनेजयार्थीस्वातीमघांचोशनसोमतेन ॥ १३ ॥

एवं कृत्तिका मघा स्वातीका पूर्वार्द्ध चित्रा अश्विनीका उत्तरार्द्ध और उशनाका मत है कि, जय चाहनेवालेने स्वाती तथा मघा समस्त त्याग करनी॥१३॥

(भु० प्र०) तमोभुक्ततारा: स्मृताविश्वसंख्याःशुभाजीवपक्षो-
मृतश्चापिभोग्याः॥ यदाक्रांतभंकर्त्तरीसंज्ञमुक्तंनतो-
क्षेन्दुसंख्यंभवेद्ग्रस्तनाम ॥ १४ ॥

राहु वक्रगति है इसके भुक्त १३ नक्षत्र जीवपक्षसंज्ञक शुभकार्यकारक हैं भोग्या १३ नक्षत्र मृतपक्षसंज्ञक हैं जिसमें राहु बैठा है वह कर्त्तरीसंज्ञक है उस नक्षत्रसे १५ वां नक्षत्र ग्रस्तसंज्ञक पुच्छ है ॥ १४ ॥

(शा० वि०) मार्तंडेमृतपक्षगेहिमकरश्चेज्जीवपक्षेशुभा
यात्रास्याद्विपरीतगेक्षयकरीद्वौजीवपक्षेशुभा ॥

ग्रस्तर्क्षंमृतपक्षतःशुभकरंग्रस्तात्तथाकर्तरी
यायीन्दुःस्थितिमान्रविर्जयकरौतौद्वौतयोर्जीवगौ ॥१५॥

सूर्य मृतपक्षमें चंद्रमा जीवपक्षमें हो तो यात्रा शुभ होती है (विपरीत) सूर्य जीवपक्ष चंद्रमा मृतपक्षमें हो तो हानिकारक होती है यदि सूर्य चंद्रमा दोनहूं जीवपक्षमें हों तो शुभ, मृत्युपक्षमें हों तो अशुभ जाननी मृतपक्ष नक्षत्रोंके अपेक्षा ग्रस्तनक्षत्र तथा ग्रस्तनक्षत्रके अपेक्षा कर्त्तरीनक्षत्र कुछ शुभ हैं (जैसे मरे हुये मनुष्यसे मरनेको तैयार हो रहा मनुष्य कुछ अच्छाही है) यहां यही उदाहरण योग्य है जो राजा अपने किलेमें बैठा है वह स्थायी जो शत्रुके ओर जाता है वह यायी संज्ञक है सूर्य जीवपक्षमें हो तो स्थायीकी जय चंद्रमा जीवपक्षमें हो तो यायीकी जय यदि सू० चं० दोनहूं जीवपक्षमें हों तो दोनहूंका जय अर्थात् मिलाप होगा सू० चं० मृतपक्षमें हों तो दोनहूंका पराजय अर्थात् हानि दोनहूं पक्षकी हानि, लाभ किसीका नहीं तथा सूर्य मृतपक्षमें चंद्रमा जीवपक्षमें हो तो यायीकी जय चंद्रमा मृतपक्षमें सूर्य जीवपक्षमें हो तो स्थायीकी जय सूर्य राहुके नक्षत्रमें चंद्रमा उससे १५ वेंमें हो तो यायीकी थोडा जय यदि चंद्रमा राहुनक्षत्रमें चंद्रमा उससे १५ वेंमें हो तो स्थायीकी स्वल्पजय दोनहूं राहूके नक्षत्रमें हों तो दोनहूंका पराजय (हानि) यदि १५ वेंमें हो तो दोनहूं की जय (संधि) होवे यह विचार सभी यात्राओंमें है ॥ १५ ॥

(व०ति०) स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकरानुराधादित्यध्रुवाणिवि-
षमास्तिथयोऽकुलाःस्युः ॥ सूर्य्येन्दुमन्दगुरवश्चकु-
लाकुलज्ञो मूलाम्बुपेशविधिभंदशषट्द्वितिथ्यः ॥१६॥

(शा०वि०) पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनाद्वीशेन्द्रचित्रास्तथा
शुक्रारौकुलसंज्ञकाश्चतिथयोकाष्टेन्द्रवेदैर्मिताः ॥
यायीस्यादकुलेजयीचसमरेस्थायीचतद्वत्कुले
संधिःस्यादुभयोःकुलाकुलगणेभूमीशयोर्युध्यतोः ॥१७॥

स्वाती भरणी आश्लेषा धनिष्ठा रेवती हस्त अनुराधा पुनर्वसु तीन उत्तरा रोहिणीनक्षत्र विषमतिथि १।३।५।७।९।११।१३।१५ सूर्य चंद्रमा, शनि बृहस्पतिवार अकुलसंज्ञक हैं तथा मूल शततारा आर्द्रा अभिजितनक्षत्र १०।६।२ तिथि कुलाकुलसंज्ञक हैं तथा तीन पूर्वा अश्विनी पुष्य मघा मृगशिर श्रवण कृत्तिका विशाखा ज्येष्ठा चित्रानक्षत्र शुक्र मंगलवार १२। १४ ।४ तिथि कुलसंज्ञक हैं अकुलसंज्ञकोंमें युद्धयात्रा हो तो यायीकी जय कुलसंज्ञकोंमें स्थायीकी जय कुलाकुलसंज्ञकोंमें दोनहूंकी जय (संधि) होवे ॥१६॥१७॥

(स्रग्धरा) स्युर्धर्मेदस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थे
याम्याजाङ्घ्रीन्द्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथोभानिकामे ॥
वह्न्याद्रांबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानिमोक्षेथरोहि-
ण्यर्यम्णाप्येन्दुविश्वान्तिमभदिनकरर्क्षाणिपथ्यादिराहौ ॥१८॥

अश्विनी पुष्य आश्लेषा धनिष्ठा शततारा विशाखा अनुराधा धर्मस्थानमें लिखने तथा भरणी पूर्वाभाद्र ज्येष्ठा श्रवण पुनर्वसु मघा स्वाति अर्थस्थानमें कृत्तिका आर्द्रा उत्तराभाद्र चित्रा मूल अभिजित पूर्वाफाल्गुनी कामस्थानमें रोहिणी उत्तराफाल्गुनी पूर्वाषाढ मृगशिर उत्तराषाढ रेवती हस्त मोक्षमार्गमें लिखने यह पथिराहुचक्र है ॥ १८ ॥

पथिराहुचक्रम्.

ध.	अ.	पु.	आ.	वि	अनु.	ध.	श.
अ.	भ.	पु	म	स्वा	ज्ये.	श्र.	पू.
का.	कृ.	आ.	पू.फा.	चि.	मू.	अ.	उ.भा.
मो.	रो.	मृ.	उ फा.	ह.	पू.षा.	उ.षा.	रे.

(स्रग्विणी) धर्मगेभास्करेवित्तमोक्षेशशीवित्तगेधर्ममोक्षस्थितःशस्यते ॥
कामगेधर्ममोक्षार्थगःशोभनोमोक्षगेकेवलं धर्मगःप्रोच्यते ॥१९॥

धर्ममार्गमें सूर्य और अथवा मोक्षमार्गमें चंद्रमा हो तो शुभ यदि सूर्य धनमार्गमें चंद्रमा धर्म वा मोक्षमार्गमें हो तौभी शुभ. अथवा काममार्गमें सूर्य धर्ममार्गम चंद्रमा हो तौभी शुभ. अथवा मोक्षमार्गमें सूर्य धर्ममार्गमें चंद्रमा हो तौभी शुभ होता है (विपरीत) जिस मार्गमें सूर्य कहा उसमें चंद्रमा जिसमें चंद्रमा कहा उसमें सूर्य हो तो अशुभ जानना. धर्ममार्गमें सूर्य चंद्रमाभी हो तो समयुद्ध होवे परंतु थोडा यायी जीते धर्ममें सूर्य धनमें चंद्रमा हो तो यायीकी जय धर्ममें सूर्य काममें चंद्रमा हो तो बांधवोंके साथ विरोध धर्ममें सूर्य मोक्षमें चंद्रमा शुभयुक्त भूमिलाभ करता है. कर्ममें सूर्य धर्ममें चंद्रमा शुभयुक्त रत्नलाभी काममें सूर्य धनमें चंद्रमा शुभयुक्त धनलाभ. सूर्यचंद्रमा काममें शत्रुयुक्त दुःख देते हैं. काममें सूर्य मोक्षमें चंद्रमा शुभयुक्त रत्नलाभी. मोक्षमें सूर्य धर्ममें चंद्रमा शुभयुक्त महालाभ. मोक्षमें सूर्य धनमें चंद्रमा यात्रा सफल. मोक्षमें सूर्य काममें चंद्रमा यात्रामें दुःख. सूर्य चंद्र मोक्षमार्गमें घोर विघ्नकारक. यह पथिराहुचक्र यात्रादि समस्तकार्योंमें विचारना ॥ १९ ॥

(शालिनी) पौषेपक्षत्यादिकाद्वादशैवंतिथ्योमाघादौद्वितीयादिकास्ताः ॥
कामात्तिस्रःस्युस्तृतीयादिवच्चयानेप्राच्यादौफलंतत्रवक्ष्ये ॥ २० ॥
सौख्यंक्लेशोभीतिरर्थागमश्चशून्यंनैःस्व्यंनिःस्वतामिश्रताच ॥
द्रव्यक्लेशोदुःखमिष्टाप्तिरर्थोलाभःसौख्यंमङ्गलंवित्तलाभः ॥ २१ ॥
लाभोद्रव्याप्तिर्धनंसौख्यमुक्तंभीतिर्लाभोमृत्युरर्थागमश्च ॥
लाभःकष्टंद्रव्यलाभौसुखंचकष्टंसौख्यंक्लेशलाभौसुखंच ॥ २२ ॥
सौख्यंलाभःकार्यसिद्धिश्चकष्टंक्लेशः कष्टात्सिद्धिरर्थोधनंच ॥
मृत्युर्लाभोद्रव्यलाभश्चशून्यंशून्यंसौख्यंमृत्युरत्यन्तकष्टम् ॥ २३ ॥

इन ४ श्लोकोंका अर्थ चक्रसे प्रकट होता है पौषमहीनेके प्रतिपदादि १२

तिथिचक्रं यात्रायाम् ।

पौ	मा	फा	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा.	आ	का	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	अर्थागम
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	नैःस्व्य	निःस्व.	मिश्रता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यक्लेश	दुःख	द्र प्रा	अर्थ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	मगल	वित्तलाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	द्र प्रा	धनप्रा	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थलाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	द्र ला.	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्यं	क्लेश	सख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	का सि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	कलामि-	अर्थसि	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	द्र ला	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तिथि क्रमसे लिखने माघके द्वितीयादि एवं फाल्गुन ३ चैत्र ४ वैशाख ५ ज्येष्ठ ६ आषाढ ७ श्रावण ८ भाद्रपद ९ आश्विन १० कार्तिक ११ मार्गशीर्षके १२ से लिखना त्रयोदशी तृतीयाके तुल्य चतुर्दशी चतुर्थीके पंचदशी पंचमीके तुल्य जानना फल इनके पूर्वादिक्रममें चक्रसे लिखे हैं वही जानने ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

(व० ति०) तिथ्यृक्षवारयुतिरद्रिगजाग्नितष्टास्थानत्रयेत्रविय-
तिप्रथमेतिदुःखी ॥ मध्येधनक्षतिरथोचरमेमृ-
तिःस्यात्स्थानत्रयेङ्क्युजिसौख्यजयौनिरुक्तौ ॥ २४ ॥

तिथि यहां शुक्लपक्षादि ली जाती है तिथि नक्षत्र वार जोडके ३ जगे रखना एक जगे ७ से दूसरे ८ से तीसरे ३ से भाग लेना प्रथममें ०हो तो यात्री दुःखी होवे दूसरेमें ० शून्य हो तो धनहानि तीसरेमें ० शून्य हो तो मृत्यु होवै तीनही स्थानोंमें शून्य न हो तो सौख्य तथा जय होवे ॥ २४ ॥

(प्रमाणिका) रवेर्भतोऽब्जभोन्मितिर्नगावशेषिताद्व्यगा ॥
महाडलोनशस्यतेत्रिषण्मिताभ्रमोभवेत् ॥ २५ ॥

सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्रपर्यंत गिनना जितना हो ७ से तष्ट करके २ । ७ शेष रहे तो महाडलनामा दोष होता है यह अच्छा नहीं है यदि ३ । ६ शेष रहे तो भ्रमणनामा दोष अशुभ होता है इसमें यात्रा न करनी और आडल दोषमें समस्त शुभकृत्य वर्जित हैं ॥ २५ ॥

(उ०जा०) शशाङ्कभंसूर्यभतोत्रगण्यंपक्षादितिथ्यादिनवासरेण ॥
युतंनवाप्तंनगशेषकंचेत्स्याद्धैवरंतद्गमनेतिशस्तम्॥२६॥

सूर्यसे चंद्रमाके नक्षत्रपर्यंत जितने हों उनमें प्रतिपदादि वर्तमानतिथिसंख्या जोडनी वारभी जोडना ९ से भाग लेकर ७ शेष रहे तो हिंवराख्ययोग होता है यह अतिशुभ है ये गुणदोष दाक्षिणात्यमें प्रसिद्ध हैं ॥ २६ ॥

(शालिनी) भूपञ्चांकव्यङ्गदिग्वह्निसप्तवेदाष्टेशार्कश्चघाताख्यचन्द्रः ॥
मेषादीनांराजसेवाविवादेयात्रायुद्धाद्येचनान्यत्रवर्ज्यः॥२७॥

घात चंद्रमा ॥ मेषको मेषका वृषको कन्याका मिथुनको ११ का कर्क को ५ का सिंहको १० का कन्याको ३ का तुलाको ९ का वृश्चिकको २ का धनको १२ का मकरको ५ का कुंभको ९ का मीनको ११ का चंद्रमा घात होता है यह घातसंज्ञक यात्रा एवं युद्धमें वर्ज्य है ॥ २७ ॥

(उ०जा०) गास्त्रीझषेघाततिथिस्तुपूर्णाभद्रानृयुक्कर्कटकेथनन्दा ॥
कौर्प्याजयोर्नक्रघटेचरिक्ताजयाधनुःकुम्भहरौनशस्ताः २८॥

घात तिथि ॥ वृष कन्या मीन राशियोंको पूर्णा ५ । १० । १५ तिथि मिथुन कर्कको भद्रा २ । ७ । १२ तिथि वृश्चिक मेषको नंदा १ । ६ । ११ तिथि० मकर तुलाको रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि धनकुंभसिंहको जया ३।८। १३ घात तिथि होती हैं यात्रा युद्धमें वर्जित हैं ॥ २८ ॥

(शालिनी) नक्रेभौमोगोहरिस्त्रीषुमन्दश्चन्द्रोद्वन्द्वेऽर्कोजभेज्ञश्चकर्के॥
शुक्रःकोदण्डालिमीनेषुकुम्भजूकेजीवोघातवारानशस्ताः ॥ २९ ॥

मकरको मंगल वृषभको सिंह कन्याको शनि मिथुनको चंद्र मेषको रवि कर्कको बुध धनवृश्चिकमीनको शुक्र तुला कुंभको बृहस्पति घातवार हैं यात्रा युद्धमें वर्जित हैं ॥ २९ ॥

(अनु०) मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्यम्बुपत्यभम् ॥
यामयब्राह्मेशसार्पंचमेषादेर्घातभंनसत् ॥ ३० ॥

घात नक्षत्र ॥ मेषादि राशियोंके क्रमसे १ को मघा २ हस्त ३ स्वाती ४ अनुराधा ५ मूल ६ श्रवण ७ शततारा ८ रेवती ९ भरणी १० रोहिणी ११ आर्द्रा १२ को अश्लेषा घातनक्षत्र हैं. यात्रा युद्धमें वर्जित हैं ॥ ३० ॥

घातचक्रम्.

	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
चद्र	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	र	श	च	बु	श	श	बृ	शु	शु	म	बृ	शु.
नक्षत्र	म	ह	स्वा	अ	मू	अ	श	रे.	भ.	रो	आ	अ.
तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

नवभूम्यःशिववह्न्योक्षविश्वेर्ककृताःशक्ररसास्तुरङ्गतिथ्यः ॥
द्विदिशोमावसवश्चपूर्वतश्चतिथयःसंमुखवामगानशस्ताः ॥ ३१ ॥

पूर्वमें ९ । १ आग्नेयमें ११ । ३ दक्षिणमें ५ । १३ नैर्ऋत्यमें १ । २।४ पश्चिममें ६ । १४ वायव्यमें ७ । १५ उत्तरमें २ । १० ईशानमें ८ । ३० तिथि रहतें इन्हींको योगिनीभी कहते हैं मनुष्योंको संमुख वाम अशुभ दक्षिण पृष्ठमें शुभ पशुओंको वामपृष्ठ शुभ संमुख दक्षिण अशुभ यात्रामें होती है॥३१॥

(शालिनी) कौबेरीतोवैपरीत्येनकालोवारेकाद्येसंमुखेतस्यपाशः ॥
रात्रावेतौवैपरीत्येनगण्यौयात्रायुद्धेसंमुखेवर्जनीयौ ॥ ३२ ॥

रविवारको उत्तरदिशा काल चं० वायव्य मं० पश्चिम बु० नैर्ऋत्यमें बृ० दक्षिण शु० आग्नेय श० पूर्वमें काल होता है जिस दिशामें काल है उसके संमुख पांचवीं दिशामें पाश होता है जैसे शनिको पूर्वमें काल है तो पश्चिममें पाश होगा रात्रिमें (विपरीत) जिस दिशाकाल उसमें पाश पाशवालीमें काल जानना संमुखकाल तथा पाश यात्रामें अशुभ होता है दक्षिण शुभ होते हैं कहाभी है कि " दक्षिणस्थः शुभः कालः पाशो वामदिशि स्थितः, शुभेत्यादि" और योगिनी राहुसहित दक्षिण तथा पृष्ठगत हो तो लक्ष शत्रुको मारता है यह स्वरोदयमें लिखा है कि "दक्षे पृष्ठे योगिनी राहुयुक्ता गच्छेद्युद्धे शत्रुलक्षं निहन्ति" खडराहु मासराहु वारराहु यामार्द्धराहु ग्रंथांतरोंमें सविस्तर कहे है ॥ ३२ ॥

कालपाशः.

र	च.	म	बु	गु	शु	श	वार
उ	वा	प.	नै.	द	आ	पू.	काल
द	आ.	पू	ई.	उ.	वा	प.	पाश

(अनु०) भानिस्थाप्यान्यब्धिदिक्षुसप्तसप्तानलर्क्षतः ॥
वायव्याग्नेयदिक्संस्थंपारिघंनविलङ्घयेत् ॥ ३३ ॥

चतुष्कोण चक्रमें कृत्तिकादि ७ नक्षत्र पूर्वमें मघादि ७ दक्षिणमें अनुराधादि ७ पश्चिममें धनिष्ठादि ७ उत्तरमें आग्नेयवायव्यकोणगत एक रेखा देनी यह परिघदंड है इसे उल्लंघन न करना जो नक्षत्र जिस दिशामें है उनमें उस दिशा यात्रा शुभ होती है पूर्वउत्तरगतनक्षत्रोंमें दक्षिण पश्चिमयात्रा तथा दक्षिणपश्चिमस्थ नक्षत्रोंमें पूर्वोत्तरयात्रा न करना इसमें परिघदंड उल्लंघन होता है ॥ ३३ ॥

परिघदंड.

ई. पू. आ.

कृ. रो. मृ. आ पु. पु. आ.

उ. द

वा. प. नै.

(व० ति०) अग्नेर्दिशंनृपभयात्पुरुहूतदिग्भैरेवंप्रदक्षिणगता
विदिशोथकृत्ये ॥ आवश्यकेपिपरिघंप्रविलङ्घ्य
गच्छेच्छूलंविहाययदिदिक्तनुशुद्धिरस्ति ॥ ३४ ॥

विदिशाओंके लिये कहते हैं कि पूर्वदिशागमनोक्त नक्षत्रोंमें आग्नेय, दक्षिणोक्तोंमें नैर्ऋत्य, पश्चिमोक्तोंमें वायव्य उत्तरोक्तोंमें ईशान यात्रा राजाने करनी आवश्यककृत्यमें परिघदंड उल्लंघन करके यात्रा करनी परंतु वारशूल नक्षत्रशूल न हों और दिग्लग्न शुद्धि हो १ । ५ । ९ पूर्व २ । ६ । १० दक्षिण ३ । ७। ११ पश्चिम ४ । ८ । १२ उत्तर गतराशि हैं इनकी "शुद्धि" संमुख दक्षिणादि तथा इनके अंशादियोंकीभी होनी चाहिये ॥ ३४ ॥

(इं० व०) मैत्राश्विपुष्याश्विनिभैर्निरुक्तायात्राशुभासर्वदिशासुतज्ज्ञैः ॥
वक्रीग्रहःकेन्द्रगतोस्यवर्गोलग्नेदिनंचास्यगमेनिषिद्धम् ॥ ३५ ॥

अनुराधा अश्विनी हस्त पुष्य नक्षत्र दिग्द्वारिकसंज्ञक हैं ज्योतिष जाननेवाले आचार्योंने इनमें सभी दिशाओंकी यात्रा शुभ कही है यात्रा लग्नसे वक्रीग्रह केंद्रमें हो तो न लेना तथा वक्रीग्रहका लग्न, नवांशक और वारभी न लेना यात्राभंग करता है ॥ ३५ ॥

(इं० व०) सौम्यायनेसूर्यविधूत्तदोत्तरांप्राचींव्रजेत्तौयदिदक्षिणायने ॥
प्रत्यग्यमाशांचतयोर्दिवानिशंभिन्नायनत्वेथवधोन्यथाभवेत् ॥३६॥

जब सूर्य चंद्रमा उत्तरायणमें हों तो उत्तरपूर्वदिग्यात्रा शुभ और दक्षिणायनमें हों तो दक्षिणपश्चिमयात्रा शुभ होती है यदि सूर्यचंद्रमा भिन्न अयनोंमें हों तो जिस अयनमें सूर्य है उसके उक्त दिनमें जिस अयनमें चंद्रमा है उसके उक्त दिशा रात्रिमें जाना इससे अन्ययात्रा करे तो मरण होवे ॥ ३६ ॥

(उ० जा०) उदेतियस्यांदिशियत्रयातिगोलभ्रमाद्वाथककुब्भसङ्घे ॥
त्रिधोच्यतेसंमुखएकशुक्रोयत्रोदितस्तांतुदिशंनयायात् ॥३७॥

मुनियोंने शुक्र संमुख तीन प्रकारसे कहा है जिस दिशामें पूर्व वा पश्चिम उदय हो रहा है उस दिशा जानेमें (१) अथवा गोलभ्रमणमे दक्षिणगोल वा उत्तरगोल जहां हो उस दिशा संमुख होता है (२) अथवा (ककुभचक्र) पूर्वादिकृत्तिकादि पूर्वोक्तदिङ्नक्षत्रोंमें जिसमें शुक्र है वह नक्षत्र जहां है उधर संमुख होता है (३) इन ३ प्रकारोंमें उदयवाला प्रकार मुख्य है जिस दिशा उदय हो उस दिशा न जाना आवश्यकमें संमुखशुक्रकी शांति सविस्तर वसिष्ठसंहितामें है उसकेभी असमर्थोंको दीपिकामें दान लिखा है कि " सितवस्त्रं सितं छत्रं हैममौक्तिकसंयुतम् । ततो द्विजातये दद्यात्प्रतिशुक्रप्रशान्तये ॥१॥ " अर्थात् श्वेतवस्त्र श्वेतछत्र सुवर्ण मोती विधिपूर्वक ब्राह्मणको प्रतिशुक्रके दोषशांतिके लिये देना ॥ ३७ ॥

(उ०जा०) वक्रास्तनीचोपगतेभृगोःसुतेराजाव्रजन्यातिवशंहिविद्विषाम् ॥
बुधोनुकूलोयदितत्रसंचरन् रिपून्जयेन्नैवजयःप्रतीन्दुजे ॥३८॥

शुक्रके वक्र,अस्त, नीचत्वगत हुयेम तथा युद्धके पराजित हुयेमं राजा जावे तो अवश्य शत्रुके वश (बंधन) में हो जावे परंतु यदि शुक्रके वक्रादिमें बुध अनुकूल (पृष्ठ) हो तो शत्रुको जीत लावे एवं भौम बुध शत्रुको (प्रति) संमुख तुल्यफली हैं ॥ ३८ ॥

(शालिनी) यावच्चन्द्रःपूषभात्कृत्तिकाद्येपादेशुक्रोन्धोनदुष्टोग्रदक्षे ॥
मध्येमार्गेभार्गवास्तेपिराजातावत्तिष्ठेत्संमुखत्वेपितस्य ॥ ३९ ॥

जब चंद्रमा रेवतीसे कृत्तिकाके प्रथमचरणपर्यंत रहता है उन दिनों शुक्र अंधा कहाता है देखा जाता है तथापि (दृश्यफल) संमुख दक्षिण होनेका दुष्ट फल नहीं करता और दीर्घयात्रामें यात्रा करके यदि मार्गमें शुक्र अस्त हो जावे तो उसके उदयपर्यंत उसी यात्रामें राजा रहे जब उदय हो तब उसे पृष्ठदिशा करके यात्रा पूर्ण करे ऐसे दक्षिण संमुखमेंभी है कि यदि सुमुहूर्तमें प्रस्थान-करके अनंतर सफर पूर्ण न हुयेमें संमुख दक्षिणशुक्र हो जावे तबलों उसी सफ-रमें रहे जबलौं वामपृष्ठ होता है यदि ऐसेही मार्गमें बुधास्त हो तो दोष नहीं परंतु बुधउदय होके संमुख हो जावे तो दोष है पुनः अस्तपर्यंत मार्गमें रहे॥ ३९॥

(अनु०) कुम्भकुम्भांशकौत्याज्यौसर्वदागमनेबुधैः ॥
तत्रप्रयातुर्नृपतेरर्थनाशःपदेपदे ॥ ४० ॥

यात्रामें कुंभलग्न कुंभांशक जाननेवालोंने सर्वदा त्याग करने यदि इनमें राजा यात्रा करे तो पदपद चलनेमें धन वा प्रयोजन नाश होवे ॥ ४० ॥

(मं०भा०)अथमीनलग्नउतवातदंशकेचलितस्यवक्रमिहवर्त्मजायते ॥
जनिलग्नजन्मभपतीशुभग्रहौभवतस्तदा तदुदयेशुभोगमः ॥४१॥

तथा मीनलग्न मीनांशकमें राजा गमन करे तो मार्गसे लौट आना होवे जन्म-लग्नेश जन्मराशीश शुभग्रह लग्नमें हो तो उस लग्नमें गमन शुभ होता है जो वे पापग्रहभी हों तथापि गमन लग्नमें शुभ होते हैं और जन्मलग्न जन्मराशिभी यात्रा लग्नमें शुभ कही हैं ॥ ४१ ॥

(रथोद्धता) जन्मराशितनुतोष्टमेथवास्वारिभाच्चरिपुभेतनुस्थिते ॥
लग्नगास्तदधिपायदाथवास्युर्गतंहिनृपतेर्मृतिप्रदम् ॥ ४२ ॥

जन्मराशि जन्मलग्नसे अष्टमराशिलग्नमें तथा शत्रुकी जन्मराशि जन्मलग्नसे

छटी राशि यात्रालग्नमें अथवा अपने जन्मराशिलग्नसे अष्टममें शत्रुकी जन्मराशि लग्नोंसे छठे उनके स्वामी यात्रालग्नमें हो तो यात्री राजाकी मृत्यु होवे ग्रंथांतरोंमें जन्मराशिलग्नसे व्ययराशिभी अशुभ कही है ॥ ४२ ॥

(शालिनी) लग्नेचन्द्रेवापिवर्गोत्तमस्थेयात्राप्रोक्तावाञ्छितार्थैकदात्री ॥
अम्भोराशौवातदंशेप्रशस्तंनौकायानंसर्वसिद्धिप्रदायि ॥ ४३ ॥

मीन कुंभको छोडकर लग्नवर्गोत्तम हो अथवा चंद्रमा वर्गोत्तममें हो तो यात्रा मनोवांछित देनेवाली होती है और जलचरराशि लग्नमें हो अथवा जलचरराशिका अंश लग्नमें हो तो (नौकायात्रा) तरीका सफर सिद्धि देनेवाली होती है॥ ४३॥

(इं०व०) दिग्द्वारभेलग्नगतेप्रशस्तायात्रार्थदात्रीजयकारिणीच ॥
हानिंविनाशंरिपुतोभयंचकुर्यात्तथादिक्प्रतिलोमलग्ने ॥४४॥

दिग्द्वारलग्नोंमें यात्रा शुभ धन एवं जय करती है दिग्द्वार १।५।९ पूर्व २।६।१० दक्षिण ३।७।११ पश्चिम ४।८।१२ उत्तरके हैं जो प्रतिलोमलग्न जैसे १।५।९ पश्चिम ४।८।१२ दक्षिण आदि हो तो हानि धननाश वा शत्रुसे भय होवे ॥ ४४ ॥

(व० ति०) राशिःस्वजन्मसमयेशुभसंयुतोयोयःस्वारिभान्निधनगोपिचवेशिसंज्ञः ॥ लग्नोपगःसगमनेजयदोथ
भूपयोगैर्गमोविजयदोमुनिभिःप्रदिष्टः ॥ ४५ ॥

यात्रीके जन्मसमयमें जो राशि शुभग्रहोंसे युक्त हो वह यात्रालग्नमें जय देती है अथवा शत्रुके राशिलग्नसे अष्टमराशि तथा जो राशि (वेशि) सूर्य राशिसे दूसरी हो तो वहभी यात्रा लग्नमें विजय देती है अथवा जातकोक्त राजयोग यात्रामें हों तो वह यात्रा जय देनेवाली मुनियोंने कही है ॥ ४५ ॥

(उ० जा०) सूर्यःसितोभूमिसुतोथराहुःशनिःशशीज्ञश्चबृहस्पतिश्च ॥
प्राच्यादितोदिक्षुविदिक्षुचापिदिशामधीशाःक्रमतःप्रदिष्टाः ॥ ४६ ॥

क्रमसे दिशा विदिशाओंके स्वामी कहते हैं कि पूर्वका सूर्य आग्नेयका शुक्र दक्षिणका मंगल नैर्ऋत्यका राहु पश्चिमका शनि वायव्यका चंद्रमा उत्तरका बुध ईशानका बृहस्पति दिगीश हैं ॥ ४६ ॥

(तनुमध्या) केन्द्रेदिगधीशेगच्छेद्वनीशः ॥
लालाटिनितस्मिन्नेयाद्रिसेनाम् ॥ ४७ ॥

दिगीश यात्रालग्नसे केंद्रमें हो तो राजा यात्रा करे परंतु उस दिगधीशपर लालाटि (वक्ष्यमाण) हो तो शत्रुसेनामें न जावे ॥ ४७ ॥

(शा० वि०) प्राच्यादौतरणिस्तनौभृगुसुतोलाभव्ययेभूसुतः
कर्मस्थोथतमोनवाष्टमगृहेसौरिस्तथासप्तमे ॥
चन्द्रःशत्रुगृहात्मजेपिचबुधःपातालगोगीष्पति-
र्वित्तभ्रातृगृहेविलग्नसदनाल्लालाटिकाःकीर्तिताः ॥ ४८ ॥

लग्नके सूर्यमें पूर्वको लालाटि तथा आग्नेयको शुक्रके ११।१२ भावमें होनेसे और दशम मंगल दक्षिणको ८।९ भावमें, राहु नैर्ऋत्यको शनि सप्तम, पश्चिमको चंद्रमा ६।५ में, वायव्यको बुध चतुर्थ उत्तरको बृहस्पति २।३ में ईशानको लालाटिक होता है लालाटि दिक्स्वामीको छोडके यात्रा करनी ॥ ४८ ॥

ई २ गु पू आ शु
१२ शु
ई ३ १ म ११
गु आ
बु
उ ४ म
द १०
श
वा ५ रा
च ७ प ९ नै
च ६ वा रा ८ नै

(अनु०) मृगेगत्वाशिवेस्थित्वादितौगच्छन्जयेद्रिपून् ॥
मैत्रेप्रस्थायशाक्रेहिस्थित्वामूलेव्रजंस्तथा ॥ ४९ ॥

(इं० व०) प्रस्थायहस्तेनिलतक्षधिष्ण्येस्थित्वाजयार्थीप्रवसेत्द्विदैवे ॥
वस्वन्त्यपुष्येनिजसीम्निचैकरात्रोषितःक्ष्मांलभतेवनीशः ॥५०॥

मृगशिरमें अपने घरसे दूसरे घरमें जाकर आर्द्रामें वहीं रहे तद पुनर्वसुमें ग्रामसे बाहर गमन करे तो शत्रुको जीतता है (१) तथा अनुराधामें प्रस्थान ज्येष्ठामें स्थिति मूलमें गमन (२) हस्तमें प्रस्थान चित्रा स्वातीमें स्थित रहकर विशाखामें गमन (३) ये तीन योग जय देनेवाले हैं तथा धनिष्ठा रेवती पुष्यमें चलकर अपने नगरके अंत्यमें एकरात्रि रहकर आगे जावे तौ राजा शत्रुसे भूमि जीते ॥ ४९ ॥ ५० ॥

(अनु०) उषःकालोविनापूर्वांगोधूलिःपश्चिमांविना ॥
विनोत्तरांनिशीथःसन्यानेयाम्यांविनाभिजित् ॥ ५१ ॥

उषःकालमें पूर्व गोधूलीमें पश्चिम अर्द्धरात्रिमें उत्तर मध्यान्हमें दक्षिण यात्रा न करना प्रयोजन यह है कि सूर्य ८ दिशाओंमें आठों प्रहरोंमें रहता है वह सन्मुख न होना चाहिये ॥ ५१ ॥

(अनु०) लग्नाद्भावाःक्रमादेहकोशधानुष्कवाहनम् ॥
मन्त्रोरिर्मार्गआयुश्चहृद्व्यापारागमव्ययाः ॥ ५२ ॥

क्रमसे १२ भावोंके नाम॥देह १ कोश (धन) २ धानुष्क ३ वाहन ४ मंत्र ५ अरि ६ मार्ग ७ आयु ८ हृदय ९ व्यापार१० आगम११व्यय१२ भावोंके संज्ञा ये हैं इनमें शुभयोग दृष्टिसे अशुभफल यथा संज्ञकोंको होता है ॥ ५२ ॥

(शालिनी) केन्द्रेकोणेसौम्यखेटाःशुभाःस्युर्यानेपापास्त्र्यायषट्खेषुचन्द्रः॥
नेष्टोलग्नान्त्यारिरन्ध्रेशनिःखेऽस्तेशुक्रोलग्नेट्नगान्त्यारिरन्ध्रे ॥५३॥

शुभग्रह केंद्र १ । ४ । ७ । १० कोणों ५ । ९ में पापग्रह ३ । ११ । ६ में चन्द्रमा १ । १२ । ६ । ८ रहितस्थानमें शनि १० रहितभावोंमें शुक्र ७ रहितभावोंमें शुभफल देते हैं अन्योंमें अशुभफल यात्रामें देते हैं तथा लग्नेश ७। १२ । ६ । ८ भावोंमें मृत्युफल देता है प्रत्येक ग्रहोंके भावचक्रमें हैं॥५३॥

(पादाकुलकम्) योगात्सिद्धिर्धरणिपतीनामृक्षगणैरपिभूदेवानाम् ॥
चौराणामपिशुभशकुनैरुक्ताभवतिमुहूर्तैरपिमनुजानाम् ॥५४॥

राजाओंको यात्रालग्नसे वक्ष्यमाण सहित योगोंसे तिथ्यादि अयोग्य हुयेमेंभी सिद्धि होती है ब्राह्मणोंको (नक्षत्रगुण) चन्द्रताराबलादिसे, चौरोंको केवल शुभाशुभ शकुनहीसे तथा शिवालिखितसेभी, अन्यजनों को (मुहूर्त) शिवालिखित तथा उद्वेगादि वेलाओंमें सिद्धि होती है यहां ब्राह्मण द्विजातिके अर्थमें है यह पद ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनहूंका बोधक है तथा जिनको जो सिद्धिद (जैसे राजाओंको योग) कहे हैं इनमेंभी दिक्शूलादि मुख्य दोष भद्रा रिक्ता-आदि पंचांगदोषविचार सर्वथा मुख्यही है ॥ ५४ ॥

यात्रालग्नवशाद्ग्रहभावफलचक्रम्.

भा.	सर्य्य	चद्रमा	मगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु
१	अनेककष्ट	अनेककष्ट	अनेककष्ट	सुख	सुख	सुख	अनेककष्ट	क्षुधादिरोग
२	धनहानि	प्रियमगम	मृत्यु	धर्मादिलाभ	पुत्रलाभ	धर्मादिलाभ	बधन	उत्पात
३	धन	आयु	जय	लाभ	कीर्ति	सोख्य	लाभ	लाभ
४	दु ख	वृद्धि	दु ख	लाभ	शत्रुनाश	भोग	हानि	क्षय
५	भय	शुभ	भय	सिद्धि	अर्थसिद्धि	शत्रुनाश	सिद्धि	भय
६	लाभ	हानि	लाभ	शत्रुहानि	सिद्धि	धनहानि	शत्रुहानि	जय
७	नाश	सुख	नाश	मित्रागम	स्त्रीलाभ	नाश	नाश	नाश
८	शत्रुवृद्धि	शत्रुवृद्धि	भय	नैरुज्य	रक्षा	अर्थसिद्धि	भय	शत्रुवृद्धि
९	अशुभ	शुभ	अशुभ	धनश्री	श्रीर्धनम्	अतिसौख्य	उपद्रव	उपद्रव
१०	जय	पुष्टि	राज्य	कामद	शुभ	राज्यलक्ष्मी	दीर्घरोग	वरापनोद
११	जय	जय	जय	लाभ	कीर्ति	शत्रुक्षय	विजय	सोख्य
१२	कष्ट	शत्रुवृद्धि	मृत्यु	धनहानि	धनहानि	धनहानि	मृत्यु	कष्ट

(मञ्जुभाषिणी) सहजेरविर्दशमगश्चन्द्रमाशनिमङ्गलौरिपुगृहेसितःसुते ॥
हिबुकेबुधोगुरुरपीहलग्नगःसजयत्यरीन्प्रचलितोचिरान्नृपः ॥५५॥

यात्रायोग ॥ तीसरा सूर्य दशम चन्द्रमा छठे शनी मंगल पंचम शुक्र चतुर्थ बुधलग्नमें बृहस्पति हो ऐसे लग्नमें राजा यात्रा करे तो थोडेही समयमें शत्रुको जीतता है ॥ ५५ ॥

(गाथा) भ्रातरिशौरिर्भूमिसुतोवैरिणिलग्नेदेवगुरुः ॥
आयगतेर्केशत्रुजयश्चेदनुकूलोदैत्यगुरुः ॥ ५६ ॥

तीसरा शनि छठा मंगल लग्नमें बृहस्पति ग्यारहवां सूर्य हो ऐसे योगमें यदि शुक्र अनुकूल (पृष्ठगत) हो तो यात्री शत्रुको जीते ॥ ५६ ॥

(गाथा) तनौजीवइन्दुर्मृतौवैरिगोर्कः ॥
प्रयातोमहींद्रोजयत्येवशत्रून् ॥ ५७ ॥

लग्नमें बृहस्पति आठवां चंद्रमा छटा सूर्य हो तो यात्री राजा शत्रुको जीते ५७॥

(सुप्रतिष्ठायां पङ्क्तिच्छन्दः) लग्नगतःस्याद्देवपुरोधाः ॥
लाभधनस्थैःशेषनभोगैः ॥ ५८ ॥

यात्रालग्नमें बृहस्पति हो अन्य ग्रह ११।२में हों तो राजाका विजय होवे ५८

(पङ्क्तौ मत्ता) द्यूनेचन्द्रेसमुदयगेर्केजीवेशुक्रेविदिधनसंस्थे ॥
ईदृग्योगेचलतिनरेशोजेताशत्रून्गरुडइवाहीन् ॥ ५९ ॥

सप्तमस्थानमें चंद्रमा लग्नमें सूर्य बृहस्पति बुध शुक्र दूसरे भावमें हो इस प्रकार-के योगमें राजा चले तो सर्पोंको गरुड जैसा वैसा शत्रुओंको जीते ॥ ५९ ॥

(अनु० चित्रपदा) वित्तगतः शशिपुत्रोभ्रातरिवासरनाथः ॥
लग्नगतोभृगुपुत्रः स्युःशलभाइवसर्वे ॥ ६० ॥

बुध धनस्थानमें सूर्य तीसरा शुक्र लग्नमें हो ऐसे योगमें राजा यात्रा करे तो उसके शत्रु (शलभ) टीडी जैसे आपही उडकर अग्निमें भस्म हो जाते हैं ऐसी उड जावें युद्धभी न करना पडे ॥ ६० ॥

(गाथा) उदयेरविर्यदिसौरिररिगःशशिदशमेपि ॥
वसुधापतिर्यदियातिरिपुवाहिनीवशमेति ॥ ६१ ॥

लग्नमें सूर्य छठा शनी दशम चंद्रमा हो ऐसे योगमें राजा गमन करे तो शत्रु सेनाको अपने वशमें कर लेवे ॥ ६१ ॥

(जगति जलोद्धतगतिः) तनौशनिकुजौरविर्दशमभेबुधो
भृगुसुतोपिलाभदशमे ॥ त्रिलाभरिपुभेषु
भूसुतशनीगुरुज्ञभृगुजास्तथाबलयुताः॥ ६२ ॥

लग्नमें शनी मंगल दशम सूर्य १०। ११ में बुध तथा शुक्र हों ऐसे योगमें राजा यात्रा करे तो विजय होवे ॥ ६२ ॥

(गाथा) समुदयगेविबुधगुरौमदनगतेहिमकिरणे ॥
हिबुकगतौबुधभृगुजौसहजगताःखलखचराः ॥ ६३ ॥

लग्नमें बृहस्पति सप्तममें चंद्रमा चतुर्थ बुध शुक्र तीसरे पापग्रह हों ऐसे योगमें राजा यात्रा करे तो विजय होवे ॥ ६३ ॥

(त्रिष्टुभ्,सुमुखी) त्रिदशगुरुस्तनुगोमदनेहिमकिरणोरविरायगतः ॥
सितशशिजावपिकर्मगतौरविसितभूमिसुतःसहजे ॥ ६४ ॥

लग्नमें बृहस्पति सप्तम चंद्रमा ११ में सूर्य १० में बुध शुक्र तीसरे शनि मंगल हों ऐसे योगमेंभी वही फल है ॥ ६४ ॥

(त्रिष्टुभ्, श्रीछन्दः) देवगुरौवाशशिनितनुस्थेवासरनाथेरिपुभवनस्थे ॥
पञ्चमगेहेहिमकरपुत्रःकर्मणिसौरिःसुहृदिसितश्च ॥ ६५ ॥

बृहस्पति अथवा चंद्रमा लग्नमें सूर्य छटा बुध पंचम शनि दशम शुक्र चतुर्थ हो ऐसे योगमें यात्रा करनेवाले राजाकी जय होवे ॥ ६५ ॥

(जगति,प्रमुदितवदना) हिमकिरणसुतोबलीचेत्तनौत्रि-
दशपतिगुरुर्हिकेन्द्रस्थितः॥ व्ययगृहसहजा-
रिधर्मस्थितोयदिचभवतिनिर्बलश्चन्द्रमाः ॥ ६६ ॥

बलवान् बुध लग्नमें बृहस्पति केंद्रमें तथा बलरहित चंद्रमा १२ । ३ । ६ । ९ । ८ में हो तो इस योगकाभी यात्रामें पूर्वोक्तही फल है ॥ ६६ ॥

(जगति, अभिनवतामरसा) अशुभखगैरनवाष्टमदस्थैर्हि-
बुकसहोदरलाभगृहस्थः ॥ कविरिहकेन्द्रगगी-
ष्पतिदृष्टोवसुचयलाभकरःखलुयोगः ॥ ६७ ॥

पापग्रह ९ । ८ । ७ रहित स्थानोंमें शुक्र ४ । ३ । ११में हो इसे केंद्रस्थ बृहस्पति देखे ऐसे योगमें राजा यात्रा करे धनका समूह एवं विजयभी मिले ॥ ६७ ॥

(जगति, प्रमिताक्षरा) रिपुलग्नकर्महिबुकेशशिजेपरिवीक्षि-
तेशुभनभोगमनैः ॥ व्ययलग्नमन्मथगृहे-
षुजयःपरिवर्जितेष्वशुभनामधरैः ॥ ६८ ॥

बुध ६ । १ । १० । ४ में शुभग्रहोंसे दृष्ट हो १२ । १।७ भावोंसे रहित स्थानोंमें पापग्रह हों ऐसे योगमें राजा यात्रा करे तो विजय पावे ॥ ६८ ॥

(जगति, मणिमाला) लग्नेयदिजीवःपापायदिलाभेक-
मण्यपिवाचेद्राज्याधिगमःस्यात् ॥ द्यूनेबु-
धशुक्रौचन्द्रोहिबुकेवातद्वत्फलमुक्तंसर्वैर्मुनिवर्यैः ॥६९॥

लग्नमें बृहस्पति अथवा ११ । १० में पापग्रह हो तो राज्य मिले तथा ७ में बुध शुक्र ४ में चंद्रमा हो तो मुनियोंने वही फल कहा है ॥ ६९ ॥

(अतिजगति, चन्द्रिका) रिपुतनुनिधनेशुक्रजीवेन्दवो
ह्यथबुधभृगुजौतुर्यगेहस्थितौ ॥ मदनभवन-
गश्चन्द्रमावाम्बुगःशशिसुतभृगुजान्तर्गतश्चन्द्रमाः ॥७०॥

छठा शुक्र लग्नमें बृहस्पति अष्टम चंद्रमा हो तो यात्री राजाकी जय होवे अथवा बुध शुक्र चतुर्थमें चंद्रमा सप्तम हो तो वही फल है तथा चतुर्थ चंद्रमा बुध शुक्रके बीच हो तौभी वही फल है ॥ ७० ॥

(गाथा) सितजीवभौमबुधभानुतनूजास्तनुमन्मथा-
रिहिबुकत्रिगृहेचेत् ॥ क्रमतोरिसोदरखशा-
त्रवहोराहिबुकायगैर्गुरुदिनेखिलखेटैः ॥ ७१ ॥

लग्नमें शुक्र सप्तममें बृहस्पति छठा मंगल चौथा बुध तीसरा शनि यात्रालग्नमे हो तो यायी राजाका विजय होवे बृहस्पतिके दिनमें सूर्य छठा चंद्रमा ३ में मंगल १ में बुध ६ में बृहस्पति १ में शुक्र ४ में शनि ११ हों तौभी वही फल है ॥ ७१ ॥

(अतिजगति, मंजुभाषिणी) सहजेकुजौनिधनगश्चभार्ग-
वोमदनेबुधोरविररौतनौगुरुः ॥ अथचेत्स्युरीज्य-
सितभानवोजलत्रिगताहिंसारिरुधिरोरिपुस्थितौ ॥७२॥

तीसरा मंगल ८ में शुक्र ७ में बुध ६ में सूर्य १ में बृहस्पति हो तो यात्री विजय पावे अथवा बृहस्पति शुक्र सूर्य तृतीय चतुर्थमें यथावकाश हों शनि मंगल छटे हों तौभी वही फल है ॥ ७२ ॥

(अतिधृत्यां, शा० वि०) एकोज्ञेज्यसितेषुपञ्चमतपःकेन्द्रेषु
योगस्तथाद्वौचेत्तेष्वधियोगएषुसकलायोगाधियोगः स्मृतः ॥

योगेक्षेममथाधियोगगमनेक्षेमंरिपूणांवधंचाथोक्षेमयशोवनीश्च लभतेयोगाधियोगेव्रजन् ॥ ७३ ॥

पंचम नवम ५ । ९ केंद्रों १ । ४ । ७ । १० में बुध बृहस्पति शुक्रमेंसे एक हो तो योग हुआ दो हो तो अधियोग तीनही हों तो योगाधियोग होता है यात्रालग्नसे योग हो तो क्षेम अधियोग हो तो क्षेम तथा शत्रुवधभी और योगाधियोग हो तो यायी राजा शत्रुको मारकर राज्य पावे उक्त ३ ग्रहोंके केंद्र-कोणोंमें पृथक् संख्या नाभसयोगोंके सदृश १०८ भेद हैं ॥ ७३ ॥

(ज० तोटक) इषमासितादशमीविजयाशुभकर्मसुसिद्धिकरीकथिता ॥ श्रवणर्क्षयुतासुतरांशुभदानृपतेस्तुगमेजयसंधिकरी ॥ ७४ ॥

आश्विनमासकी शुक्लदशमी विजयासंज्ञका है यह समस्तशुभकार्य्योंमें सिद्धि करनेवाली है श्रवण नक्षत्रभी इसमें हो तो अतिशय शुभफल देती है राजाके यात्रामें यह विजय तथा (सिद्धि) कार्यसिद्धि देती है अथवा संधिकरीभी पाठ है संधि मिलापको कहते हैं ॥ ७४ ॥

(व० ति०) चेतोनिमित्तशकुनैरतिसुप्रशस्तैर्ज्ञात्वावि-लग्नबलमुर्व्यधिपःप्रयाति ॥ सिद्धिर्भवेदथपुनः शकुनादितोपिचेतोविशुद्धिरधिकानचतांविनेयात् ॥ ७५ ॥

चित्तकी प्रसन्नता, शुभशकुन, (निमित्त) अंगस्फुरणादियोंका विचार शुभ जानके तथा लग्नबल देखके यदि राजा यात्रा करे तो कार्यसिद्धि होवे अशुभ शकुन, निमित्त, लग्न तथा चित्तकी अप्रसन्नतामें मरण वा धनहानि होती है शकुनादियोंसेभी चित्तकी शुद्धि प्रबल है विना चित्तकी शुद्धि, श्रद्धा वा प्रसन्नताके शुभलक्षणोंमेंभी न जावे ॥ ७५ ॥

(विषमे, वसन्तमालिका) व्रतबन्धनदैवतप्रतिष्ठाकरपीडो-त्सवसूतकासमाप्तौ ॥ नकदापिचलेदकाल-विद्युद्घनवर्षातुहिनेपिसप्तरात्रम् ॥ ७६ ॥

व्रतबंध, देवप्रतिष्ठा, विवाह, होलिकादि उत्सव, दोनहूं प्रकारका सूतक,

इतने कामोंमें इनकी स्वतंत्रोक्त अवधी पूरी हुये विना यात्रा न करनी तथा विनासमय बिजुरी वा वज्र, मेघगर्जन वर्षा (नीहार) बर्फ पडें तो सात रात्रि-पर्यंत यात्रा न करनी अपने समयोंपर इनका दोष नहीं ॥ ७६ ॥

(वंशस्थविरा) महीपतेरेकदिनेपुरात्पुरेयदाभवेतांगमनप्रवेशकौ ॥
भवारशूलप्रतिशुक्रयोगिनीर्विचारयेन्नैवकदापिपण्डितः ॥ ७७ ॥

यदि राजाके एकनगरसे दूसरे नगरमें जाना अर्थात् गमन प्रवेश एकही दिनमें हो जावें तो यथावकाश पंचांगशुद्धिमात्र देखनी चाहिये नक्षत्रशूल, वारशूल, प्रतिशुक्र, योगिनी इतने दोष पंडित न विचारे यदि गमन दिनसे अन्य दिनमें गम्यस्थानमें प्रवेश हो तो उक्त सभी विचारने ॥ ७७ ॥

(आर्या) यद्येकस्मिन्दिवसेमहीपतेर्निर्गमप्रवेशौस्तः ॥
तर्हिविचार्य्यःसुधियाप्रवेशकालोनयात्रिकस्तत्र ॥ ७८ ॥

यदि राजाका एकही दिनमें (निर्गम प्रवेश) घरसे उठकर अभीष्ट स्थानमें प्रवेश हो तो बुद्धिमानने प्रवेशकाल प्रवेशोक्त मुहूर्त्त देखना यात्रोदित मुहूर्त्त न विचारना ॥ ७८ ॥

(अनुष्टुप्) प्रवेशान्निर्गमंतस्मात्प्रवेशंनवमेतिथौ ॥
नक्षत्रेपितथावारेनैवकुर्यात्कदाचन ॥ ७९ ॥

गृहप्रवेशसे नवम तिथि नक्षत्रवारमें पुनर्गमन वा गमनसे पुनः प्रवेश न करना ग्रंथांतरोंमें नवममास वर्षमेंभी न करना कहा है ॥ ७९ ॥

(शालिनी) अग्निंहुत्वादेवतंपूजयित्वा नत्वाविप्रानर्चयित्वादिगीशम् ॥
दत्त्वादानंब्राह्मणेभ्योदिगीशंध्यात्वाचित्तेभूमिपालोधिगच्छेत् ॥ ८० ॥

राजा होम करके इष्टदेवताको पूजके ब्राह्मणोंको नमस्कार करके जिस दिशा जाना है उसके स्वामीको पूजके अनेक प्रकार दान ब्राह्मणोंको देके दिगी-शका मनसे ध्यान करके यात्रा करे ॥ ८० ॥

(शा० वि०) कुल्माषांस्तिलतण्डुलानपितथामाषांश्चगव्यंदधि
त्वाज्यंदुग्धमथैणमांसमपरंतस्यैवरक्तंतथा ॥

तद्वत्पायसमेवचाषपललंमार्गंचशाशंतथा
षाष्टिक्यंचप्रियंग्वपूपमथवाचित्राण्डजान्सत्फलम् ॥८१॥
कौर्मंसारिकगौधिकंचपललंशाल्यंहविष्यंहयाद्दक्षेस्यात्कृसरान्नमु-
द्गमपिवापिष्टंयवानांतथा॥मत्स्यान्नंखलुचित्रितान्नमथवादध्यन्नमे-
वंक्रमाद्भक्ष्याभक्ष्यमिदंविचार्यमतिमान्भक्षेत्तथालोकयेत् ॥ ८२ ॥

नक्षत्रोंके दोहद कहते हें ॥ अश्विनीमें उरद चावल, एवं २ में तिल चावल ३ में उरद ४ गौका दही ५ गौका घी ६ गौका दूध ७ हरिणका मांस ८हरिणका रुधिर ९ में पायस १० चाषपक्षिका मांस ११ में मृगमांस १२ शशेका मांस १३ में (साठी) धान १४ (प्रियंगु) कांगनी १५ घीका पकवान १६ (चित्रपक्षी) तीतर १७ उत्तम फल १८ कछुवेका मांस १९ (सारिका) मैनाका मांस २० गोधाका मांस २१ (शाल्य) शौलेका मांस २२ (हविष्य) मुद्गादि २३ खिचरी २४ (मुद्गान्न) मूंगकी खिचरी २५ जौंका सतुवा २६ मच्छीके मांस सहित भात २७ अनेक पकवान २८ में दहीभात है इन वस्तुओंको देश, कुलआचारके अनुसार खाना वा देखना सूंघना वा स्पर्श करना इस कृत्यसे नक्षत्रोक्त दोष नहीं होता ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

(अ०) आज्यंतिलौदनंमत्स्यंपयश्चापियथाक्रमम् ॥
भक्षयेद्दोहदंदिश्यमाशांपूर्वादिकांव्रजेत् ॥ ८३ ॥

दिशाओंके दोहद ॥ पूर्वदिशा जानेमं घी दक्षिण जानेमें तिलमिश्रित भात पश्चिम जानेमें मछली उत्तर जानेमें दूध खाकर जाना इससे कोहीभी दुष्ट फल नहीं होता ॥ ८३ ॥

(अ०) रसालांपायसंकाञ्जिशृतंदुग्धंतथादधि ॥
पयोश्रितंतिलान्नंचभक्षयेद्वारदोहदम् ॥ ८४ ॥

वारदोहद ॥ रविवारको शिखरिण चंद्रको पायस मंगलको कांजिक बुधको काढा हुआ दूध गुरुको दही शुक्रको कच्चा दूध शनिको तिलौदन, खायके गमन करना ॥ ८४ ॥

(व० ति०) पक्षादितोर्कदलतण्डुलवारिसर्पिःश्राणाहविष्यमपिहेमजलंत्वपूपम् ॥ भुक्त्वाव्रजेद्रुचकमम्बुचधेनुमूत्रंयावान्नपायसगुडानसृगन्नमुद्गान् ॥ ८५ ॥

तिथिदोहद ॥ प्रतिपदाको आंकके पत्र एवं २ को चावलोंका धोवन ३ को घी ४ (यवागू) अमली ५ हविष्यान्न ६ सोनेका धोवन ७ पुआ ८ बिजोराफल ९ जल १० गोमूत्र ११ जौ १२ पायस १३ गुड १४ रुधिर १५ मुद्गान्न खायके यात्रा करनी ॥ ८५ ॥

(प्रहर्षिणी) उद्धृत्यप्रथमतएवदक्षिणाङ्घ्रिंद्वात्रिंशत्पदमभिगम्यदिङ्ययानम् ॥ आरोहेत्तिलघृतहेमताम्रपात्रंदत्त्वादौगणकवरायचप्रगच्छेत् ॥ ८६ ॥

राजाने यात्रासमयमें प्रथम दाहिना पैर उठायके ३२ पैर पैदल चलना तदा वक्ष्यमाणसवारीमें आरोहण करना उस समय ज्योतिषीको तिल, घी, सुवर्ण, तांबेका पात्र दान दे यथाशक्ति भूयसी देके गमन करना ॥ ८६ ॥

(अनु०) प्राच्यांगच्छेद्गजेनैवदक्षिणस्यांरथेनच ॥ दिशिप्रतीच्यामश्वेनतथोदीच्यांनरैर्नृपः ॥ ८७ ॥

पूर्वदिशायात्रामें हाथी दक्षिणको रथ पश्चिमको घोडा उत्तरको मनुष्योंकी सवारीमें जाना ॥ ८७ ॥

(पादाकुल) देवगृहाद्वागुरुसदनाद्वास्वगृहान्मुख्यकलत्रगृहाद्वा ॥ प्राश्यहविष्यंविप्रानुमतःपश्यन्शृण्वन्मङ्गलमेयात् ॥ ८८ ॥

यात्रासमयमें देवताके पूजन गृहसे अथवा गुरुस्थानसे अथवा अपने शयनस्थान (आवास) से अथवा बहुत स्त्रीसंभवमें मुख्य स्त्री (पटरानी) के घरसे (हविष्य) यज्ञभाग हवनांतमें प्राशन करके (ब्राह्मणके अनुमत) ब्राह्मण इदं विष्णु०इत्यादि मंत्रसे प्रथम पैर उठाकर जानेकी आज्ञा देता है तथा मंगलशब्द गीतवाद्य कलशादि सुनता देखता गमन करे ॥ ८८ ॥

(प्रहर्षिणी) कार्याद्यैरहगमनस्यचेद्विलम्बोभूदेवादिभिरुपवीतमायुधंवा ॥ क्षौद्रंचामलफलमाशुचालनीयंसर्वेषांभवतियदेवहृत्प्रियंवा ॥ ८९ ॥

यात्रामुहूर्तमें यदि कार्यवशात् गमनमें विलंब हो तो ब्राह्मणने यज्ञोपवीत क्षत्रियने शस्त्र वैश्यने मधु शूद्रने नारिकेलादि फल तत्कालमें चलाय देना इसे प्रस्थान कहते हैं अथवा सभीने अपने मनकी प्रियवस्तु प्रस्थान करनी ॥ ८९॥

(मन्दाक्रान्ता) गेहाद्गेहान्तरमपिगमस्तर्हियात्रेतिगर्गः
सीम्नःसीमान्तरमपिभृगुर्बाणविक्षेपमात्रम् ॥
प्रस्थानंस्यादितिकथयतेथोभरद्वाजएवं
यात्राकार्य्याबहिरपिपुरात्स्याद्वसिष्ठोब्रवीति ॥९०॥

प्रस्थानका परिमाण कहते हैं कि अपने घरसे समीपवर्ति घरमेंभी गर्गाचार्य्य यात्राही कहता है तथा अपनी सीमा (सरहद) से दूसरी सीमामें भृगु कहता है तथा बडे जोरसे बाण जितने दूर जाता है उतने पर्यंत भरद्वाज कहता है तथा नगरसे बाहरही यात्रा, प्रस्थान करना वसिष्ठ करना है सभी ठीक है ॥ ९० ॥

(व० ति०) प्रस्थानमत्रधनुषांहिशतानिपञ्चकेचिच्छतद्वयमु-
शन्तिदशैवचान्ये ॥ संप्रस्थितोयइहमन्दिरतः
प्रयातोगन्तव्यदिक्षुतदपिप्रयतेनकार्यम् ॥ ९१ ॥

प्रस्थानको कोई (५०० धनुष) २००० हात अपने घरसे कहते हैं कोई २०० धनुष ८०० हात कहते हैं कोई १० ही धनुष कहते हैं इसमें कार्यवश समीप दूर मानना प्रस्थान गंतव्यदिशाके ओर रखना स्वयंप्रस्थान उत्तम हैं तदशक्तिमें वस्तुप्रस्थान है गमनमें प्रथम दिन थोडा दूसरे कुछ अधिक एवं क्रमसे दीर्घयात्रामें गमन करना ॥ ९१ ॥

(स्रग्धरा) प्रस्थानेभूमिपालोदशदिवसमभिव्याप्यनैकत्रतिष्ठे-
त्सामन्तःसप्तरात्रंतदितरमनुजःपञ्चरात्रंतथैव ॥
ऊर्ध्वंगच्छेच्छुभाहेप्यथगमनदिनात्सप्तरात्राणिपूर्वं
चाशक्तौतद्दिनेसौरिपुविजयमनामैथुनंनैवकुर्य्यात् ॥९२॥

राजा प्रस्थान करके दश दिन एकजगे बैठा न रहे नहीं तो पुनः यात्रा मुहूर्त्त पूर्ववत् करना पडता है ऐसेही (मांडलिक) थोडे गांवोंका स्वामी ७ दिन इससे इतर ब्राह्मण आदि ५ दिन एकत्र न रहें दैववशात् उक्त अवधि व्यतीत हो जया

तो पुनः घर आयके शुभमुहूर्तमें यात्रा करे और यात्रादिनसे पूर्व सात रात्रिसे स्त्रीसंगम न करे यदि स्त्री ऋतुस्नातादि विषयसे ७ रात्रि पूर्व बंद न रह सके तो एक दिन पूर्व तौभी स्त्रीसंग न करे ॥ ९२ ॥

(शालिनी) दुग्धंत्याज्यंपूर्वमेवत्रिरात्रंक्षौरंत्याज्यंपञ्चरात्रेचपूर्वम् ॥
क्षौद्रंतैलंवासरेस्मिन्वमिश्चत्याज्यंयत्नाद्भूमिपालेननूनम् ॥९३॥

यात्रार्थीराजाने यात्रादिनसे पूर्व ३ रात्रिसे दूध न पीना तथा पांच रात्रि पूर्व (क्षौर) मुंडन श्मश्रुकर्म न करना और उसदिन सहद न खाना तैलाभ्यंग न करना शरीरशोधनार्थ औषधिप्रयोगसे वमनभी न करना इतने वस्तु यत्नसे निश्चय वर्जित करना ॥ ९३ ॥

(गीति) भुक्त्वागच्छतियदिचेत्तैलगुडक्षारपक्वमांसानि ॥
विनिवर्त्ततेसरुग्णःस्त्रीद्विजमवमान्यगच्छतोमरणम् ॥९४॥

यदि यात्री तैलपक्व पदार्थ गुड और दोहदसे अन्य प्रकार दूध तथा पका मांस खायके गमन करे तो (रोगी) बीमार होकर लौट आवे यदि स्त्री तथा ब्राह्मणका भर्त्सन ताडनादिसे अपमान करके जावे तो इस यात्रामें मृत्यु पावे मृत्यु ८ प्रकारकी होती है केवल शरीर छोडनाही नहीं ॥ ९४ ॥

(सन्तमाला) यदिमाः सुचतुर्षुपौषमासादिषुवृष्टिर्हिभवेदकालवृष्टिः ॥
पशुमर्त्यपदाङ्कितानियावद्वसुधास्यान्नहितायदेवदोष ॥ ९५ ॥

मेषादि ४ महीने चैत्र पर्यंत यदि वृष्टि हो तो पर्वतातिरिक्त देशोंमें अकालवृष्टि कहाती है अथवा जिस देशमें जो समय वर्षाका नहीं उसमें यदि वर्षा हो तो यात्रामें दोष है परंतु वर्षा पडनेसे पशु तथा मनुष्योंके पैरोंका चिह्न पृथ्वीमें न पडें इतनी वर्षाका दोष नहीं जब चरणचिह्न पडने योग्य वृष्टि हो तो दोष है ॥ ९५ ॥

(अतिशक्वरी, गाथा) अल्पायांवृष्टौदोषोल्पोभूयस्यांदोषोभूयान्
जीमूतानांनिर्घोषेवृष्टौवाजातायांभूपः ॥ सूर्येन्द्वोर्बिम्बेसौवर्णेकृत्वा
विप्रेभ्योदद्याद्दःशाकुन्येसाज्यंस्वर्णंदत्त्वागच्छेत्स्वेच्छाभिः ॥ ९६ ॥

अल्पवृष्टि अकालमें हो तो दोषभी अल्प है बहुतवर्षामें बहुत दोष होता है

यात्रा न करनी यदि प्रस्थान कियेमें वर्षा हो तो दोष नहीं गर्जनसहित वर्षा-काभी यात्री राजाको दोष है इतने दोषोंमेंभी यदि आवश्यक यात्रा हो तो सुवर्णके सूर्यचंद्रमाके बिंब दान करके ब्राह्मणोंको देवे यदि यात्रासमयमें दुःशकुन हो तो घी सुवर्ण दान करके स्वेच्छासे गमन करे ॥ ९६ ॥

(शा० वि०) विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं
वेश्यावाद्यमयूरचापनकुलाबद्धैकपश्वामिषम् ॥
सद्वाक्यंकुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणिमृत्कन्यका
रत्नोष्णीषसितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः ॥९७॥
आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजकामीनाज्यसिंहासनं
शावंरोदनवर्जितंध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् ॥
भारद्वाजनृयानवेदनिनदामाङ्गल्यगीताङ्कुशा
दृष्टाःसत्फलदाःप्रयाणसमयेरिक्तोघटःस्वानुगः ॥ ९८ ॥

यात्रासमयमें बहुतब्राह्मण घोडा हाथी जो उन्मत्त न हो फल अन्न दूध दही गो स्त्री श्वेतसर्सों कमल निर्मलवस्त्र वेश्या बाजे मृदंग आदि मोर चाष नेवला रस्सीसे बंधा हुआ एक पशु चौपाया (वृष) बैल मांस अच्छे वाक्य फूल (ईष) पौंडा गन्ना पूर्णकलश छत्री गीली मिट्टी कन्या रत्न पगडी श्वेतवृषभ मद्य पुत्रसहित स्त्री दीप्त अग्नि दर्पण सुर्मा धोया वस्त्र धोबी मछली घी सिंहासन (प्रेत) जिसके साथ रोते न हों पताका सहद बकरा अस्त्र धनुषादि गोरोचन भरद्वाजपक्षी सुखासन वेदध्वनि मंगलगीत गायन अंकुश इतने वस्तु यात्राके समयमें यात्रीके सन्मुख शुभ होते हैं तथा खाली घट पीछेसे परंतु जो भरनेको जाता हो वहभी शुभ होता है ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

(शा० वि०) वन्ध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणाङ्गारेन्धनक्लीबविट्-
तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रव्राट्तृणव्याधिताः॥
नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतितव्यङ्गक्षुधार्ताअसृक्
स्त्रीपुष्पंसरटःस्वगेहदहनंमार्जारयुद्धंक्षुतम् ॥ ९९ ॥

काषायीगुडतक्रपङ्कविधवाकुब्जाः कुटुम्बे कलि-
र्वस्त्रादेः स्खलनंलुलायसमरंकृष्णानिधान्यानिच ॥
कार्पासंवमनंचगर्दभरवोदक्षेतिरुड्गर्भिणी-
मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोन्धबधिरोदक्यानदृष्टाःशुभाः ॥१००॥

वांझ स्त्री चर्म अन्नकी भूसी हड्डी सर्प नीमक निर्धूम अग्नि (काष्ठ) जला-नेकी लकडी हिजडा विष्ठा तेल (उन्मत्त) बावला चर्बी औषधी शत्रु जटावाला संन्यासी घास वैद्य नंगा तैलाभ्यंगवाला खुले केशवाला मद्यादिसे बेहोश पडा हुवा अंगहीन भूखा रुधिर स्त्रियोंका ऋतुकुसुम कृकलास पक्षी अपने घरमें आग लगना बिल्लियोंका युद्ध छिंका भगुआ वस्त्रवाला गुड (तक्र) छाछ पांगा विध-वा स्त्री कुब्ज कुडमामें कलह वस्त्र छत्रादियोंका अकस्मात् गिरना भैंसाओंका युद्ध कृष्णधान्य माषआदि कपास वमन दाहिने ओर गदहेका शब्द बडा क्रोध गर्भवती स्त्री मुंडा हुआ गीले वस्त्रवाला दुष्टवचन अंधा बहरा रजस्वला स्त्री इतने वस्तु यात्रीको यात्रासमयमें अशुभ हैं ॥ ९९ ॥ १०० ॥

(शा० वि०) गोधाजाहकसूकराहिशशकानांकीर्तनंशोभनं
नोशब्दोनविलोकनंचकपिऋक्षाणामतोव्यत्ययः ॥
नद्युत्तारभयप्रवेशसमरेनष्टार्थसंवीक्षणेव्यत्यस्ताः
शकुनानृपेक्षणविधौयात्रोदिताः शोभनाः ॥ १०१ ॥

गोहा (जाहक) गात्रसंकोचन करनेवाला एक जीव सूकर सर्प शशा इनका नाम लेना सुनना यात्रासमयमें शुभ और इनका शब्द सुनना इनका देखना अशुभ होता है और वानर तथा उलूकका उलटे जैसे इनका नाम लेना अशुभ देखना सुनना शब्दशुभ नदी उतरनेमें भयसंबंधी कार्यमें भागनेमें गृहप्रवेशमें संग्रा-ममें नष्टवस्तुके ढूंढनेमें पूर्वोक्तशकुन शुभ अशुभ और अशुभ शुभ जानने राजाके दर्शनार्थभी यात्रोक्त शुभशकुन शुभअशुभ अशुभ होते हैं ॥ १०१ ॥

(अ०) वामाङ्गेकोकिलापल्लीपोतकीसूकरीरला ॥
पिङ्गलाछुच्छुकाः श्रेष्ठाः शिवाः पुरुषसंज्ञिताः ॥ १०२ ॥

कोकिला कबूतरी सूकरी (मैणा) रलापक्षी (पिंगला) भैरवी छिपकली छछुंदरी स्यार नरसंज्ञक कपोत खंजन तित्तिरी हंस आदि गमनवालेके बायें ओर शुभ होते हैं ॥ १०२ ॥

(अ०) छिक्करः पिक्कोभासःश्रीकण्ठोवानरोरुरुः ॥
स्त्रीसंज्ञकाः काकऋक्षश्वानः स्युर्दक्षिणाः शुभाः॥ १०३ ॥

छिक्करमृग पिक्कपक्षी भासपक्षी श्रीकंठपक्षी वानर रुरुमृग इतने स्त्रीसंज्ञक और कौवा ऋक्ष कुत्ता इतने यात्रीके दाहिने ओर शुभ होते हैं ॥ १०३ ॥

(अ०) प्रदक्षिणगताः श्रेष्ठयात्रायांमृगपक्षिणः ॥
ओजामृगाव्रजन्तोतिधन्योवामेखरस्वनः ॥ १०४ ॥

रुरुरहित मृगपक्षी यात्रामें परिक्रमा करके जावें तो शुभ परंतु विषम संख्याक मृग देखने अतिही शुभ होते हैं ऐसेही बायें ओर गदहेका शब्दभी धन्य है॥ १०४॥

(अ०) आद्येपशकुनेस्थित्वाप्राणानेकादशव्रजेत् ॥
द्वितीयेपोडशप्राणास्तृतीयेनक्वचिद्व्रजेत् ॥ १०५ ॥

यात्रामें पहिला अपशकुन हो तो ११ (प्राण) श्वासा बाहर भीतर जाने आने पर्यंत ठहरके पुनः शुभशकुन देखे जावे दूसराभी अपशकुन हो तो १६ प्राण ठहरना तीसराभी हो जावे तो न जाना ॥ १०५ ॥

(जगति, उ०जा०)यात्रानिवृत्तौशुभदंप्रवेशनंमृदुध्रुवैःक्षिप्रचरैःपुनर्गमः॥
द्वीशेनलेदारुणभेतथोग्रभेस्त्रीगेहपुत्रात्मविनाशनंक्रमात् ॥ १०६ ॥

प्रवेश ॥ नववधू प्रवेश, सुपूर्व, अपूर्व, द्वंद्वाभय ४ प्रकारके हैं यहां सुपूर्व संज्ञक है यह मृदु ध्रुवनक्षत्रोंमें करना क्षिप्र चरनक्षत्रोंमें प्रवेश करे तो पुनः गमन होवे और विशाखामें स्त्रीनाश कृत्तिकामें अग्न्यादिसे गृहनाश दारुणनक्षत्रोंमें पुत्रनाश उग्रनक्षत्रोंमें अपना नाश होवे ॥ १०६ ॥

(मंजुभाषिणी) अयनर्क्षमासतिथिकालवासरोद्भवशूल-
संमुखसितज्ञादिकपाः ॥ भृगुवक्रत.दिपरिघा-
ख्यदण्डकोयुवतीरजोप्यशुचितोत्सवादिकम् ॥१०७॥

मृतपक्षरिक्तरवितर्कसंख्यकास्तिथयश्च सौरिरविभौमवासराः ॥
अपिवामपृष्ठगविधुस्तथाडलोवसुपञ्चकाभिजित्तथापिदक्षिणे १०८
(स्रग्धरा) लग्नेजन्मर्क्षतन्वोर्मृतिगृहमहितर्क्षाच्चषष्ठंतदीशावाल-
ग्नेकुम्भमीनर्क्षनवलवतनूचापिपृष्ठोदयं च ॥ पृष्ठाशा-
मृक्षसंस्थंदशमशनिरथोसप्तमेचापिकाव्यःकेन्द्रेवक्रा-
श्चवक्रीग्रहदिवसविवाहोक्तदोषाश्चनेष्टाः ॥ १०९ ॥

इति श्रीमुहूर्तचिन्तामणौ यात्राप्रकरणं समाप्तम् ॥ ११ ॥

दोषसमुच्चय (अयनशूल) सौम्यायने सूर्यत्यादि (मासशूल २ प्रकार) वृषादि ३। ३ राशियोंके शूलमें पूर्वादिशूल १ कार्तिकादि ३। ३ पूर्वादिक शूल यह कपालकंटक २ हैं, नक्षत्र वार शूल न पूर्वदिशीत्यादि, तिथी शूल नवभूम्येति, शुक्र बुध संमुख मितर्ज्ञादिक्रूपा इत्यादि वक्रास्त पराजितादि शुक्र वक्रास्तनीचेति, परिघदंड पूर्वादिषु चतुरित्यादि स्वपत्नीरजोदर्शन, अशौच, विवाहादि प्रतिबंध, मृतपक्षनमोमुक्ततारा इत्यादि रिक्ता ४। ९। १० रवि १२ तक ६ तथा १५। ३० तिथि, शनि सूर्य मंगलवार वाम तथा पृष्ठगत चंद्रमा, रवेर्भ इत्यादि महाडल, धनिष्ठादि पंचक अभिजिन्मुहूर्त दक्षिणको तथा जन्मलग्नजन्मराशिसे अष्टमलग्नशत्रुराशिलग्नसे षष्ठस्थान तदीश, स्वजन्मराशिलग्नसे अष्टमेश शत्रुलग्न राशिसे षष्ठस्वामी इनने लग्नमें कुंभ मीन लग्ननवांश, पृष्ठोदय राशिदिकप्रतिलोमलग्न दशम शनि सप्तम शुक्र केंद्रमें वक्री ग्रह वा वक्रीग्रहका वार इनने पूर्वोक्तदोष यात्रामें अवश्य वर्ज्य हैं तथा विवाहोक्त दोष, " उत्पातान्सह पातदग्धेत्यादि " " मेन्दुक्रूर इत्यादि " पूर्वोक्तदोषभी वर्ज्य हैं इनमें मासदोष धनुरर्कादि यामित्रदोष शुक्ररहितादि मात्र दोष नहीं ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां मुहूर्तचिन्तामणिभाषायां यात्राप्रकरणं समाप्तम् ॥ ११ ॥

अथ वास्तुप्रकरणम् ।

गृहस्थीको श्रौतस्मार्तक्रिया समस्त अपने घरमें करनी चाहिये परगृह कर-

नेसे उसके फल भूमिका स्वामी ले लेता है ॥ भविष्यपुराणे ॥ "परगेहकृताः सर्वाः श्रौतस्मार्तक्रियाः शुभाः । निष्फलाः स्युर्यतस्तासां भूमीशः फलमश्नुते ॥" इति ॥ अतएव वास्तुशास्त्र कहते हैं ।

(शा० वि०) यद्भंद्व्यङ्कसुतेशदिङ्मितमसौग्रामःशुभोनामभा-
त्स्वंवर्गंद्विगुणंविधायपरवर्गाढ्यंगजैःशेषितम् ॥
काकिण्यस्त्वनयोश्चतद्विवरतोयस्याधिकाःसोर्थ-
दोथद्वारंद्विजवैश्यशूद्रनृपराशीनांहितंपूर्वतः ॥ १ ॥

अवकहडाचक्रके अनुसार नामराशिसे नगर वा ग्रामराशि २ । ९ ।५।१०। ११वी हो तो वह वास करनेको शुभ होता है और नहीं तथा जिसका नामाद्यक्षरसे जो गरुडादिवर्ग जितनवां है उसे दुगुणा करके ग्रामनामवर्ग संख्या जोडनी ८ से शेष करना जो शेष रहे वह पुरुषकी काकिणी हुई ऐसेही ग्रामकी वर्गसंख्या द्विगुणकरके पुरुषनामकी वर्ग संख्या जोडनी ८ से शेष करके जो शेष रहे वह ग्रामकी काकिणी हुई जिसकी काकिणी अधिक हो वह धन देनेवाला होता है इससे ग्रामकी काकिणी अधिक नामकी न्यून अच्छी होती है " द्वार कहते हैं " ब्राह्मण ४ । ८ ।१२ राशिवालेको पूर्व वैश्य २।६।१० को दक्षिण शूद्र ३।७।११ को पश्चिम नृप १।५।९ को उत्तरघरका द्वार करना ॥ १ ॥

(व० ति०) गोसिंहनक्रमिथुनंनिवसेन्नमध्येग्रामस्यपूर्वककुभो-
लिझपाङ्गनाश्च ॥ कर्कोधनुस्तुलभमेषघटाश्चत-
द्वद्वर्गाःस्वपञ्चमपराबलिनःस्युरैन्द्र्याः ॥ २ ॥

नवग्राम वसनेमें विचार है कि सारी सीमाके ९ भाग पूर्वोक्त वस्त्रकेसे करके मध्यभागमें २ । ५ । १० । ३ पूर्वमें ८ आग्नेयमें १२ दक्षिणमें ६ नैर्ऋत्यमें ४ पश्चिममें ९ वायव्यमें ७ उत्तरमें १ ईशानमें ११ नवसे अकारादि वर्ग ८ हो दिशाओंमें बलवान है जैसे अ० पूर्व० क० आग्नेय च० दक्षिण ट० नैर्ऋत्य त० पश्चिम० प० वायव्य य० उत्तर श०ईशान अपनेसे पंचमवैरी होता है जैसे पूर्व गरुडसे पंचम पश्चिम सर्प शत्रु इत्यादि जिसका वर्ग पूर्वबली है उसने पश्चिम द्वारमें न वसना ॥ २ ॥

(इं० व०) एकोनितेष्टर्क्षहताद्वितिथ्योरूपोनितेष्टायहतेन्दुनागैः ॥
युक्ताघनैश्चापियुताविभक्ताभूपाश्विभिःशेषमितोहिपिण्डः ॥ ३ ॥
(इं०व०पूर्वार्द्ध)स्वेष्टायनक्षत्रभवोथदैर्घ्यहृत्स्या-
द्विस्तृतिर्विस्तृतिहृच्चदीर्घता ॥

भूमि गृहोपयोगि सम विषम त्र्यस्र चतुरस्रआदि अनेक भेदोंकी होती है नाम नक्षत्रोंसे विवाहोक्त राशिकूटादि समस्त वरकन्याके सदृश देखना नामसे कल्पित नक्षत्रसे १५२ गुनना एक घटायदेना जो ध्वजादिवास्तु अभीष्ट है उसमें १ घटायके ८१ गुनके जोड देने १७ और जोडने २१६ से भाग लेना जो शेष रहे वह पिंड होता है ग्रहकर्तु अभीष्ट आयसेभी जैसे हो ॥ पिंडमें दैर्घ्यसे भाग लेके विस्तार विस्तारमे भाग लेके दैर्घ्य होता है ॥ उदाहरण नीलकंठनामका अनुराधा नक्षत्र रोहिणीके साथ मेलापक देखनेमें इष्टनक्षत्र रोहिणी ४ वास्तु विषम तीसरा सिंह ३ वर्षमें १ घटाया ३ इससे १५२ गुना किया ४५६ इष्ट वास्तु ३ एक घटायके २ मे ८१ गुन लिया १६२ पूर्वोक्त ४५६में जोड दिये ६३५ इनमें २१६ मे भाग लिया २०३ अथ कल्पितदैर्घ्य २९से भाग लिया तो ७ विस्तार आया विस्तार ७ मे भाग लिया तो २९ दैर्घ्य हुआ महाग्रहके लिये इष्ट वास्तुसहित जो क्षेत्रफल है २१६ उसमें जोडके जो १ । २ । ३ आदि इष्ट है उस से युक्त करके समाभीष्ट महाग्रहका क्षेत्रफल होता है ॥ ३ ॥

(इं०व०उत्तरार्ध०) आयाध्वजोधूमहरिश्वगोखरे
भध्वाङ्क्षकापिण्डइहाष्टशेषिते ॥ ४ ॥
(उ० जा०) ध्वजादिकाः सर्वदिशिध्वजेमुखंकार्यंहरौपूर्वयमोत्तरेतथा ॥
प्राच्यांवृषेप्राग्यमयोर्गजेथवापश्चादुदक्पूर्वयमेद्विजादितः ॥ ५ ॥

पिंड आठसे शेष करके जो शेष रहे वह ध्वजादि वास्तु होता है ध्वज १ धूम्र २ सिंह ३ कुत्ता ४ वृष ५ गदहा ६ गज ७ काक ८ ये (८) वास्तुके नाम हैं ध्वजमें सर्वदिग्द्वार सिंहमें पूर्व दक्षिणोत्तर वृषमें पूर्व गजमें पूर्व दक्षिण द्वार करना समवास्तु निषिद्ध विषम शुभ होते हैं ॥ ४ ॥५ ॥

(उ०जा०) गृहेशतत्स्त्रीसुखवित्तनाशोर्केन्दुिज्यशुक्रेविबलेस्तनीचे॥
कर्तुःस्थितिर्नोविधुवास्तुनोर्भेपुरस्थितेपृष्ठगतेखनिःस्यात्॥ ६ ॥

गृहस्वामीके जन्मराशिसे सूर्य, चंद्रमा, गुरु, शुक्र, निर्बल अस्त नीचगत हों तो क्रमसे ये फल हैं सूर्यसे गृहेशका चंद्रमासे उसकी स्त्रीका बृहस्पतिसे सुखका शुक्रसे धनका नाश ॥ दिननक्षत्र तथा ग्रहनक्षत्र सन्मुख होनेमें गृहमें वास न करना पृष्ठगत ये नक्षत्र हों तौभी योग्य नहीं चोरी (कुमल) पाड आदिसे भय फल है अर्थात् वे नक्षत्रोंके दिग्विभाग पूर्वोक्तप्रकारसे पार्श्वगत चाहिये॥ कृत्तिकादि ७ पूर्व मघादि ७ दक्षिण अनुराधादि ७ पश्चिम धनिष्ठादि ७उत्तर हैं॥६॥

(उ०जा०) भंनागतष्टंव्ययईरितोसौध्रुवादिनामाक्षरयुक्तसपिण्डः॥
तष्टोगुणैरिन्द्रकृतान्तभूपाह्यंशाभवेयुर्नशुभोन्तकोत्र ॥ ७ ॥

गृह नक्षत्र ८ से तष्ट करके जो शेष रहे वह व्यय होता है जैसे रोहिणी ८ से तष्ट करके ४ ही रहा यही व्यय हुआ इसमें ध्रुवादि शालानामाक्षरसंख्या जोडके पिंडमें जोड देना ३ से भाग लेके १ शेषमें चंद्र २ में यम ३ राजसंज्ञक अंश होते हैं इनमें यमांशक शुभ नहीं ॥ ७ ॥

(अनुष्टुप्) दिक्षुपूर्वादितःशालाध्रुवाभूद्वौकृतागजाः॥
शालाध्रुवाङ्कसंयोगः सैकोवेश्मध्रुवादिकम् ॥ ८ ॥

ध्रुवांकशालाविधिः ॥ पूर्वद्वारमें शाला ध्रुवांक १ दक्षिणमें २ पश्चिममें ४ उत्तरमें ८ जितने दिशाओंमें द्वार हों उतने ध्रुवांक जोडने एक और जोडना वह ध्रुवादि (शाला) गृह जानना ॥ ८ ॥

(पथ्यावक्त्रा) तिथ्यर्काष्टाष्टिगोरुद्रशक्रेनामाक्षरत्रयम् ॥
भूद्व्यब्धीष्वङ्गदिग्वह्निविश्वेषुद्वेनगाब्धयः ॥९ ॥

दिक्षुपूर्वादितेत्यादिसे जो ध्रुव आया उसका शाला ध्रुवांक सैककरके १५। १२। ८। १६। ९। ११ । १४ संख्यक तिथि संख्याके हो तो गृह नाम अक्षरत्रयात्मक होता है यदि १। २। ४। ५। ६। १०। ३। १३ हो तो द्व्यक्षर नाम ७ में चतुरक्षर नाम जानना यह ध्रुव धान्यादि अक्षर गिननेमें काम आता है ॥ ९ ॥

(आर्यागीतिः) ध्रुवधान्येजयनन्दौखरकान्तमनोरमंसुमुखदुर्मुखोग्रंच ॥
रिपुदंवित्तदंनाशंचाक्रंदंविपुलविजयाख्यंस्यात् ॥ १० ॥

शालाओंके नाम ॥ ध्रुव १ धान्य २ जय ३ नंद ४ खर ५ कांत ६ मनोरम ७ सुमुख ८ दुर्मुख ९ उग्र १० रिपुद ११ वित्तद १२ नाश १३ आक्रंद १४ विपुल १५ विजय १६ इनके नामसदृश फल हैं शुभार्थ लेने आक्रंदादि अशुभ छोडने ॥ १० ॥

(उ०जा०पथ्याव०) पिण्डेनवाङ्काङ्कगजाग्निनागनागाब्धिनागैर्गुणिते क्रमेण ॥ विभाजितेर्नागनगाङ्कसूर्यनागर्क्षतिथ्यर्क्षखभानुभिश्च ॥ ११ ॥

(अनु०) आयोवारोंशकोद्रव्यमृणमृक्षंतिथिर्युतिः ॥
आयुश्चातगृहेशर्क्षंगृहभैक्यंमृतिप्रदम् ॥ १२ ॥

आयादि	आ	वार	अंश	धन	ऋ	नक्षत्र	तिथि	योग	आ
गुणक	९	९	६	८	३	८	८	४	८
भाजक	८	७	९	१२	८	२७	१५	२७	१०८

पिंड ९ से गुनाकर ८ से नष्ट किया शेष वास्तु, एवं ८ से गुनाकर ७ से भाग देके शेष वार, ६ से गु० ९ भा० अंश, ८ गु० १२ भा० धन, ३ गु० ८ भा० ऋण, ८ गु० २७ भा० नक्षत्र, ८ गु० १५ भा० तिथी, ४ गु० २७ भा० योग, ८ गु० १२ भा० आयु होती है विषम वास्तु शुभ सम अशुभ शुभवार शुभ-पाप अशुभ पाप राशिनिंद्य धनाधिक शुभ ऋणाधिक अशुभ ३।५।७ तारा अशुभ गृह तथा गृहस्वामीको एक नक्षत्र मृत्यु करता है तथा राशिकूटादि विवाहतुल्य विचारना राशिगणना है कि अश्विन्यादि ३ मेष मघादि ३ सिंह मूलादि ३ धन अन्य नक्षत्र २ । २ के १ । १ राशि जाननी गृहकार्य सेव्यसेवक मित्रमित्रकी एक नाडी शुभ होती है तिथिरिक्ता अमा अशुभ १४ से पिंड गुनाकर ३० से तष्ट करके शेष तिथि होती है व्यतीपातादि दुष्टयोग अशुभ जहां दोनोंसे आयादिगुण शुभ न मिलें तो उनमें आंगुल मिलाकर क्षेत्रफल करना इसकी विधि लीलावतीसे जाननी ॥ ११ ॥ १२ ॥

(शालिनी) गेहाद्यारम्भेऽर्कभाद्वत्सशीर्षे रामैर्दाहो वेदभैरग्रपादे ॥
शून्यं वेदैः पृष्ठपादे स्थिरत्वं रामैः पृष्ठे श्रीर्युगैर्दक्षकुक्षौ ॥ १३ ॥
लाभो रामैः पुच्छगैः स्वामिनाशो वेदैर्नैःस्व्यं वामकुक्षौ मुखस्थैः ॥
रामैः पीडा संततं चार्कधिष्ण्याद्दस्रै रुद्रैर्दिग्भिरुक्तं ह्यसत्सत् ॥ १४ ॥

गृहादि प्रासाद ग्रामादिके आरंभमें सूर्यके नक्षत्रसे दिननक्षत्रपर्यंत ३ नक्षत्र वृषके शिरमें दाह फल एवं ४ अग्रपाद शून्यफल ४ पृष्ठपाद स्थिरता ३ पृष्ठमें श्रीः दक्षिण कुक्षिलाभ ३ पुच्छमें स्वामिनाश ४ वामकुक्षि दरिद्रता ३ मुखमें पीडा सर्वदा होवे यह वृषवास्तुचक्र है प्रकारांतरसे है कि सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रपर्यंत ७ अशुभ ११ शुभ १० अशुभ होते हैं ॥ १३ ॥ १४ ॥

(स्रग्धरा) कुम्भेऽर्के फाल्गुने प्रागपरमुखगृहं श्रावणे सिंहकर्कयोः
पौषे नक्रेऽथ याम्योत्तरमुखसदनं गोजगेऽर्केऽथ राधे ॥
मार्गे जूकालिगे सद्ध्रुवमृदुवरुणस्वातिवस्वर्कपुष्यैः
सूर्तागेहं त्वदित्यां हरिभविधिभयोस्तत्र शस्तः प्रवेशः ॥१५॥

कुंभके सूर्ययुक्त फाल्गुन महीनेमें पूर्वपश्चिमद्वार गृह शुभ होता है तथा ५ । ४ के सूर्यमें श्रावण १० केमें पौषमेंभी पूर्वपश्चिमद्वार शुभ और १ । २ के सूर्यसहित वैशाखमें तथा ७ । ८ के सूर्य मार्गशीर्षमें दक्षिणोत्तरद्वार गृह शुभ होता है ध्रुव मृदु शततारा स्व ती धनिष्ठा हस्त पुष्य नक्षत्र गृहारंभको शुभ है परंतु सूतिकाघरके लिये पुनर्वसुमें आरंभ श्रवण अभिजित्में प्रवेश कहा है ॥ १५ ॥

(शा० वि०) केश्चिन्मेषरवौ मधौ वृषभगे ज्येष्ठे शुचौ कर्कटे-
भाद्रे सिंहगते घटेऽश्वयुजि चोर्जेऽलौ मृगे पौषके ॥
माघे नक्रघटे शुभं निगदितं गेहं तथोर्जे नस-
त्कन्यायां च तथा धनुष्यपि नसत्कृष्णादिमासाद्भवेत् ॥ १६ ॥

(उ० जा०)पूर्णेन्दुतः प्राग्वदनं नवम्यादि पूत्तरास्यं त्वथ पश्चिमा-
स्यम्॥दर्शादितः शुक्लदलेनवम्यादौ दक्षिणास्यं न शुभं वदन्ति ॥ १७ ॥

पूर्णमासीसे कृष्णाष्टमीपर्यंत जो घर बनाया जाय तो उत्तरमुख न करना

अमासे शुक्लाष्टमीपर्यंत पश्चिममुख शुभ नहीं होता शुक्लनवमीसे चतुर्दशी पर्यंत दक्षिणास्य न करना द्वारस्थान ८१ पदवाले वास्तुचक्रसे जानना शुभनाम भागमें शुभ अशुभमें कहा है ॥ १६ ॥ १७ ॥

(अ०) भौमार्करिक्तामाद्यूनेचरोनेङ्गेविपञ्चके ॥
व्यन्त्याष्टस्थैःशुभैर्गेहारंभस्त्र्यायारिगैः खलैः ॥ १८ ॥

मंगल सूर्य्यवार रिक्ता ४ । ९ । १४ अमा प्रतिपदा अष्टमी तिथि छोडके धनिष्ठादि ५ नक्षत्र पंचक चरलग्न छोडके गृहारंभ करना तथा लग्नसे १२ । ८ रहित स्थानोंमें शुभग्रह ३ । ६ । ११ में पापग्रह शुभ होते हैं ॥ १८ ॥

(इं० व०) देवालयेगेहविधौजलाशयेराहोर्मुखंशंभुदिशोविलोमतः ॥
मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभेखातेमुखात्पृष्ठविदिक्शुभाभवेत्॥ १९॥

राहुमुखचक्रम.

	ईशान्या	वायव्या	नैर्ऋत्या	आग्नेय्या
देवालये	१२।१।२ के सू मे रा मु	३।४।५ के सू मे रा मु	६।७।८ के सू मे रा मु	९।१०।११ के सू मे रा. मु.
गृहारंभे	५।६।७ के सू मे रा मु	८।९।१० के. सू. मे रा मु	११।१२।१ के सू मे रा मु.	२।३।४ के सू. मे रा मु
जलाशये	१०।११।१२ के. सू मे रा. मु	१।२।३ के सू. मे रा. मु	४।५।६ के सू मे रा मु	७।८।९ के सू मे. रा. मु.

देवालयारंभमें राहुका मुख मीनार्कसे ३ । ३ राशियोंके सूर्यमें ईशानादि विदिशाओंमें विपरीतक्रमसे रहता जानना गृहारंभमें सिंहार्कादि ३ । ३ तथा जलाशयारंभमें मकरार्कादि ३ । ३ राशियोंके सूर्यमें वैसेही जानना प्रकट चक्रमें लिखा है इसका प्रयोजन है कि (खात) भूमिशोधन राहुके मुखसे न

करना मुखस्थविदिशासे पंचमविदिशा राहुकी पुच्छ है मुखपुच्छके बीच पीठ होता है पीठसे खात शुभ होता है जैसा देवालयखातमें मीनादि ३ चैत्र,वैशाख, ज्येष्ठमें राहुका मुख ईशान पुच्छ नैर्ऋत्य है तो विपरीत क्रमसे पीठ आग्नेयमें हुई इसीसे खातारंभ करना ॥ १९ ॥

(शालिनी)कूपेवास्तोर्मध्यदेशेर्थनाशस्त्वैशान्यादौपुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः ॥
सूनोर्नाशःस्त्रीविनाशोमृतिश्चसंपत्पीडाशत्रुतःस्याच्चसौख्यम् ॥२०॥

(कूप) कुआ घरके मध्यमें अर्थनाश ईशानादि सृष्टिमार्गसे पुष्ट्यादि, जैसे ईशानमें पुष्टि । पूर्वमें ऐश्वर्यवृद्धि । आग्नेयमें पुत्रनाश । दक्षिणामें स्त्रीनाश । नैर्ऋत्यमें गृहकर्ताकी मृत्यु । पश्चिममें शुभ । वायव्यमें शत्रुसे पीडा । उत्तरमें सुख होता है ॥ २० ॥

(व० ति०) स्नानस्यपाकशयनास्त्रभुजेश्चधान्यभाण्डारदैवतगृ-
हाणिचपूर्वतःस्युः ॥ तन्मध्यतस्तुमथनाज्यपुरीष-
विद्याभ्यासाख्यरोदनरतौषधिसर्वधाम ॥ २१ ॥

(कोठे) चतुरस्र घरके पूर्वमें स्नानका आग्नेयमें रसोईका दक्षिणमें (शयन) सोनेका नैर्ऋत्यमें (शस्त्र) हथियारोंका पश्चिममें भोजनका वायव्यमें अन्नका उत्तरमें धनका स्थान करना पशुमंदिरभी वायव्यमें शुभ होता है दिशा विदिशा-ओंके मध्यमें कहते हैं कि पूर्वाग्नेयके बीच दही बिलोनेका आग्नेय दक्षिणके मध्य घृतका दक्षिण नैर्ऋत्यके बीच (पुरीष) पायखाना नैर्ऋत्यपश्चिमके बीच पाठशाला पश्चिमवायव्यके मध्य (रोदन) गमी, शोकका स्थान उत्तरवायव्यके बीच स्त्रीसंभोग. उत्तर ईशानके मध्यमें ओषधीका ईशानपूर्वके बीचमें अन्य समस्त वस्तुमात्रका स्थान करना ॥ २१ ॥

(उ०जा०) जीवार्कविच्छुक्रशनैश्चरेषुलग्नारियामित्रसुखात्रिगेषु ॥
स्थितिःशतंस्याच्छरदांसितार्करेज्येतनुत्र्यङ्गसुतेशतेद्वे॥२२॥

आयुर्योग । बृहस्पति लग्नमें सूर्य छठा बुध सप्तम शुक्र चतुर्थ शनि तीसरा गृहारंभ लग्नसे हो तो १०० सौवर्ष घरकी आयु होवे तथा शुक्रलग्नमें सूर्य

तीसरा मंगल छठा बृहस्पति पंचम हो तो घरकी आयु २०० वर्ष होवे यह योगायु है ॥ २२ ॥

(इं० व०) लग्नाम्बरायेषुभृगुज्ञभानुभिः केन्द्रेगुरौवर्षशतायुरालयः ॥
बन्धौगुरुर्व्योम्निशशीकुजार्कजौलाभेतदाशीतिसमायुरालयः ॥२३॥

लग्नमें शुक्र दशम बुध ग्यारहवां सूर्य लग्नरहित केंद्रमें बृहस्पति हो तो १०० वर्ष तथा चतुर्थ गुरु दशम चंद्रमा मंगल शनि एकादशमें हो तो ८० वर्ष घरकी आयु होवे ॥ २३ ॥

(अनु०) स्वोच्चेशुक्रेलग्नगेवागुरौवेश्मगतेथवा ॥
शनौस्वोच्चेलाभगेवालक्ष्म्यायुक्तंचिरंगृहम् ॥ २४ ॥

उच्चका शुक्र लग्नमें हो १ वा उच्चका बृहस्पति चतुर्थमें हो अथवा उच्च २ का शनि लाभभावमें हो ३ तो वह घर लक्ष्मीसहित बहुतदिन स्थिर रहे॥२४॥

(अनु०) द्यूनाम्बरेयदेकोपिपरांशस्थोग्रहोगृहम् ॥
अब्दान्तःपरहस्तस्थंकुर्य्याच्चेद्वर्णपोऽबलः ॥ २५ ॥

गृहारंभ लग्नसे यदि एकभी कोई गृह शत्रुनवांशकी सप्तम वा दशम भावमें हो तो वह घर एक वर्षके भीतर दूसरेके हातमें चला जावे परंतु यदि वर्णश (विप्राधीशावित्यादि) निर्बल हो वर्णशके बलवान् होनेमें उक्तग्रह उक्तफल नहीं करता ॥ २५ ॥

(व० ति०) पुष्यध्रुवेन्दुहरिसार्पजलैःसजीवैस्तद्वासरेणचकृतं
सुतराज्यदंस्यात् ॥ द्वीशाश्वितक्षवसुपाशिशिवैः
सशुक्रैर्वारेसितस्यचगृहंधनधान्यदंस्यात् ॥ २६ ॥

पुष्य ध्रुव मृगशिर श्रवण अश्लेषा पूर्वाषाढा इन नक्षत्रोंमें बृहस्पति जिसमें हो उस नक्षत्रमें तथा बृहस्पतिवारमेंभी घर बने तो घरवालेको पुत्र तथा राज्य होवे तथा विशाखा अश्विनी चित्रा धनिष्ठा शततारा आर्द्रा इनमेंसे जिसमें शुक्र हो उस नक्षत्रमें और शुक्रवारके दिन गृहारंभ हो तो अन्न धन बहुत होवे॥२६॥

(इं०व०) सारेःकरेज्यान्त्यमघाम्बुमूलैःकौजेह्निवेश्माग्निसुतार्तिदंस्यात् ॥

सज्ञैः कदास्त्रार्यमतक्षहस्तैर्ज्ञस्यैववारे सुखपुत्रदं स्यात् ॥ २७ ॥

हस्त, पुष्य, मघा, रेवती, पूर्वाषाढा, मूल नक्षत्र मंगलयुक्त हो तथा मंगल वारभी हो तो घरमें अग्निपीडा पुत्रपीडा होवे और रोहिणी, अश्विनी, उत्तरा-फाल्गुनी, चित्रा, हस्तमेंसे जिसमें बुध हो तथा बुधवारभी हो तो घरसुख तथा पुत्र देनेवाला होवे ॥ २७ ॥

(अनु०) अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानिलान्तकैः ॥
समं दैर्मन्दवारे स्याद्रक्षोभूतयुतं गृहम् ॥ २८ ॥

पूर्वाभाद्र, उत्तराभाद्र, ज्येष्ठा,अनुराधा, रेवती,स्वाती,भरणीमेंसे जिसमें शनि हो उस नक्षत्रमें तथा वारभी शनि हो तो वह घर राक्षसभूतादियोंसे युक्त रहे२८

(शा० वि०) सूर्यर्क्षाद्युगभैः शिरस्यथफलं लक्ष्मीस्ततः कोणभै
र्नागैरुद्वसनं ततोगजमितैः शाखासु सौख्यं भवेत् ॥
देहल्यां गुणभैर्मृतिर्गृहपतेर्मध्यस्थितैर्वेदभैः
सौख्यं चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥२९॥

इति श्रीमद्दैवज्ञानन्तसुतरामविरचिते मुहूर्तचिन्तामणौ वास्तु-प्रकरणं समाप्तम् ॥ १२ ॥

किसीके मतसे द्वारचक्र है कि सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रपर्यंत ४नक्षत्र शिरपें लक्ष्मीप्राप्ति करते हैं एवं तद ८ चारों कोणोंमें (उद्वसन) घरमें कोई न रहे न पावे फिर ८ शाखामें सौख्य तद ३ देहलीमें गृहपतिकी मृत्यु फिर ४ मध्यमें सौख्य देते हैं तथा ग्रंथांतरोंमें पंचांगभी कहा है कि अश्विनी, चित्रा, उत्तरा, स्वाती, रेवती,रोहिणी, द्वारशाखा. देहली आदिकों शुभ हैं तथा ५।७। ९ । ८ तिथिशुभ ११ । १२ । १३ । १४ मध्यम अन्य तिथि अशुभ हैं *वारयोगादिभी शुभ लेने ॥ २९ ॥*

इति श्रीमहीधरकृतायां मुहूर्तचिंतामणिभाषायां *वास्तुप्रकरणं समाप्तम्* ॥ १२ ॥

अथ गृहप्रवेशप्रकरणम् ।

(इं० व०) सौम्यायने ज्येष्ठतपोन्त्यमाधवे यात्रानिवृत्तौ नृपतेर्नवे गृहे ॥

स्याद्देशनंद्राःस्थमृदुध्रुवोडुभिर्जन्मर्क्षलग्नोपचयोदरेस्थिरे ॥ १ ॥

राजा आदिके यात्रासे निवृत्त होनेमें सुपूर्व तथा नवीन गृहादिमें, अपूर्वप्रवेशके मुहूर्त्त ॥ शुक्रगुरुके अस्तादि (वाप्यारामेत्यादि) दोषरहित उत्तरायणमें ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन, वैशाख महीनोंमें प्रवेश करना, मध्यममें कार्तिक मार्गशीर्ष भी कहे हैं (द्वास्थनक्षत्र) "भानि स्थाप्यान्यग्निधादेक्षु" इत्यादिमें कहे हैं घरका द्वार जिस दिशा है उस दिक्स्थ नक्षत्रोंमेंसे मृदु ध्रुव नक्षत्रोंमें तथा जन्मलग्न जन्मराशिसे उपचय ३ । ६ । १० । ११ वें तथा स्थिरलग्नोंमें अपूर्व सुपूर्व गृह प्रवेश शुभ होते हैं इसमेंभी विवाहोक्त २१ महादोष वर्जित हैं ॥ १ ॥

(इं० व०) जीर्णेगृहेग्न्यादिभयान्नवेपिमार्गोर्जयोःश्रावणकेपिसत्स्यात् ॥
वेशोम्बुपेज्यानिलवासवेषुनावश्यमस्तादिविचारणात्र ॥ २ ॥

दूसरेके अथवा अपने बनाये पुराने घरमें तथा अग्नि जल राजा आदियोंके कारण घर टूट गया फिर उसे नवीन बनायेमें प्रवेशके लिये पूर्वोक्त मासादि लेने और कार्तिक मार्गशीर्ष । श्रावण महिना शततारा पुष्य स्वाती धनिष्ठा नक्षत्रभी शुभ होते हैं तथा ऐसे प्रवेशमें शुक्र गुरुके अस्तादि विचारभी नहीं है ॥ २ ॥

(उ०जा०) मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषुमूलभेवास्त्वर्चनंभूतबलिंचकारयेत् ॥
त्रिकोणकेन्द्रायधनत्रिगैःशुभैर्लग्नात्रिषष्ठायगतैश्चपापकैः ॥ ३ ॥

मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर, मूल नक्षत्रोंमें प्रवेश दिनसे पूर्व वास्तुका पूजन (भूतबली) वास्तुपूजाप्रकारोक्त बलीभी करनी लग्नशुद्धि कहते हैं कि, त्रिकोण ५ । ९ । केंद्र १ । ४ । ७ । १० धन २ आय ११ त्रि ३ भावोंमें शुभ ग्रह हों तथा ३ । ६ । ११ में पापग्रह हों ॥ ३ ॥

(इं० व०) शुद्धाम्बुरन्ध्रेविजनुर्भमृत्यौव्यर्कारिरिक्ताचरदर्शचैत्रे ॥
अग्रेम्बुपूर्णकलशंद्विजांश्चकृत्वाविशेद्वेश्मभकूटशुद्धम् ॥ ४ ॥

और चतुर्थाष्टमभाव ग्रहरहित हों जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टमलग्न न हो तथा सूर्य मंगलवार रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि चर १ । ४ । १० । ७ लग्न

इनके अंशक (दर्श) अमावास्या चैत्रका महीना उपलक्षणसे आषाढभी इतने महीने ऐसे समयमें प्रवेश करना उस समयमें आधेमे जलपूर्ण कलश एवं ब्राह्मणोंको लिये जाना तथा दिन विवाहोक्त भकूट शुद्धि होना चाहिये ॥ ४ ॥

(इं०व०) वामोरविर्मृत्युसुतार्थलाभतोऽर्कैपञ्चमेप्राग्वदनादिमन्दिरे ॥
पूर्णातिथौप्राग्वदनेगृहेशुभोनन्दादिकेयाम्यजलोत्तरानने ॥ ५ ॥

पू. मु.	द. मु.	प. मु.	उ. मु.
सू. ८	सू. ५	सू. २	सू. ११
सू. ९	सू. ६	सू. ३	सू. १२
सू. १०	सू. ७	सू. ४	सू. १
सू. ११	सू. ८	सू. ५	सू. २
सू. १२	सू. ९	सू. ६	सू. ३

प्रवेशलग्नसे जो पंचम स्थान है उसमे ५ स्थान ९ पर्यंत सूर्य हो तो दक्षिण मुख घरमें प्रवेशको वामसूर्य होता है तथा अष्टम स्थानसे ५ में हो तो पूर्वद्वार घरमें प्रवेशको वामसूर्य तथा दूसरे स्थानसे ५ स्थानोंमें हो तो पश्चिमद्वार घरमें एवं ११ भावसे५स्थानोंमें हो तो उत्तराभिमुख घरमें प्रवेशको वामसूर्य होता है और पूर्वद्वार घरमें प्रवेशको ५।१०।१५ तिथि दक्षिणद्वारमें नंदा १।६।११पश्चिम द्वारमें भद्रा२।७।१२उत्तर द्वारमें जया३।८।१३ तिथि शुभ होती हैं५॥

(शा० वि०) वक्त्रेभूरविभात्प्रवेशसमयेकुम्भेऽग्निदाहःकृताः
प्राच्यामुद्वसनंकृतायमगतालाभःकृताः पश्चिमे ॥
श्रीर्वेदाःकलिरुत्तरेयुगमितागर्भेविनाशोगुदे
रामाःस्थैर्यमतःस्थिरत्वमनलाः कण्ठेभवेत्सर्वदा॥६॥

कलशवास्तुचक्र ॥ सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रनक्षत्रपर्यंत १ कलशके मुखमें अग्निदाह ४ पूर्वमें (उद्वसन) वासशून्य ४ दक्षिणमें लाभ ४ पश्चिममें धन

लाभ ४ उत्तरमें कलह ४ गर्भमें विनाश गर्भोंका ३ मेंदीमें स्थिरता फिर ३ कंठमें स्थिरता फल है प्रवेशमें यह चक्र विचारना चाहिये ॥ ६ ॥

(उ० जा०) एवंसुलग्नेस्वगृहंप्रविश्यवितानपुष्पश्रुतिघोषयुक्तम् ॥ शिल्पज्ञदैवज्ञविधिज्ञपौरान्राजार्चयेद्भूमिहिरण्यवस्त्रैः ॥ ७ ॥

इति श्रीमुहूर्त्तचिन्तामणौ गृहप्रवेशप्रकरणं समाप्तम् ॥ १३ ॥

एवं उक्तप्रकारोंसे निर्दोषलग्नमें राजा वितान चांदनी, पुष्पादि शोभा युक्त घरमें वेदध्वनिके साथ मंगललक्षणोंसहित अपने घरमें प्रवेश करके (शिल्पज्ञ) राज बढई आदि तथा ज्योतिषी, मुहूर्तादि बतलानेवाले (विधिज्ञ) गृहनिर्माण एवं भूतबलि आदि विधान जाननेवाले और पुरोहित आदि नगरनिवासियोंकोभी यथार्ह भूमि सुवर्ण वस्त्रादि देकर पूजन करे ॥ ७ ॥

इति श्रीमुहूर्तचिन्तामणौ महीधरकृतायां भाषायां सप्तमं गृहप्रवेशप्रकरणं समाप्तम् ॥ १३ ॥

अथ उपसंहाराध्यायः ।

(शा० वि०) आसीद्धर्मपुरेषडङ्गनिगमाध्येतृद्विजैर्मण्डिते
ज्योतिर्वित्तिलकःफणीन्द्ररचितेभाष्येकृतातिश्रमः ॥
तत्तज्जातकसंहितागणितकृन्मान्योमहाभूभुजां
तर्कालंकृतिवेदवाक्यविलसद्बुद्धिःसचिन्तामणिः॥८॥

(षडंग) शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष ये वेदके अंग हैं इनके पढानेवाले तथा वेदादि पढानेवाले ब्राह्मणोंके निवासभूत, नर्मदा समीपवर्तिविदर्भदेशांतर्गतधर्मपुरनाम नगरमें (ज्योतिर्वित्तिलकः) ज्योति, ताराओंके जाननेवाला, ज्योतिषियोंका (तिलक) श्रेष्ठ और जिसने व्याकरणके शेषकृतमहाभाष्यमें अतीव श्रम (अभ्यास) किया तथा छोटे बडे अनेक जातकशास्त्र संहिताशास्त्र गणितशास्त्र समस्त तीनों (होरा गणित संहिता) स्कंधात्मक ज्योतिषशास्त्र अपने ग्रंथ रचनासे प्रकट किये तथा महाराजाओंका मान्य तथा न्यायशास्त्र अलंकारशास्त्र वेदविचारप्रतिपादक मीमांसाशास्त्र वेदांतशास्त्रोंमें विलास युक्त है बुद्धि जिसकी ऐसा चिन्तामणि नामा दैवज्ञ हुआ ॥ ८ ॥

(शा० वि०) ज्योतिर्विद्गणवन्दिताङ्घ्रिकमलस्तत्सूनुरासीत्कृती
नाम्नाऽनन्तइतिप्रथामधिगतोभूमण्डलाहस्करः ॥
योरम्यांजनिपद्धतिंसमकरोद्दुष्टाशयध्वंसिनीं
टीकांचोत्तमकामधेनुगणितेऽकार्षीत्सतांप्रीतये ॥ ९ ॥

उक्त चिंतामणिदैवज्ञका पुत्र अनंतनामा करके संसारमें विख्यात हुआ ज्योतिषियोंके समूहसे जिसके चरणकमलोंकी वंदना की जाती थी अर्थात् उस-समयमें ज्योतिषशास्त्राध्यापक यही सर्वोपरि था पृथ्वीमें ज्योतिषको प्रकाश करनेमें सूर्य जैसा एवं अनेक ग्रंथ रचनामें (कुशल) चतुर वा सुगढ था जिसने रमणीय (जन्मपद्धति) भावदशांतर्दशा गणित शुभाशुभफलोपदेशक जन्मपत्री-रचनाका क्रम, एवं जन्मपत्रिके मार्ग न जाननेवालोंके दुष्ट आशयोंको विनाश क-रनेवाली बनाई और इसीने आर्यभटमतपंचांगसाधक कामधेनुगणितकीभी टीका बनाई इत्यादि कृत्य सज्जनोंके प्रीतिके लिये अर्थात् परोपकारार्थ किये ॥ ९ ॥

(पृथ्वी०) तदात्मजउदारधीर्विबुधनीलकण्ठानुजोगणेशपदपङ्कजंहृदि
निधायरामाभिधः ॥ गिरीशनगरेवरेभुजभुजेषुचन्द्रैर्मिते
शके विनिरमादिमंखलुमुहूर्तचिन्तामणिम् ॥ १० ॥

उक्त अनंतनामा दैवज्ञका पुत्र (उदार) शिष्योंको विद्यादानकारी बुद्धि रामदैवज्ञज्योतिष व्याकरणादि अनेक विद्याओंमें पंडित नीलकंठ दैवज्ञका भाई था इसने अपने कुलोपासित–गणेशजीके चरणकमल अपने हृदयमें धा-रण करके मोक्षदायिनी काशीपुरीमें शालिवाहनीय १५२२ शाकालमें यह *मुहूर्तचिन्तामणि नाम ग्रंथ बनाया इसकी पीयूषधारानामक टीका रामज्यो-*तिषीके भाई नीलकंठज्योतिषीके पुत्र गोविंद नामा ज्योतिषीने १५२५ शा-कालमें बनाई है ॥ १० ॥ इति ग्रन्थकृद्वंशानुकीर्त्तनम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना— गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना. कल्याण–मुंबई.

॥ श्रीः ॥

भाषाकारकृतसमर्पणम् ।

निधायहृदयेऽथविक्रमादिवामणेवत्सरे ।
नवाब्धिनवभू १९४९ मितेगुरुपदाम्बुजेशाश्वते ॥
धरान्तमहिशर्मणाटिहरिसंज्ञकेपत्तने ।
भगीरथरथानुगामरसरित्तटेशोभने ॥ १ ॥

भाषाकारकी प्रस्तावना है कि, श्रीगंगाभागीरथीके तीरस्थित राजधानी टिहरी नामक नगरमें महीधरशर्माने अपने हृदयकमलमें अविनाशी परब्रह्मरूप श्रीगुरुके चरणकमलोंको ध्यानरूप धारणकरके विक्रमादित्य संवत १९४९ में यह मुहूर्तचिंतामणिकी भाषाटीका रची ॥ १ ॥

श्रीकृष्णदासतनुजस्यमयाहिगङ्गा- ।
विष्णोर्निदेशतइयंविवृतिःप्रक्लृप्ता ॥
चिन्तामणावमललौकिकभाषयालं ।
निर्मत्सराश्रमविदःकलयन्तुकण्ठे ॥ २ ॥

पुनः कहता है कि मैंने पुण्यात्मा एवं सब बातको जाननेवाले गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास इनके आज्ञानुसार इस ग्रंथकी यह टीका (सरलदेशभाषामें) सर्व साधारणके समझने योग्य परोपकारदृष्टिकरके सरलभावसे बनाई सर्व इसे (सरलबुद्धि) मद मत्सर अहंकार रहिततासे अपने कंठमें धारण करें जिससे जब २ पढ़ें तभी तभी मुहूर्तचिंतामणि (जो सहसा सबके बोधमें नहीं होती) में (गति) समझनेकी सामर्थ्य हो जाती है ॥ २ ॥ ॥ शुभम् ॥

विनयपत्रिका सटीक.

तुलसीदासकृत इस अपूर्व और अद्भुत ग्रंथ पर महात्माओंने अनेक टीका किये हैं, जो कोई पुरुष सत उपदेष्टा से श्रवण करे अथवा आप स्वयं एकाग्र चित्त से श्रम पूर्वक अभ्यास कर मनन करे तो अवश्य परम तत्व को प्राप्त हो सक्ता है—परंतु श्रमाधीन वस्तु की लाभ जो विना परिश्रम के प्राप्त हो जावे और उत्साह पूर्वक मन लगे तो और भी अतीवोत्तम है, इसीसे टीकाकारने पूर्व वर्णित महानुभावों के टीका भूषणों को इस ग्रंथ रूपी मूर्ति के प्रत्येक अवयवों पर भूषित कर दिया अर्थान्तर सरल रीति से भाषामें पदच्छेद पूर्वक प्रतिशब्द टीका किया कि जिसके द्वारा विद्यानुरागी भक्तजन अनायास यथार्थ तत्वज्ञानी होकर निःसन्देह परम पद को प्राप्त हो जावेंगे और पाठशालाके विद्यार्थियों को भी विद्योपार्जन के लिये अत्यन्त सुलभ और लाभकारी होगा। ग्लेज की० रु० २॥, रफ़ की० २ रु० ।

बृहन्निघण्टुरत्नाकर—पंचम भाग—मैं अपने प्रियबांधव बृहन्निघण्टुरत्नाकर ग्राहकोंके प्रति प्रार्थना करता हू कि, आप लोग कृपा कर मेरे अपराधको क्षमा करेंगे. कारण कि, यह बृहन्निघण्टुरत्नाकरका पचम भाग बहुत जल्दी छापकर आप लोगोंके प्रति समर्पण करना चाहता था पर अनेक विघ्नवश होनेके कारण वह मेरी आशा शीघ्र नहीं पूर्ण होसकी इसीसे आपको आजतक वंचित करना पडा. अब यह पचम भाग भगवानकी कृपासे शुद्धता और स्वच्छताके साथ छापकर तैयार किया गया है यह भाग पहिले चार भागोंसे बहुतही बृहत् हो गया है अर्थात् प्रथम तथा द्वितीय भागमें साठ २ फारिम है और तृतीय भागमें ७० फारिम हैं एव चतुर्थ भागमें ७३ फारिम हैं. इस पचम भागमे तो १०१ फार्म है. यह बहुतही बडा होनेके कारण इसमें बहुत विषयोंका सग्रह हुआ है जिन विषयोंकी सूचीके फार्म ६ हो गये हैं. सब मिलके ११५ फार्म हो गये हे इसमें अजीर्ण रोगसे उदररोगतक सर्व रोग कर्मविपाक, ज्योतिःशास्त्राभिप्राय, निदान, चिकित्सा, प्रत्येक रोगपर क्वाथ, कल्क, आसव, अरिष्ट, चूर्ण, मात्रा, रसायन आदि छोटी बडी सर्वप्रकारकी दवासहित वर्णित है. बहुत लिखना आप लोगोंके आगे व्यर्थ है. अब तो यह पुस्तक आपके हस्तगत है जो कुछ भला बुरा है वह प्रत्यक्ष है। की० ६ रु०। छठा भाग की० ४ रु० ।
सातवां आठवं नो एकमें की० ८ रु० ।

स्मृतिरत्नाकर.

यह धर्मशास्त्रका ग्रंथ बहुत श्रमसे और खर्चसे संपादित किया है यह एक पुस्तक पास रखनेसे कोईभी धर्मशास्त्रका विषय हो प्रमाणसहित मिल जाता है अर्थात् श्रुति, स्मृति, पुराण आदिसे प्रत्येक विषयके उपयोगी सब प्रमाण वचनोंका संग्रह कर कठीन स्थलपर स्वयं ग्रंथकारने व्याख्यानभी लिखा है इसमें २१४ विषय है. यह ग्रंथ इस देशमें सर्वथा अप्रसिद्ध है हालमें छपके तैयार है. कि० २ रु०.

नाम.	की.रु.आ.	ट.म.रु.आ.
ज्योतिषग्रन्थाः ।		
३१४ बृहत्संहिता भा.टी. ग्लेज४रु.रफ्	३—८	०—८
३१५ बृहज्जातकसटीक	१—८	०—४
३१६ बृहज्जातकभाषाटीका	१—८	०—४
३१७ वर्षदीपकपत्रीमार्ग वर्षजन्मपत्र बनानेका..................	०—४	०—१
३१८ मुहूर्त्तचिन्तामणि प्रमिताक्षराटीका सह रफ् रु. १. ग्लेज्......	१—४	०—३
३१९ मुहूर्तचिंतामणि पीयूषधारा टीका	२—८	०—६
३२० ताजिकनीलकण्ठीसटीकतन्त्रत्रयात्मक	१—०	०—२
३२१ ताजकनीलकण्ठी महीधरकृत भाषा टीका	१—८	०—४
३२२ ज्योतिषसार भाषाटीका सहित	१—०	०—२
३२३ मुहूर्तचिन्तामणि भाषाटीका पं० महीधरकृत	१—०	०—३
३२४ मानसागरीपद्धति	१—०	०—२
३२५ बालबोधज्योतिष............	०—२	०—॥
३२६ ग्रहगोचरज्योतिष	०—२	०—॥
३२७ ग्रहगोचर ज्योतिष भा०टी० ...	०—२	०—॥
३२८ ग्रहलाघव सटीक*	०—१२	०—२
३२९ ग्रहलाघव भा० टी०	१—०	०—२
३३० चमत्कारचिन्तामणि भाषाटीका	०—४	०—॥
३३१ जातकालङ्कारभाषाटीका...	०—६	०—१
३३२ जातकालङ्कारसटीक	०—६	०—१
३३३ जातकाभरण................	०—१२	०—२
३३४ लघुपाराशरीसटीक	०—३	०—॥
३३५ तथा भाषाटीका अन्वय सहित	०—४	०—॥
३३६ मुहूर्त्तगणपति*	०—१२	०—२
३३७ मुहूर्तमार्तण्ड सटीक	०—१२	०—२
३३८ मुहूर्त्तमार्त्तण्ड संस्कृत भाषाटीकास.	१—०	०—२

नाम.	की.रु.आ.	ट.म.रु.आ.
३३९ शीघ्रबोधभाषाटीका	०—६	०—१
३४० षट्पञ्चाशिकासटीक	०—३	०—॥
३४१ षट्पञ्चाशिका भाषाटीका अतिउ.	०—६	०—१
३४२ वर्षबोध (मेघमहोदधि) तेजीमंदी सुकालदुकाल बिचार भा० टी० सह	०—१२	०—१
३४३ प्रश्नचंडेश्वर भाषाटीका.... ...	०—१२	०—१
३४४ संकेतनिधिसटीक	१—४	०—३
३४५ मकरंदसारिणी उदाहरण सहित	०—१०	०—१
३४६ भावकुतूहलभाषाटीका ...	१—०	०—२
३४७ पद्मकोश भा० टी०	०—४	०—॥
३४८ ज्योतिःशास्त्र निघंटु	०—२	०—॥
३४९ मेघमालाभड्डली....	०—४	०—॥
३५० रत्नपरीक्षा रत्नोंके परीक्षाका ग्रन्थ भाषा.........	०—४	०—॥
३५१ स्वप्नप्रकाशिका भाषाटीका .	०—३	०—॥
३५२ स्वप्नाध्याय भा० टी०	०—२	०—॥
३५३ भुवनदीपक भाषाटीका और संस्कृतटीका सहित	०—८	०—१
३५४ जैमिनिसूत्रसटीक चार अध्याय	०—७	०—१
३५५ रमलनवरत्न संस्कृत	०—८	०—१
३५६ रमलनवरत्न भाषाटीका......	१—०	०—२
३५७ रमलभास्कर हिंदीभाषामें	०—४	०—॥
३५८ सर्वार्थचिन्तामणि............	०—१२	०—२
३५९ लघुजातकसटीक.............	०—६	०—१
३६० लघुजातक भा० टी०	०—८	०—१
३६१ बृहत्मुहूर्तसिंधु...............	२—०	०—४
३६२ बृहदवकहडाचक्र (होडाचक्र) भा० टी०	०—४	०—॥
३६३ सामुद्रिक शास्त्र बड़ा सान्वय भाषाटीका....	१—४	०—२